# स्मारिका
# (Souvenir)

## राष्ट्रीय संगोष्ठी
## (NATIONAL SEMINAR)

विषयः

# शिक्षा में मानवीय मूल्य एवं व्यावसायिक नैतिकता: आवश्यकता एवं महत्व

# Human Values and Professional Ethics in Education: Need and Importance

**22-23 फरवरी 2020**

प्रायोजक : उच्च शिक्षा विभाग, उत्तर प्रदेश सरकार

आयोजक : राजकीय रज़ा स्नातकोत्तर महाविद्यालय
रामपुर (उ० प्र०)
(स्थापित 1949 एवं NAAC तृतीय चक्र पूर्ण)

## आयोजन समिति

**संरक्षक** – **प्रो० वंदना शर्मा**, निदेशक, उच्च शिक्षा, प्रयागराज (उ०प्र०)
**संयोजक** – **डॉ० पी०के० वार्ष्णेय**, प्राचार्य
**सह–संयोजक** – **डॉ० जागृति मदान धींगरा**, एसो० प्रोफ़ेसर, जंतु विज्ञान
**आयोजन सचिव** – **दीपक कुमार शर्मा**, असि० प्रोफ़ेसर, शिक्षक शिक्षा विभाग (बी०एड०)
**सैयद अब्दुल वाहिद शाह**, असि० प्रोफ़ेसर, शिक्षक शिक्षा विभाग (बी०एड०)
**कोषाध्यक्ष** – **डॉ० शैलेन्द्र कुमार**, असि० प्रोफ़ेसर, गणित
**डॉ० अमित अग्रवाल**, असि० प्रोफ़ेसर, वाणिज्य

## परामर्श मण्डल

1. डॉ० विनीता सिंह
2. डॉ० दीपा अग्रवाल
3. डॉ० सहदेव
4. डॉ० एस० एस० यादव
5. डॉ० मीनाक्षी गुप्ता
6. डॉ० सीमा तेवतिया
7. डॉ० बेबी तबस्सुम
8. डॉ० मुजाहिद अली
9. डॉ० हितेन्द्र कुमार सिंह
10. डॉ० प्रवेश कुमार
11. डॉ० प्रदीप कुमार
12. डॉ० अरविन्द कुमार

## सम्पादक मण्डल

1. डॉ० अरुण कुमार
2. डॉ० रेशमा परवीन
3. डॉ० ज़ेबी नाज़
4. डॉ० रेनू
5. डॉ० सोमेन्द्र सिंह
6. डॉ० माणिक रस्तोगी
7. डॉ० जुबैर अनीस
8. डॉ० अरविन्द कुमार
9. डॉ० कुसुमलता
10. डॉ० रामकिशोर सागर
11. डॉ० ललित कुमार
12. डॉ० सुमनलता
13. डॉ० प्रिया बजाज
14. डॉ० अजय विक्रम सिंह
15. डॉ० महेंद्र पाल सिंह यादव
16. डॉ० राजीव पाल
17. डॉ० निधि गुप्ता
18. डॉ० कामिल हुसैन

## सदस्य

1. डॉ० सैयद अरशद रिज़वी
2. डॉ० विनय कुमार शर्मा
3. डॉ० विनय कुमार चौधरी
4. डॉ० अजीता रानी
5. डॉ० सुरेन्द्र कुमार
6. डॉ० जहाँगीर अहमद ख़ान
7. डॉ० सुरेन्द्र कुमार गौतम
8. डॉ० मुदित सिंघल
9. डॉ० राजू
10. डॉ० मो नासिर
11. डॉ० राम कुमार
12. डॉ० दीपमाला सिंह
13. डॉ० प्रतिभा श्रीवास्तव
14. डॉ० ब्रह्म सिंह
15. डॉ० मोनिका खन्ना
16. डॉ० विजय कुमार राय
17. डॉ० रेखा कुमारी
18. डॉ० रजनीबाला (कार्यालय अधीक्षक)

राष्ट्रीय संगोष्ठी

विषय "शिक्षा में मानवीय मूल्य एवं व्यावसायिक नैतिकता : आवश्यकता एवं महत्त्व"

*(22-23 फरवरी 2020)*

# अनुक्रमणिका (INDEX)


| क्रं. | शीर्षक/लेखक | पृ.सं. |
|---|---|---|
| 1 | वर्तमान परिप्रेक्ष्य में मानवीय-जीवन में मूल्यों की आवश्यकता<br>उमा गुप्ता | 1 |
| 2 | शिक्षा में मानवीय मूल्य एवं योग का योगदान<br>अमित माहेश्वरी | 2 |
| 3 | भारतीय परिपेक्ष्य में मूल्य शिक्षा<br>संतोष कुमार पाण्डेय | 2 |
| 4 | शिक्षा एवं मानवीय मूल्य<br>डॉ0 अनीता जायसवाल | 3 |
| 5 | शिक्षा एवं मानवीय मूल्य<br>डॉ0 अनीता देवी एवं डॉ0 संजीता अग्रवाल | 4 |
| 6 | स्नातक स्तर पर शिक्षण के सन्दर्भ में सरकारी एवं निजी प्रबन्धतंत्र (प्राईवेट) महाविद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों के मूल्यों एवं सामाजिक सफलता के मध्य सह-सम्बन्धों का तुलनात्मक अध्ययन<br>डॉ० नीतू चावला | 5 |
| 7 | विद्यालयों में मूल्य शिक्षा की आवश्यकता<br>डॉ0 प्रशान्त एवं राधे श्याम तिवारी | 6 |
| 8 | जीवन में मूल्य आधारित शिक्षा का महत्व<br>मनु सिंह एवं डॉ० अंकुर त्यागी | 7 |
| 9 | मूल्याधारित शिक्षा में सतत् परिवर्तन : एक विमर्ष<br>डॉ0 सुनीता जायसवाल | 8 |
| 10 | छात्र जीवन और मूल्यों की आवश्यकता<br>डॉ0 रवि कुमार एवं अनिता सिंह | 9 |
| 11 | वर्तमान परिप्रेक्ष्य में शिक्षा एवं मानवीय मूल्य की प्रासंगिकता<br>डॉ0 आफताब जाकरा सिद्दीकी | 10 |
| 12 | व्यावसायिक शिक्षा मानवीय मूल्य<br>किशन सैनी एवं डॉ० प्रवेश कुमार | 11 |
| 13 | छात्रों के लिए मूल्यों की आवश्यकता<br>डा0 सोमवीर सिंह एवं बिन्दु सिंह | 11 |
| 14 | मानवीय मूल्य की आवश्यकता एवं महत्व<br>डॉ0 भानु प्रकाश | 12 |

| क्रं. | शीर्षक/लेखक | पृ.सं. |
|---|---|---|
| 15 | शिक्षा एवं मानवीय मूल्य<br>डॉ0 कुलदीप चौधरी | 13 |
| 16 | शिक्षा में मानवीय मूल्य<br>महेश कुमार आर्य | 14 |
| 17 | शिक्षा एवं मानवीय मूल्य<br>प्रेमलता | 15 |
| 18 | समाज में मूल्य आधारित शिक्षा की भूमिका<br>अश्वनी कुमार | 16 |
| 19 | शिक्षा में मानवीय मूल्यों की मानव जीवन में आवश्यकता एवं महत्व<br>डॉ० ललित कुमार | 17 |
| 20 | मानवीय मूल्य और शिक्षा<br>बृज नरेश एवं प्रदीप कुमार कश्यप | 19 |
| 21 | मानवीय मूल्यों की आवश्यकता एवं महत्व<br>सन्त कुमार राजपूत | 20 |
| 22 | शिक्षा एवं मानवीय मूल्य<br>मो0 शमीम | 21 |
| 23 | शिक्षा एवं मानवीय मूल्य<br>पार्वती वर्मा | 21 |
| 24 | मूल्याश्रित शिक्षण में प्रभावी पाठ्यक्रम की उपयोगिता<br>डा0 विक्रान्त उपाध्याय | 22 |
| 25 | बदलते विश्व परिदृश्य में मूल्य शिक्षा की प्रासंगिकता<br>रेखा रानी | 23 |
| 26 | मूल्य परक अध्यापक शिक्षा<br>कंचन लोहानी | 23 |
| 27 | मानवीय मूल्यों की शिक्षा में परिवार, समाज एवं विद्यालय की भूमिका<br>शशिबाला | 24 |
| 28 | मानवीय मूल्य और वर्तमान मदरसा शिक्षा<br>वसीम मियाँ | 25 |
| 29 | शिक्षा एवं मानवीय मूल्य<br>डॉ0 राजीव पाल | 26 |
| 30 | शिक्षा में व्यावसायिक प्रतिबद्धता और आचार संहिता<br>प्रदीप कुमार | 27 |

| क्रं. | शीर्षक/लेखक | पृ.सं. |
|---|---|---|
| 31 | **शिक्षा में मानवीय मूल्य एंव व्यावसायिक नैतिकता: आवश्यकता एंव महत्व**<br>डॉ० प्रदीप कुमार एवं वैष्णवी गुप्ता | 28 |
| 32 | **व्यावसायिक आचार संहिता (शिक्षक और उनके दायित्व यू.जी.सी. विनियम 2018 के सदर्भ में)**<br>डॉ० अनिल कुमार यादव एवं डॉ० अशु सरीन | 29 |
| 33 | **भारतीय संविधान एवं मानवीय मूल्य**<br>डा० मनमीत कौर | 30 |
| 34 | **भारतीय संविधान एवं मानवीय मूल्य**<br>डॉ0 नरेश कुमार | 31 |
| 35 | **संविधान और मानवीय मूल्य**<br>चन्द्रमुखी पाल | 32 |
| 36 | **शिक्षा का विकास एवं भारतीय संविधान**<br>डॉ० संजीव कुमार एवं शिल्की सिंह | 33 |
| 37 | **थारू जनजाति की भौगोलिक परिस्थितियां एवं उनके मानवीय मूल्य**<br>भाग्य श्री | 35 |
| 38 | **आजादी के समर मे आधुनिक शिक्षा का योगदान**<br>सचिन कुमार | 35 |
| 39 | **भौगोलिक परिस्थितियाँ तथा मानवीय मूल्य**<br>सोमेन्द्र सिंह एवं सौरभ भारद्वाज | 37 |
| 40 | **शिक्षा एवं मानवीय मूल्यों के सन्दर्भ में सांवेगिक बुद्धि की प्रासंगिकता**<br>हिमाँशु शर्मा | 38 |
| 41 | **तनाव के कारण किशोरों में मानवीय मूल्यों का अविकास**<br>विवेक आर्य | 39 |
| 42 | **कल्याणकारी अर्थशास्त्र एवं मानवीय मूल्य**<br>डॉ० सीमा मालिक | 40 |
| 43 | **विज्ञान एवं मानवीय मूल्य**<br>प्रतिभा सिंह | 41 |
| 44 | **माध्यमिक विद्यालयों के अध्यापकों के समायोजन पर सैद्धान्तिक व आर्थिक मूल्यों के प्रभाव का अध्ययन** (सहारनपुर जनपद के विशेष सन्दर्भ में)<br>डॉ० रतन सिंह | 42 |
| 45 | **मूल्य शिक्षा का स्वरूप एवं योग**<br>हिना | 42 |

| क्रं. | शीर्षक/लेखक | पृ.सं. |
|---|---|---|
| 46 | योग- जीवन जीने की कला<br>श्रीमती बबीता | 43 |
| 47 | मानव मूल्यों में योग का महत्व<br>सर्वेश गुप्ता | 44 |
| 48 | मूल्य परक शिक्षा एवं योग का शिक्षार्थियों पर प्रभाव<br>शुभम् गुप्ता | 45 |
| 49 | योग एवं शारीरिक शिक्षा में मानवीय मूल्य<br>विपिन कुमार एवं डॉ प्रवेश कुमार | 46 |
| 50 | योग, आध्यात्म, स्वास्थ्य एवं माननीय मूल्य<br>डा0 रजनी रानी अग्रवाल | 47 |
| 51 | नैतिक मूल्यों के सुधार के सन्दर्भ में योग की अनिवार्य, आवश्यक तथा महती भूमिका<br>डॉ. विनीता एम चौधरी | 48 |
| 52 | महर्षि अरविन्द के योग की वर्तमान मानवीय मूल्य प्रासंगिकता का निरूपण<br>भरत लाल बारी | 49 |
| 53 | योग, शारीरिक शिक्षा एवं मानवीय मूल्य<br>कमल कान्त | 50 |
| 54 | धर्म, दर्शन एवं मानवीय मूल्यो का षिक्षा में प्रासगिकता<br>दीपक कुमार शर्मा एवं डॉ0 गिरीश कुमार वत्स | 51 |
| 55 | भारतीय समाज में मानवीय मूल्यपरक शिक्षा एवं योग का महत्व<br>डॉ० गरिमा | 52 |
| 56 | योग, शारीरिक शिक्षा एवं मानवीय मूल्य<br>डा0 नीतू सिंह | 53 |
| 57 | महर्षि वात्स्यायन का दर्शन और शिक्षा<br>डॉ० प्रदीप कुमार एवं नितिन कुमार त्यागी | 54 |
| 58 | पंडित दीनदयाल उपाध्याय का शिक्षा दर्शन<br>डा0 विकास गर्ग | 54 |
| 59 | धर्म एवं मानवीय मूल्य<br>डॉ0 रेखा शर्मा | 56 |
| 60 | धर्म, दर्शन में वर्णित मानवीय मूल्यों की प्रासंगिकता – 'वेदान्त दर्शन के परिप्रेक्ष्य में'<br>संगीता राठौर | 57 |

| क्रं. | शीर्षक/लेखक | पृ.सं. |
|---|---|---|
| 61 | भारतीय संस्कृति का आधार रामायण में प्राप्त मानवीय मूल्य<br>अजय कुमार | 58 |
| 62 | भारतीय समाज में नैतिक मूल्यों का ह्रास<br>डॉ० भूपेन्द्र कौर एवं अभिषेक यादव | 59 |
| 63 | भारतीय संस्कृति का प्रतीक संगीत एवं मानवीय मूल्य<br>डा0 मोनिका दीक्षित | 59 |
| 64 | भारतीय संस्कृति एवं मानवीय मूल्य<br>डॉ. कविता कन्नौजिया | 60 |
| 65 | भारतीय संस्कृति एवं मानवीय मूल्य<br>डॉ० अश्विनी कुमार | 61 |
| 66 | भारतीय संस्कृति मानवीय मूल्यों का जनक<br>डॉ० पल्लवी सिंह | 62 |
| 67 | भारतीय हिन्दी साहित्य में मानवीय गुण<br>श्रीमती हेमलता | 63 |
| 68 | हिन्दी साहित्य में मानवीय जीवन मूल्यों की अभिव्यक्ति<br>डॉ० निधि शर्मा | 65 |
| 69 | भारतीय संस्कृत साहित्य एवं मानवीय मूल्य "पुराणों के सन्दर्भ में"<br>आंचल सक्सेना | 65 |
| 70 | भक्तिकालीन साहित्य में मानवीय मूल्य<br>डॉ0 अरुण कुमार एवं डॉ0 निशात बानो | 67 |
| 71 | मधुकर अष्ठाना के गीतों में मूल्यचेतना (कुछ तो कीजिए, नवगीत संग्रह के विशेष परिप्रेक्ष्य में)<br>डॉ0 मो0 असलम खाँ एवं कुँवर डॉ0 महाराणा प्रताप सिंह चौहान 'विद्रोही' | 68 |
| 72 | हिन्दी साहित्य की सन्त काव्यधारा में अभिव्यक्त मानवीय मूल्यों का तात्त्विक विश्लेषण<br>डॉ0 ज़ेबी नाज़ | 69 |
| 73 | साहित्य एंव मानवीय मूल्य<br>अभिषेक कुमार | 70 |
| 74 | साहित्य एवं मानवीय मूल्य<br>मधु रानी | 71 |
| 75 | ब्राह्मण ग्रन्थों में नैतिकता एवं मानवीय मूल्य<br>ज़फर अली | 72 |

| क्रं. | शीर्षक/लेखक | पृ.सं. |
|---|---|---|
| 76 | पर्यावरण संरक्षण में मानवीय मूल्यों की भूमिका : भारतीय परिवेश में<br>डॉ० अरविन्द कुमार एवं मौ० आज़म | 74 |
| 77 | पर्यावरण संरक्षण की आवश्यकता एवं उपाय<br>सैय्यद अब्दुल वाहिद शाह एवं सुशील सहगल | 74 |
| 78 | डिजिटल इंडिया<br>डा0 शैलेन्द्र कुमार | 75 |
| 79 | डिजीटल शिक्षा एवं विद्यार्थियों में मूल्यों का विकास<br>डॉ0 धर्मेन्द्र कुमार एवं डॉ0 शशि सिंह | 76 |
| 80 | नए युग के लिए अभ्यास में नैतिक नेतृत्व और नेतृत्व शैलियाँ<br>डॉ० विनय कुमार शर्मा, डॉ० जुबैर अनीस, डॉ अमित अग्रवाल,<br>डॉ० महेंद्र पाल सिंह यादव | 78 |
| 81 | ग्रामीण क्षेत्रों में उच्च शिक्षा की स्थिति और सामाजिक विकास में मीडिया की भूमिका (लखनऊ जिले के विशेष संदर्भ में)<br>बृजेन्द्र कुमार वर्मा एवं डॉ0 महेन्द्र कुमार पाढ़ी | 79 |
| 82 | मानवीय मूल्यों के संवहन का सशक्त माध्यम : संगीत कला<br>डॉ0 दीपक त्रिपाठी | 79 |
| 83 | भारतीय संस्कृति एवं मानवीय मूल्य<br>दीपक कुमार शर्मा एवं डॉ० आशुतोष कुमार शुक्ल | 80 |
| 84 | शिक्षा तथा मानवीय मूल्य<br>डॉ0 हबीब इकराम | 81 |
| 85 | **Let Us Inculcate Values in Next Generation Learners**<br>**Dr. Jyoti Pandey** | 82 |
| 86 | **Value Education In Indian Mythology**<br>**Dr. Anil Kumar Yadav** | 83 |
| 87 | **Role of Teachers in Imparting Value Education**<br>**Mrs. Rajkumari Gola and Prof. M. P. Pandey** | 83 |
| 88 | **A Study of Efforts Made by NCTE for the Development of Human Values in India**<br>**Dr. Sangeeta Srivastava** | 84 |
| 89 | **Education and Human Values**<br>**Dr. Apara Goyal** | 85 |
| 90 | **Value EducationAnd Teacher**<br>**Dr. Neeta Gupta and Kirti Singh** | 86 |
| 91 | **Education in Human Values**<br>**Dr. Monika Khanna** | 86 |

| क्रं. | शीर्षक/लेखक | पृ.सं. |
|---|---|---|
| 92 | **Education and Human Value**<br>**Rachna Tripathi** | 87 |
| 93 | **Vedic Education and Value now in Modern Era**<br>**Dr. Sushma Srivastava and Kiran Rai** | 88 |
| 94 | **Education and Human Values**<br>**Madhu Bala** | 88 |
| 95 | **Impact of Human Values in Education for TeachingApproach**<br>**Qaisur Rahman and Baby Tabassum** | 89 |
| 96 | **EducationAnd Human Values**<br>**Dr. Divya Singh** | 90 |
| 97 | **Role of Educational Institutions in Inculcating Human Values**<br>**Dr. Kanank Sharma** | 91 |
| 98 | **Education and Human Values**<br>**Dr. Simmi Agarwal** | 91 |
| 99 | **Education and Human Value**<br>**Dr. Bhupender Singh** | 92 |
| 100 | **Role of Education in Human Values**<br>**Mithlesh GangwarAnd Himanshu Gangwar** | 92 |
| 101 | **Education and Human Values**<br>**Dr. Manju Johari** | 94 |
| 102 | **EducationAnd Ethics : A Great Need of Ethics in Education**<br>**Shikha Mishra** | 94 |
| 103 | **Status of Values and Ethics: Need to be Positive**<br>**Dr. Pratibha Rastogi** | 95 |
| 104 | **Role of Value Education in Teacher Education**<br>**Mrs. Luxmi Mishra and Dr. Mohan LalArya** | 96 |
| 105 | **The Global Need of Education:Moral Values**<br>**Mr. Sanjay Kumar** | 97 |
| 106 | **Values and their Importance in Modern Life**<br>**Manik Rastogi** | 98 |
| 107 | **Need and Importance of Value-Education at Present Education System in India**<br>**Dilip Kumar and Dr. Anjana** | 99 |
| 108 | **Value Based Education: Strategies and Methods**<br>**Dr. Bharti Dogra and Dr. Anita Singh** | 100 |
| 109 | **Role of Education in Moral Values**<br>**Manisha Rani** | 100 |

| क्रं. | शीर्षक/लेखक | पृ.सं. |
|---|---|---|
| 110 | **Formal Education- Important Measures to Inculcate Human Values in Students**<br>**Ritu Sharma and Brij Bhushan** | 101 |
| 111 | **Educational Impact on Happiness**<br>**Apurva Singh** | 101 |
| 112 | **Role of Education in Inculcating The Value**<br>**Shalini Singh** | 102 |
| 113 | **Education and Human Values**<br>**Varsha Pant** | 103 |
| 114 | **A study of the Values, Adjustment and AcademicAchievement of Students Studying in Senior Secondary Schools of Meerut**<br>**Mr. Yogesh Kumar** | 103 |
| 115 | **Education and Human Values**<br>**Neeti Sharma** | 104 |
| 116 | **Education and Human Values**<br>**Ramesh Kumar Awasthi** | 105 |
| 117 | **Role of Human Values In Present Educational Instituties**<br>**Harish Kumar and Alka Ranga** | 106 |
| 118 | **Role of Teachers in Imparting Values in Schools**<br>**Asmi Siddiqui** | 106 |
| 119 | **Understanding Value - Education**<br>**Dr. Anil Bhatt** | 107 |
| 120 | **Human ValuesAnd Education of Children with Developmental Disabilities**<br>**Dr. Ram Shanker Saxena, Naveen Singh and Dr. S.S. Yadav** | 108 |
| 121 | **Relevance of Value Based Education at Higher Level in Context of India**<br>**Dr Pardeep Kumar** | 109 |
| 122 | **Education and Professional Ethics**<br>**Dr. Jitendra Mohan Agarwal** | 109 |
| 123 | **Higher Education and Professional Ethics**<br>**Dr. Shweta Keshri** | 110 |
| 124 | **Human Values and Professional Ethics**<br>**Rekha Kumari** | 111 |
| 125 | **Study on Professional Ethics ComponentsAmong Members in Education**<br>**Qaisur Rahman and Baby Tabassum** | 112 |

| क्रं. | शीर्षक/लेखक | पृ.सं. |
|---|---|---|
| 126 | **Education and Professional Ethics**<br>**Dr. Neeta Kaushik** | 113 |
| 127 | **Professional Ethics in Education**<br>**Dr. Deepshikha Saxena and Dr. Sachin Kumar** | 114 |
| 128 | **Importance of Professional Ethics in Higher Education**<br>**Preety Agarwal** | 114 |
| 129 | **Education and Professional Ethics**<br>**Sapna Rani** | 115 |
| 130 | **Teacher and Professional Ethics: Historical Perspective and Present Status**<br>**Deepak Kumar Sharma** | 115 |
| 131 | **Teacher and professional ethics**<br>**Sunil Kumar** | 116 |
| 132 | **Teachers Professional Ethics**<br>**Dr. Meenakshi Sharma** | 117 |
| 133 | **Professional Ethics in Teaching**<br>**Dr. Suvita Kumari** | 117 |
| 134 | **Ethics in Teaching Professional**<br>**Dr Shubhra Chaturvedi** | 118 |
| 135 | **Teacher and Professional Ethics**<br>**Savita Saxena and Dr. R. K. Singh** | 119 |
| 136 | **Teacher and Professional Ethics**<br>**Dr. Munesh Kumar Sharma** | 120 |
| 137 | **Teachers and Professional Ethics**<br>**Sapna** | 120 |
| 138 | **Significance of Professional Ethics for Teachers**<br>**Seema Rani and Markandey Dixit** | 121 |
| 139 | **Teacher and Professional Ethics : A Critical Review**<br>**Somender Singh and Rohit Singh Tomar** | 122 |
| 140 | **Professional Ethics and Commitment in Teacher Education**<br>**Vaibhav Sharma** | 123 |
| 141 | **Role of Values in the Job Performance and Professional Commitment of the Teachers**<br>**Rahul Yadav** | 123 |
| 142 | **Teacher and Professional Ethics**<br>**Prof. Rashmi Mehrotra and Reshma Parveen Khan** | 124 |
| 143 | **Teacher and Professional Ethics: In Present Perspective**<br>**Dr. Santosh Arora and Anit Kumar Srivastava** | 124 |

| क्रं. | शीर्षक/लेखक | पृ.सं. |
|---|---|---|
| 144 | **Teacher and Professional Ethics**<br>**Lohans Kumar Kalyani and Neeraj Yadav** | 125 |
| 145 | **The Teachers and Professional Ethics**<br>**Shikha Singh** | 125 |
| 146 | **Teacher and Professional Ethics**<br>**Dr. Anju Rani** | 126 |
| 147 | **Teacher and professional Ethics**<br>**Shally Verma** | 127 |
| 148 | **Crucification of Indian Constitution: Emergence of Crisis towards Clashes of Civilization**<br>**Md. Matin Arif and Dr. Santosh Arora** | 127 |
| 149 | **Professional Ethics and Accountability in Education for Teachers**<br>**Dr. Shazli Hasan Khan** | 128 |
| 150 | **Human Values and the ConstitutionAnd Politics of India**<br>**Dr. Mudabbir Qamar** | 128 |
| 151 | **A study of Emotional Intelligence of Senior Secondary School Students in relation to their AcademicAchievement**<br>**Prem Kishor Sharma** | 129 |
| 152 | **Psychology and Human Values**<br>**Dr. Reeti Chauhan** | 130 |
| 153 | **A Study of Parent, Child Relationship in Relation to Adjustment and Values**<br>**Dr. Sanjay Kumar and Mr. Sarthak Singh Tomar** | 131 |
| 154 | **Dynamic Relation of Conflict and Congruty among Human**<br>**Poonam Sharma** | 132 |
| 155 | **Role of Welfare Schemes for Human Development in India**<br>**Dr. M.P.S. Yadav** | 132 |
| 156 | **The Reality of Corporate Social Responsibility as part of Business Ethics in India**<br>**Dr. Zubair Anees** | 133 |
| 157 | **Economic Welfare and Social Values**<br>**Ritu Pahwa** | 134 |
| 158 | **Welfare Economics and Human Values**<br>**Rajni Sharma** | 135 |
| 159 | **Business Ethics and Human Values: An Overview in Indian Context**<br>**Umra Khan, Syad Abdul Wahid Shah and Dr. Pravesh Kumar** | 136 |

| क्रं. | शीर्षक/लेखक | पृ.सं. |
|---|---|---|
| 160 | **Sports and Human Values**<br>**Dr. Bharti Sharma** | 136 |
| 161 | **The Role of Yoga in Education And Human values**<br>**Dr.Vandana Rathore** | 138 |
| 162 | **Influence of Kapalbhati Pranayama on Brain Function, Blood Pressure and Lung Capacity**<br>**Anil Kothari, Bhanu Prakash Joshi, Priyanka Joshi** | 137 |
| 163 | **Role of Yoga in Physical EducationAnd Human Values**<br>**Dr. Deepshikha** | 138 |
| 164 | **Inculcation of Human Values: Yoga A Perfect Means**<br>**Mohammad Sharique** | 139 |
| 165 | **Yoga Physical Education and Human Values**<br>**Monika** | 139 |
| 166 | **Yoga in Health and Human Value Education**<br>**Dr. Kumudlata Singh and Vivekanand Singh** | 140 |
| 167 | **Yoga and Athlete**<br>**Dr. Jitendra Kumar Baliyan** | 140 |
| 168 | **Indian Culture and Human Values**<br>**Smt. Aruna Sharma** | 141 |
| 169 | **Indian Culture and Human Values: Importance in Educational System**<br>**Mrs. Sushma** | 142 |
| 170 | **Education System in Modern Era: An Analytical View of Indian Culture and Human Ethics**<br>**Dinesh Joshi** | 143 |
| 171 | **Human Values in Indian Culture**<br>**Dr. Priyanka Verma** | 144 |
| 172 | **Indian Culture and Human Values**<br>**Hemlata** | 144 |
| 173 | **Indian Cultural and Human Value**<br>**Khemendra Kumar Sharma** | 145 |
| 174 | **Recent Trends of Social Equity in Higher Educational System**<br>**Baby Tabassum and Qaisur Rahman** | 146 |
| 175 | **Literature and Human Values**<br>**Dr. Manisha Mittal** | 147 |
| 176 | **Literature and Human Values**<br>**Dr. Parul Jain** | 147 |

| क्रं. | शीर्षक/लेखक | पृ.सं. |
|---|---|---|
| 177 | **Effects of Literature on Human Life**<br>**Dr. Renu** | 148 |
| 178 | **Poets are the Unacknowledged Legislators of Mankind**<br>**Dr. Reshma Perveen** | 148 |
| 179 | **Ecotourism-A Means to Achieve Sustainable Resource Management**<br>**Parveen Kumar, Ashutosh Kumar Choudhary and Pardeep Kumar** | 149 |
| 180 | **Environment Conservation Through Human Values Based on Indian Culture**<br>**Dr. Deepti Bajpai** | 150 |
| 181 | **Environment Conservation and Human Values**<br>**Ms. Kahkasha and Dr. Santosh Kumar Tripathi** | 150 |
| 182 | **Impact of Human Values on Environmental Conservation**<br>**Md. Sakib Raza** | 151 |
| 183 | **Environment Conservation and Human Values**<br>**Dr. Vineeta Singh** | 152 |
| 184 | **Environment Conservation ad Human Values**<br>**Rajesh Kumar Rathi** | 152 |
| 185 | **Need of Conservation of Biodiversity for Protection of the Environment**<br>**Dr. Neelam Baliyan** | 152 |
| 186 | **Role of Environmental Education and Attitudes towards Action Strategies**<br>**Baby Tabassum and Qaisur Rahman** | 154 |
| 187 | ***Insecticide Resistance in Sitophilus Oryzae*, A Storage Pest of Grain, Rice and maize**<br>**Narendra Kumar** | 155 |
| 188 | **The study of human valuesAnd Environmental conservation in understandingAnd managing social-ecological systems**<br>**Kumkum** | 155 |
| 189 | **Hazardous of Heavy Metal in Soil Extraction by Natural Resources**<br>**Sumedha Chauhan and S.S. Yadav** | 156 |
| 190 | **Environment Conservation and Sustainable Development through Indian Culture**<br>**Akbare Azam** | 157 |

| क्रं. | शीर्षक/लेखक | पृ.सं. |
|---|---|---|
| 191 | **Role of a Teacher in Generating the Environment Conservation Awareness**<br>**Dr. Sanjeev Tomar and Mrs. Sujata Malik** | 158 |
| 192 | **Environment Conservation and Ethics: Need and Importance**<br>**Robeena Sarah, Nida Idrees, Priya Bajaj and Baby Tabassum** | 158 |
| 193 | **Human ValuesAnd Professional Ethics in Research**<br>**Sashi Bhushan** | 159 |
| 194 | **Role & Significance of ICT in Higher Education System in Present Era**<br>**Nitin Kumar Tyagi and Shilki Singh** | 159 |
| 195 | **E (electronic) - waste pollution**<br>**Ram Kumar** | 160 |
| 196 | **Changing Pattern of Human Values in Era of Social Media Platforms**<br>**Shazia Jamal and Dr. Ajita Singh Tiwari** | 161 |
| 197 | **Mobile Banking: An Outlook For New Digital Payment System In India**<br>**Dinesh Joshi** | 161 |
| 198 | **Digital India and Human Values**<br>**Arun Kumar** | 162 |
| 199 | **Impact of Social Media on Human Values**<br>**Sachin Kumar Verma** | 162 |
| 200 | **Digital India and Human Values**<br>**Neetu Narula** | 163 |
| 201 | **Digital India and Human Values**<br>**Aayushi Saini** | 164 |
| 202 | **Human Values in Digital India**<br>**Mrs. Indu Solanki and Mr. Ramgopal Singh** | 165 |
| 203 | **Unpacking of Digital India**<br>**Dr. Mudit Singhal** | 165 |
| 204 | **Emerging Technology in Human Values: NeedAnd Challenges**<br>**Ashish Saini** | 166 |
| 205 | **Human Values Accelerating Digital India**<br>**Aanchal Jain** | 166 |
| 206 | **The Impact of ICT on Academic Achievement of Physical.....**<br>**Mr. Pravesh Kumar and Dr. Meenakshi Sharma** | 168 |
| 207 | **A Study: SWYAM is an Indigenous Platform of Online Learning for Faculty and Students in Digital India**<br>**Raju** | 167 |

| क्रं. | शीर्षक/लेखक | पृ.सं. |
|---|---|---|
| 208 | **Human valuesAnd professional ethics in Pharmacy Education**<br>**Ayasha Saiffi And Dipesh** | **168** |
| 209 | **Need of Value System among Students: An ImportantAspect of NAAC**<br>**Seema Teotia** | **169** |
| 210 | **Egg-Shell Morphology of Selected Pthirapteran Species (Phthiraptera: Insecta)**<br>**Ghazi Khan and AftabAhmad** | **170** |
| 211 | **Vision 2020: A New Era in India**<br>**Faiyazur Rehman** | **170** |
| 212 | **Concept of Education– An Interpretation by the Judiciary**<br>**Dr. Mukul Gupta** | **171** |
| 213 | ***In vitro* Biology of an Amblyceran Common Mynah louse, *M yrsidea invadens* (Phthiraptera: Insecta)**<br>**Ghazi Khan, Shalini Roy, Surendra Kumar and A. K. Saxena** | **171** |
| 214 | **The Importance of Values in Human Life**<br>**Bobinder** | **171** |
| 215 | **Higher Education in India Challenges and Prospects**<br>**Vivekanand Singh. Dr. Kumudlata Singh** | **172** |
| 216 | **Need of Skill Development in Indian Education System**<br>**Dr. Mudit Singhal** | **172** |
| 217 | **Social Skills among Secondary School Students with Reference to their Personal Background Information**<br>**Laxmi Joshi** | **173** |
| 218 | **An Exploration of the Structural Elements in Aravind Adiga's Novel: The White Tiger**<br>**Samra Saeed** | **174** |
| 219 | **Education Policy in India – Issues and Challenges**<br>**Priti Lour** | **175** |
| 220 | **Comprative Study of Values in Indian Ideology, Science and Human Psychology**<br>**Priti Lour** | **176** |
| 221 | **Education and Human Values**<br>***Bhagya Bhatnagar*** | **176** |
| 222 | **Role of Professional Ethics in Scientific Research: A Study on Published Research Material Affecting the Educational Standards of Our Country**<br>**Tanveer Ahmad Khan** | **177** |

| क्रं. | शीर्षक/लेखक | पृ.सं. |
|---|---|---|
| 223 | **A Socio-Legal Study of Cruelty Against Indian Women**<br>**Amit Kumar** | 178 |
| 224 | **Contents and Methods of Value Education**<br>**Dr. Rajni Bala and Dr. Monika Khanna** | 179 |
| 225 | **The Motion of Weak Plane Shock Wave in Highly Viscous Medium**<br>**Arvind Kumar, and Kamlesh Kumar** | 179 |
| 226 | **Human Values in Indian Culture**<br>**Dr. Priyanka Verma** | 179 |
| 227 | **An Interpretation of Sexual Harassment in India**<br>**Dr. Renu Garg** | 180 |
| 228 | **Role of education in developing environmental ethics in students**<br>**Mohd. Waqar Raza** | 180 |
| 229 | **Education and Human Values**<br>**Sumaira Jameel Khan and Dr. Pravesh Kumar** | 181 |
| 230 | **Eduction and Human Values**<br>**Ms. Pooja** | 181 |
| 231 | **Environment Conservation And Human Values**<br>**Ms. Chhavi Jain** | 182 |
| 232 | **Issues and Challenges**<br>**Dr. Mukta Verma** | 183 |
| 233 | **Professional Ethics in Teaching Community: A Global Concern**<br>**Dr. Surendra Pal** | 183 |
| 234 | **Indian culture and Human values**<br>**Dr. Rajesh Kumar Sharma and Mr. Pradeep Kumar Sharma** | 184 |
| 235 | **Contribution of Professional Ethics in Education**<br>**Ms. Amandeep Kaur** | 185 |
| 236 | **Role of Right to Education in Present Socio-Legal Scenario: Antidiabetic Potential of Edible Plants and Phytochemicals**<br>**Mohd Kamil Hussain and Krishan Kumar Arya** | 185 |
| 237 | **Professional Ethics in Teaching : A Keystone of Teachers Profession**<br>**Namita Mandal** | 186 |
| 238 | **Peace Education in India**<br>**Dr. Neeraj Kumar Parashari** | 187 |
| 239 | **Professional Ethics and Professional Code of Ethics for Teachers**<br>**Pooja and Ankush** | 187 |
| 240 | **Human Values in Educational Organizations**<br>**Dr. Yogeshver Prasad Sharma** | 188 |

| क्रं. | शीर्षक/लेखक | पृ.सं. |
|---|---|---|
| 241 | **Education And Human Values**<br>**Varsha Pant** | 188 |
| 242 | **The Role of Human Activities in Solid Waste Management**<br>**Dr. Pushpanjali Arya and Dr. Archana Kukreti** | 189 |
| 243 | **Teacher and professional Ethics**<br>**Shally Verma and Dr. Ravi Kant Sharma** | 190 |
| 244 | **Environment Conservation And Human Value**<br>**Priya Shrivastava** | 191 |
| 245 | **An Appraisal Study of Our Education Policy with in Judicial Limitation**<br>**Priti Lour** | 192 |
| 246 | **Understanding indian value system through ancient holy Scriptures**<br>**Dr. Mamta Aswal** | 193 |
| 247 | **Gandhian Philosophy And Human Values**<br>**Dr. Bhaskar Chaudhary** | 193 |
| 248 | **Human Values and Digital India**<br>**Dr. Stuti Vashishtha** | 194 |
| 249 | **Bringing Excellence in Economics, Commerce and Management Stream of Education**<br>**Kajol** | 195 |
| 250 | **Our Past and Human Values**<br>**Dr. Shilpi Sharma** | 196 |
| 251 | **डिजिटल इंडिया और राष्ट्रीय सुरक्षा**<br>रितेश कुमार चौरसिया | 197 |
| 252 | **उच्च शिक्षा की गुणवत्ता में ह्रास - कारण तथा समाधान**<br>डॉ0 दिग्विजय पचौरी एवं डॉ0 बृजवाला शर्मा | 198 |
| 253 | **साहित्य एवं मानवीय मूल्य**<br>डॉ0 श्रीमति छाया रानी एवं रितेश कुमार चौरसिया | 199 |
| 254 | **डिजिटल इंडिया एवं मानवीय मूल्य**<br>प्रीति दीक्षित | 200 |
| 255 | **मानवीय मूल्यों के सन्दर्भ में चित्रकला का दायित्व**<br>डॉ० मनीशा शर्मा | 201 |
| 256 | **भारतीय संविधान एवं मानव मूल्य**<br>मोहम्मद नासिर | 203 |
| 257 | **शिक्षा में मानव मूल्य और व्यावसायिक नैतिकता की भूमिका**<br>डॉ0 नीता गुप्ता एवं कीर्ति सिंह | 204 |

| क्रं. | शीर्षक/लेखक | पृ.सं. |
|---|---|---|
| 258 | वर्तमान शिक्षक प्रशिक्षण का मानवीय मूल्य संरक्षण में योगदान<br>ऋचा राघव | 205 |
| 259 | पर्यावरण संरक्षण एवं मानवीय मूल्य<br>डा0 बबली रानी | 205 |
| 260 | शिक्षा एवं मानवीय मूल्य<br>डॉ0 विजय सिंह | 206 |
| 261 | विपश्यना एवं प्रेक्षा की तनाव प्रबंधन में भूमिका-एक समीक्षात्मक अध्ययन<br>अथोक कुमार यादव एवं सुनील कुमार श्रीवास | 207 |
| 262 | माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धियों एवं मानवीय मूल्यों का तुलनात्मक अध्ययन<br>डा0 रोहित कुमार | 208 |
| 263 | वर्तमान शिक्षा व्यवस्था में मूल्यों पर अधारित शिक्षा की आवश्यकता<br>आराधना सिंह | 208 |
| 264 | औपनिवेशिक भारत में स्त्री शिक्षा<br>(उन्नीसवीं शताब्दी के भारत के विशेष सन्दर्भ में)<br>डा0 शशि नौटियाल | 209 |
| 265 | आधुनिक शिक्षा और मूल्यो पर मीडिया का प्रभाव<br>डॉ० मानिक रस्तोगी एवं संजय प्रसाद | 210 |

# वर्तमान परिप्रेक्ष्य में मानवीय-जीवन में मूल्यों की आवश्यकता

**उमा गुप्ता**
*शोधार्थी, (शिक्षा विभाग), ज्योति कॉलेज ऑफ मैनेजमेण्ट साइंस एण्ड टैक्नोलॉजी, बरेली (उ०प्र०)*

## सारांश

मानवीय मूल्यों की कसौटी बहुजन हिताय से सिद्ध होती है अर्थात् जब व्यक्ति निज से ऊपर उठकर सोचता है और उसका लक्ष्य या उद्देश्य समाज का कल्याण बन जाता है। तब माना जाता है कि मानवीय जीवन में मानवीय मूल्यों का विकास होर हा है क्योंकि मानव मूल्य, व्यक्ति के सद्गुणों के निर्माण, विकास व उन्नयन के लिए आवश्यक होते हैं। विचार, विश्वास, आस्था व निष्ठा आदि की श्रेष्ठ उपस्थिति से ही मानव मूल्यों का विकास सम्भव है। क्योंकि व्यक्ति के अन्तःकरण द्वारा नियन्त्रित होते व दूसरी ओर संस्कृति और परम्परा द्वारा क्रमशः निस्सृत एवं परिपोशित होते हैं।

अंग्रेजों के आगमन से पूर्व भारतीय शिक्षा व मानवीय शिक्षा, मूल्यपरक हुआ करती थी। इसी कारण मूल्यपरक शिक्षा अलग से विषय के रूप में नहीं रखी गई थी लेकिन अंग्रेजों के आगमन के बाद हम भारतीयों की शिक्षा अलग से विषय के रूप में नहीं रह गई और आज वर्तमान में समाज इस संक्रमण–काल से गुजर रहा है। वह कभी पुरातन मूल्यों की ओर झुकता है तो कभी आधुनिकता की भ्रामक चमक–दमक की ओर। ऐसी स्थिति में मानवीय जीवन में मूल्य शिक्षा की अत्यन्त आवश्यकता है ताकि वह समाज को सही दिशा दे सके।

वर्तमान में मानवीय मूल्यों के उन्नयन हेतु अनेक मूल्य जैसे– सामाजिक, राजनैतिक, वैश्विक, सांस्कृतिक, नैतिक, धार्मिक, पर्यावरणीय, वैज्ञानिक, भौगोलिक आदि जो मानव जीवन को प्रभावित करते हैं। इन समस्त विषयों में मनोवैज्ञानिक ढंग से मूल्य समाहित करके मानवीय–मूल्यो पर बल दिया जाना चाहिए और आधुनिक ढंग से इन्हें स्वीकार किया जाना चाहिये। इसके साथ–साथ आधुनिक समय में मानवीय मूल्यों के विकास हेतु सामाजिक जागरूकता, मूल्यपरक–शैक्षिक कार्यक्रमों का आयोजन, निरौपचारिक शिक्षा पर बल, स्त्री–सम्मान, सभी धर्मों के प्रति आदर–भावना, उत्तरदायित्व की भावना, उपयुक्त पाठ्यक्रम व शिक्षण–विधियों का प्रयोग, कथन–करनी में भेद की सम्भावना नगण्य आदि पर विशेष रूप से ध्यान आकर्षण की आवश्यकता है। जिससे आधुनिक समय मेंमानवीय मूल्यों की आवश्यकता की पूर्ति सही दिषा में सम्भव है।

**मुख्य शब्द–** कल्याण, संस्कृति, मूल्यपरक, परिपोषित, जागरूकता, निरौपचारिक, उत्तरदायित्व आदि।

◆◆◆◆

# शिक्षा में मानवीय मूल्य एवं योग का योगदान

**अमित माहेश्वरी**
*छात्र, अध्ययन केन्द्र बरेली कालेज बरेली (उ०प्र०), उ0प्र0राजर्शि टण्डन मुक्त विश्वविद्यालय इलाहाबाद (उ०प्र०)*

**सारांश**

हमारे समाज में शिक्षा एक ऐसा साधन है जो व्यक्ति एवं समाज का सर्वांगीण विकास करने में सक्षम है साथ ही साथ यह व्यक्ति के मानसिक एवं बौद्धिक विकास का महत्वपूर्ण साधन भी है यही एक मार्ग ऐसा है जिसके द्वारा व्यक्ति एवं शिक्षार्थी असंख्य उपलब्धियों को प्राप्त कर सकते हैं। परन्तु वर्तमान संदर्भ में शिक्षा मानवीय मूल्यों परम्पराओं के प्रति संवेदनहीन सी प्रतीत हो रही है जिसके कुप्रभाव के कारण विद्यार्थी हिंसक एवं क्रूर अमानवीय वृत्तियों की ओर अग्रसर होता जा रहा है।

योग शिक्षा को यदि व्यक्ति अपने व्यवहार में ही अपना लें तो भी आश्चर्यजनक बदलाव देखे जा सकते हंै। इस मार्ग का अनुसरण करने मात्र से ही अन्तःकरण शुद्धि के साथ बौद्धिक एवं मानसिक विकास तो होता ही है इसके अतिरिक्त अनेक संभावनायें बन जाती है जिनके द्वारा व्यक्ति एवं विद्यार्थी श्रेष्ठ मूल्यों व नैतिक आदर्शों से जुड़कर भय मुक्त जीवन यापन करता है।

◆◆◆

# भारतीय परिपेक्ष्य में मूल्य शिक्षा

**संतोष कुमार पाण्डेय**
*छात्र, बी.एड (प्रथम वर्ष), रा0 रज़ा पी० जी० कॉलेज, रामपुर (उ०प्र०)*

**सारांश**

वर्तमान समय मेंमूल्य शिक्षा का महत्व बहुत ज्यादा है क्योंकि शिक्षा से मनुष्य में अच्छे मानवीय गुणों का विकास होता है। मूल्य शिक्षा के द्वारा चारित्र, ईमानदारी, कर्त्तव्य परायणता, नैतिक मूल्य, सामाजिक मूल्य, मानवीय मूल्य, न्यायिक मूल्य, धार्मिक मूल्य, सौन्दर्यपरक मूल्य, मनोवैज्ञानिक मूल्य, भौतिक मूल्य का विकास सम्भव है। इस प्रकार कहा जा सकता है कि मूल्य शिक्षा मानव को जीवन की अमूल्य निधि है इस निधि के परिणाम स्वरूप व्यक्ति का समाज में एक उन्नति के शिखर पर पहुँच पाता है, और इन सभी गुणों से सम्पन्न व्यक्ति अपना ही नही समग्र राष्ट्र एवं पूरे विश्व को एक मानवीय मूल में अतुलनीय योगदान दे पायेंगा। मूल शिक्षा के

द्वारा ही विश्व कोमानव के लिये बेहतर बनाया जा सकता है। अर्थात कहा जा सकता है कि हमारे देश मे प्राचीन समय से ही मानवीय मूल्य पर जोर दिया जाता रहा है। परंतु वर्तमान समय और अधिक महत्व बढ़ गया है। मानवीय मूल्यों का शिक्षा के बिना मानव का जीवन निरर्थक है अर्थात उस व्यक्ति और पशुओं में अन्तर नहीं किया जा सकता है। वर्तमान समय में हर व्यक्ति अपने बच्चो को भी मानवीय मूल्य शिक्षा पर अधिक जोर दे रहे है। किसी भी राष्ट्र के विकास में मूल्य शिक्षा नींव का पत्थर होती है।चरित्र, ईमानदारी, सत्यनिष्ठा, कर्त्तव्य परायणता आदि का सृजन शिक्षा से ही संभव है।

◆◆◆

# शिक्षा एवं मानवीय मूल्य

**डॉ0 अनीता जायसवाल**
*असिस्टेंट प्रोफेसर शिक्षा शास्त्र, साहू राम स्वरुप महिला महाविद्यालय, बरेली*

**सारांश**

'मूल्य शिक्षा' समाज की आधारशिला है। समाज में जिस प्रकार की शिक्षा व्यवस्था होगी, उसी प्रकार के समाज का निर्माण होगा अतः इस बात का सदैव प्रयत्न किया गया है कि शिक्षा के उद्देश्य समाज के उद्देश्यों के अनुकूल हो।

इसी बात को ध्यान में रखकर विभिन्न देशों के विभिन्न विचारकों ने विभिन्न कालों में मूल्य शिक्षा कि विभिन्न उद्देश्यों पर बल दिया है। जैसे– प्राचीन भारत में मूल्य शिक्षा के नैतिक सामाजिक और बौद्धिक उद्देश्यों पर बल दिया। मध्यकालीन यूरोप में शिक्षा का उद्देश्य मृत्यु के बाद जीवन की तैयारी करना था आधुनिक यूरोप में शिक्षा का उद्देश्य– मृत्यु के बाद के जीवन की तैयारी करना था। आधुनिक यूरोप में शिक्षा के इस उद्देश्य में विश्वास नहीं करता है। आदर्शवादी–सार्वभौमिक मूल्यों और आदर्शों को सबसे ऊँचा स्थान देते हैं। अतः आदर्शवादी समाज में शिक्षा का मुख्य लक्ष्य है– सार्वभौमिक मूल्यों और आदर्शों की प्राप्ति। क्योंकि वे मूल्य और आदर्श सार्वभौमिक हैं इसीलिये आदर्श और उन्नत समाज में शिक्षा के उद्देश्य व्यक्तिगत या निश्चित न होकर 'सार्वभौमिक' होते हैं।

मानव के विकास का मूल साधन है शिक्षा, शिक्षा के द्वारा व्यक्ति, समाज एवं राष्ट्र सभी का विकास होता है दार्शनिकों का मानना है कि शिक्षा मनुष्य को अपने जीवन के उद्देश्यों कों प्राप्त करने के योग्य बनाती है। शिक्षा मनुष्य का समाजीकरण करती है, सामाजिक नियन्त्रण रखती है। और सामाजिक परिवर्तन करती है। मनुष्य दर्शन का केंद्र होता है। दार्शनिक मनुष्यों

के व्यवहारों, उसके वास्तविक स्वरुपों को जानने का प्रयास करते है, और मनुष्य के जीवन का लक्ष्य तय करते हैं और इन सभी बातों के ज्ञान एवं प्रशिक्षण के लिये वे शिक्षा को अत्यावश्यक बताते हैं। अतः हम कह सकते हैं कि दार्शनिकों की दृष्टि से शिक्षा मनुष्य के जीवन में अंतिम उद्देश्य की प्राप्ति का साधन है।

◆◆◆

# शिक्षा एवं मानवीय मूल्य

**डॉ0 अनीता देवी एवं डॉ0 संजीता अग्रवाल**
*[1]एसो0 प्रो0, समाजशास्त्र, डॉ0 राम मनो0 लो0 राजकीय महाविद्यालय, आँवला, बरेली, [2]असि0 प्रो0, समाजशास्त्र, आर्य महिला महाविद्यालय, शाहजहॉपुर (उ०प्र०)*

## सारांश

मूल्य समाज के अन्दर स्थपित नियम तथा आदर्श है जिनके आधार पर किसी समाज के सभ्य प्रगतिशील व अनुशासित होने की कल्पना की जाती है। डॉ0 राधा कमल मुखर्जी के अनुसार 'मूल्य सामजिक रूप से मान्यता प्राप्त वे इच्छाये अथवा लक्ष्य हैं जिनका सामजिक सीख या समाजीकरण की प्रक्रिया द्वारा व्यक्ति के जीवन में अन्तरीकरण हो जाता है और इस प्रकार ये भावनात्मक आधार पर हमारी प्राथमिकतायें, मानदण्ड़ और आकांक्षाये बन जाते है।'' मूल्य ही इस बात का निर्धारण करते है कि व्यक्ति के लिये कौन सा व्यवहार नैतिक है और कौन सा अनैतिक। मूल्यों के द्वारा मनुष्य का सामान्य व्यवहार नियन्त्रण होता है। यदि मनुष्य स्वीकृत व्यवहार करते है तो मूल्यों की रक्षा हो रही होती है तथा यदि समाज के अनुसार स्वीकृत व्यवहार नही हो रहा होता तो कहा जाता है कि मूल्य परिवर्तित हो रहे है।

मानव का मूल्यांकन उसकी श्रेष्ठता का निर्धारण उसके भावों एवं कार्यों में निहित है। शिक्षा का उद्देश्य होता है कि मानव को सही अर्थो मे मानव बनाया जाये। उसमे आत्मनिर्भरता की भावना को उत्पन्न करे, देशवासियों का चरित्र निर्माण करें। वर्तमान में स्वार्थपरता लिप्सा भाईचार मिथ्याचरण की भावनाचारा और पनप रही है। समाज मे व्याप्त अहिंसा, असंतोष, शत्रुभाव, असहनशीलता आदि उनके विसगतियां नैतिक मूल्यों के अवमूल्यन का ही परिणाम है। यह बिषम स्थिति समाजशस्त्रियों के लिये चिन्ता का विषय है। शिक्षक होने के नाते हमे यह देखना है कि हम अपने विद्यार्थियों को कैसे सकारात्मक और सरचंनात्मक रास्ते पर प्रेरित करे। आज हमें अपने विद्यार्थियों को न केवल कर्त्तव्यों के प्रति जागरूक करना है बल्कि एक ऐसा वातावरण बनाना है जहॉ सभी अपने कार्यो को तत्परता एवं गम्भीरता से करें। हमारी

संस्कृति हमे एकता समरसता सहयोग भाईचारा सत्य, अहिंसा, व्याग, विनम्रता, समानता आदि जैसे मूल्य जीवन मे अपना कर 'बसुधैव कुटुम्बकर' की भावना से आगे बढने के लिए प्रेरित करती है। नई शिक्षा नीति में मूल्य परक शिक्षा के माध्यम से शैक्षणिक संस्थानों में कर्त्तव्यो का महत्व बताने के लिये एक बिशिष्ट इको सिस्टम विकसित करने का प्रयास किया जा रहा है। नई चुनौतिओं का मुकावला हम अपने विद्यर्थियो के भीतर मानवीय मूल्यो का विकास करके ही कर सकते हैं।

अतः आज गुणवतापरक नवाचारयुक्त कौशलयुक्त शिक्षा के साथ मूल्यपरक शिक्षा देकर युवाओं, विद्यार्थियों को अच्छा नागरिक बनाने की महती आवश्यकता है।

◆◆◆◆

# स्नातक स्तर पर शिक्षण के सन्दर्भ में सरकारी एवं निजी प्रबन्धतंत्र (प्राईवेट) महाविद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों के मूल्यों एवं सामाजिक सफलता के मध्य सह-सम्बन्धों का तुलनात्मक अध्ययन

**डॉ० नीतू चावला**
*प्राचार्य, मंगलमय इंस्ट्टीयूट ऑफ मेनेजमेन्ट एण्ड टैक्नोलॉजी, नोएडा (उ०प्र०)*

## सारांश

समाज और व्यक्ति एक दूसरे के पूरक होते है, एक के बिना हम दूसरे के अस्तित्व की कल्पना भी नही कर सकते मैकाइवर तथा पेज के अनुसार–"व्यक्ति तथा समाज का सम्बन्ध एक तरफ का सम्बन्ध नही है इनमें से किसी एक को समझने के लिए ही आवश्यक है।" अरस्तू के अनुसार ''मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है इस बात का सरल अर्थ ये है कि मनुष्य अपने अस्तित्व और विकास के लिए समाज पर जितना निर्भर है, उतना और कोई प्राणी नहीं। मनुष्य में हम जो भी कुछ सामाजिक गुण देखते है वह समाज की ही देन है।" एक व्यक्ति की प्राथमिक पाठशाला उसका अपना परिवार होता है और परिवार का एक अंग है जहाँ हमें सबसे पहले शिक्षा मिलती है। परिवार और समाज के अनुरूप ही एक व्यक्ति में सामाजिक गुणों तथा विशेषताओं का विकास होता है। आज हमारे समाज का स्वरूप तेजी से परिवर्तित हो रहा है, ये भी सही है कि परिवर्तन इस संसार का नियम है लेकिन जिस तरह से हमारे समाज में मूल्यों का ह्रास होता जा रहा है, वो सही नहीं है। प्राचीन काल में पाठशालाओं में धार्मिक और नैतिक शिक्षा पाठयक्रम का अभिन्न अंग थे। अंग्रेजों ने भारतीय शिक्षा नीति को धार्मिक तथा मूल्य शिक्षा से बिलकुल अलग रखा, उन्होनें राज्य द्वारा संचालित विद्यालयों में इस शिक्षा को पूर्ण रूप से बंद करके

धार्मिक तटस्थता की नीति का अनुसरण किया। स्वतन्त्र भारत में भी देश को धर्म निरपेक्ष घोषित कर दिया कि राज्यकोष से चलाई जाने वाली किसी भी संस्था में किसी प्रकार की धार्मिक शिक्षा नहीं दी जाएगी।

◆◆◆◆

# विद्यालयों में मूल्य शिक्षा की आवश्यकता

**डॉ0 प्रशान्त[1] एवं राधे श्याम तिवारी[2]**
*[1]विभागाध्यक्ष, डा0 आस्था स्मृति शिक्षा महाविद्यालय, लखनऊ, [2]शोधार्थी, हिमालयन विश्वविद्यालय, इटानगर (अरूणाचल प्रदेश)*

## सारांश

प्राचीन काल से लेकर वर्तमान काल तक दर्शन ने शिक्षा के उद्देश्य को प्रभावित किया है। प्राचीनकाल में शिक्षा के उद्देश्य मोक्ष की प्राप्ति व आध्यात्मिक विकास होता था। उसके बाद मध्यकाल में शिक्षा का उद्देश्य धर्म का प्रचार–प्रसार हो गया उसके बाद शिक्षा के उद्देश्य प्रत्येक दर्शन के अनुसार बदलते रहे। शिक्षा के उद्देश्य ये परिवर्तन का कारण मानव जाति का विकास ही रहा है या कहा जा सकता है कि बालक का सर्वांगीण करना शिक्षा के 3 अंगों में शिक्षक छात्र व पाठ्यक्रम को शामिल किया जाता है और तीनों में से छात्र को छोड़कर दोनों का उद्देश्य बालक के अन्दर सद्गुणों का विकास करना है। या कहा जा सकता है बालक के अन्दर मूल्यों का विकास करना है। भौतिकवादी युग में विद्यर्थियों के समक्ष मूल्यों की बात करना एक ऐसी घटना की चर्चा करना है जिसके बारे में छात्रों ने कभी भी नहीं सुना। वर्तमान में अंग्रेजी माध्यम के विद्यालय तो भौतिकवाद की सबसे बड़ी प्रयोगशाला हो गए हैं। वहां बालक सभी प्रकार की शिक्षा ग्रहण करता है लेकिन मूल्य शिक्षा का उसके जीवन में कोई महत्व नहीं है अगर बात हिन्दी माध्यम के विद्यालयों की करें तो पाएंगे तो वहां के छात्र भी लगभग उसी दिशा में प्रयासरत हैं वे मूल्यों को नहीं मानते हैं। अन्ततः कहा जा सकता है कि विद्यार्थियों के अन्दर वर्तमान समय में मूल्यों के प्रति उदासीनता दिखाई देती है। हिन्दी माध्यम के विद्यार्थी हो चाहें अंग्रेजी माध्यम के विद्यार्थी मूल्यों के प्रति कोई भी जागरूक नहीं पड़ता है। दोनों माध्यम के विद्यार्थियों में मूल्यों का ह्रास हो रहा है। इस प्रकार मूल्यों के माध्यम से मानव जाति सहित पूरे राष्ट्र को बचाया जा सकता है। मूल्यों के माध्यम से ही व्यक्ति का सामाजिक विकास आध्यात्मिक विकास, नैतिक विकास आदि प्रत्यक्ष रूप से जुड़े हैं। विद्यार्थियों को प्रारम्भ से मूल्य की शिक्षा प्रदान कर उनका आध्यात्मिक, आत्मिक, संवेगात्मक आदि विकास किया जा सकता है।

◆◆◆

# जीवन में मूल्य आधारित शिक्षा का महत्व

**मनु सिंह[1] एवं डॉ० अंकुर त्यागी[2]**
*[1]शोधार्थी (शिक्षाशास्त्र), ज्योति विद्यापीठ महिला विश्वविद्यालय, जयपुर, राजस्थान*
*[2]शोध निर्देशिका (शिक्षाशास्त्र), ज्योति विद्यापीठ महिला विश्वविद्यालय, जयपुर, राजस्थान*

## सारांश

आज भारत के युवा वर्ग को ऐसी शिक्षा की आवश्यकता है जो उनमें सामाजिक, नैतिक, सांस्कृतिक एवं आध्यात्मिक मूल्यों को अपने जीवन में अपनाने को प्रेरित करें तथा वे मानवता पर खरे सिद्ध हो सकें। निःसन्देह विद्यार्थियों में इस प्रकार के मूल्यों को स्थापित करने के लिये शिक्षकों को तैयार करना पड़ेगा यदि हमारे शिक्षक ऐसे मूल्यों से युक्त होंगे तभी वे सशक्त हो सकेंगे और अपने विद्यार्थियों में मूल्यों का प्रस्फुटन कर सकेंगे। जब हम शिक्षा की बात करते हैं तो सामान्य अर्थो में यह समझा जाता है कि इसमें हमें वस्तुगत ज्ञान प्राप्त होता है तथा जिसके बल पर कोई रोजगार प्राप्त किया जा सकता है। ऐसी शिक्षा से व्यक्ति समाज में आदरणीय बनता है। समाज और देश के लिए इस ज्ञान का महत्व भी है क्योंकि शिक्षित राष्ट्र ही अपने भविष्य को सँवारने में सक्षम हो सकता है। आज कोई भी राष्ट्र विज्ञान और तकनीक की महत्ता को अस्वीकार नहीं कर सकता, जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में इसका उपयोग है। वैज्ञानिक विधि का प्रयोग कृषि और पशुपालन के क्षेत्र में करके ही हमारे देश में हरित क्रांति और श्वेत क्रांति लाई जा सकी है। अतः वस्तुपरक शिक्षा हर क्षेत्र में उपयोगी है। शिक्षा व्यक्ति के मानसिक व बौद्धिक विकास का महत्त्वपूर्ण साधन होता है। शिक्षा के माध्यम से व्यक्ति को कुसंस्कारों व मानसिक गुलामी से बचाया जा सकता है। इसके द्वारा विद्यार्थियों में आत्मविश्वास, नई चेतना व जोश पैदा कर सामाजिक विकृतियों, अंधविश्वासों, गैर बराबरी की स्थितियों, क्रूरता व शोषण के विरुद्ध खड़ा किया जा सकता है। आज नई पीढ़ी जीवन के विभिन्न क्षेत्रों में नित नई उपलब्धियां प्राप्त कर रही है। अनेक भौतिक उपलब्धियां प्राप्त कर अंतरिक्ष में मनुष्य भेजने की तैयारियां चल रही हैं। मनुष्य ने शिक्षा से असीमित संभावनाओं के द्वार खोल दिए हैं, लेकिन आज हम शिक्षा में ऐसी कमी अनुभव करते हैं, जिसका निदान आवश्यक है।

**मुख्य शब्द** : मूल्य आधारित शिक्षा, मूल्य शिक्षा का जीवन में महत्व व आवश्यकता, वर्तमान शिक्षा में मूल्यों का अभाव, मूल्य आधारित शिक्षा हेतु सुझाव।

◆◆◆

# मूल्याधारित शिक्षा में सतत् परिवर्तन : एक विमर्ष

**डॉ0 सुनीता जायसवाल**
*एसोसिएट प्रोफेसर/विभागाध्यक्षा संस्कृत, राजकीय महिलास्नातकोत्तर, महाविद्यालय, रामपुर–244901 (उ0प्र0)*

## सारांश

भारतीय शिक्षा प्रणाली वैदिक काल से आरम्भ हुई। वैदिक मूल्यों पर आधारित वैदिक जीवन दर्शन में सर्वप्रथम 'ऋतम्' नामक नैतिक जीवन मूल्य ऋषियों के वाक्यों में आया जो भारतीय शिक्षा में मूल्य प्रणाली तथा वैदिक जीवन दर्शन के विकास का प्रथम सोपान था।

वैदिक जीवन दर्शन में मूल्य प्रणाली के विकास में उपनिषद् काल में 'ज्ञान' को ही महत्तवपूर्ण मूल्य माना गया। मध्य काल में वैदिक मूल्य 'ऋतम्', 'ज्ञान' तथा 'निर्वाण' आदि समाप्त हो रहे थे, तभी एक बहुत बड़ा value system आया जिसे 'भक्ति' कहा गया। महाभारतकाल में 'निष्काम कर्मयोग' को भी महत्त्वपूर्ण नैतिक मूल्य माना गया।

आधुनिक शिक्षा प्रणाली में वैदिक मूल्यों का क्षरण होता गया तथा आधुनिक युग में दासता– गुलामी–नौकरी (service) की प्रवृत्ति को ही मूल्य के रुप में स्थापित किया गया। किन्तु शनैः शनैः वैदिक मूल्य पुनः स्थापित हुए। पुनर्जागरण काल में आर्य समाज के संस्थापक महर्षि दयानंद सरस्वती जैसे महापुरुष एवं समाज सुधारक ने वैदिक जीवन दर्शन तथा मूल्यों की पुनर्स्थापना के लिए 'Go to veda' अर्थात् 'वेदो की ओर लौटो' का उद्घोष किया था।

पाश्चात्य संस्कृति एवं सभ्यता का अन्धानुकरण करने वाले भोगोन्मुखी भौतिकतावादी वैश्वीकरण के वर्तमान युग में मानव जीवन के परम्परागत वैदिक मूल्यों का ह्रास होता जा रहा है। अतः एक आर्दश शिक्षक का यह कर्त्तव्य होना चाहिए कि वह मानव संसाधनों को समुचित वैदिक मूल्यों से अनुप्राणित भारतीय संस्कृति; संस्कार एवं मूल्याधारित नैतिक शिक्षा प्रदान कर प्रशिक्षित करे ताकि वैदिक संस्कार एवं मूल्याधारित शिक्षा के द्वारा विद्यार्थियों की आदतों; अभिवृत्तियों; रुचि; व्यवहार; व्यक्तित्व; आचरण– चरित्र तथा स्वभाव में परिवर्तन; परिवर्द्धन; सशोधन एवं संवर्द्धन किया जा सके।

नोट– उक्त निष्कर्ष 50 वैदिक सन्दर्भों पर आधारित है।

◆◆◆◆

# छात्र जीवन और मूल्यों की आवश्यकता

**डॉ0 रवि कुमार[1] एवं अनिता सिंह[2]**
*[1]एसोसिएट प्रोफेसर, मुरादाबाद, [2]शोधार्थिनी, एम0जे0पी0 रूहेलखण्ड विश्वविद्यालय, बरेली (उ०प्र०)*

## सारांश

वर्तमान समय में सामाजिक, नैतिक, सांस्कृतिक एवं आध्यात्मिक मूल्यों का खण्डन हो रहा है। धर्म कमजोर हो रहा है। शक्ति एवं ज्ञान का दुरूपयोग हो रहा है। राष्ट्रों का एक दूसरे के प्रति विश्वास नहीं है ऐसी विकट स्थिति में शिक्षा को मूल्य–उन्नमुख बनाना अत्यन्त आवश्यक है। केवल मूल्य–उन्नमुख शिक्षा ही वैयक्तिक हित, सामाजिक हित, प्रेम, शान्ति सदभावना तथा विवेक को विकसित कर सकती है। वर्तमान युग में व्याप्त राजनीतिक जनाव का मुख्य कारण यही है कि छात्रों में ज्ञान की तो वृद्धि हो रही है परन्तु नैतिकता विलुप्त हो रही है। सत्य, न्याय एवं अहिंसा ही ऐसे नैतिक मूल्य हैं जो मानवता के छात्रों पर मरहम का काम कर सकते हैं। मूल्य–उन्नमुख शिक्षा ही मनुष्य को प्रेरित कर सकती है कि वह अणु शक्ति का प्रयोग मानवता के विनाश के लिए नहीं अपितु मानवता की भलाई के लिए करें। सामाजिक, नैतिक एवं आध्यात्मिक मूल्यों का विकास एवं प्रचार शिक्षा का ही काम है इन्हीं मूल्यों में जीवन संगठित करने की शक्ति निहित है। मूल्य शिक्षा छात्रों को गतिशील एवं जागरूक बनाती है। यह उसमें जीवन के प्रति उदार दृष्टिकोण विकसित करती है। इसी के कारण वह स्वार्थ त्याग कर समाजसेवा के कार्यों में रूचि लेने लगता है। केवल इतना ही नहीं बल्कि उस में जीवन की समस्याओं का सामना करने का साहस पनपने लगता है। मूल्य–उन्मुख शिक्षा उसे जीवन की समस्याओं को विवेकापूर्ण प्रयत्नों से हल करने के योग्य बनाती है। इसके साथ ही यह शिक्षा छात्रों के मूल–प्रवृत्तियों तथा संवेगों के परिष्कार में सहयोग प्रदान करती है। यह काम–भावनाओं को स्वस्थ दिशा की ओर अग्रसर करती है। मनुष्य मेंकाम–भावना इनती अधिक शक्तिशाली होती है किमानव जीवन और समाज इसके प्रभाव से बच नहीं सकते। मूल्य–उन्मुख शिक्षा इसके परिष्कार में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। यह विद्यार्थियों में सामाजिक चेतना उत्पन्न करती है जो व्यक्ति और समाज की उन्नति के लिए आवश्यक है। आज के भौतिकवादी युग में मनुष्य का दृष्टिकोण भौतिकवादी हो गया है इसके परिणामस्वरूप अनके विवाद जन्म लेने लगे हैं इन नैतिक विवादों को शान्त करने के लिए मूल्य–उन्मूख शिक्षा अत्यन्त आवश्यक है। अगर विद्यार्थियों को मूल्य शिक्षा प्रदान की जाये तो वह देश की प्रगति की ओर अग्रसर होंगे, मूल्यों से जहाँ उनका सर्वांगीण विकास होगा, वहीं विद्यार्थी देशहित के लिए मानसिक रूप से तैयार होगा। हमारे समक्ष जो दृश्य जगत है, सांसारिक प्रपंच है, उसमें ज्ञान का वास्तविक स्वरूप क्या है? मानवीय व्यवहार में अच्छा क्या है? बुरा क्या है? क्या स्वीकार्य तथा क्या त्याज्य है? ये प्रश्न

मानव की जिज्ञासा तथा अन्वेशण के केन्द्र बिन्दु रहे हैं। इन प्रश्नों के सम्यक एवं सर्वमान्य उत्तर की खोज में मनुष्य कभी–कभी परस्पर विरोधी निष्कर्ष बिन्दुओ।पर भी पहुँचा है। क्योंकि ये प्रश्न इतने जटिल एवं दुरूह हैं कि अनन्त समय से मनुष्य इनकी गुत्थी सुलझाने के प्रयासों में अनवरत रूप से संलग्न है। पता नहीं आगे वाले और कितने दिनों तक यह रहस्य मनुष्य को जिज्ञासु बनाये रखेंगे तथा उसकी क्षमताओं के सम्मुख चुनौती प्रस्तुत करते रहेंगे।

◆◆◆

# वर्तमान परिप्रेक्ष्य में शिक्षा एवं मानवीय मूल्यों की प्रासंगिकता

**डॉ0 आफताब जाकरा सिद्दीकी**
*प्रवक्ता, शिक्षा संकाय, सीतापुर शिक्षा संस्थान, रस्यौरा–सीतापुर (उ०प्र०)*

## सारांश

किसी भी सभ्य समाज के लिए शिक्षा प्राण है तथा जीवन मूल्य उसकी आत्मा। मूल्यों का सम्बन्ध जीवन के दृष्टिकोण से है। यदि मूल्य को जीवन कहा जाये तो अतिश्योक्ति नहीं होगी। मूल्य का अर्थ–मूल्य को अंग्रेजी में Value कहते हैं। Value लैटिन भाषा के शब्द Valere वैलियर से बना है। वैलियर का अर्थ। Ability, Utility, Importance तथा हिन्दी में अर्थ योग्यता, उपयोगिता व महत्व। मूल्य का अर्थ वह मान व्यक्ति जिसके आधार पर हम किसी वस्तु या किसी सूक्ष्म सत्ता (भाव, विचार आदि) के गुण योग्यता व महत्व को आँकते हैं।

वर्तमान जीवन में सर्वाधिक महत्वपूर्ण मूल्य वे होते हैं जो सत्यम, शिवम एवं सुन्दरम से ओत–प्रोत होते हैं और व्यक्ति के जीवन में समाहित हो जाते हैं। हमारे जीवन को आनन्दमय, सुखदायी बनाने में मूल्यों का महत्व अतुलनीय है।

मूल्य आधारित शिक्षा किसी भी समाज एवं राष्ट्र को किसी भी प्रकार की बुराई, हिंसा, भ्रष्टाचार तथा उत्पीड़न के खिलाफ आधार प्रदान करती है। हाल ही मे नई दिल्ली स्थित एन0सी0ई0आर0टी0 ने वर्तमान संदर्भ में प्रासंगिक मूल्यों की सूची तैयार की है। इसका बदलाव हम प्राथमिक स्तर की पाठ्य–पुस्तकों मे भी देख सकते हैं।

पाठ्य–पुस्तकों में बदलाव के बाद इन चित्रों में गुणात्मक बदलाव देखने को मिलता है। जैसे सफाई करते लड़के व खेलती हुई लड़कियाँ।

शिक्षा की सभी गतिविधियाँ अध्यापक के इर्द–गिर्द घूमती हैं। भारतीय परम्पराओं के अनुसार अध्यापक समाज में प्रतिष्ठित स्थन रखते है। इसलिए अध्यापक भी अपने व्यवहार से जन–सामान्य के जीवन में मूल्यों के सम्प्रेषण हेतु एक प्रेरक का कार्य करता है।

◆◆◆

# व्यावसायिक शिक्षा मानवीय मूल्य

**किशन सैनी[1] एवं डॉ० प्रवेश कुमार[2]**
*[1]बी०एड०प्रथम वर्ष, [2]विभागाध्यक्ष शिक्षक–शिक्षा विभाग, राजकीय रज़ा पी०जी०, रामपुर*

**सारांश**

व्यवसायिक शिक्षा वह शिक्षा है जो लोगों को एक तकनीकी एवं कुशल व्यापारी या एक कारीगर के रूप में काम करने के लिए तैयार करती है। व्यावसायिक शिक्षा को कभी–कभी कैरियर और तकनीकी शिक्षा भी कहा जाता है।(1)हर शिक्षा का अपना एक महत्व होता है। जिस प्रकार शारीरिक शिक्षा के अन्तर्गत शरीर और मस्तिष्क को स्वस्थ रखने का शिक्षण दिया जाता है। इसमें व्यक्ति के सर्वांगीण विकास पर बल दिया जाता है। उसी प्रकार व्यावसायिक शिक्षा का भी अपना महत्व है जिसमें व्यक्ति को व्यवसाय में कुशल एवं दक्ष बनाने पर बल दिया जाता है। इसमें विद्यार्थियों को व्यवसाय हेतु उपयुक्त कौशलों का प्रशिक्षण दिया जाता है। इसमें विद्यार्थी अपनी रुचि के अनुसार व्यावसायिक प्रशिक्षण प्राप्त करता है और उसमें दक्ष होता है।

◆◆◆◆

# छात्रों के लिए मूल्यों की आवश्यकता

**डा0 सोमवीर सिंह[1] एवं बिन्दु सिंह[2]**
*[1]सहायक प्रोफेसर, श्री गोविन्द महाविद्यालय, तैवर खास, मुरादाबाद (उ०प्र०)*
*[2]शोधार्थिनी, आईएफटीएम विश्वविद्याल, मुरादाबाद (उ०प्र०)*

**सारांश**

प्राचीनकाल से लेकर वर्तमान काल तक दर्शन ने शिक्षा के उद्देश्य को प्रभावित किया है। प्राचीन काल में शिक्षा के उद्देश्य मोक्ष की प्राप्ति व आध्यात्मिक विकास होता था उसके बाद मध्यकाल में शिक्षा का उद्देश्य धर्म का प्रचार–प्रसार हो गया उसके बाद शिक्षा के उद्देश्य प्रत्येक दर्शन के अनुसार बदलते रहे। शिक्षा के उद्देश्य ये परिवर्तन का कारण मानव जाति का विकास ही रहा है या कहा जा सकता है कि बालक का सर्वांगीण विकास करना शिक्षा के 3 अंगों में शिक्षक, छात्र व पाठ्यक्रम को शामिल किया जाता है और तीनों में से छात्र को छोड़ कर दोनो का उद्देश्य बालक के अन्दर सद्गुणों का विकास करना है। या कहा जा सकता है बालक के अन्दर मूल्यों का विकास करना है। भौतिकवादी युग में विद्यार्थियों के समक्ष मूल्यों की बात करना एक ऐसी घटना की चर्चा करना है जिसके बारे में छात्रों ने कभी भी नहीं सुना।

वर्तमान में अंग्रेजी माध्यम के विद्यालय तो भौतिकवाद की सबसे बड़ी प्रयोगशाला हो गए

हैं। वहाँ बालक सभी प्रकार की शिक्षा ग्रहण करता है लेकिन मूल्य शिक्षा का उसके जीवन मेंकोई महत्व नहीं है अगर बात हिन्दी माध्यम के विद्यालयों की करें तो पाऐंगे तो वहां के छात्र भी लगभग उसी दिशा में प्रयासरत हैं वे मूल्यों को नहीं मानते हैं। अन्ततः कहा जा सकता है कि विद्यार्थियों के अन्दर वर्तमान समय में मूल्यों के प्रति उदासीनता दिखाई देती है। हिन्दी माध्यम के विद्यार्थी हो चाहें अंग्रेजी माध्यम के विद्यार्थी मूल्यों के प्रति कोई भी जागरूक नहीं दिखाई नहीं पड़ती है। दोनों माध्यम के विद्यार्थियों में मूल्यों का ह्रास हो रहा है। इस प्रकार मूल्यों के माध्यम से मानव जाति सहित पूरे राष्ट्र को बचाया जा सकता है। मूल्यों के माध्यम से ही व्यक्ति का सामाजिक विकास आध्यात्मिक विकास, नैतिक विकास आदि प्रत्यक्ष रूप से जुड़े हैं। विद्यार्थियों को प्रारम्भ से मूल्य की शिक्षा प्रदान कर उनका आध्यात्मिक, आत्मिक, संवेगात्मक आदि विकसित किया जा सकता है।

◆◆◆

# मानवीय मूल्यों की आवश्यकता एवं महत्व

**डॉ0 भानु प्रकाश**
*ज्योति कॉलेज ऑफ मैनेजमेण्ट साइंस एण्ड टैक्नोलॉजी, बरेली (उ०प्र०)*

## सारांश

प्रत्येक व्यक्ति स्वयं के लिए एक मूल प्रणाली रखता है। इस प्रणाली के आधार पर ही सही–गलत, उचित–अनुचित, निर्णय लिया जाता है। इस निर्णय के आधार पर जीवन की कार्य कार्य प्रणाली संचालित होती है। दैनिक जीवन में व्यक्ति प्रतिदिन, हर पल, पल–पल, निर्णय लेता है वह कदम–कदम पर निश्चय करता है और उस कार्य को वरीयता प्रदान करता है जिस कार्य को करने के लिए मूल्य उसे प्रेरित करते है यदि इस प्रकार से मूल्यों के माध्यम से मूल्यांकन क्षमता व्यक्ति के अन्दर न होती तो वह निर्णयन कार्य को नहीं कर सकता।

वर्तमान समय में मूल्य क्षण भंगुर हो रहे है, चिन्तन का अभाव है। बालक को वास्तविकता से आदर्शों को जोड़ने की आवश्यकता है। मनुष्य को ऐसा बनाने की आवश्यकता है जिससे वह स्वयं मूल्यों का पालन करें। मूल्यों में सुधार के लिए राष्ट्रीय शिक्षा नीति सामने आयी, जिसमें बताया गया कि शिक्षा ऐसी हो जो लोगों में सत्य, सहयोग, कर्तव्य परायणता का विकास करें। यह सर्वविहित है कि मूल्य शिक्षा की जड़ समाज है यदि समाज नैतिकता से व्यवहार करने लगेगा तो उसके सभी सदस्य भी मूल्यों के प्रति अपनी आस्था रखते हुए अपना कार्य करेंगे। समाज को मूल्यों की शिक्षा में रूचि लेनी चाहिए। मूल्यों के विकास हेतु अधिगम अनुभव प्रदान करने की व्यवस्था करनी चाहिए तथा मूल्य आधारित आचरण को स्वीकृत, पुरस्कृत तथा

अनुमोदित करना चाहिए। साथ ही साथ समाज को अपने देश की निर्धनता के अभिशाप से मुक्त कराने हेतु सतत् प्रयास करना अवश्यक होगा। क्योंकि मूल्य ह्रास का एक प्रमुख कारक निर्धनता भी है। अतः यह समाज मूल्यों के विकास में सार्थक प्रेरक व पूरक की प्रभावशाली भूमिका निभा सकें एवं भावी पीढ़ी के एक स्वस्थ, स्वच्छ व मूल्य आधारित भविष्य दे सकें।

◆◆◆◆

# शिक्षा एवं मानवीय मूल्य

**डॉ0 कुलदीप चौधरी**
*असिस्टेण्ट प्रोफेसर, राजनीति विज्ञान, राजकीय महाविद्यालय, चकराता (उ०ख०)*

## सारांश

शिक्षा अंधकार से प्रकाश की ओरमानव यात्रा का नाम है। शिक्षा एक ऐसा माध्यम है जिसके द्वारा मनुष्य के अंतःकरण के द्वार खुल जाते हैं और मानव को परम आलौकिक प्रकाश की प्राप्ति होती है। किसी भी राष्ट्र अथवा समाज के उत्थान में जो उन्नति जिस कारण से होती है वह उस राष्ट्र अथवा समाज की शिक्षा के फलस्वरूप होती है। हमारे देश की पवित्र भूमि पर अनेकों महान ऋषियों, विद्वानों, संतों एवं महापुरूषों का जन्म हुआ। इन्हीं महान पुरुषों में महर्षि सन्दीपन, आचार्य चाणक्य, महात्मा गांधी, स्वामी विवेकानन्द, महर्षि दयानन्द, सर्वपल्ली डॉ० राधा कृष्णन् इत्यादि प्रमुख हैं। इन्हीं महान पुरुषों की शिक्षा से अनेकों साधारण व्यक्ति जैसे राम, कृष्ण, चन्द्रगुप्तमौर्य, सम्राट अशोक आदि राष्ट्र नायक बने। अतः स्पष्ट है कि शिक्षा के बिना किसी भी राष्ट्र एवं समाज की उन्नति होना असम्भव है।

राष्ट्रपिता महात्मा गांधी का व्यक्तित्व और कृतित्व आदर्शवादी रहा है। उनका आचरण प्रयोजनवादी विचारधारा से ओतप्रोत था। संसार के अधिकांश लोग उन्हें महान राजनीतिज्ञ एवं समाज सुधारक के रूप में जानते हैं किन्तु उनका यह मानना था कि सामाजिक उन्नति हेतु शिक्षा का महत्वपूर्ण योगदान होता है। अतः गांधी जी का शिक्षा के क्षेत्र में विशेष योगदान रहा है उनका मूलमन्त्र था–"शोषित विहीन समाज की स्थापना करना। "उसके लिये सभी का शिक्षित होना आवश्यक है। क्योंकि शिक्षा के आभाव में एक स्वस्थ समाज का निर्माण असम्भव है। अतः गांधीजी ने जो शिक्षा के उद्देश्यों एवं सिद्धान्तों की व्याख्या की वह प्रारम्भिक शिक्षा योजना उनके शिक्षा दर्शन का मूर्त रूप है। अतएव उनका शिक्षा दर्शन उनको एक शिक्षाशास्त्री के रूप में प्रस्तुत करता है। उनका मानना था कि मेरे प्रिय भारत के बच्चोंको 3भ की शिक्षा अर्थात भ्मंक, भ्ंदक, भ्मंतज की शिक्षा दी जाये। शिक्षा उन्हें स्वावलम्बी बनाये और वे देश को मजबूत बनाने में महत्वपूर्ण योगदान दें।

स्वामी विवेकानन्द भारत की वर्तमान एवं भविष्य में आने वाली परिस्थितियों को ध्यान में रखते हुए वर्तमान शिक्षा प्रणाली में अत्यधिक परिवर्तन की आवश्यकता है। स्वामीविवेका नन्द मानते थे कि इस शिक्षा प्रणाली से व्यक्ति के व्यक्तित्व निर्माण में कोई सहयोग नहीं हो रहा है। उनका मानना था कि ऐसी शिक्षा का क्या महत्व है जो युवा पीढि को गलत मार्ग दिखाये। स्वामी विवेकानन्द ने कहा था कि शिक्षा के लिए जरूरी है एकाग्रता, एकाग्रता के लिये जरूरी है ध्यान, ध्यान से ही हम इन्द्रियों पर संयम रखकर एकाग्रता प्राप्त कर सकतें हैं।

शिक्षा ही राष्ट्र की वह अनूठी शक्ति है जिसके द्वारा राष्ट्र का निर्माण, राष्ट्र की रक्षा और राष्ट्र की उन्नति सम्भव है। शिक्षा प्राप्तकरने का लक्ष्य केवल सम्पत्ति अर्जन करना नहीं है बल्कि अखण्ड राष्ट्र भक्ति से ओत प्रोत चरित्रवान विद्यार्थियों का निर्माण करना है। यह सत्य है कि शिक्षक पर शिक्षा का उत्तरदायित्व है तथा आदर्श शिक्षक अपने ज्ञान और व्यवहार द्वारा अपने विद्यार्थियों को प्रभावित करता है। विद्यार्थी की बुद्धि अत्यन्त कोमल होती है। वह अपने शिक्षक के विचारों का सरलता से अनुकरण करके अपने संस्कारों का निर्माण करता रहता है। अतः अध्यापक को अपने व्यवहार में सदैव सतर्क रहना आवश्यक है। एक शिक्षक को शिक्षा के द्वारा अपने विद्यार्थी के सम्मुख सुन्दर एवं उच्च आदर्श उपस्थित करने चाहिये। अध्यापक ऐसी शिक्षा प्रदान करे जो किसी शिक्षार्थी के चरित्र को उच्च कोटि का बनाये। विद्यार्थी का सबसे मूल्यवान गुण उसका चरित्र है। संसार में सर्वोत्तम शिक्षा उसी के द्वारा होती है जिसका चरित्र महान होता है।

◆◆◆◆

# शिक्षा में मानवीय मूल्य

**महेश कुमार आर्य**
*शोधार्थी (शिक्षा विभाग), जे.वी.जैन (पी.जी.) कॉलेज, सहारनपुर (उ०प्र०)*

## सारांश

स्वामी विवेकानंद– "हमें ऐसी शिक्षा चाहिए जिससे चरित्र बनता है,मन की शांति बढ़ती है, प्रतिभा का विस्तार होता है और आदमी अपने पैरों पर खड़ा हो सकता हो मूल्यों के विकास में भाषा शिक्षण का विशेष योगदान है।" मनुष्य ने शिक्षा से असीमित संभावनाओं के द्वार खोल दिए हैं लेकिन आज हम शिक्षा में ऐसी कमी अनुभव करते हैं, जिसका निदान आवश्यक है। शिक्षा में मानवीय मूल्यों की शिक्षा को अनौपचारिक न बनाकर अनिवार्य कर दी जाये तो हम पतन्नोमुख समाज व देश को बचा सकते हैं देश समाज व मानव जाति की मानसिक शांति, सुरक्षा व विकास का एक मात्र विकल्प मानवीय मूल्यों की शिक्षा देना है। शिक्षा के माध्यम से केवल भौतिक

संपन्नता प्राप्त करना ही पर्याप्त नहीं होता, शिक्षा द्वारा हम एक अच्छे और बेहतर इंसान भी बनने चाहिएं। शिक्षा के माध्यम से व्यक्ति को कुसंस्कारों की मानसिक गुलामी से बचाया जा सकता है मानवीय मूल्यों की शिक्षा के माध्यम से समाज के प्रत्येक वर्ग का दृष्टिकोण सकारात्मक बन सकता है। "शिक्षक छात्र का माता– पिता दोनों है उसे आंखो से पिता तथा हृदय से माता होना चाहिए"। शिक्षा मानवीय मूल्यों के सम्प्रेषण में उत्प्रेरक का कार्य करती हैं इस शिक्षा रूपी उत्प्रेरक का संवाहक शिक्षक होता है हमारा समाज शिक्षक से आशा रखता है कि वह अपना यह पुनीत कार्य मानवीय मूल्यों को संप्रेशित कर पूर्ण करें

**मुख्य शब्द–** मानवीय मूल्य,सकारात्मक दृष्टिकोण,संस्कार एवं मानसिक शांति।

◆◆◆◆

# शिक्षा एवं मानवीय मूल्य

**प्रेमलता**
*एम.एड. चतुर्थ सेमेस्टर छात्रा, महात्मा ज्योतिबा फुले रूहेलखण्ड विश्वविद्यालय कैम्पस, बरेली*

## सारांश

शिक्षा मानव जीवन की आधारशिला तथा सामाजिक जीवन का अनिवार्य उपादान है। प्रकृति के आंगन में सूर्य के प्रकाश से जिस प्रकार कमल का पुष्प खिल उठता है उसी प्रकार शिक्षा रूपी ज्ञान को पाकर मानव प्रकाशवान हो जाता है। कहा भी जाता है कि पौधे का विकास कृषि द्वारा तथा मानव का विकास शिक्षा द्वारा होता है। शिक्षा का वास्तविक उद्देश्य मनुष्य एवं उसके समाज को प्रगतिशील, सांस्कृतिक एवं सभ्य बनाना है। शिक्षा समाज द्वारा स्थापित विद्यालयों के माध्यम से समाज की आकांक्षाओं की पूर्ति के लिए सामाजिक वातावरण में दी जाती है। अतः समाज और शिक्षा को एक दूसरे से प्रथक नहीं किया जा सकता। वर्मा एवं यादव (2012) में और समाज के विषय में कहा है, '' मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है। व्यक्ति से ही समाज का और समाज से ही व्यक्ति का अस्तित्व जुड़ा हुआ है।'' बालक समाज में रहकर बड़ा होता है। तथा समाज से ही सीखता है। सीखने की इस प्रक्रिया में वह कुछ विचारों को ग्रहण करता है जो उसके आदर्श बनते हैं, यह आदर्श ही उसके मूल्य कहलाते हैं। मूल्य सभी के लिए अत्यन्त महत्वपूर्ण हैं और एक विशेष स्थान रखते हैं। शिक्षा द्वारा समाज और व्यक्ति का सर्वागींण तथा सर्वोत्तम विकास सम्भव है परन्तु यह विकास मूल्यों के अभाव में पूर्णतः असार्थक है।

मानवीय मूल्य खोज के प्रयासः– 1951 के अमेरिकी शैक्षिक नीति आयोग ने पब्लिक स्कूलों के लिए कुछ मानवीय मूल्य निर्धारित किये थे। जैसे– मानव व्यक्तित्व के लिए आदर, व्यक्ति की नैतिक जिम्मेदारी, संस्थाओं का व्यक्ति के अधीन होना, सामान्य सहमति, सत्य निष्ठा,

समानता, भ्रातत्व, आनन्द की खोज, आध्यात्मिक संवर्धन, श्रेष्टता के लिए आदर। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 1986 में उलिखित है कि हमारा समाज सांस्कृतिक दृष्टि से बहुलबादी है, तथा शिक्षा में ऐसे सार्वभौमिक व शाश्वत मूल्यों का विकास होना चाहिए जो लोगों की एकता व उसके समाकलन की ओर अभिमुक्त हो इस मूल्य शिक्षा से धार्मिक उनमाद, हिंसा, अन्धविश्वास, भाग्यवाद व रूढ़िवादिता समाप्त होगी। शिक्षा नीति के अनुच्छेद–84 में शिक्षा के सामाजिक व नैतिक मूल्यों के विकास के लिए सशक्त साधन बनाने के लिए कहा गया है। अतः शिक्षा प्रणाली राष्ट्रीय ढ़ाचें पर आधारित होगी तथा भारत की उभयनिष्ठ धरोहर, प्रजातन्त्र समवादिता व धर्मनिपेक्षता जैसे मूल्य भिन्न–भिन्न लिगों के लोगों में समानता पर्यावरण रक्षा, सामाजिक बाधाओं की समाप्ती तथा वैज्ञानिक स्वभाव के विकास को बढ़ावा मिल सके। शिक्षा की कार्ययोजना में धर्मनिरपेक्ष, वैज्ञानिक तथा नैतिक व मानवीय मूल्य व समाजसेवा तथा राष्ट्रीय एकता आदि जैसे मूल्यों के विकास पर बल देने की अनुशंसा की गयी।

लगभग सभी समाज में हिंसा, युद्ध, घृणा तथा अपराध का वर्चस्व दिखाई पड़ता है तथ इतिहास के विभिन्न युगों में भी यही प्रवृत्ति दिखायी पड़ती है जिससे ऐसा प्रतीत होता है जैसे मानवीय मूल्यों की सार्वभौमिकता जैसी की बात होती ही नहीं परन्तु मानवीय मूल्यों की आदि समाजों व धर्मों में देखा जा सकता है तथा मूल्यों की यह परम्परा तदतर आज भी जारी है जो सभी युगों एवं सभी संस्कृतियों में दृष्टिगोचार होती है अर्थात इन मूल्यों की सार्वभौम व सर्वगत मूल्यों की कोटि में रखा जा सकता है यह है– सत्यता (सत्य), प्रेम और सेवा भावना, शान्ति, अहिंसा तथा न्याय।

अतः कहा जा सकता है कि यह शिक्षा ही है जिसके माध्यम से समाज उच्च मानवीय मूल्यों का संरक्षण करता है और साथ में उन्हें प्रोत्साहन भी देता है।

◆◆◆◆

# समाज में मूल्य आधारित शिक्षा की भूमिका

**अश्वनी कुमार**
*शोधकर्ता, सत्यभामा विश्वविद्यालय, परिसर, तमिलनाडु*

## सारांश

भारत में मूल्य आधारित शिक्षा समय की वास्तविक आवश्यकता है। जैसा कि हम देखते हैं कि दिन–प्रतिदिन मूल्यों के मामले में समाज कैसे कम होता जा रहा है। समाज में मूल्यों को विकसित करने के लिए कार्यक्रमों को विकसित करना आवश्यक है। प्रेस और मीडिया द्वारा नए तकनीकी उपकरणों, सूचना विस्फोट और हिंसक समाचारों की बमबारी के कारण आज के

भारतीय युवा थोड़े भ्रमित हैं। उनके भ्रमित दिमागों में मूल्य प्रणाली को विकसित करने और उन्हें मूल्य–उन्मुख–शक्तिशाली नेता बनाने के लिए, शैक्षिक संस्थानों को इस नई पीढ़ी को मूल्य आधारित आध्यात्मिक ज्ञान प्रदान करने की पहल करनी चाहिए। "अच्छे आचरण, आत्मविश्वास और उच्च मूल्यों के गुणों को पूरा करने से छात्रों को समाज में महत्वपूर्ण स्थान हासिल करने में मदद मिलेगी। मूल्यों के बिना शिक्षा सुगंध के बिना फूल की तरह है। छात्रों को यह महसूस करना चाहिए कि चरित्र निर्माण उतना ही महत्वपूर्ण है जितना करियर निर्माण। जीवन में एक अच्छा चरित्र अंतिम चीज है जो व्यक्ति के आत्म–साक्षात्कार को बढ़ाती है "। इस पत्र में समाज में मूल्य आधारित शिक्षा की भूमिका पर चर्चा करने का प्रयास किया गया है, यह मूल्य शिक्षा को विकसित करने के निहितार्थों के बारे में विस्तृत चर्चा करता है। रेना, आर. सही बताते हैं कि एक गलत धारणा है कि मूल्य सिखाया से बेहतर पकड़े जाते हैं। हालांकि वास्तविकता में, मूल्यों को पकड़ा और सिखाया जाता है। "आज की पीढ़ी शिक्षण के बिना मूल्यों को पकड़ने वाली नहीं है। हमें इस पीढ़ी को मूल्यों को सिखाना होगा, इससे पहले कि वे नए तकनीकी उपकरणों की बमबारी, सूचना विस्फोट और मीडिया द्वारा पकड़े जाएं। कागज अंत में अपने कॉलेज के छात्रों के लिए संस्कारार्जन ब्लॉग बनाकर लेखक द्वारा खुद के लिए किए गए मूल्य शिक्षा के प्रयास के बारे में चर्चा करता है। लेखक के अनुसार मूल्य आधारित शिक्षा को आध्यात्मिक ज्ञान या आध्यात्मिक चेतना के बिना नहीं पढ़ाया जा सकता है। निश्कर्श में, जीवन में प्रगति के लिए केवल इच्छा या आकांक्षा पर्याप्त नहीं है सफलता मूल्यों पर आधारित होनी चाहिए। और इसके लिए आज के संस्थानों में मूल्य आधारित शिक्षा प्रदान की जानी चाहिए। ताकि छात्र अपने चुने हुए क्षेत्रों में अच्छे नेता के रूप में उभर सकें।

◆◆◆◆

# शिक्षा में मानवीय मूल्यों की मानव जीवन में आवश्यकता एवं महत्व

**डॉ० ललित कुमार**
*असिस्टेन्ट प्रोफेसर, राजकीय रज़ा पी०जी० कॉलेज, रामपुर (उ०प्र०)*

## सारांश

भारत एक अति प्रचीन सनातन देश है, जिसके कण–कण में विविधता के रंग भरें हुए हैं, बौद्धिक दृष्टि से भारत को 'विश्व–गुरु' के रूप से जाना जाता है। हमारे देश के मनीषियों 'वसुधैव कुटुम्बकम्' की परिकल्पना के अनुसार सम्पूर्ण विश्व को एक परिवार माना है। इस तथ्य से समझा जा सकता है कि भारत में शिक्षा और मानवीय मूल्यों का क्या महत्व रहा है। राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी का मत था कि–''ऐसी शिक्षा जो हमें अच्छे–बुरे के बीच भेद–भाव करना नहीं, एक

के अनुकूल और दूसरे को त्यागता नहीं सिखाती बह मिथ्या है।'' महात्मा गाँधी का यह कथन शिक्षा सम्बन्धी विचारों हेतु कितना महत्वपूर्ण है। महात्मा गाँधी ने शिक्षा हेतु जो अपने विचार प्रस्तुत किये है, भारतीय समाज में मानव जीवन के मानवीय मूल्यों की भूमिका तथा शिक्षा के महत्व को परिभाषित करता है। जिसमें मानव को एवं उसकी सामजिक एवं व्यवसायिक जीवन में नैतिक मूल्यों एवं उसकी आवश्यकता को समझा जा सकता है।

सर लार्ड मैकाले जो भारत में गर्वनर रहे थे उन्होंने सन् 1832 में भारतीय समाज में मानवीय मूल्यों को महत्व को रेखांकित करते हुए भारत के सन्दर्भ में हाउस ऑफ कामन्स में अपने अध्ययन में बताया है कि भारत देश में लोगों के मानवीय मूल्य और नैतिकता इतना जबरदस्त प्रभाव रखता था कि भारत में कोई व्यक्ति भूखा नहीं सोता था। इस देश में लोग भौतिकता से अधिक सामाजिकता को महत्व प्रदान करते थे। जिसके एक प्रभाव यह था कि कोई भी व्यक्ति चाहे कितना भी आश्रित क्यों न हो परन्तु वह किसी भी दशा में असामाजिक कृत्यों के लिए उद्घृत नहीं होता था। जो भारतीय समाज की सबसे महत्वपूर्ण विशेषता थी। किसी देश में शिक्षा ऐसी होनी चाहिए जो मानव को किसी पर आश्रित न बनाये, यदि शिक्षित व्यक्ति चाहे जो स्वयं रोजगार कर सके एवं रोजगार प्रदान कर सके।

वर्तमान परिदृश्य में आज जब सम्पूर्ण विश्व को एक बाजार के स्वरूप में देखा जाता है। भूमण्डलीकरण का दौर है, आज कोई भी व्यक्ति सम्पूर्ण विश्व में किसी भी देश, राज्य, समाज, समुदाय के किसी भी व्यक्ति से किसी भी क्षण वार्तालाप कर सकते हैं। आज के समय में दूरी का महत्व नहीं रह गया है जिस प्रकार तेजी से तकनीकी विकास हो रहा है, वह समय दूर नहीं कि कोई व्यक्ति अल्प समय में ही सम्पूर्ण विश्व में कहीं जाने हेतु सम्पन्न हो जायेगा। दूसरे शब्दों में कहे तो मानव में भौतिकता के प्रति चाव बढ़ा है जिस कारण व्यक्ति के सामाजिक, पारिवारिक एवं मानवीय मूल्य शिथिल हुए हैं। आज के सम्बन्ध में कह सकते हैं देश में सामाजिक, पारिवारिक एवं मानवीय मूल्य शिथिलता ने भौतिक दृष्टि से देश को लोगों को समषद्धि प्रदान करने में एक महत्वपूर्ण भूमिका अदा की है। जोकि आज के भौतिकतावादी दृष्टिकोण से एक बड़ी उपलब्धि है परन्तु इसका एक महत्वपूर्ण और काला पक्ष यह है कि भौतिकवादी इस विचारधारा ने समाज की प्राथमिक ईकाई परिवार को छिन्न–भिन्न कर दिया है। आज के समाज में एकल परिवार तो मिलते हैं परन्तु संयुक्त परिवार नहीं। संयुक्त परिवार के बिखरने पर समुदाय प्रभावित हुआ और समुदाय प्रभावित होने से राज्य और फिर राष्ट्र।

कुल मिलाकर शोधार्थी का मत है कि भौतिकतावादी इस संस्कृति ने मानवीय मूल्यों एवं शिक्षा को इस प्रकार प्रभावित किया गया है, व्यक्ति एकल परिवार में रहने के तत्पर होने लगा है, अब उसे पारिवारिक, सामाजिक एवं राष्ट्रीय मूल्यों के प्रति जागरुकता निष्क्रिय प्रायः हो गयी

है। पारिवारिक एवं सामाजिक मूल्यों के प्रति उदासीन होने के कारण समाज में बुराई का प्रभाव बड़ा है। मानव में प्रेमभाव, लगाव, पारिवारिक रिश्ते, आदर, सत्कार, अपनत्व, संयम, सदासशयता, सहिष्णुता, वरदाश्त करने की क्षमता दूसरे और अपने से बड़े और छोटे को सम्मान देने का भाव जैसे लगभग सभी प्रकार के मानवीय मूल्य के प्रति मानवीय एवं सामजिक उदासीनता को भौतिकता ने पूर्णतः प्रभावित किया है। आज समाज में व्यक्ति 'मैं' का भाव लेकर जीता है, ना कि 'हम' का भाव लेकर।

एक बड़ा असर मानवीय मूल्यों में क्षरण का कारण है प्रतिद्वंद्वता। हमें यह समझाना होगा कि जीवन में प्रतिस्पर्धा आवश्यक है ना कि प्रतिद्वंद्वता। आज के समाज में लोग या मानव प्रतिस्पर्धा एवं प्रतिद्वंद्वता को समान ही समझते हैं, प्रत्येक व्यक्ति भौतिकता में इतना रच–बस गया है कि प्रतिस्पर्धा एवं प्रतिद्वंद्वता को समझना ही नहीं चाहता। शोधार्थी ने अपने अध्ययन में इस प्रभाव का अध्ययन करने का प्रयास किया है। जिसके लिए शोधार्थी द्वारा द्वितीयक स्त्रोंतों का सहारा लिया गया है।

◆◆◆◆

# मानवीय मूल्य और शिक्षा

**बृज नरेश[1] एवं प्रदीप कुमार कश्यप[2]**
*[1]शोधार्थी –इतिहास विभाग, आर.जी. (पी.जी.) कॉलेज,मेंरठ (उ०प्र०), [2]प्रवक्ता– शिक्षा विभाग, दिशा भारती कॉलेज ऑफ मेंनज़मेंट एंड एजूकेशन, सहारनपुर (उ०प्र०)*

## सारांश

स्वामी महावीर– "सभी मनुष्य अपने स्वयं के दोषों के कारण दुखी होते हैं और स्वयं अपनी गलती सुधार कर प्रसन्न हो सकते है" शिक्षा मानवीय जीवन को समुचित रूप से परिष्कृ त कर अपने सार्थक रूप से पूर्ण हो कर उच्च ज्ञान का सृजन करती है मानवीय मूल्य मानव जीवन हेतु दिशा सूचक की भाति कार्य करते हैं। वर्तमान समय में मानव के ह्रदय में प्रेम, करुणा, नैतिक चिंतन की अवधारणा और नैतिक चिंतन कहीं खो सा गया है जीवन मूल्यों को आचरण में धारण करना ही सच्चा मानवीय धर्म है। दैनिक जीवन में मानवीय मूल्यों का क्षरण विश्वभर के शिक्षाविदों के लिए गम्भीर चिंता का विषय है इसके कारण परंपरागत संस्थाओं के अस्तित्व पर प्रश्न चिन्ह लगा हुआ है मनुष्य इस बात से पहचाना जा रहा है कि उसके पास "क्या है" न कि "वह क्या है" गर्दन काट प्रतिस्पृधा प्रत्येक क्षेत्र में बढ़ती जा रही है मनुष्य को अपने जीवन, समाज व देश को ऊच्चता प्रदान करने हेतु पुरुषार्थ करना होगा। धर्म ग्रंथो में पुरुषार्थ चार बताए गये – धर्म, अर्थ, काम एवं मोक्ष। हमें भावी पीढ़ी की शिक्षा, मानवीय मूल्यों को समाहित करते

हुए आचरण में उतारने की व्यावहारिक शिक्षा दी जाये तो हम अपने देश को फिर से विश्वगुरु के रूप में देख पाएंगे।

**मुख्य शब्द–** मानवीय मूल्य, नैतिक चिंतन, परंपरागत संस्था एवं व्यावहारिक शिक्षा।

◆◆◆◆

# मानवीय मूल्यों की आवश्यकता एवं महत्व

**सन्त कुमार राजपूत**
*असिस्टेंट प्रोफेसर, शिक्षा विभाग, ज्योति कालेज आंफ मैंनेजमेंट साइंस एंड टेक्नोलॉजी, बरेली (उ०प्र०)*

## सारांश

समाज का प्रत्येक व्यक्ति अपने के लिए एक मूल्य विधि रखता है। इस विधि के आधार पर ही सही, गलत उचित ,अनुचित निर्णय लेता है। इसी निर्णय के आधार पर जीवन के कार्य प्रणाली संचालित होती है। जीवन में हर वयक्ति प्रतिदिन निर्णय लेता है और कदम उठाता है। जिस कार्य को करने के लिए मूल्य उन्हें प्रेरित करते हैं ,उस कार्य को वह मुख्य स्थान देता है। व्यक्ति मूल्यों के माध्यम से मूल्य अंकित क्षमता बढ़ाकर सही निर्णय लेता है।

सुंदर, असुंदर, सही, गलत, अच्छा, बुरा, प्रशंसा, निंदा, इन सभी को निश्चित करना ,इन सभी के बारे में निर्णय लेना मूल्य की अवधारणा पर निर्भर करता है। हर समाज की अपनी एक मूल्य पद्धति होती है। ये मूल्य साक्ष्य का काम करते हैं। उन मूल्यों को प्राप्त करने के लिए मनुष्य अपना पूरा जीवन लगा देता है। मूल्यों के द्वारा हम अपने जीवन को सार्थक बनाते हैं। मूल्य हमारे मन में कर्तव्यनिष्ठा, विश्वास, श्रद्धा, प्रेरणा आदि उत्पन्न करते हैं। इन सब के बिना मनुष्य समाज में अपना स्थान निर्धारित नहीं कर सकता। मूल्य हमारे जीवन को कुशल एवं सार्थक बनाते हैं, जिससे समाज में एक स्थान बन सके। हम रोज की नई–नई घटनाओं से सीख लेते हैं। प्रत्येक मानव व्यवहार और घटना हमें सीख देती है और इसी सीख से हमारे अंदर अनुभव उत्पन्न होते हैं। और यह अनुभव हमें भावी, निर्णय लेने में, योजना बनाने में मदद करते हैं। मूल्य हमारे व्यवहार को निर्देशित करते हैं। हमारे अनुभव जिस प्रकार विकसित होते हैं, उसी प्रकार मूल्य भी विकसित होते जाते हैं।

मूल्य हमारे जीवन को आधार प्रदान करते हैं जो कि हमारे लिए बहुत महत्वपूर्ण हैं। व्यक्ति अपनी आचरण में मूल्यों को इस प्रकार प्रयोग करता है जिससे अन्य सामाजिक व्यक्तियों से उसका तालमेल बना सके और समाज से अनुकूलन बना सके। जितना अच्छा अनुकूलन होगा वह व्यक्ति उतना ही सुरक्षित स्वयं को उस समाज में महसूस करेगा। यह अनुकूलन तभी संभव है जब आचरण में मूल्यों का समावेश हो।

अतः सामाजिक व्यवस्था को बनाए रखने के लिए, सामाजिक व्यवस्था के पुनर्निर्माण में सामाजिक विघटन को रोकने के लिए मूल्यों का होना अति आवश्यक है।

◆◆◆◆

# शिक्षा एवं मानवीय मूल्य

**मो0 शमीम**
*प्रवक्ता, हिन्दी विभाग, अ0इ0 डिग्री कालेज, लालबाग़ लखनऊ (उ०प्र०)*

## सारांश

भौतिक सम्पन्नता प्राप्त करना शिक्षा का उद्देश्य नहीं होता है। शिक्षा के द्वारा हमें एक अच्छा इन्सान और बेहतर नागरिक बनाना चाहिए इसके लिए हमें अपनी परम्पराओं, आदर्शों आदि से जीवन मूल्यों से जोड़ना आवश्यक हो जाता है। मूल्य हमारे जीवन में सही दिशा दिने में सहायता करते हैं और सही मूल्यों से ही व्यक्ति की पहचान बनती है। मूल्य हमारे जीवन में सही और गलत का अहसास कराते हैं जिसके बिना निर्णय लेना बेहद कठिन है। व्यक्ति के व्यक्तित्व एवं समाज के निर्माण में परम्पराओं विश्वासों मूल्यों और आदर्शों का महत्वपूर्ण स्थान मात्र है। शिक्षा व्यक्ति की मानसिकता व बौद्धिकता का महत्वपूर्ण साधन होती है। शिक्षा के माध्यम से व्यक्ति को कुसंस्कारों व मानसिक गुलामी से बचाया जा सकता है। इसके द्वारा विद्यार्थियों में आत्म विश्वास, नई चेतना और जोश पैदा करके उनके अंधविश्वास व सामाजिक विकृतियों के विरूद्ध खड़ा किया जा सकता है। आज की नई पीढ़ी जीवन के विभिन्न क्षेत्रों में नई–नई उपलब्धियाँ प्राप्त कर रही हैं। जिसके अर्न्तगत अंतरिक्ष में मनुष्य को भेजने की तैयारियाँ चल रही हैं। आज मनुष्य ने जीवन व समाज में असीमित संभावनाओं के द्वार खोल दिए हैं। इसके विपरीत आज हम शिक्षा में ऐसी कुछ कमियों का अनुभव करते हैं कि जिसका निदान अति आवश्यक है।

◆◆◆◆

# शिक्षा एवं मानवीय मूल्य

**पार्वती वर्मा**
*प्रवक्ता, समाज कार्य विभाग, दीक्षित कॉलेज, रामपुर (उ०प्र०)*

## सारांश

वर्तमान शिक्षा से हमने असंख्य भौतिक उपलब्धियां प्राप्त की हैं, लेकिन वर्तमान संदर्भ में शिक्षा मानवीय मूल्यों परंपरा व आदर्शों की उपेक्षा कर एकांगी व संवेदनहीन होती जा रही है। संवेदनहीनता की स्थितियां पूरे परिवेश में देखी जा सकती हैं। मूल्यों व आदर्शों के अभाव में

दिशाहीन विद्यार्थी हिंसक, क्रूर व अमानवीय वृत्तियो की ओर अग्रसर हो रहे हैं। अपने महापुरुषों के संदेशो, अपनी परंपरा व अदर्शों से अन्जान नई पीढ़ी बेलगाम हो रही है। आधुनिकता की चकाचौंध व प्रदर्शन की प्रवृत्ति ने उन्हे घोर अवसरवादी व अनैतिक बना दिया है। हिंसा, बलात्कार, चोरी, डकैती व आतंक की ओर व्यक्ति तभी बढ़ता है जब उसे सही मार्गदर्शन, उचित शिक्षा व स्वस्थ्य वातावरण नहीं मिलता। तात्कालिक लाभ व भोगवादी प्रवृत्ति ने मनुष्य को संवेदनशून्य व हिंसक बना दिया है।

◆◆◆◆

# मूल्याश्रित शिक्षण में प्रभावी पाठ्यक्रम की उपयोगिता

**डा0 विक्रान्त उपाध्याय**
*असिस्टेन्ट प्रोफेसर,(बी0एड0), एन0एम0एस0एन0दास, पी0जी0 कालेज, बदायूं (उ०प्र०)*

## सारांश

शिक्षण वृत्ति व्यवसाय नहीं मिशन है। मूल्याश्रित शिक्षण अधिगम ही वास्तविक शिक्षण अधिगम है। विभिन्न वय वर्ग के शिक्षार्थियों हेतु उपयुक्त मानवीय मूल्यों की स्थापना के लिए, शिक्षकों में व्यावसायिक निष्ठा के साथ–साथ समीचीन पाठ्यक्रम की भी महती आवश्यकता है। सम्प्रति पाठ्यक्रम में ज्ञान,समझ और अभिव्यक्ति के विकास से सम्बन्धित विषय वस्तु तो सन्निहित है परन्तु मूल्य संस्थापन हेतु समीचीन विषय वस्तु अपर्याप्त प्रतीत होती है।

एन0सी0एफ02005 के एक मार्गदर्शी सिद्वान्त के अनुसार भी ज्ञान को विद्यालय के बाहर व्यावहारिक जीवन से युक्त करने की बात कही गई है। जिसका तात्पर्य होता है– शिक्षण अधिगम प्रक्रिया के अन्तर्गत प्रयुक्त मूल्यों को आत्मसात करके जीवन यापन करना। अतः प्रत्येक स्तर के पाठ्यक्रम में आवश्यकतानुसार शारीरिक,आर्थिक,सामाजिक,नैतिक और आध्यात्मिक मूल्यों पर आधारित विषय वस्तु समाहित होना आवश्यक है। शिक्षण अधिगम प्रक्रिया भी शिक्षार्थियों के अन्तर्गत मूल्य संस्थापन में सक्षम होनी चाहिए। इसके अतिरिक्त शिक्षकों में भी मूल्यपरक शिक्षण करने की दक्षता होना परमावश्यक है क्योंकि मूल्यवान शिक्षक ही शिक्षार्थियों के अन्तर्गत समुचित मूल्यों की स्थापना में योगदान कर सकते हैं।

मानव जीवन को सुखमय बनाने के लिए मूल्य शिक्षा की महती आवश्यकता है। मूल्य संस्थापन हेतु चिन्तन करना समीचीन है। आशा है कि नयी शिक्षा नीति इस उद्देश्यपूर्ति में सहायक सिद्ध होगी।

◆◆◆◆

# बदलते विश्व परिदृश्य में मूल्य शिक्षा की प्रासंगिकता

**रेखा रानी**
*प्रवक्ता, बी0 एड0 विभाग, किशोरी रमण महिला स्नातकोत्तर महाविद्यालय, मथुरा (उ०प्र०)*

## सारांश

आज सम्पूर्ण विश्व के सभी राष्ट्र विकास की अलग – अलग ऊँचाइयों में अपना स्थान बनाने की होड़ में लगे हुए हैं। इस विज्ञान व प्रौद्योगिकी की दौड़ में सभी ने बहुत कुछ पाया है लेकिन इस चमकती चकाचौंध में बहुत कुछ खो दिया है जिसकी भरपाई करना किसी भी विकास व उन्नति की परिधि से कहीं अधिक है। यहाँ हम उन मानवीय मूल्यों और संवेदनाओं की बात कर रहे है जो व्यक्ति के सर्वांगीण विकास और सभ्यता के विकास की आधार शिला है इसके मूल्यों में कल्याण की भावना निहित है। इन सभी के अभाव में मनुष्य सिर्फ और सिर्फ एक मशीन बनकर रह गया है। प्रेम, सहानुभूति, करुणा, दया, त्याग, संवेदना, धर्मनिपेक्षिता, सहिष्णुता, शांति, परोपकार जैसे शब्द सिर्फ अच्छे लेखन कार्य व भाषण की भाषा बन कर रह गये है। हमारा आचरण पूरी तरह पशु समान बन गया है। हमने अपने उन मूल्यों का परित्याग कर दिया है। जिनको हमारा समाज अपनी संस्कृति व मानव मूल्य समझकर अगली पीढ़ी को अमूल्य सौगात समझकर देता है परन्तु आज शिक्षा का उद्देश्य व्यवसायोन्मुखी हो गया है। ऐसी स्थिति में पुनः आज मूल्याधारित शिक्षा की आवश्यकता है जो मानव में जीवन मूल्य, आन्तरिक, सौन्दर्य, सदगुण तथा मानवीय गरिमा जैसे गुणों को समाहित कर सच्चे अर्थों में मानव का निर्माण करें।

◆◆◆◆

# मूल्य परक अध्यापक शिक्षा

**कंचन लोहानी**
*प्रवक्ता, ज्योति कॉलेज ऑफ मैनेजमेंट, साइंस एंड टेक्नोलॉजी बरेली (उ०प्र०)*

## सारांश

शिक्षा के द्वारा व्यक्ति एक अच्छा तथा भले आदमी को विकसित होता देखना चाहता है। आज मूल्य परक अध्यापक शिक्षा की आवश्यकता से कोई इन्कार नहीं कर सकता। कार्टर बी0गुड के अनुसार शिक्षा उन सभी क्रियाओं की समष्टि है जिसे व्यक्ति अपनी योग्यताओं, अभिवृत्तियों तथा समाज के सकारात्मक मूल्यों के व्यवहार प्रतिमान विकसित करता है।

मूल्य शिक्षा सम्बन्धी प्रत्येक योजना का सफल क्रियान्वयन अध्यापकों के वैयक्तिक व्यवहार शिक्षण अधिगम प्रक्रियाओं पर कार्य निष्ठा पर निर्भर करता है। अपने शिष्यों के कलयाण हेतु पुर्णतः सृजनशील, परिश्रमी शिक्षकों ने शिक्षा प्रणाली में व्यापक असन्तोष तथा नगण्य लाभों के बाद भी अपने दायित्वों का समर्पण भाव पूरा किया है। दुर्भाग्यवश अनपयुक्त शिक्षकों के कारण हमारी शिक्षा तन्त्र पंगु हो गया है तथा हमारे अध्यापक शिक्षा कार्यक्रम भावी शिक्षकों में उपयुक्त अभिवृत्तियॉ, शिक्षण प्रवीणता कार्यमूल तथ मानवीय मूल्य विकसित करने में असफल रहते हैं। शिक्षक को मूल्य परक शिक्षा के संचालन के लिए सक्षम होना चाहिए। 1986 राष्ट्रीय शिक्षा नीति के दस्तावेज में पर्यावरण संरक्षण, नारी सम्मान, सामाजिक न्याय, धर्म निर्पेक्षता और राष्ट्रीय चेतना के विकास पर बल दिया है। अतः शिक्षकों को स्वयं के लिए मूल्यों का निर्धारण करना होगा। उन्हें इन मूल्यों के सम्बन्ध में स्वयं सचेष्ट और सक्रिय रहना होगा। शिक्षण प्रशिक्षण की अवधि में मूल्यों से तथा अपनी संस्कृति से परिचित करना होगा, मूल्य के प्रति अपनी प्रतिबद्धता विकसित करनी होगी। और मूल्यों के शिक्षण के लिए निश्चित शिक्षण संव्यूहन खोजने होंगे। सुयोग्य भावी शिक्षक तैयार करने का दायित्व शिक्षक संस्थानों तथा विभागों का है। भावी शिक्षकों की तैयारी के समय मूल्य परक शिक्षा के सैद्धान्तिक, क्रियात्मक तथा शोध पक्ष पर विशेष ध्यान देना आवश्यक है।

अध्यापक शिक्षा का पाठ्यक्रम ऐसा हो जो छात्राध्यापकों को एक आदर्श शिक्षक के रूप में स्थापित कर सकें। मूल्य परक शिक्षा अध्यापक शिक्षा के मानवीय पक्ष पर बल दिया जाना चाहिए।

◆◆◆

# मानवीय मूल्यों की शिक्षा में परिवार, समाज एवं विद्यालय की भूमिका

**शशिबाला**
*असि० प्रोफेसर, शिक्षा विभाग, ज्योति कॉलेज ऑफ मैनेजमेण्ट साइंस एण्ड टैक्नोलॉजी, बरेली*

## सारांश

मूल्य वह चारित्रिक विशेषता है जो मनोवैज्ञानिक, सामाजिक एवं सौन्दर्य बोध की दृष्टि से महत्वपूर्ण मानी जाती है। मूल्य का शाब्दिक अर्थ है उपयोगिता, वांछनीयता, महत्व। मूल्य मानक रूपी मानदण्ड है जिनके आधार पर मनुष्य अपने सामने उपस्थित क्रिया विकल्पों में से चयन करने में प्रभावित होते हैं। भिन्न–भिन्न अनुशासनों में इन्हें भिन्न–भिन्न रूप में लिया गया है जैसे–दर्शनशास्त्र में मनुष्य के जीवन के प्रति दृष्टिकोण को मूल्य की संज्ञा दी जाती है। धर्मशास्त्र में नैतिक नियमों को मूल्य माना गया है। मानवशास्त्री मूल्यों को सांस्कृतिक लक्षणों

के रूप में स्वीकार करते हैं। आधुनिक युग में मूल्यों पर सबसे अधिक चिन्तन दार्शनिकों, मनोवैज्ञानिकों एवं समाजशास्त्रियों ने किया है। दार्शनिकों ने मूल्यों को अमूर्त सम्प्रत्यय कहा है। जिनका सम्बन्ध मनुष्य के अन्तर्मन से होता है। मनोवैज्ञानिकों ने मूल्यों को मनुष्य की रूचियों अभिवृत्तियों के रूप में लिया है। मूल्यों के सन्दर्भ में दार्शनिकों, समाजशास्त्रियों के दृष्टिकोणों पर समग्र रूप से विचार करें तो निष्कर्ष निकलता है कि किसी समाज के वे विश्वास, आदर्श सिद्धान्त, नैतिक नियम और व्यवहार मान दण्ड जिन्हें समाज के व्यक्ति महत्व देते हैं और जिनसे उनका व्यवहार निर्देशित एवं नियन्त्रित होता है वे उस समाज एवं उसके व्यक्तियों के मूल्य होते हैं। अब प्रश्न उठता है कि समाज के अन्तर्गत वे कौन से कारक या साधन हैं जो मूल्यों को बनाने में सहायक हैं। इसके लिए हमें व्यक्ति समाज तथा शिक्षा तीनों की सम्पूर्ण गतिविधियों का अवलोकन करना होगा। छात्र वह बीज है जो अपने अन्दर समस्त मूल्यों के विकास को समेटे हुए है। शिक्षा वह परिवेश है जो इस बीज को खाद–पानी देकर उसे विकसित करती है। इन दोनों के योगदान से ही मानवीय मूल्यों का उद्‌भव होता है। शिक्षा समाज की वह सीढ़ी है जिस पर पांव रखकर व्यक्ति अपने संस्कारों को संवारता है और शिक्षा को दिशा प्रदान करता है। शिक्षा समाज तथा व्यक्ति तीनों मिलकर यह निर्धारित करते हैं कि किन मानवीय मूल्यों पर ध्यान देने से व्यक्ति तथा समाज दोनों का कल्याण सम्भव है।

◆◆◆◆

# मानवीय मूल्य और वर्तमान मदरसा शिक्षा

**वसीम मियाँ**
*शोधार्थी महात्मा ज्योतिबा फुले रूहेलखण्ड विश्वविद्यालय, बरेली (उ०प्र०)*

## सारांश

शिक्षा व्यक्ति के मानसिक व बौद्धिक विकास का महत्तवपूर्ण साधन होती है। शिक्षा के माध्यम से ही व्यक्ति को कुसंस्कारों तथा मानसिक गुलामी से बचाकर रखा जा सकता है। शिक्षा के माध्यम से ही छात्रों में आत्मविश्वास और नई चेतना देकर सामाजिक कुरीतियों, अन्धविश्वासों तथा शोषण के विरूद्ध खड़ा किया जा सकता है। वर्तमान समय में शिक्षा मानवीय मूल्यों तथा आदर्शो की उपेक्षा कर संवेदनहीन होती जा रही है। ऐसे में छात्रों को नैतिक तथा आध्यात्मिक मूल्यों से परिचित कराना अति–आवश्यक है। छात्रों में मानवीय भावनाएं तथा संवेदनशीलता पैदा करने के लिये उन्हे आदर्शों, मानवीय मूल्यों तथा संस्कारों से जोड़ना आवश्यक है।

भारत में विभिन्न संस्कृतियों का प्रभाव पड़ा भारत के मध्य युग में इस्लाम का आगमन हुआ जिसने भारतीय समाज, संस्कृति तथा विचारधारा को नवीनता प्रदान कर एक नवीन शिक्षा

दर्शन का सूत्रपात किया जिसके फलस्वरूप इस्लाम धर्म के सिद्धान्तों के अनुरूप ही एक नई शिक्षा व्यवस्था का संगठन किया गया। साथ ही शिक्षा का अर्थ, उद्देश्य, पाठ्यक्रम, विधि, विद्यार्थी तथा अध्यापक के सम्बन्ध में नई अवधारणाओं ने जन्म लिया जिसको संगठित रूप मे हम इस्लामी शिक्षा दर्शन कहते हैं। इस्लाम धर्म में ज्ञान की प्राप्ति पर विशेष बल दिया गया है। पूर्व में मदरसा शिक्षण संस्थानों के प्रति यह धारणा बनी हुई थी कि ये केवल धार्मिक शिक्षा तक ही सीमित हैं परन्तु वर्तमान में केन्द्र तथा राज्य सरकारों के उदार दृष्टिकोण के कारण मुस्लिम शिक्षण संस्थान भी न केवल अन्य शिक्षण संस्थानों की भांति ही शिक्षा देने का कार्य कर रहे हैं बल्कि छात्रों में प्रेम की भावना, मानवीय भावना तथा संवेदनशीलता पैदा करने के लिये उनमें आदर्शों, मानवीय मूल्यों, तथा संस्कारों से जोड़ने का कार्य कर रहे है। अतः मदरसा शिक्षा के आधुनिकरण के पश्चात मदरसा शिक्षण संस्थान भी एक नये भारत के निर्माण में अपना सहयोग देने के लिये अग्रसर हैं। वर्तमान में समय की यह मांग हो चुकी है कि बालकों को मूल्य की शिक्षा के स्थान पर शिक्षा का मूल्य समझाने का प्रयास किया जाये अर्थात अध्यापक को अपने शिक्षण की विधियों के प्रति दृष्टिकोण में परिवर्तन लाना होगा।

**मुख्य शब्द–** मानवीय भावनाएं, संवेदनशीलता, मानवीय मूल्य, आधुनिकरण, मदरसा शिक्षण संस्थान।

◆◆◆

# शिक्षा एवं मानवीय मूल्य

**डॉ0 राजीव पाल**
*असि0 प्रोफेसर, हिन्दी–विभाग, राजकीय रज़ा स्नातकोत्तर महाविद्यालय, रामपुर (उ0प्र0)*

## सारांश

सामाजिक प्राणी होने के कारण मनुष्य के जीवन में समाज का बड़ा महत्त्व है। समाज से पृथक मनुष्य का कोई अस्तित्व नहीं है। वह समाज में ही जन्म लेता है और समाज में ही विकास करता है। जन्म लेने के पश्चात् अनेक प्रकार की परिस्थितियों का मनुष्य सामना करता है। अपने जीवन में अनेक अनुभवों का संचय कर लेता है। ये अनुभव ही उसे कुछ न कुछ सिखाते व शिक्षित करते जाते हैं तथा अपने आस–पास के परिवेश से सामंजस्य स्थापित करता जाता है। शिक्षा मनुष्य के जीवन में परिवर्तन लाती है और उसका व्यवहार परिष्कृत होता जाता है। शिक्षा द्वारा ही मनुष्य अपना सामाजिक विकास करता है, सभ्यता व संस्कृति की ओर निरन्तर उन्मुख होता है और जीवन की पूर्णता को उपलब्ध होता है। मनुष्य शिक्षा द्वारा ही अपने आन्तरिक गुणों का विकास करता है व अपने ज्ञान व कला–कौशल में वृद्धि करता हुआ समाज

का उपयोगी सदस्य बनता है। शिक्षा शब्द संस्कृत भाषा की शिक्ष् धातु से बना है जिसका अर्थ है सीखना व सिखाना। इस प्रकार शिक्षा ग्रहण करना ही शिक्षा है।

आज देश में जो साम्प्रदायिक और जातीय भेदभाव पनप रहा है, जिससे शिक्षा का ह्रास हो रहा है जो व्यक्ति, समाज और राष्ट्र के लिए एक गम्भीर चुनौती है। यदि व्यक्ति के व्यक्तित्व का समग्र विकास करना है, समाज में सत्य, प्रेम, सहयोग, सहानुभूति, सहिष्णुता, बन्धुत्व का वातावरण पैदा करना है और राष्ट्र की रक्षा करनी है, उसकी एकता और अखण्डता बनाये रखनी है व आर्थिक समृद्धि लानी है तो मूल्यों के महत्त्व को प्रत्येक व्यक्ति को न केवल समझना होगा वरन् उन्हें अपने जीवन में उतारना भी होगा। मूल्यों के महत्त्व को समझने और उन्हें आत्मसात करने में शिक्षा का बहुत बड़ा योगदान है। भारत विश्व के विकसित देशों के मध्य अपना महत्त्वपूर्ण स्थान बना लेगा। मानव अधिकार शिक्षा के साथ ही मानवीय कर्त्तव्यों की जानकारी शिक्षा के माध्यम से सम्यक् रूप से प्रदान की जानी चाहिए, जिससे कि हम देश को प्रगति के पथ पर और अधिक तेजी से अग्रसर करने में सफल हो सकें। अतः प्रत्येक व्यक्ति को सम्यक् रूप से मानव अधिकार प्राप्त होने चाहिए और इसके हेतु शिक्षा की समुचित व्यवस्था की जानी चाहिए जिससे कि मानव जाति विध्वंसकारी प्रवृत्ति से मुक्त होकर रचनात्मक कार्यों में लग सकें, जिससे राष्ट्र की एकता और अखण्डता अक्षुण रहेगी।

◆◆◆◆

# शिक्षा में व्यावसायिक प्रतिबद्धता और आचार संहिता

**प्रदीप कुमार**
*सहायक प्रोफेसर, शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय संभल, मौलाना आज़ाद राष्ट्रीय उर्दू विश्वविद्यालय*

**सारांश**

शिक्षक छात्रों को शैक्षिक बातें सीखने में मदद करते हैं, और सकारात्मक उदाहरण देकर जीवन की महत्वपूर्ण चीजों को सिखाते हैं। अच्छे शिक्षक अपने छात्रों के रोल मॉडल होते हैं, इसलिए शिक्षकों को रोल मॉडल के रूप में नैतिकता और व्यावसायिक प्रतिबद्धता की एक आचार संहिता का पालन करना चाहिए। शिक्षकों की व्यावसायिक आचार संहिता यह सुनिश्चित करती है कि छात्रों को एक उचित, ईमानदारी वाली और समझौताविहीन सर्वोत्तम शिक्षा मिले। नैतिकता एवं आचार संहिता अपने छात्रों के प्रति शिक्षकों की जिम्मेदारियों की रूपरेखा तैयार करती है और छात्रों के जीवन में उनकी भूमिका को परिभाषित करती है।

◆◆◆◆

# शिक्षा में मानवीय मूल्य एंव व्यावसायिक नैतिकताः आवश्यकता एंव महत्व

**डॉ० प्रदीप कुमार[1] एवं वैष्णवी गुप्ता[2]**
*[1]असिस्टेन्ट प्रोफेसर, शिक्षा विभाग, [2]छात्रा (बी.एस–सी.), राज. रज़ा पी.जी. कॉलेज, रामपुर*

## सारांश

शिष्टाचार दूसरों की गरिमा का सम्मान तथा दूसरों के प्रति भावनात्मक समझ आदि तत्व 'मानवीय मूल्य' कहलाते है। मानवीय मूल्य व्यक्ति के उदारवादी चरित्र की अस्मिता होते है। मानव के मूल्य ही समाज में उसके चरित्र का द्योतक होते हैं। प्रत्येक सफल व्यक्ति के पीछे उसके सकारात्मक मूल्य ही कार्य करते हैं। कोई व्यक्ति किसी भी प्रकार का व्यवसाय करता है तब उसकी कार्यपद्धति में भी मानवीय मूल्यों का अभाव नहीं होना चाहिए अर्थात् व्यक्ति के प्रत्येक व्यवसाय में मानवीय मूल्यों का निहित होना एक 'नैतिक आवश्यकता' है। जिस कारक का उददेश्य 'व्यक्ति का चहुँमुखी विकास' होता है वह कारक 'शिक्षा' कहलाता है। जिस प्रकार किसी व्यक्ति को आर्थिक रूप से सम्पन्न जीवन के लिए 'धन' की आवश्यकता होती है उसी प्रकार सामाजिक, बौद्धिक तथा गरिमापूर्ण जीवन के लिए 'शिक्षा' आवश्यक होती है। शिक्षा के क्षेत्र में मानवीय मूल्य निहित होने से शिक्षा व्यवस्था स्वच्छ एवं सुदृढ़ बनती है।

आज ये जानकर हर्ष की अनुभूति होती है कि हमारे देश मे अध्यापक तथा अभ्यार्थी दोनों ही भारतीय होते हैं तथा इतना ही नही विदेश से भी छात्र शिक्षा ग्रहण करने के उद्देश्य से भारत आते हैं। यदि नैतिक मूल्यों की बात करें तब किसी विद्यार्थी की व्यक्तिगत उपलब्धियों चाहें कुछ भी हो परन्तु उसमें यदि अपने शिक्षकों के प्रति सम्मान भाव नही है तब उसकी शिक्षा पूर्ण नही है अतः छात्र तथा शिक्षक के मध्य मात्र शिक्षा तथा धन का ही सम्बन्ध नही होना चाहिए अपितु वे सम्बन्ध ufrdrk जैसे प्राथमिक मूल्यों से सम्बन्द्ध होना चाहिए। छात्र को अपने लक्ष्य के प्रति दृढ़ रहना चाहिए तथा संकल्पयुक्त मनोदशा के साथ भविष्य की ओर कूच करना चाहिए।

समाज की बर्बादी बुरे व्यक्तियों की सक्रियता से नही होती समाज की बर्बादी तो अच्छे व्यक्तियों की निष्क्रियता से होती है। भारत की साक्षरता लगभग 65 प्रतिशत (2011 की जनगणना के अनुसार) है। हमारा लक्ष्य इसमें वृद्धि करना है। देश के सभी राज्यों में अधिकतम साक्षरता केरल राज्य (90 प्रतिशत) तथा न्यूनतम बिहार (47 प्रतिशत) है। वर्तमान में विद्यार्थी ही भावी भारत का भविष्य है तथा भावी भारत का विकास ही हमारी प्राथमिक आवश्यकता है।

शिक्षा में मानवीय मूल्यों का न होना उस शिक्षित व्यक्ति के अपूर्ण व्यक्तित्व का सबसे

बड़ा कारण होता है। हमारे जीवन में शिक्षा का महत्व अनुपम है।

◆◆◆◆

# व्यावसायिक आचार संहिता

(शिक्षक और उनके दायित्व यू.जी.सी. विनियम 2018 के सदर्भ में)

**डॉ० अनिल कुमार यादव[1] एवं डॉ० अशु सरीन[2]**
*[1]विभागाध्यक्ष, बी.एड.विभाग आर.एस.एम. (पी.जी.) कालेज, धामपुर, जिला बिजनौर (उ०प्र०)*
*[2]विभागाध्यक्ष, बी.एड.विभाग गोकुल दास हिन्दु गर्ल्स कालेज, मुरादाबाद (उ०प्र०)*

**सारांश**

जो कोई भी शिक्षण को व्यवसाय के रुप में अपनाता है उसका दायित्व होता है कि वह पेशे के आदर्शो के अनुरुप अपने आचरण को बनाए रखे। एक शिक्षक लगातार अपने छात्रों और समाज की समीक्षा के अधीन रहता है। इसलिए, प्रत्येक शिक्षक को यह ध्यान रखना चाहिए कि उसकी कथनी और करनी के बीच कोई भेद नहीं हो। पहले से ही निर्धारित शिक्षा के राष्ट्रीय आदर्शो और उन्हें छात्रों प्रसार करना एक शिक्षक का स्वयं का आदर्श होना चाहिए। इस व्यवसाय में आगे यह भी आवश्यक है कि शिक्षक शांत, धैर्यवान, मिलनसार और मैत्रीपूर्ण स्वभाव का हो।

एक शिक्षक को :

(1) ऐसा जिम्मेदारी भरे आचरण व्यवहार का पालन करना चाहिए जैसा कि समुदाय उनसे आशा करता है;

(2) उन्हें अपने निजी मामलों का इस प्रकार से प्रबंधन करना चाहिए जो कि पेशे की प्रतिष्ठा के अनुरुप हों;

(3) अध्ययन और शोध के माध्यम से लगातार पेशेवर विकास जारी रखने चाहिए;

(4) ज्ञान के क्षेत्र में योगदान देने के लिए पेशेवर बैठकों, संगोष्ठियों, सम्मेलनों इत्यादि में भागीदारी करके मुक्त और मैत्रीपूर्ण विचार व्यक्त करने चाहिए;

(5) पेशेवर संगठनों में सक्रिय सदस्यता को बनाए रखना चाहिए और उनके माध्यम से शिक्षा और व्यवसाय को बेहतर बनाने का प्रयास करना चाहिए;

(6) विवेकपूर्ण और समर्पण भावना से शिक्षण, अनुशिक्षण, प्रायोगिक ज्ञान, संगोष्ठियों और शोध कार्य के रुप में अपने कर्तव्यों का निष्पादन करना चाहिए;

(7) शिक्षण और शोध में साहित्य चोरी और अन्य अनैतिक व्यवहार में शामिल नहीं होना और उन्हें हतोत्साहित करना चाहिए;

(8) विश्वविद्यालय के अधिनियम, सांविधि और अध्यादेश का पालन करना चाहिए और विश्वविद्यालय के आदर्शो, विजन, मिशन, सांस्कृतिक पद्धतियों और परंपराओं का आदर करना चाहिए;

(9) महाविद्यालय और विश्वविद्यालय के शैक्षणिक दायित्वों से संबंधित कार्यो का क्रियान्वयन करने में सहयोग और सहायता प्रदान करना जैसे किः प्रवेश हेतु आवेदनों का मूल्यांकन करने में सहायता करना, छात्रों को परामर्श देना और निगरानी करना, पर्यवेक्षण और मूल्यांकन करने सहित विश्वविद्यालय और महाविद्यालय में परीक्षाएं आयोजित कराने में सहायता करना;

(10) सामुदायिक सेवा सहित सह–पाठयचर्या पाठ्येत्तर कार्यकलापों के विस्तार में भागीदारी करना;

◆◆◆◆

# भारतीय संविधान एवं मानवीय मूल्य

**डा० मनमीत कौर**
*एसोसिएट प्रोफेसर, राजनीति विज्ञान विभाग, बरेली कालेज, बरेली (उ०प्र०)*

## सारांश

संविधान राष्ट्र का पवित्र दस्तावेज है। यह उस दर्शन और मूल्यों का प्रतिनिधित्व करता है जिस पर कोई राष्ट्र विकसित होता है और उन लक्ष्यों की पहचान करता है जिन पर देश के नागरिकों की ऊर्जा को निर्देशित किया जाना चाहिए। भारत में हर घर में धार्मिक ग्रन्थ जैसे–भगवद्गीता, रामायण, बाइबिल, गुरू ग्रंथ साहिब या कुरान मिल सकते हैं, लेकिन भारत का संविधान पढ़ने के लिए यह मुमकिन नहीं है। भारतीय संविधान अपने आप में अनूठा है, दुनिया का सबसे बड़ा लिखित संविधान होने के साथ ही मूल्यों को प्रदर्शित करता है। हिन्दी और अंग्रेजी की दोनों मूल प्रतियाँ संविधान की हस्तलिखित हैं। इस तरह से यह दुनिया का सबसे बड़ा हस्तलिखित संविधान भी है। संविधान की मूल प्रतियों में हमारे पौराणिक और धामिक पात्रों को भी उकेरा गया है, भगवान राम, कृष्ण और शिव को चित्रित किया गया है। इसके साथ ही उपदेश देते भगवान बुद्ध को भी शामिल किया गया है, भारतीय संविधान शिक्षित करता है और जीवन जीने के तरीके को बढ़ावा देता है। संविधान की प्रस्तावना के अन्तर्गत उन आदर्शों को आत्मसात

किया गया है जिनके लिए हम प्रयास कर रहे हैं। यह सभी नागरिकों के लिए सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक न्याय या विचारों की अभिव्यक्ति के लिए स्वतन्त्रता और विश्वास यहाँ तक की अवसर की स्थिति और समानता प्रदान करता है तो साथ ही नागरिकों के लिए आचार संहिता भी उपलब्ध कराता है। जब संविधान रोजगार में अवसर की समानता की बात करता है और धर्म, वंश, जाति और लिंग के आधार पर भेदभाव को रोकता है तो वह महिला सशक्तीकरण को बढ़ावा दे रहा होता है और यहाँ तक की जातिगत बंधनों को तोड़ रहा होता है। भारतीय संविधान की प्रस्तावना 'भारत के लोग' से शुरू होती है। यह बताती है कि देश का संविधान देशवासियों के लिए है। लोगों को बेहतर जीवन देने के लिए संविधान ने हमें कुछ मौलिक अधिकार दिए हैं। इसमें समानता, स्वतन्त्रता, धार्मिक स्वतन्त्रता, सांस्कृतिक व शैक्षिक अधिकार, शोषण के विरूद्ध अधिकार व संवैधानिक उपचारों का अधिकार है, 1976 में संविधान संशोधन से अनुच्छेद 51ए को जोड़ा गया यह नागरिक के मौलिक कर्तव्यों की बात करता है। ये कर्तव्य संविधान के प्रति सम्मान, समग्र संस्कृति की समृद्ध विरासत को संरक्षित करना, पर्यावरण में सुधार और सुरक्षा सार्वजनिक सम्पत्ति की सुरक्षा और हिंसा को रोकना और व्यक्तिगत व सामाजिक गतिविधियों के सभी क्षेत्रों में श्रेष्ठता प्राप्त करना है। यदि सभी नागरिक कर्तव्यों का पालन करें तो यह पूरे देश के लिए एक अच्छा कदम होगा। संवैधानिक मूल्यों के लिए सबसे अधिक आवश्यक है कि भारतीय संविधान को देश के घर–घर में धार्मिक पुस्तक के समान अध्ययन किया जाए व अंतःकरण में समाहित किया जाए। क्योंकि संवैधानिक मूल्य देश की कानूनी व्यवस्था की नींव हैं हमारे संविधान को एक अद्वितीय संविधान के साथ–साथ सबसे बड़ा तभी माना जा सकता है जब उसके मूल्य ईमानदारी से भारतीय नागरिकों द्वारा अपनायें जायें।

◆◆◆◆

# भारतीय संविधान एवं मानवीय मूल्य

**डॉ0 नरेश कुमार**
*एसोसिएट प्रोफेसर, राजनीति विज्ञान विभाग, राजकीय महाविद्यालय भोजपुर मुरादाबाद (उ०प्र०)*

**सारांश**

भारतीय संविधान विश्व का सबसे बड़ा लिखित संविधान है, जिसमें विश्व के महत्वपूर्ण संविधानों की जाँची परखी सभी अच्छी व्यवस्थाओं को भारत की प्राचीन सभ्यता एवं संस्कृति से अनुकूलित कर के भारतीय संविधान में स्थान दिया गया है। संविधान ऐसी तांत्रिक व्यवस्था का नाम है जो देश में शान्ति व्यवस्था कायम रखते हुए उसे विकास के पथ पर आगे ले जा सके और जिसके द्वारा देश के मानवीय मूल्यों का निरन्तर संरक्षण एवं संर्वधन होता रहे।

मानवीय मूल्य वे मानवीय मान, लक्ष्य या आदर्श हैं, जिनके आधार पर विभिन्न मानवीय परिस्थितियों तथा विषयों का मूल्यांकन किया जाता है। वे मूल्य व्यक्ति के लिए कुछ अर्थ रखते हैं और उन्हें व्यक्ति अपने सामाजिक जीवन के लिए महत्वपूर्ण मानता है। मानवीय मूल्य दोप्रकार के होते हैं:—साध्य मूल्य और साधन मूल्य। वे मूल लक्ष्य तथा संतोष जिन्हें मनुष्य तथा समाज जीवन तथा मस्तिष्क के विकास एवं विस्तार प्रक्रिया में अपने लिए स्वीकार कर लेते हैं तथा जो व्यक्ति के आचरण में अन्तर्विष्ट होते हैं साध्य मूल्य कहलाते हैं, जैसे— सत्य, अहिंसा, प्रेम, शान्ति, दया तथा आचरण। इसके विपरीत वे मूल्य जो साध्य मूल्यों की सेवा हेतु एवं उन्हें उन्नत करने के लिए आवश्यक होते हैं साधन मूल्य कहलाते हैं जैसे—स्वास्थ्य, सम्पत्ति, सुरक्षा, पेशा एवं प्रास्थिति आदि।

सत्य, अहिंसा, प्रेम, शान्ति, दया तथा सदाचरण आदि शाश्वत मानवीय मूल्यों के बिना कोई भी संविधान सार्थक नहीं हो सकता है। भारतीय संविधान की प्रस्तावना को संविधान की कुँजी कहा जाता है, जिसमें सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक न्याय, विश्वास, धर्म और उपासना की स्वतंत्रता, प्रतिष्ठा एवं अवसर की समानता, व्यक्ति की गरिमा एवं राष्ट्र की एकता एवं अखण्डता सुनिश्चित करने वाली बन्धुता बढ़ाने का संकल्प लिया गया है। जिससे परिलक्षित होता है कि भारतीय संविधान में सभी मानवीय मूल्यों के संरक्षण एवं संवर्धन की पूर्ण व्यवस्था की गयी है।

इस शोध पत्र में संविधान से पुष्पित और पल्लवित होने वाले समस्त मानवीय मूल्यो ंको उद्घाटित करने का प्रयास किया गया है।

◆◆◆

# संविधान और मानवीय मूल्य

**चन्द्रमुखी पाल**
*छात्रा, एल. एल. एम. द्वितीय वर्ष, महात्मा ज्योतिबा फूले रूहेलखण्ड विश्वविद्यालय, बरेली*

**सारांश**

किसी भी देश का संविधान कई उद्देश्यों की पूर्ति करता है, जिससे देश का सर्वांगीण विकास हो सके प्रत्येक देश आम तौर पर ऐसे लोगों के विभिन्न समुदायों से बना होता है जो कुछ मान्यताओं को साझा करते हैं लेकिन जरूरी नहीं है कि वे सभी मुद्दों पर सहमत हों। किसी भी देश का संविधान सिद्धान्तों, नियमों और प्रक्रियाओं के खाके के रूप में कार्य करने में मदद करता है जिससे सभी के हितों व मानवीय मूल्यों को संरक्षित किया जा सकता है। एक आम आदमी की समझ में मानवीय मूल्य वह हैं, जो मानव समाज के अस्तित्व के लिए एक उपकरण के रूप में बहुत आवश्यक है।

संवैधानिक मूल्यों को भारत के सम्पूर्ण संविधान में परिलक्षित किया जाता है। भारतीय संविधान की प्रस्तावना में मूलभूत मूल्यों और उसके स्वरूप को दर्शाती है जिस पर संविधान आधारित है। यह है, सम्प्रभुता, समाजवाद, धर्म निरपेक्षता, लोकतन्त्र, गणतन्त्रीय चरित्र, न्याय, स्वतन्त्रता, समानता, बन्धुत्व, मानवीय गरिमा और राष्ट्र की एकता और अखण्डता।

70 साल पहले संविधान लागू करने के साथ देश में विकास की जो नींव रखी गई थी, समय के साथ वह और भी मजबूत हुई है। विभिन्न क्षेत्रों में विकास हुआ है, लेकिन इस सब के बाद भी गणतन्त्र की वह परिभाषा भारत में दिखाई नहीं देती जिसकी उम्मीद संविधान लागू करते समय की गई थी आज भी हमारे देश में कई ऐसे क्षेत्र हैं, जहां लोग अपनी मूलभूत आवश्यकताओं की पूर्ति भी नहीं करा पा रहे हैं, इसके अलावा जाति, धर्म, अमीरी, गरीबी के नाम पर बढ़ता भेद भाव भी कई जगह दिखाई देता है इन सब समस्याओं का बहुत बड़ा कारण लोगों में चीजों को लेकर जागरूकता की कमी भी है।

आज के समय में जब भी लोग संविधान के विषय में बात करते हैं, तो वह सिर्फ अपने अधिकारों तक ही सीमित रहते हैं। अधिकतर व्यक्ति देश के प्रति अपनी जिम्मेदारियों और कर्तव्यों को अनदेखा करते ही दिखाई देते हैं। इस लेख के माध्यम से लेखिका ने यह कहने का प्रयास किया है कि आज की युवा पीढ़ी को संविधान के बारे में पढ़ाने का अर्थ केवल कक्षा में सूचना और ज्ञान देना नहीं है। बल्कि इसमें सभी तरह के तौर तरीके भी शामिल है।

**मुख्य शब्द–** मानवीय मूल्य, सर्वांगीण विकास, भेदभाव, दृष्टिकोण।

◆◆◆

# शिक्षा का विकास एवं भारतीय संविधान

**डॉ० संजीव कुमार[1] एवं शिल्की सिंह[2]**
*सहा0 आचार्य, कु० मायावती राज. महिला महाविद्यालय, बादलपुर, गौतमबुद्ध नगर (उ०प्र०)*
*प्रवक्ता, शिक्षाशास्त्र, आर्य कन्या पाठशाला इंटर कॉलिज, हापुड़ (उ०प्र०)*

## सारांश

'किसी देश के समुचित विकास के लिए अतिआवष्यक है की उस देश के नागरिक सुशिक्षित हो' इस विचार को स्वीकारते हुए भारत की सरकार ने अंग्रेजो से स्वतंत्रता प्राप्त करते ही देश में समुचित शिक्षा के प्रबंध हेतु सन 1948 में डॉ सर्वपल्ली राधाकृष्णन की अध्यक्षता में विश्वविद्यालय शिक्षा आयोग का गठन किया। इस आयोग ने उच्च शिक्षा की गुणवत्ता में सुधार हेतु विष्वविद्यालय अनुदान आयोग के गठन के साथ अन्य महत्वपूर्ण सुझाव प्रस्तुत किये। इसके

पश्चात भारत सरकार ने माध्यमिक शिक्षा में सुधार हेतु सन 1952 में डॉ लक्ष्मण स्वामी मुदालियर की अध्यक्षता में माध्यमिक शिक्षा आयोग का गठन किया। इस आयोग ने माध्यमिक शिक्षा के विभिन्न पक्षों से सम्बंधित अनेकों सुझाव प्रस्तुत किये जिनमे माध्यमिक स्तर पर बहुउद्देषीय विद्यालयों की स्थापना करना प्रमुख था। तत्पश्चात भारत सरकार ने शिक्षा पर समग्र रूप से विचार–मंथन करने हेतु सन 1964 में डॉ डी० एस० कोठारी की अध्यक्षता में राष्ट्रीय शिक्षा आयोग का गठन किया। इस आयोग के प्रतिवेदन का शीर्षक था– 'शिक्षा एवं राष्ट्रीय प्रगति' (Education And National development)। इस प्रतिवेदन का षुभारम्भ इस वाक्य से किया है– 'देश का भविश्य उसकी कक्षाओं में निर्मित हो रहा है।' इस आयोग ने शिक्षा के सभी स्तरों से सम्बंधित अनेको सुझाव प्रस्तुत किये जिनमे सामान्य विद्यालय पद्धति (Common School System) की अवधारणा, विद्यालयो में कार्यानुभव (Work Experience) पर बल, विज्ञान की शिक्षा, वरिश्ठ एवं कृशि विष्वविद्यालयो की स्थापना आदि प्रमुख थे। कोठारी आयोग के सुझावों पर गंभीरता से चिंतन करते हुए भारत सरकार ने सन 1968 में प्रथम राष्ट्रीय शिक्षा नीति का निर्माण किया। इस शिक्षा नीति में शिक्षा के सभी स्तरों पर गुणात्मक सुधार पर बल दिया गया। सन 1979 में भारत सरकार ने नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति की घोषणा की। इस नीति में प्राथमिक शिक्षा एवं कमजोर वर्ग के बच्चो की शिक्षा पर अधिक बल दिया गया। तत्पश्चात भारत सरकार ने सन 1986 में एक और नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति की घोषणा की तथा 1992 में इसमें कुछ संशोधन के साथ संशोधित राष्ट्रीय शिक्षा नीति की घोषणा की। इस शिक्षा नीति की विशेषता यह थी की इसमें नीति के साथ उसके क्रियान्वन की पूरी कार्य योजना (Plan Of Action) भी प्रस्तुत की गयी। इस शिक्षा नीति में राष्ट्रीय शिक्षा प्रणाली, समानता के लिए शिक्षा, शिक्षा प्रषासन के विकेंद्रीकरण, तकनीकी एवं प्रबंध की शिक्षा, कमजोर वर्ग के बच्चो की शिक्षा आदि पर प्रमुख बल दिया गया इस शिक्षा नीति के बाद भी भारत सरकार ने शिक्षा के प्रसार एवं उसकी गुणवत्ता में सुधार हेतु समय–समय पर विभिन्न शिक्षा आयोगों एवं समितियों का गठन किया जिनमे प्रो० यशपाल समिति 1992–93, राष्ट्रीय ज्ञान आयोग 2005, राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2005 आदि प्रमुख हैं। सन 2009 में भारत सरकार ने एक ऐतिहासिक निर्णय लेते हुए शिक्षा का अधिकार अधिनियम (Right To Education Act) पारित किया जिसमे 6 से 144 वर्ष तक के सभी बच्चो के लिए निशुल्क एवं अनिवार्य शिक्षा का प्रावधान किया गया है। इस वर्ष सन 2016 में भारत सरकार ने आधुनिक भारत की आवश्यकताओं एवं आकांक्षाओं के अनुसार नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति बनाने हेतु राष्ट्रीय स्तर पर एक व्यापक परिचर्चा शुरू की है। इस परिचर्चा में समाज के प्रत्येक वर्ग से विचार लिए जा रहे हैं तथा संगोष्ठीयाँ व सम्मेलनों के आयोजन किये जा रहे हैं। आशा है कि सभी की भागीदारी से एक ऐसी राष्ट्रीय शिक्षा नीति का निर्माण होगा जो भारत को विकसित देश बनाने का मार्ग प्रशस्त करेगी।

◆◆◆◆

# आजादी के समर मे आधुनिक शिक्षा का योगदान

**सचिन कुमार**
*असि. प्रोफेसर, इतिहास विभाग, डी.ए.वी, कॉलेज, मुजफ्फरनगर (उ०प्र०)*

## सारांश

शिक्षा मानव जीवन मे एक शस्त्र की भांति होती है। जिस प्रकार कोई योद्धा शस्त्र धारण करने के पश्चात अपने आपको गौरवान्वित और आत्मनिर्भर महसूस करता है। उसी प्रकार एक सामान्य मानव भी शिक्षित होने के पश्चात अपने आपको गौरवान्वित समझता है इसके अतिरिक्त वह अपने अधिकारों और कर्तव्यों के प्रति भी जागरूक हो जाता है। अंग्रेज़ो ने जो शिक्षा प्रणाली मैकाले के समय आरंभ की थी उसका उद्देश्य था केवल अंग्रेजी माध्यम से कुछ भारतीयों को पढ़ाना जो उनके लिए एक दूभाषिया का कार्य कर सके। प्रारम्भ मे अंग्रेज़ो ने कुछ योजना बनाई जैसे –1854 का (wood dispatch),1882 का हंटर आयोग आदि।

लेकिन अंग्रेज़ो के यें प्रयोग आधिक सफल नहीं हो सके। शिक्षा का जैसे–जैसे प्रसार हुआ लोगो मे राष्ट्रवाद की भावना जागने लगी। अब भारतीय जनमानस अपने विचारो का आदान–प्रदान भी करने लगा। साहित्य का निर्माण अनेकों रूपो किया जाने लगा जैसे–

1. समाचार–पत्रो का प्रकाशन

2 उपन्यास लेखन

3 पत्रिकाओ का सर्जन

इसके अतिरिक्त कुछ क्रांतिकारी साहित्य का भी लेखन हुआ।जिसे पढ़कर तत्कालीन समय के नौजवान क्रांति की राह पर चल पड़े और हमे आजादी दिलाई।

◆◆◆◆

# थारू जनजाति की भौगोलिक परिस्थितियां एवं उनके मानवीय मूल्य

**भाग्य श्री**
*भूगोल शोधकत्री, कुमाउं विश्वविद्यालय, नैनीताल (उ०प्र०)*

## सारांश

किसी भी जाति– समुदाय की भौगोलिक परिस्थितियां उस जाति के लोगों के मानवीय मूल्यों से घनिष्ठ रूप से सम्बन्धित होती हैं। थारू जनजाति का निवास स्थान उत्तर प्रदेश,

उत्तराखण्ड, बिहार राज्य के जिलों में मिलता है। उत्तराखण्ड के तराई जिला उधम सिंह नगर के ब्लॉक खटीमा एवं सितारगंज में इनका मुख्यतः निवास स्थान है। खटीमा एवं सितारगंज ब्लॉक का विस्तार तराई के जिले उधम सिंह नगर के पूर्व की ओर पाया जाता है। सितारगंज का अक्षांशीय एवं देशान्तर विस्तार 28.93 अंश उत्तर से 97.70 अंश पूर्व के बीच पाया जाता है। सितारगंज ब्लॉक के उत्तरी सीमा जिला नैनीताल की दक्षिणी सीमा तक है तथा दक्षिणी सीमा पीलीभीत उत्तर प्रदेश तक है। सितारगंज मुख्यालय के पूर्व की ओर खटीमा 28 किलोमीटर की दूरी पर स्थित है तथा पश्चिम में उधम सिंह नगर मुख्यालय रूद्रपुर से 45 किमी. की दूरी पर स्थित है। खटीमा के पूर्व में नेपाल सीमा है जो कि 11 किमी. की दूरी पर है। खटीमा से सितारगंज की दूरी 28 किमी. दूर है।

सितारगंज एवं खटीमा में तापमान मई–जून में सबसे अधिक लगभग 43 डि.से. एवं दिसम्बर–जनवरी में सबसे कम लगभग 9 डि.से. होता है। तराई में होने के कारण यहां की भूमि दलदलीय है। आसमानी वर्षा लगभग 100 से 150 सेमी. के कारण यहां भयंकर बाढ़ आती हैं। यहां की जलवायु मानसूनी जलवायु है। यहां की वनस्पतियां पर्णपाती हैं। जैसे सागौन, साल, आम, शीशम, महुआ, पॉपलर, नीम, पीपल, यूकेलिपटिस आदि। पशुओं के लिये यहां अच्छे चारागाह तथा घास के भण्डार पाये जाते हैं। यह क्षेत्र हिमालय के दक्षिण में स्थित होने के कारण यहां का मन्द ढाल उत्तर से दक्षिण की ओर पाया जाता है। यह दोनों विकास खण्ड तराई में होने के कारण कृषि प्रधान क्षेत्र हैं। यहां की मिट्टी में नाइट्रोजन तथा जैवपदार्थों की प्रचुर मात्रा है परन्तु फॉस्फेट की कमी है। यह मिट्टी गेहूं, चावल, गन्ना, सोयाबीन की कृषि के लिये उपयुक्त है। उपर्युक्त विवरण के आधार पर ही दोनों विकास खण्ड के लोगों के मानवीय मूल्य प्रभावित होते हैं। थारू जनजाति के संस्कार इन्हें अन्य जाति से भिन्न बनाती है। एक तरफ यह समुदाय अपनी परम्पराओं को जीवित रखे अपनी अलग पहचान बना रखी है। वहीं दूसरी तरफ वर्तमान समय में अन्य जनसमुदाय के सम्पर्क एवं शिक्षा के बढ़ते स्तर के फलस्वरूप इनके परम्पराओं में कई परिवर्तन हुए है। जैसे–मनोरंजन के पौराणिक साधनों को इन्होनें त्याग दिया है तथा तीज जैसे त्यौहार का प्रचलन समाप्त हो चुका है। थारू समाज के लोग हिन्दू धर्म को मानते है। ये लोग पहले मूर्ति पूजक नहीं थे, ये लोग अपने ईष्ट देव की पूजा करते थे। ये लोग तंत्र–मंत्र, जादू–टोना, भूत–प्रेत, आत्मा में विश्वास रखते हैं। आजकल ये लोग धर्मान्तरण भी कर रहे है। थारू समाज में साक्षरता दर में तीव्रता से वृद्धि हुई है। संख्या की दृष्टि से दोनों ब्लॉकों में आज भी थारू जनजाति के निरक्षर व्यक्तियों की संख्या अधिक है। 2011 की जनगणना के अनुसार खटीमा की कुल साक्षरता दर 76.39 प्रतिशत तथा सितारगंज की कुल साक्षरता दर 71. 95 प्रतिशत है।

◆◆◆

# भौगोलिक परिस्थितियाँ तथा मानवीय मूल्य

**सोमेन्द्र सिंह[1] एवं सौरभ भारद्वाज[2]**
*[1]असिस्टेन्ट प्रोफेसर, [2]छात्र बी० एड० द्वितीय वर्ष, शिक्षक शिक्षा विभाग, राजकीय रज़ा स्नातकोत्तर महाविद्यालय, रामपुर (उ०प्र०)*

## सारांश

भारत एक विविधता वाला देश है। इसकी विविधता यहां के भौगोलिक स्वरुप में, सभ्यता–संस्कृति में, कला में, धर्म में, विचारों में देखने को मिलती है। इसके साथ साथ यह देश गाथाओं तथा प्राचीन परम्पराओं का कर्मस्थल तथा इतिहास का जनक रहा है।

यहां हम भारत के भौगोलिक स्वरुप की बात करते है। तो 'भारतवर्ष' के उत्तर में पर्वत राज हिमालय जिसकी बर्फ से ढकी ऊँची ऊँची पर्वत चोटियाँ अनुपम छटा को संजोए हुए है। वही पश्चिम में थार का मरुस्थल है। पूर्व में सुन्दर वन का डेल्टा है तो दक्षिण में समुद्र तटीय मैदान है। मध्यवर्ती भाग में उपजाऊ मिट्टी युक्त मैदानी भाग तथा पठारी भाग भारतवर्ष की खूबसूरत स्वरुप को दर्शाता है।

भारत के भौगोलिक स्वरुप में भारतीय जीवन शैलियों की भव्यता विराजमान है। भारतीय संस्कृति इन सभी भौगोलिक परिस्थितियों में अलग–अलग है। यहां विभिन्न धर्म, जाति के लोग रहते है। जिनके भोजन, वस्त्र, आवास, मान्यताएं अलग–अलग है। वे भिन्न–भिन्न धर्मों का पालन करते है। परन्तु इस विविधता पूर्ण भौगोलिक परिवेश में मानवीय मूल्यों की भी समरसता देखने को मिलती है। विभिन्न संस्कृति को धारण करने वाले लोगों के सामाजिक मूल्य, मानवीय मूल्य, नैतिक मूल्य, आध्यात्मिक मूल्य, मनोवैज्ञानिक मूल्य एक है।

भारत देश में सभी लोगों के लिए समान कर्तव्य, न्याय, अधिकार की व्यवस्था है। सभी लोग न्याय, ईमानदारी, प्रेम, अहिंसा, दया, नैतिकता आदि मानवीय मूल्य के पक्षधर है। सभी का स्वभाव एक समान है। एक त्यौहार या उत्सव किसी घर या परिवार के लिए सीमित नहीं है। पूरा समुदाय आपस में मिलकर एक साथ मनाते है तथा दुख के क्षण में भी एक साथ रहते है।

संक्षेप में कह सकते है भारतवर्ष का भूगोल चाहे कितना ही अलग क्यों न हो यहां के लोग एक दूसरे के धर्म, संस्कृति के प्रति आस्था रखते है। यहां मानवीय मूल्यों में एकरुपता परिलक्षित होती है।

◆◆◆◆

# शिक्षा एवं मानवीय मूल्यों के सन्दर्भ में सांवेगिक बुद्धि की प्रासंगिकता

**हिमाँशु शर्मा**
*बी0एड0 / एम0एड0 विभाग (आई0ए0एस0ई0), म0ज्यो0फु0 रुहेलखण्ड विश्वविद्यालय, बरेली(उ०प्र०)*

## सारांश

शिक्षा के माध्यम से केवल भौतिक सम्पन्नता प्राप्त करना ही पर्याप्त नहीं होता शिक्षा के द्वारा हम एक अच्छे इंसान और वेहतर नागरिक भी बनने चाहिए। हम इस बात से इंकार नहीं कर सकते कि वर्तमान शिक्षा से हमने असंख्य भौतिक उपलब्धियाँ प्राप्त की हैं, लेकिन आधुनिक समय में शिक्षा मानवीय मूल्यों परम्परा व आदर्शों की उपेक्षा कर संवेदनहीन होती जा रही है। यदि हम देखें तो यह पायेंगे कि हम शिक्षण तो वेहतर करने में सफल रहे पर वास्तव में अधिगम को बेहतर नहीं बना पाये। अधिगम से अर्थ है– विचारों को आत्मसात करना। आज हम 16 साल विद्यालयों में छात्रों को पढ़ाने के बाद छात्र की यह गारन्टी नहीं ले सकते कि, यह छात्र एक वेहतर इंजीनियर, डॉक्टर होने के साथ एक अच्छा इंसान भी होगा। मुंशी प्रेमचन्द्र द्वारा लिखित नमक का दरोगा कहानी को पाठक्रम में इस उद्देश्य से सम्मिलित किया गया कि हम छात्रों को यह सिखा सकें की जीवन की कठिन से कठिन परिस्थियों में भी हमें रिश्वत नहीं लेनी चाहिए, लेकिन अनेक तन्त्रों में ऊपर से नीचे तक अधिकतर पदाधिकारियों के हाथ रिश्वत में रंगे रहते हैं। अतः इन कहानियों की सार्थकता निष्प्रभावी हो जाती है। वास्वत में हमें शिक्षा का मूल्य बालकों को समझाना चाहिए। हमने बालकों को संसाधन के रूप में विकसित किया न कि अच्छे नागरिकों के रूप में। संसाधन अर्थात मशीन जो संवेदनाओं से शून्य है।

एक शिक्षक के लिए आवश्यक है कि हम अपने क्रियाकलापों भावनाओं विचारों के बीच सम्बन्ध को समझें तथा इनको पहचान कर प्रतिक्रिया करें। संवेगात्मक बुद्धि व्यक्ति में परानुभूति, अध्यवसाय में दृढ़ता, आवेश नियन्त्रण, स्पष्ट एवं प्रभावी सम्प्रेषण, विचारात्मक निर्णय, समस्या समाधान और दूसरों के साथ समायोजन करने की क्षमतायें विकसित करती है।

विद्यालय में संवेगात्मक प्रबुद्ध शिक्षक कक्षा वातावरण को सुरक्षित एवं आरामदायक बना सकता है। जिससे अधिगम में आसानी रहे अतः स्पष्ट है कि एक शिक्षक की प्रत्येक छात्र के जीवन में महत्वपूर्ण भूमिका एवं जिम्मेदारी रहती है। शिक्षक जो कुछ भी करता है छात्र उसी का अनुसरण करता है। इसलिए शिक्षक को उदाहरणार्थक होना चाहिए।

शिक्षा व्यवस्था का अग्रगामी अभिप्रेरक, व्यवस्थापक एवं अस्तित्व को बनाये रखने वाला शिक्षक ही है। इस कारण शिक्षक में संवेगात्मक बुद्धि का होना अति आवश्यक है।

◆◆◆◆

# तनाव के कारण किशोरों में मानवीय मूल्यों का अविकास

**विवेक आर्य**
*शोधार्थी मनोविज्ञान, कुमाउं विश्वविद्यालय, नैनीताल (उ०ख०)*

## सारांश

मानव जीवन की भूमिका बचपन है तो वृद्धावस्था निष्कर्ष है। किशोरावस्था जीवन की सर्वाधिक उर्जावान अवस्था होती है। इस अवस्था में किशोरों को अधिक ज्ञान न होने के कारण वह धीरे–धीरे तनाव की ओर अग्रसर होने लगते है। युवा होते ही वह कई तनावों से घिर जाते हैं। युवा बनना कुछ और चाहते है परन्तु विवश होकर कुछ और ही करने लगते हैं। यहीं से तनाव आरम्भ हो जाता है। अपने वर्तमान जीवन से असंतुष्ट होकर उनका मानसिक संतुलन बिगड़ने लगता है। आज विश्व स्वास्थ्य संगठन की रिर्पोट के अनुसार प्रतिवर्ष लगभग 8 लाख लोग आत्महत्या करते हैं। भारत में प्रत्येक 55 मिनट में एक छात्र आत्महत्या कर लेता है। पिछले पांच वर्षों की बात करें तो देश में 52 प्रतिशत की वृद्धि छात्र आत्महत्याओं में हुई है। पांच वर्षों में लगभग 40 हजार छात्र आत्महत्या कर चुके हैं। अमेरिकी मनोरोग एसोसिएशन की रिपोर्ट के अनुसार अत्यधिक मनोरोग लगभग 14 वर्ष से आरम्भ हो जाते हैं। विश्व स्वास्थ्य संगठन के अनुसार 20 प्रतिशत किशोरों को मानसिक रोगों से ग्रसित पाया गया। किशोरों में मानसिक तनाव विभिन्न कारणों से उत्पन्न होता है जैसे– माता–पिता से अनबन, मस्तिष्क में रसायनों के असन्तुलन से, आनुवांषिक, पोशक तत्वों की कमी, मादक द्रव्यों के सेवन से, घरेलू हिंसा, गरीबी, आदि। किशोरों में चिड़चिड़ापन, उदासी, निराशा, आत्मसम्मान में कमी आदि कई लक्षण तनाव के दौरान दिखाई पड़ते हैं।

किशोर एवं किशोरियों में यह विश्वास कि प्रौढ़ों का उसके बारे में अच्छा विचार नहीं है उसका प्रौढ़ावस्था में प्रवेश कर पाना कठिन कर देता है। उसका माता–पिता के साथ तनाव उत्पन्न कर देता है। जिससे माता–पिता एवं किशोर के बीच एक दीवार खड़ी हो जाती है जिससे वह अपनी समस्याओं को हल करने में उनकी मदद नहीं ले सकता है। किशोरावस्था ऐसी अवस्था होती है जब किशोर बालक की इच्छाओं और समाज की अपेक्षाओं में घोर अन्तर्द्वन्द्व चलता है। फ्रायड के अनुसार किशोर बालक की विजातीय कामुकता में उसके शैशवावस्था की कामुकता की स्पष्ट झलक पायी जाती है। किशोर बालक अपनी प्रेमिका में अपनी मां का स्नेह ढूंढ़ता है तथा किशोरी अपने प्रेमी में अपने पिता का प्यार देखना चाहती है। अतः कामुकता किशोरावस्था की मूलभूत समस्याओं में से एक है। ब्लेयर, जोन्स, सिम्पसन व किन्स ने अपने अध्ययन में पाया है कि 95 प्रतिशत किशोर व किशोरियां 15 वर्ष तक की आयु तक पहुंच कर नियमित रुप से काम–क्रिया में लग जाते हैं। पुराने एवं नए मूल्यों के मध्य द्वन्द्व की स्थिति उत्पन्न होती है और द्वन्द्व

संवेगात्मक अस्थिरता को जन्म देता है। इस अवस्था में किशोरों पर सामाजिक दबाव पड़ता है जिसके परिणामस्वरुप वे अपना व्यवहार समाज द्वारा निर्मित मानकों के अनुरुप करते हैं। यदि उनका व्यवहार समाज द्वारा मान्य नियमों व मानकों के अनुरुप नहीं है तो उन्हें इसके लिए दण्ड व तिरस्कार भी सहना पड़ता है। वे आत्म नियन्त्रित व स्वतन्त्र होने के लिए चिन्तित रहते हैं।

किशोरों में बढ़ते तनाव के कारण आज किशोर समाज के साथ समायोजन करने में असक्षम हो रहें हैं। संयुक्त परिवार के विघटन के कारण उनमें मानवीय व नैतिक मूल्य विकसित नहीं हो पा रहें हैं। पारिवारिक दबाव व अरुचिकर कार्यों में संलग्न रहने के कारण उनकी इच्छाओं का दमन होता है फलस्वरुप वह किसी भी प्रकार के मूल्यों को सीखने में कोइ रुचि नहीं रखते तथा कभी कभी मूल्यों का विरोध करते हुए भी पाए जाते हैं।

◆◆◆

# कल्याणकारी अर्थशास्त्र एवं मानवीय मूल्य

**डॉ0 सीमा मलिक**
*असिस्टेंट प्रोफेसर, अर्थशास्त्र विभाग, गोकुलदास हिन्दू, गर्ल्स कॉलेज, मुरादाबाद 244001*

## सारांश

कल्याण अर्थशास्त्र, अर्थशास्त्र की एक शाखा है जो कुल (अर्थव्यवस्था व्यापी) स्तर पर कल्याण का मूल्यांकन करने के लिए सूक्ष्म करने के लिए आर्थिक तकनीको का उपयोग करती है। सामजिक कल्याण को मापने के हाल के प्रयासो में आर्थिक स्वतंत्रता (क्षमता द्रष्टिकोण के रूप में ) सहित उपायो की एक विस्तृत श्रंखला शामिल है मानवीय कल्याण से अर्थशास्त्र को जोड़ते हुए मार्शल ने कहा था कि अर्थशास्त्र के अध्ययन का मुख्य विषय मानव अथवा मानवीय कल्याण है और धन इस उद्देश्य की पूर्ति का एक साधन है मार्शल के विचारों का समर्थन उनके समकालीन अर्थ शार्त्रियो जैसे प्रोफेसर पीगू, कैनन, क्लार्क आदि द्वारा भी किया गया है मार्शल ने माना था को अर्थशास्त्र का सम्बंध सुख के साधनो की प्राप्ति ओर उपभोग से है। जिसका अर्थ यह हुआ कि अर्थशास्त्र का अंतिम लक्ष्य कल्याण में वृद्धि करना है

वास्तव में कल्याण के अर्थशास्त्र के सिद्धांतों को लागू करने का प्रयास सार्वजनिक अर्थशास्त्र के क्षेत्र में वृद्धि कर देता है। यह अध्ययन की सामाजिक कल्याण में सुधार करने के लिए सरकार कैसे हस्तक्षेप कर सकती है। कल्याण अर्थशास्त्र भी सार्वजनिक अर्थशास्त्र के विशेष उपकरणो के लिए सैद्धान्तिक नींव प्रदान करता है। जिसमे लागत–लाभ विश्लेषण शामिल है जबकि कल्याण अर्थशास्त्र ओर व्यवहारिक अर्थशास्त्र से अन्तदृष्टि के संयोजन ने एक नए

उपक्षेत्र ,व्यवहारिक कल्याण के निर्माण को जन्म दिया है। संक्षेप में हम कह सकते है कि कल्याण अर्थशास्त्र उच्च मानवीय मूल्य को स्थापित करने में एक महत्वपूर्ण आधार स्तम्भ का काम करता है और इससे मानवीय कल्याण में वृद्धि की जा सकती है

◆◆◆◆

# विज्ञान एवं मानवीय मूल्य

**प्रतिभा सिंह**
*असिस्टेंट प्रोफेसर, यू एरा कॉलेज ऑफ साइंस एंड टेक्नोलॉजी गजियाबाद (उ०प्र०)*

## सारांश

मूल्य शब्द स्वयं में एक अमूर्त एवं अत्यन्त व्यापक अर्थ समेटे हुए है जिसमें अनेक प्रकार के आयामों को देखा व परखा जाता है। ये एक ओर किसी समाज की संस्कृति, तो दूसरी ओर समाज के सदस्यों के व्यवहार की कसौटी माने जाते हैं। मानवीय मूल्य समाज द्वारा मान्यता प्राप्त वे इच्छाएं व लक्ष्य हैं जिन्हें मानव समाज के माध्यम से सीखता है और वे उसकी व्यक्तिनिष्ठ अभिलाषाएं बन जाती है। दूसरे शब्दों में मानवीय मूल्य ही निर्णयों के आवश्यक एवं अपरिहार्य तत्व हैं। सामाजिक व राजनीतिक जीवन को समझने में भी मानवीय मूल्य इसी प्रकार की भूमिका का निर्वाह करते हैं। मूल्य व्यक्ति व समाज के व्यवहारों को नियन्त्रित व सद् मार्ग की ओर निर्देशित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। मूल्यों मानव का बोध विवेक शक्ति उत्पन्न होने पर सम्भव होता है।

विज्ञान का सर्वोच्च लक्ष्य है–प्राकृतिक व्यवस्थाओं को संचालित करने वाले मूल नियमों की खोज करना।यह खोज और इस खोज से प्राप्त "ज्ञान" दोनों स्वतः मूल्यवान है। अतः वैज्ञानिक सत्यानुसन्धान को एक महान और पवित्र कर्त्तव्य के रूप में देखते हैं। इसीलिए यदि वैज्ञानिक "सत्य" से मानव का अहित होता हो, तो भी विज्ञान इसे अपना दोष नहीं मानता। पर ऐसी निर्वैयक्तिक, भावनाशून्य तटस्थता और मूल्य निरपेक्षता नैतिक मानवीय दृष्टि में दायित्व–हीनता का पर्याय मानी जाएगी। इस असामंजस्यपूर्ण स्थिति से बचने के लिए ही वैदिक चिंतकों ने समस्त विधाओं को अध्यात्म के सूत्र में पिरोया था। इसी तथ्य को रेखांकित करते हुए अरस्तू ने कहा था कि विज्ञान को यदि जीवन मूल्यों से मुक्त किया गया तो परिणाम खतरनाक होंगे। अतः नैतिक एवं मानवीय मूल्यों तथा विज्ञान के बीच विभाजन की इस वैचारिक बाधा रेखा को तोड़ना होगा। किंतु यह विज्ञान का अध्यात्म से समन्वय के बिना संभव नहीं है।

◆◆◆◆

# माध्यमिक विद्यालयों के अध्यापकों के समायोजन पर सैद्धान्तिक व आर्थिक मूल्यों के प्रभाव का अध्ययन

(सहारनपुर जनपद के विशेष सन्दर्भ में)

**डॉ० रतन सिंह**
*स0 प्रोफेसर, बी०एड०,कु० मायावती राजकीय महिला स्नातकोत्तर महाविद्यालय, बादलपुर गौतमबुद्धनगर (उ०प्र०)*

## सारांश

वैदिक काल से लेकर वर्तमान तक औपचारिक शिक्षा हेतु विद्यालय एक सषक्त माध्यम के रूप में विधमान है। माध्यमिक शिक्षा, प्राथमिक शिक्षा व उच्च शिक्षा के मध्य एक कड़ी का काम करती है। माध्यमिक विद्यालयों में पढने वाले छात्र,छात्राएं किशोर अवस्था में होते है। किशोरावस्था को आंधी–तूफान कि अवस्था कहा जाता है ऐसी अवस्था में अध्यापकों का परम दायित्व होता है कि वें छात्रो के समायोजन करने में सहायता करें तथा उन्हें मूल्यपरक् शिक्षा प्रदान करें। अध्यापको की समस्याओं को दूर कर सरकार, प्रबंध तंत्र, समाज, अध्यापकों को अपने विद्यालय एवं परिवेष में समायोजन करने में सहायक होगा। भारत सरकार द्वारा माध्यमिक शिक्षा समीक्षा हेतु गठित ताराचंद समिति" (1948), 1952 में "माध्यमिक शिक्षा आयोग", 1965–66 में "राष्ट्रीय शिक्षा आयोग" (कोठारी आयोग) ने भी अपनी सिफारिशो में अध्यापक समायोजन पर विशेष बल दिया है। भारतीय समाज ने वैदिक काल से ही मूल्य शिक्षा की आवश्यकता का अनुभव करते हुए शिक्षा में अनेक प्रयास किये गये शिक्षा के क्षेत्र में विभिन्न समय पर गठित आयोगो एवं समितियों ने मूल्य शिक्षा को प्रस्तवित करने हेतु अपनी सिफरिशें प्रस्तुत की।

**संकेत शब्द** : सैद्वान्तिक,आर्थिक,मूल्य, माध्यमिक स्तर, समायोजन, आयोग, शैक्षिक, समष्टि, परिसूची, सांख्यिकीय, प्रविधियां.

◆◆◆◆

# मूल्य शिक्षा का स्वरूप एवं योग

**हिना**
*विद्यार्थी एमए योग, यू पी आर टी ओ यू बरेली, कॉलेज, बरेली (उ०प्र०)*

## सारांश

शिक्षा एक ऐसा आहार है जिस पर पूरा जीवन निर्भर करता है। यदि व्यक्ति की शिक्षा प्रणाली सुनियोजित न हो तो एक अच्छे जीवन की कल्पना करना असम्भव सा हो जाता है क्योंकि

जो शिक्षा हम बच्चे को देंगे वही उसके भविष्य का निर्माण करेगी। बच्चे के अच्छे भविष्य निर्माण के लिए उसे जिस प्रकार विशेष तकनीकी शिक्षा दी जाती है या विशिष्ट क्षेत्र मे पारंगत किया जाता है उसी प्रकार मानवीय मूल्यों को बढ़ाने के लिए अनेक शिक्षाप्रद साधनो का प्रयोग किया जाता है, जिसमे योगशिक्षा का अपना एक अलग महत्व है। यह शिक्षा एक ऐसी शिक्षा है जो सभी शिक्षा प्रणालियों के साथ सरलता से सम्मिलित हो जाती है और अपना सकारात्मक प्रभाव छोड़े बिना नहीं रहती है वेसे तो सभी शिक्षा प्रणालियों का उद्देश्य व्यक्ति को सर्वागीण विकास करना होता है परंतु सर्वप्रथम बच्चे की सामान्य बुद्धि को प्रशिक्षित किया जाता है और उसके शिक्षा का उद्देश्य निर्धारित किया जाता है। इसी बीच अनेक परिवर्तन एवं परिस्थितियों का सामना भी करना पड़ता है। इन परिवर्तनों को सकारात्मक रूप योग शिक्षा के द्वारा सरलता से दिया जा सकता है और जब विद्यार्थी विशिष्ट शिक्षा के लिए तैयार हो जाता है तब वह अपना लक्ष्य निर्धारित करता है। विशिष्ट शिक्षा के लिए बालक की रुचि और क्षमता का ध्यान भी आवश्यक रूप से रखना पड़ता है इस समय बालक को एकाग्रता और तीव्र बौद्धिक क्षमता की अधिक आवश्यकता पड़ती है जो कि योग द्वारा सरलता से प्राप्त की जा सकती है। यौगिक प्रणालियों द्वारा बालक की विशिष्ट शिक्षा में उसके लक्ष्य में एवं उसकी दक्षता को बढ़ाया जा सकता है। व्यक्ति के जीवन में सामान्य एवं विशिष्ट दोनों ही शिक्षायोन का अपना ही महत्व है परंतु साथ ही साथ वेयक्तिक एवं समूहिक शिक्षा भी आवश्यक है। अतः हम यह कह सकते हैं कि शिक्षा कि कोई पद्ित क्यों न हो योग के द्वारा निसंदेह उसके स्वरूप एवं उसके मूल्यों को निखारा जा सकता है, जो कि बालक एवं व्यक्ति के सम्पूर्ण जीवन को प्रभावित करती है। उनके अंदर मानवीय मूल्यों का भी विकास करते है।

◆◆◆

# योग- जीवन जीने की कला

**श्रीमती बबीता**
*असिस्टेन्ट प्रोफेसर, शारीरिक शिक्षा, के.आर. गर्ल्स पी.जी. कॉलेज, मथुरा (उ०प्र०)*

## सारांश

"योग कोई प्राचीन मिथक नही है। यह वर्तमान की सबसे बहुमूल्य विरासत है। यह आज की आवश्यकता है और कल की संस्कृति" –स्वामी सत्यानन्द सरस्वती बिना किसी समस्या के जीवन भर तंदुरुस्त रहने का सबसे अच्छा, सुरक्षित, आसान और स्वस्थ तरीका योग है। इसके लिए केवल शरीर के क्रियाकलापों और श्वांस लेने के सही तरीकों का नियमित अभ्यास करने की आवश्यकता है। यह शरीर के तीन मुख्य तत्वों; शरीर, मस्तिष्क और आत्मा के बीच संपर्क को नियमित करता है। यह शरीर के सभी अंगों के कार्यकलाप को नियमित करता है और कुछ बुरी परिस्थितियों और अस्वास्थ्यकर जीवन–शैली के कारण शरीर और मस्तिष्क को परेशानियों से बचाव करता है। यह स्वास्थ्य, ज्ञान और आन्तरिक शान्ति को बनाए रखने में मदद करता है।

अच्छे स्वास्थ्य प्रदान करने के द्वारा यह हमारी भौतिक आवश्यकताओं को पूरा करता है, ज्ञान के माध्यम से यह मानसिक आवश्यकताओं को पूरा करता है और आन्तरिक शान्ति के माध्यम से यह आत्मिक आवश्यकता को पूरा करता है, इस प्रकार यह हम सभी के बीच सामंजस्य बनाए रखने में भी मदद करता है।

आज की तेज रफ्तार जिंदगी में अनेक ऐसे पल हैं जो हमारी स्पीड पर ब्रेक लगा देते हैं। हमारे आस–पास ऐसे अनेक कारण विद्यमान हैं जो तनाव, थकान तथा चिड़चिड़ाहट को जन्म देते हैं, जिससे हमारी जिंदगी अस्त–व्यस्त हो जाती है। ऐसे में जिंदगी को स्वस्थ तथा ऊर्जावान बनाये रखने के लिये योग एक ऐसी रामबाण दवा है जो, माइंड को कूल तथा बॉडी को फिट रखता है। योग से जीवन की गति को एक संगीतमय रफ्तार मिल जाती है।

◆◆◆◆

# मानव मूल्यों में योग का महत्व

**सर्वेश गुप्ता**
*छात्रा, उ0प्र0राजर्शि टण्डन मुक्त विश्वविद्यालय इलाहाबाद, अध्ययन केन्द्र बरेली कालेज बरेली*

**सारांश**

योग कोई धर्म नहीं है, यह जीने की एक कला है जिसका लक्ष्य है– स्वस्थ शरीर में स्वस्थ मन। मनुष्य का अस्तित्व शारीरिक, मानसिक और आध्यात्मिक है, योग इन तीनों को संतुलित विकास में मदद करता है। शारीरिक व्यायाम के अन्य रुप जैसे– ऐरोविक्स केवल शारीरिक तंदरुस्ती को ही सुनिश्चित करते हैं। उनमें आध्यात्मिक या सूक्ष्म शरीर के विकास के लिये कुछ नहीं है। यौगिक अभ्यास शरीर में दोबारा से ब्रह्माण्डीय ऊर्जा भर देते है और निम्न सुसाध्य करते हैं–

- सही संतुलन और सद्भाव प्राप्त करने में मदद करता है।
- स्व–चिकित्सा प्रोत्साहित करता है।
- शरीर से विषाक्त पदार्थ और मन से नकारात्मक विचार को बाहर निकाल देता है।
- व्यक्तिगत शक्ति में वृद्धि करता है।
- आत्मबोध में सुधार करता है।
- सजगता, ध्यान और एकाग्रता में मदद करता है, जो कि बच्चों के लिये विशेष रुप से महत्वपूर्ण है।

- योग साधक फिर से उत्साहित और युवा महसूस करते हैं, इस प्रकार योग प्रत्येक साधक को शरीर और मन को नियंत्रित करने के लिये शक्ति प्रदान करता है।
- योग के अभ्यास की कला व्यक्ति के मन, शरीर तथा आत्मा को नियंत्रित करने में मदद करती है, यह भौतिक और मानसिक संतुलन करके शांत शरीर और मन प्राप्त करवाता है, तनाव और चिंता का प्रबंधन करके आपको राहत देता है। यह शरीर में लचीलापन, मांसपेशियों को मजबूत करने और शारीरिक स्वास्थ्य को बढ़ाने में मदद करता है।

योग आसन शक्ति, लचीलापन और आत्मविश्वास का निर्माण करता है। योग का नियमित अभ्यास करने से वनज में कमी, तनाव से राहत, प्रतिरक्षा में सुधार और एक स्वस्थ जीवन शैली बनाये रखने में मदद प्राप्त हो सकती है।

2014 में भारत के प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने संयुक्त राष्ट्र में 21 जून को अंतराष्ट्रीय योग दिवस के रुप में मनाने का सुझाव दिया था क्योंकि गर्मियों में सूर्य उत्तरी बिन्दु पर स्थित होता है और यह दिन उत्तरी गोलार्ध में वर्ष का सबसे लम्बा दिन होता है।

अतः योग भारत की प्राचीन परंपरा का एक अमूल्य उपहार है।

◆◆◆

# मूल्य परक शिक्षा एवं योग का शिक्षार्थियों पर प्रभाव

**शुभम् गुप्ता**
*छात्र एम0ए0 योग, कुमाऊँ विश्वविद्यालय, नैनीताल (उ०ख०)*

**सारांश**

शिक्षा शब्द की व्युत्पत्ति संस्कृत की 'शिक्ष' धातु से हुई है, जिससे अभिप्राय है सीखना, अर्जित करना, ग्रहण करना, ज्ञानात्मक रुप से संवृद्ध होना।

अंग्रेजी में शिक्षा को Education कहते हैं जो कि लैटिन शब्द Educare से बना है, जिसका तात्पर्य है– to lead, to draw, to acquire. अर्थात आगे बढ़ना, निकालना, खींचना(ग्रहण), अर्जित करना।

मूल्य के लिये अंग्रेजी में Value शब्द है। Value की निष्पत्ति लैटिन शब्द Velere से हुई है जिसका तात्पर्य है "to be worthy" जिसका अर्थ है ''सार या महत्व''।

यदि शिक्षा का तात्पर्य निकालना, ग्रहण करना, अर्जित करना है तो मूल्य आधारित शिक्षा का तात्पर्य ''सार या महत्व'' है। जब हम किसी भी शिक्षा को मूल्य आधारित शिक्षा में देखते हैं, तो अनेक उदाहरण हमारे समक्ष स्पष्ट रुप से दिखाई देते हैं जैसा कि विवेकानंद जी ने इसी संदर्भ में कहा है कि– शिक्षा में व्यक्ति, समाज तथा राज्य के अनिवार्य तत्वों को शामिल किये जाने की आवश्यकता रहती है तब ही वह समग्र तथा पूर्ण शिक्षा हो पाती है। वास्तव में शिक्षा व्यक्तित्व तथा चरित्र निर्माण का सर्वाधिक सशक्त साधन हैं। यदि इस शिक्षा में योग शिक्षा को भी सम्मिलित कर लिया जाये तो और अच्छे परिणाम प्राप्त किये जा सकते हैं जिसका प्रभाव हम शिक्षार्थी और समाज पर सकारात्मक रुप से देख सकते हैं। योगमार्ग अन्तःकरण की शुद्धि का बहुत ही सरल मार्ग है जिसके द्वारा शारीरिक विकास के साथ साथ मानसिक विकास भी सरलता से किया जा सकता है। योग की अनेक ऐसी क्रियाएं हैं जिनके द्वारा बौद्धिक क्षमता का विकास किया जा सकता है। साथ ही साथ अनेक ऐसे सकारात्मक पहलू भी अनायास जुड़ जाते हैं जिनका सकारात्मक प्रभाव मानव जीवन पर पड़ता है।

◆◆◆

# योग एवं शारीरिक शिक्षा में मानवीय मूल्य

**विपिन कुमार एवं डॉ प्रवेश कुमार**
*[1]छात्र (बी.एड. प्रथम वर्ष), [2]असिस्टेंट प्रोफेसर, बी.एड.विभागाध्यक्ष, राजकीय रजा स्नातकोत्तर, महाविद्यालय रामपुर (उ०प्र०)*

## सारांश

आधुनिक समय में संपूर्ण विश्व के लिए योग शारीरिक शिक्षा एवं खेल जीवन की सभी क्रियाओं को समृद्ध व स्वस्थ बनाए रखने के लिए परम आवश्यक है। आज भाग–दौड़ भरी जिंदगी में मानव भौतिकवादी सोच के कारण शारीरिक क्षमताओं को अनजाने में पिरोए जा रहा है। जिससे वह शारीरिक व मानसिक रूप से अक्षम बनगयाहै। जिसे मानव मूल्यों में कमी हो रही है। प्राचीन समय में शारीरिक शिक्षा मांसपेशियों को विकसित करके शरीर को स्वस्थ रखने तक ही सीमित था। जिसमें मनुष्य शिकार, भार–वहन, लकड़ी काटने, नदी में तैरने, तालाब वसमुद्र में गोता लगाने में सक्षम होता था।

लेकिन वर्तमान परिदृश्य इसके विपरीत है वर्तमान में एक धारणा है कि"स्वस्थ शरीर में हीस्वस्थ मस्तिष्क का निवास होता है" और शारीरिक शिक्षा के अंतर्गत व्यायाम, खेलकूद एवं मनोरंजन करना आदि है।

"योग जीवन का वह दर्शन है जो मनुष्य को उसकी आत्मा से जोड़ता है।"

आजअसाध्य बीमारियों के बढ़तेसमय में योग का महत्व और बढ़ जाता है। भयंकर असाध्य बीमारियों का इलाज योग से संभव है जैसा कि हावर्डमेडिकल स्कूल के विशेषज्ञों ने पाया कि योग चार तत्वों का मिश्रण है हाव–भाव, सांस लेने का तरीका, तनाव मुक्त तथा ध्यानआदि हैंजोस्वस्थ पर सकारात्मक प्रभाव डालते हैं। जो लोग योग करते हैं, योग उन लोगों की रक्त धमनियों को 69% लचीला बना सकता है। यह औषधि के बिना धमनियों के ब्लॉकेज में भी कमी ला सकता है शोधकर्ताओं का कहना है कि यह शरीर की प्रतिरक्षा प्रणाली एवं डायबिटीज में जरूरत की औषधियों में 40% तक की कमी लाने में मदद करता है। जो लोग योग करते हैं, वे चिकित्सा सेवाओं का 43% कम इस्तेमाल करते हैं योग ना करने से कई सारे विकार उत्पन्न हो जाते हैं। जिससे लोगों में नकारात्मक प्रभाव बढ़ते जा रहे हैं। हिंसा स्थिरता में कमी, ध्यान में भटकाव आलस्यएवं कमजोरी आदि हैं, जो मानव के विकास में बाधक होते जा रहे हैं। लोगों का स्वभाव चिड़चिड़ा होता जा रहा है जिससे मानवीय मूल्यों में कमी आ रही है। भारत सरकार की तत्परता में 21 जून 2015 से विश्व समुदाय योग दिवस के रूप में मना रहा है।

"योग मनुष्य के मानसिक शारीरिक आध्यात्मिक ऊर्जा को बढ़ाता है।"

योग भारतीय दार्शनिक प्रणालीका एक अंश है।योग एवं शारीरिक शिक्षा एक सिक्के के दो पहलू हैंदोनों को एक दूसरे से अलग नहीं रख सकते हैंयोग एवं शारीरिक शिक्षा मिलकर एक नया उत्पाद है जो हर समस्या का रामबाण है।

"एक बीमार शरीर मनुष्य के मन को बीमार बनाता है।"

◆◆◆◆

# योग, आध्यात्म, स्वास्थ्य एवं माननीय मूल्य

**डॉ0 रजनी रानी अग्रवाल**
*एसो0प्रो0 अर्थशास्त्र, राज0म0 स्ना, महाविद्यालय, रामपुर (उ०प्र०)*

## सारांश

शिक्षा समाज व देश की रीढ़ है। आज मानवीय मूल्यों व योग की सभी को आवश्यकता है। इससे सुख–शांति प्राप्त होती है। शांति व सद्भाव का वातावरण बनता है। योग जी भरकर जीने की जड़ी बूटी है। योग एक प्रबल ऊर्जा की अवस्था है। योग हमारी मानसिक क्षमता को बढ़ाता है। योग से डायबिटीज़, हाइपरटेंशन जैसी लाइलाज बीमारी ठीक हो रही है। योग एक जीवन पद्धति है। आज हम होलिस्टिक हेल्थ की बात करते हे। योग मन व शरीर विचार व कर्म, समय व उपलब्धि की एकात्मकता है। एक ओर योग मानवजीवन मे सुख–शांति लाता है, वही

उन्हे स्वस्थ भी रखता है। इनसे मन शांत और जीवन संतुष्ट हो जाता है। मेडिकल सांइस भी कहता है कि स्वस्थ रहने के लिये दवाई से ज्यादा खुश रहना जरूरी है।

आत्मा के निजी सात गुण है और उनका हमारे शरीर पर प्रभाव पड़ता है। ज्ञान, पवित्रता, शांति, सुख, प्रेम, आनंद और शक्ति। अगर गुणों की ऊर्जा सकारात्मक तो उसका शरीर पर सकारात्मक प्रभाव पड़ता है। जहॉ विज्ञान समाप्त हो जाता है, वहॉ योग काम करता है। खेलकूद से शरीर शक्तिशाली बनता है। लेकिन स्वस्थ तन के साथ स्वस्थ मस्तिष्क होना भी जरूरी है। मन की शक्ति योग से ही आयेगी। मन को कंट्रोल करना होगा। योग और आध्यात्म को जीवनं मे अपनाने से कर्म करने की भावना विकसित होती है। श्रेष्ठ जीवन शैली और उच्च मानसिकता से ही सम्पूर्ण स्वास्थ्य प्राप्त होगा। राजयोग मेडिटेशन व्यक्ति को हर परिस्थिति मे अपने आपको समायोजित कर सरल, सहज और खुशहाल तनावमुक्त जीवन जीने का विश्वास प्रदान करता है। हमारे अंदर का संसार जितना अच्छा होगा उतना ही अच्छा हमारा बाहरी संसार होगा। योग ही इसका एकमात्र साधन है।

◆◆◆◆

# नैतिक मूल्यों के सुधार के सन्दर्भ में योग की अनिवार्य, आवश्यक तथा महती भूमिका

**डॉ. विनीता एम चौधरी**
*असिस्टेंट प्रोफेसर, न्यू एरा कॉलेज, गाज़ियाबाद (उ०प्र०)*

## सारांश

किसी कर्म के परिणाम, प्रभाव या गुण के सन्दर्भ में जिस सार या महत्व को मापित किया जाता है। वही उसकी Value या मूल्य होता है। यदि शिक्षा व्यवस्था में सचमुच सुधार लाना हो तो शिक्षा में नैतिक मूल्यों का समावेश जरूरी है क्योंकि कोई कार्य यदि सुस्पष्ट नीति के बिना किया जाए तो वह सफल नहीं हो सकता। नीति से ही नैतिक शब्द बना है जिसका अर्थ है सोच–समझकर बनाए गए नियम या सिद्धांत। हमें इस सांसारिक सुखों के लिए ईश्वर ने इस दुनिया में नही भेजा है, इसी पराकाष्ठा पे अपनी व्यक्तित्व विशेष का सही एवं उपयुक्ता को अपनाते हुए, नैतिक, सामाजिक, पारिवारिक एवं उपयोगी पहलुओं को ध्यान मे रखते हुए जीवन को वैकल्पिक विन्दुओ में केंद्रित करना चाहिए। इन मूल्यों के प्रति उदासीनता के फलस्वरूप सामाजिक विघटन, स्वार्थपरकता, हिंसा, घृणा, राष्ट्र के प्रति असम्मान या उदासीनता का भाव जनित होता है। जो लोग योग करते हैं उनमें नैतिक मूल्य होते हैं। योग नैतिकता को जन्म देता है तथा लोगों का स्वाभाव इससे बेहतर बनता है। अच्छी आदतों के विकास में योग

एक अहम भूमिका निभा सकता है। हर वर्ष 21 जून को अंतरराष्ट्रीय योग दिवस के रूप में विश्व भर में मनाए जाने का सराहनीय फैसला लिया गया। यह हम सभी भारतीयों के लिए एक गर्व का विषय है। सभी को अपने जीवन में योग को शामिल करना चाहिए तथा दूसरों को भी जागरूक करना चाहिए। योग शिक्षा एवं नैतिक शिक्षा एक साधन है और इस साधन का प्रमुख उद्देश्य व्यक्ति के व्यवहार संबंधी क्रियाओं–कलाओं, आध्यात्म का ज्ञान कराना है। योग किसी धर्म विशेष का प्रचार नहीं करता, अपितु हमें जीवन को कैसे जिया जाए यह सिखाता। अतः योग शिक्षा एवं नैतिक शिक्षा विद्यार्थियों के चहुंमुखी विकास में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभा सकती है।

◆◆◆◆

# महर्षि अरविन्द के योग की वर्तमान मानवीय मूल्य प्रासंगिकता का निरूपण

**भरत लाल बारी**
*शोध छात्र (योग विभाग), महात्मा गाँधी चित्रकूट ग्रामोदय विश्वविद्यालय, चित्रकूट, सतना (म०प्र०)*

## सारांश

वर्तमान समय में मानवीय मूल्यों के विकास में योग को महत्वपूर्ण एवं सशक्त माध्यम माना जाता है। क्योंकि भारत एक विविध धर्मो वाला देश होने के कारण मानवीय मूल्यों को अधिक महत्व दिया जाता है। मानवीय मूल्यों में सत्य, धर्म, शांति, प्रेम, अहिंसा आदि का मानव–जीवन में समावेश होने से जीवन शांतिपूर्ण एवं स्थायित्व और मानव जीवन सुखमय व आनंद से परिपूर्ण रहता है।

भारत में सदियों से ऋषि मुनियों द्वारा योग व प्राणायाम का अभ्यास किया जाता रहा है। यह संस्कार भारत की ही देन हैं। भारत में प्रत्येक व्यक्ति अपने दैनिक जीवन में कार्य प्रारंभ करने से पहले प्रार्थना करता है। घर तथा परिवारो में प्रातः तथा सांयकाल को प्रार्थना की जाती है।

लेकिन आज के इस नये दौर में नवीन पीढ़ी ने पाश्चात्य मूल्यों को अपना लिया है और पश्चिमी देशों का प्रभाव बढ़ने के कारण व्यक्तिगत ''द्वंद एवं भ्रम फैल रहा है कि अब यही हमारी संस्कृति है जिससे नवीन एवं पुरानी पीढ़ी के बीच अन्तराल उत्पन्न होने लगा है। इस समस्या का मूल कारण है मानवीय मूल्यों का ह्रास।

लेकिन नवीन पीढ़ी को भारतीय मानवीय मूल्यों से अवगत कराना है तो उन्हे योग तथा

उसकी क्रियाएँ शरीर तथा मन को अनुशासित कर जीवन के चरमोद्देश्य आनंद की प्राप्ति में सहायक सिद्ध होती हैं। आत्मा में निहित विशेषताओं की निधियों को खोज निकालना योग से ही संभव होता है। एकांत, मौन व ध्यान मनुष्य की मानसिकता पर गहरा सकारात्मक प्रभाव छोड़ते हैं। यही कारण है कि आधुनिक चिकित्सक भी 'योग' अभ्यास करने का निर्देश देते हैं। महर्षि अरविन्द द्वारा प्रतिपादित योग पद्धति के द्वारा नैतिक–प्रसाधन पर बल दिया जाता है। अपनी संपूर्णता में योग मानव के व्यक्तिगत कल्याण के साथ–साथ समष्टिगत कल्याण भी सिद्ध करता है।

◆◆◆◆

# योग, शारीरिक शिक्षा एवं मानवीय मूल्य

**कमल कान्त**
*एम0एड0 (द्वितीय वर्ष), बरेली कॉलेज, बरेली (उ०प्र०)*

## सारांश

योग का मानव–जीवन में विशेष महत्व है। योग को जीवन जीने की कला कहा जाता है। योग शब्द की उत्पत्ति संस्कृत भाषा की 'युज' धातु से मानी जाती है जिसका अर्थ होता है– ''जोडना'', मिलना एवं रोकना या बाँधना''। यहां पर 'जोड़ना' शब्द से तात्पर्य स्वयं को अच्छे एवं सकारात्मक विचारों से जोड़ना है। 'मिलना' शब्द से आशय आत्मा एवं परमात्मा के मेल से है। 'रोकना या बाँधना' शब्द चित्त की वृत्तियों को रोकने या एक स्थान पर बाँधकर रखने को दर्शाता है। योग का जनक भगवान शिव को माना जाता है। योग के प्रथम सूत्रकार महर्षि पतन्जलि है। इनके नाम पर ही योग को पतंजलि दर्शन भी कहा जाता है।

वर्तमान समय में शारीरिक शिक्षा का ज्ञान प्रत्येक मानव के लिए अति आवश्यक है। शरीर– विज्ञान से सम्बन्धित शिक्षा को शारीरिक शिक्षा कहा जाता है। शारीरिक शिक्षा व्यक्ति के सन्तुलित शारीरिक विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। मानव के विकास के सभी पक्ष आपस में सम्बन्धित होते हैं। इस प्रकार शारीरिक शिक्षा का मानव के बहुमुखी विकास में महत्वपूर्ण योगदान होता है। अतः शारीरिक शिक्षा से तात्पर्य ऐसी शिक्षा से है जो व्यक्ति को स्वस्थ रखते हुए सन्तुलित ढंग से उसका सर्वांगीण विकास करने में सहायक होती है।

मूल्य एक मानव विश्वास है जिसके आधार पर मनुष्य वरीयता प्रदान करते हुए कार्य करता है। मूल्यों का मानव जीवन में विशेष महत्व है। मानव के लिए आवश्यक मूल्यों को ही मानवीय मूल्य कहते हैं। मानव जीवन में सामाजिक, नैतिक, आध्यात्मिक, संवैधानिक एवं

सांस्कृतिक मूल्यों का महत्वपूर्ण योगदान होता है। योग वह माध्यम है जिसके द्वारा व्यक्ति का उन्नयन एवं परिष्कार करते हुए उसमें मानवीय मूल्यों को विकसित किया जा सकता है। शारीरिक शिक्षा भी मानवीय मूल्यों के विकास में अभूतपूर्व योगदान देती है। अतः योग एवं शारीरिक शिक्षा ऐसे सशक्त साधन है जो मानवीय मूल्यों का विकास करते हैं।

◆◆◆

# धर्म, दर्शन एवं मानवीय मूल्यो का शिक्षा में प्रासगिकता

**दीपक कुमार शर्मा[1] एवं डॉ0 गिरीश कुमार वत्स[2]**
*[1]सहायक आचार्य (शिक्षा विभाग), राजकीय रज़ा स्नातकोत्तर महाविद्यालय, रामपुर (उ०प्र०),*
*[2]प्राचार्य, ए0टी0एम0एस0 कॉलिज ऑफ ऐजूकेशन, अच्छेजा, हापुड़ (उ०प्र०)*

## सारांश

धर्म और शिक्षा का सम्बंध ऐतिहासिक है। विश्व इतिहास के आदिकाल से ही धर्म ने षिक्षा को प्रभावित किया है और षिक्षा ने भी धर्म को धर्म ने सिद्धान्त दिया, शिक्षा ने उसका प्रयोग किया। धर्म मूल्य का निर्धारण करता है, शिक्षा उस पर अमल करती है। धर्म–जीवन की प्रथम सीढ़ी है, तो शिक्षा–दूसरी सीढ़ी है। धार्मिक विचारों में परिवर्तन होने से ही शिक्षा के रूप में परिवर्तन होता रहा है।

धर्म की षिक्षा का उत्तरदायित्व केवल एक अध्यापक पर नहीं हो सकता। आवष्कता पड़ने पर किसी एक अध्यापक को विषेश रूप से यह कार्य सौंपा अवष्य जा सकता है और यह अध यापक धर्मों का सैद्धान्तिक विवेचन करने में सक्षम होगा। यह अध्यापक मृदु स्वभाव का होगा। उसमें सहनशीलता, धैर्य, विवेक, संयम, वस्तुनिष्ठ, दृष्टिकोण, सरलता आदि गुण होंगे। वह धर्म के प्रति श्रद्धा व आस्था रखेगा और उसका सम्पूर्ण आचरण प्रेम से ओत–प्रोत होगा। किन्तु यदि अन्य आध्यापक विपरीत गुणों से युक्त होंगे तो एक अध्यापक अकेले कुछ नहीं कर सकता। अध यापक अपने जीवन में धार्मिक षिक्षा को नहीं उतार सकते तो वे यह कैसे आषा कर सकते हैं कि छात्र उनका अनुकरण करके सदाचारी बन सकेंगे। वस्तुतः मूल्य एक व्यवस्था है। मूल्य–यथार्थ तथा आदर्ष के विभेद के मध्य संयोजक की भूमिका निभाते हैं। मूल्यों का बोध विवेक–शक्ति उत्पन्न होने पर ही संभव है। भारतीय मनीषा के अनुसार, सभी मूल्यों को धर्म, अर्थ, काम तथा मोक्ष–चार कसौटियों में विभक्त किया गया है। इनमें से दृष्टिभेद से किसी एक को, दो को, तीन को अथवा चारों को जीवन का मूल्य बनाया जा सकता है, पर केवल अर्थ एवं काम को साध्य बना देने से आदर्शवादिता एवं नैतिकता से मानव वंचित हो जायगा। अतः अधिकांष विचारकों ने अर्थ, काम एवं धर्म की त्रिवेणी को ही व्यावहारिक जीवन का मूल्य माना, पर इन्हें

साध्य नहीं माना। उसकी दृष्टि में मोक्ष या आत्मोपलब्दि ही परम मूल्य है, शेष की महत्ता भी मोक्ष के लिए है, स्वतन्त्र नहीं। धर्म, अर्थ एवं काम साधन हैं तथा साध्य है मोक्ष। इनका परस्पर औचित्य–अर्थ का काम के अनुसार, काम का धर्म के अनुसार तथा धर्म का मोक्ष के अनुसार होना ही है। यदि समाज की विचारधारा इन चार कसौटियों पर इसी प्रकार आधारित हो, तो हम निश्चय ही कह सकते हैं कि ऐसे समाज का नैतिक मूल्य समुत्रत है एवं सर्वथा ग्राह्य है। इसी त्रिवर्ग साधन को व्यक्ति एवं समाज की मर्यादा के अनुरूप अपनाना तथा साध्य मोक्ष की ओर अग्रसर होना ही नैतिकता है। धर्म और नैतिकता के अभाव में शिक्षा का कोई अर्थ नहीं। शिक्षा की सार्थकता धर्म के सन्दर्भ में ही है।

◆◆◆◆

# भारतीय समाज में मानवीय मूल्यपरक शिक्षा एवं योग का महत्व

**डॉ० गरिमा**
*असिस्टेंट प्रोफेसर योग, साहू राम स्वरूप महिला, महविद्यालय, बरेली (उ०प्र०)*

**सारांश**

विश्व में भारतीय संस्कृति प्राचीनतम एवं सर्वोत्कृष्ट मानी गई है इसका मुख्य स्रोत वैदिक संस्कृति है जिसका प्रभाव मानवीय मूल्य शिक्षा पर निरंतर पड़ता हुआ दिखाई दे रहा है। शिक्षा में भी अनेक परिस्थितियों के भी अनुकूल परिवर्तन एवं संशोधन हुए हैं, परंतु फिर भी शिक्षा को एक प्रकाश के रूप में माना जाता है जो कि अंधकार रूपी अज्ञान से प्रकाश रूपी ज्ञान की ओर ले जाता है। जिसका जीवांत उदाहरण "तमसो मा ज्योतिर्गमय", "सा विद्या विमुक्तये" आदि शास्त्र युक्त कथनों से प्राप्त होता है। यह मानवीय मूल्यपरक शिक्षा, मानवीय मूल्यों के साथ साथ समाज एवं संस्कृति के विकास में भी सहायक है। जैसा कि हम प्राचीनकाल में गुरुकुल आश्रम की व्यवस्था के विषय में सुनते आयें हैं जहां विद्यार्थी शिक्षा ग्रहण करते थे और साथ ही साथ योगमय जीवनशैली व्यतीत करते थे। वे ब्रह्मचर्य सदा जीवन उच्च विचार, समता त्याग आदि से परिपूर्ण जीवन व्यतीत करते थे। यह व्यवस्था एवं शिक्षा विद्यार्थी के सर्वागीण विकास में सहायक होती थी। विशेषकर शारीरिक मानसिक विकारों से मुक्त उच्चतम विकास एवं बौद्धिक ज्ञान के विकास में सहायक होती थी।

आज वर्तमान समय में कुछ विकृत स्वरूप शिक्षण पद्धति का कहीं कहीं पर देखने को मिलता है। गुरुकुल एवं आश्रम व्यवस्था अब अधिक देखने को नहीं मिलती परंतु यदि योग–शिक्षा के साथ पुनः शिक्षापद्ित को सम्मिलित कर पाठ्यचर्या एवं दिनचर्या में सम्मिलित किया जाए तो अभी भी मानवीय मूल्यों के ह्रास को रोका जा सकता है। साथ ही साथ योगमार्ग के साधनो का

अनुकरण करके भारतीय समाज में मूल्यपरक शिक्षा का सकारात्मक प्रभाव देखा जा सकता है। यह समाज व्यक्ति, शिक्षार्थी, शिक्षक सभी के लिए एक मिसाल बन सकता है, क्योंकि मानव के विकास का मूल साधन शिक्षा को माना जाता है और इस शिक्षा में यदि हम योग को भी सम्मिलित कर लें तो व्यक्ति अपने जीवन के उद्देश्यों को सरलता से प्राप्त करने योग्य बना देगा। यह योगपरक शिक्षा मनुष्य के व्यवहार उसके वास्तविक स्वरूप और उसके लक्ष्य का सही बोध करने में सक्षम है।

अतः हम यह कह सकते हें कि भारतीय समाज में यदि शिक्षा में योग–शिक्षा को सम्मिलित कर दिया जाए तो समाज में मानवीय मूल्यों के ह्रास को रोका जा सकता है और मानवीय मूल्यों को बढ़ाया जा सकता है।

◆◆◆

# योग, शारीरिक शिक्षा एवं मानवीय मूल्य

**डा0 नीतू सिंह**
*प्रवक्ता, संस्कृत विभाग, दीक्षित महाविद्यालय, रामपुर (उ०प्र०)*

## सारांश

योग सांगोपांग सर्वागीण विकास का दूसरा नाम है। वास्तव में जो भी सारयुक्त श्रेष्ठ एवं श्रेयस है उसी से जुड़ना योग है। इसे ही आत्म तत्व आदि विभिन्न नामों से अभिहित किया गया है। इस रूप में योग आध्यात्मिक पूर्णीकरण तक का लक्ष्य रखता है इसके अतिरिक्त आसन एवं प्राणायाम के अभ्यास के रूप में योग में शारीरिक अभ्यास एवं स्वास्थ्य के मूल्य समाहित है। यम एवं नियमो।के रूप में इसमें सामाजिक, राष्ट्रीय एवं अर्न्तराष्ट्रीय मूल्य समाहित हैं। प्रत्याहार, धारणा एवं ध्यान न केवल मानसिक दृणता उत्पन्न करते है वरन जागरूकता, संकेन्द्रण की क्षमता, दक्षता, भावात्मकता को प्रवल बनाते है। इस प्रकार योग में शारीरिक मानसिक, सामाजिक, राष्ट्रीय एवं अर्न्तराष्ट्रीय सभी मूल्यों के घटक किसी न किसी मात्रा में सम्मिलित होते हैं।

शारीरिक शिक्षा एवं स्वास्थ्य प्रत्येक व्यक्ति के लिए आवश्यक है। प्रत्येक व्यक्ति की जिम्मेदारी है कि वह स्वास्थ्य के बारे में पूरी जानकारी रखे। स्वास्थ्य की जानकारी यदि प्रत्येक व्यक्ति रखे तो हम बहुत सी जानकारियां प्राप्त कर सकते है जैसे संतुलित आहार, रोग एवं रोकथाम, वायु पानी, विद्यालय एवं पड़ोस के वातावरण की जानकारी बड़ी आसानी से रख सकते हैं। इससे हम स्वच्छता के बारे में भली भांति जानकारी प्राप्त कर सकते हैं।

◆◆◆◆

# महर्षि वात्स्यायन का दर्शन और शिक्षा

**डॉ० प्रदीप कुमार[1] एवं नितिन कुमार त्यागी[2]**
*[1]असिस्टेंट प्रोफेसर, शिक्षा विभाग, राज. रज़ा पी.जी. कॉलेज, रामपुर, [2]शोधार्थी, चौ० चरण सिंह विवि०, मेरठ (उ०प्र०)*

## सारांश

प्रस्तुत शोधपत्र का उद्देश्य वर्तमान शिक्षा के सन्दर्भ में पुरातन भारतीय संस्कृति के अनुसार शिक्षा के भारतीयकरण हेतु बताये गये उपाय तथा विशेष रूप से महर्षि वात्स्यायन के विचारों के अनुरूप शिक्षा के भारतीयकरण की सम्भावनाओं की खोज करने का प्रयत्न करना हैं इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए अध्ययनकर्ता ने महर्षि वात्स्यायन एवं अन्य प्राचीन मनीषियों के विचारों का गहन विश्लेषण कर भारतीय संदर्भ में उनको मूल्यांकित किया है। शोध पत्र सांराषित करता है कि वर्तमान की भारतीय शिक्षा–प्रणाली प्रधानतः पश्चिमीकरण पर आधारित है। अतः इसके भारतीयकरण की आवश्यकता है, जिससे कि भारतीय सभ्यता और संस्कृति के अनुरूप व्यक्ति विकसित किये जा सकें।

**मुख्य शब्द–** भारतीयकरण – भारतीय आदर्षों व मूल्यों के अनुरूप होने की प्रक्रिया; शिक्षा के उद्देश्य – पश्चिमी तथा भारतीय दोनों, पाठ्यक्रम व षिक्षण विधि – भारतीय और पश्चिमी संप्रत्यय; महिला शिक्षा तथा गुरु–शिष्य सम्बन्ध।

◆◆◆◆

# पंडित दीनदयाल उपाध्याय का शिक्षा दर्शन

**डा0 विकास गर्ग**
*सीनियर ऐकेडेमिक फेलो, भारतीय इतिहास अनुसंधान परिषद, दिल्ली*

## सारांश

शिक्षा मानव जीवन की पूर्णता है। वस्तुतः मानव का सम्पूर्ण जीवन ही शिक्षा ग्रहण की एक प्रक्रिया होता है। शिक्षा प्रक्रिया मानवीय विचारों व आदर्शों से निर्मित होती है। वही साथ ही यह उनको पुनःनिर्मित भी करती है। प्रत्येक शिक्षा प्रणाली का अपना आदर्श, मूल्य विश्वास, पद्धति और एक शिक्षा दर्शन होता है। ब्रिटिश उपनिवेशवाद ने भारत में जिस शिक्षा प्रणाली को विकसित किया था वह उनके आदर्शों एवं हितों की पूर्ति हेतु थी। जिसका दर्शन लॉर्ड मैकाले के द्वारा अभिव्यक्त किया गया था।

15 अगस्त 1947 ई0 के उपरांत 'स्वराज्य' के व्यवहारिक क्रियान्वयन हेतु प्रयासरत 'भारतीय राष्ट्र' में ब्रिटिश शिक्षा नीति की उपयोगिता एवं सार्थकता पर्याप्त विवादास्पद और प्रायः सीमित ही थी। कई महान भारतीयों स्वामी विवेकानन्द, बालगंगाधर तिलक, महात्मा गाँधी, रविन्द्र नाथ टैगोर और श्री अरविन्द ने भारत की शिक्षा प्रणाली के दर्शन पर अपने विचारों को स्वतन्त्रता से पूर्व भी अभिव्यक्त किया था। स्वतन्त्र भारत में पंडित दीनदयाल उपाध्याय ने अपने शिक्षादर्शन को प्रस्तुत किया। जो अत्याधिक महत्वपूर्ण सामंजस्य पूर्ण और पूर्णतया प्रसांगिक है।

भारत के स्वर्णिम अतीत के प्रति दीनदयाल उपाध्याय आस्था रखते है परन्तु उनका शिक्षा दर्शन पूर्णतया आधुनिक, उदात्त एवं सार्वभौमिक है।

वें भारतीय चिंतन परम्परा के 'सा विद्या या विमुक्तये' के आदर्श को स्वीकार करते हैं। धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष के चतुः पुरूषार्थ के लक्ष्य की अभिप्राप्ति हेतु मानवीय क्षमताओं का विकास करना आपके शिक्षा दर्शन का उददेश्य है। आपके शब्दों में, शिक्षा वह है जो शरीर मन बुद्धि का संस्कार करते हुए आत्म उपलब्धि का मार्ग प्रशस्त करें। अतः व्यक्ति में ज्ञान, चरित्र और अनुशासन तीनों का विकास होना चाहिए। पंडित दीनदयाल की शिक्षा प्रणाली एक प्रयोगात्मक जीवन दर्शन है।

जो जीवन के प्रत्येक बिन्दु से निकटता से सम्बंधित है। उनके अनुसार 'सर्वभूते हिते रताः' की कसौटी हेतु 'मानवीय कर्तव्य बोध' के विकास की क्षमता किसी शिक्षा प्रणाली में अनिवार्य रूप से होनी चाहिए। जहाँ एक व्यक्ति के लिए शिक्षा प्राप्त करना ऋषि ऋण चुकाने का कर्तव्य है। वहीं शिक्षा प्रसार कर अपने सदस्य को आत्मनिर्भर बनाना समाज का दायित्व है। अतः दीनदयाल जी एक ऐसी शिक्षा प्रणाली के विकास के पक्षधर है। जो भारतीय संस्कृति के संदेश को समाहित करते हुए भारत की वर्तमान और भावी समस्याओं के हल खोज सके। जो भारत की शाश्वतता के साथ उसकी विकासमान आत्मा को संयोजित कर सके। जैसा आपने पुनः पुनः दोहराया था। सम्पूर्ण विश्व के ज्ञान और भारत की अपनी सम्पूर्ण परम्परा के आधार पर हम पूर्वजों के भारत से अधिक गौरवशाली भारत का निर्माण करेंगें। जिसमें जन्मा मानव अपने व्यक्तित्व का विकास कर सम्पूर्ण सृष्टि के साथ एकात्मकता का साक्षात्कार कर नर से नारायण बन सके। यही हमारी संस्कृति का शाश्वत एवं प्रवाहमान रूप है। आज दिग्भ्रम के चौराहे पर खडे विश्व मानव के लिए यही हमारा दिग्दर्शन है।

◆◆◆

# धर्म एवं मानवीय मूल्य

**डॉ0 रेखा शर्मा**
*पोस्ट डॉक्टरल फैलो, एन0एम0एस0एन0 दास पी0जी0 कॉलेज, बदायूँ (उ०प्र०)*

## सारांश

मानव जीवन मनुष्य के लिये ईश्वर द्वारा प्रदत्त एक अतुलनीय, अनुपम एवं अमूल्य उपहार स्वरूप है।मानव जीवन के चार प्रमुख पुरुषार्थ माने गये हैं–धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष। इन चारों का ही महत्व मानव जीवन में लक्षित होता है।इनमें प्रथम पुरुषार्थ धर्म है।धर्म ही वह मूल तत्व है, मानव जीवन का जिसके कारण मनुष्य, मनुष्य बन पाता है और अपने वास्तविक स्वभाव में स्थित हो पाता है।यह धर्म की ही देन है कि जिसके कारण मनुष्य आकृति के साथ–साथ प्रकृति से भी मनुष्य बन पाता है।धर्म के अभाव में मनुष्य, मनुष्य जैसा दिख तो सकता है किन्तु मनुष्य हो नहीं सकता। धर्म को धारण करने वाला व्यक्ति सदा सर्वदा के लिए भयमुक्त एवं विजयी हो जाता है।श्रीमद्भगवद्गीता में मानवीय मूल्यों को दैवीय सम्पदा के नाम से अभिहित किया गया है। ये मानव जीवन को मूल्यवान बनाने की क्षमता रखते हैं, इस कारण इन्हें मानवीय मूल्य कहा जाता है।

ये मानवीय मूल्य ही आध्यात्मिक विकास का द्वार खोलते हैं, हमारे भीतर स्थित देवत्व को स्वतः जाग्रत करते हैं और परम सत्य की ओर अग्रसारित भी करते हैं।आध्यात्मिक विकास के द्वारा ही व्यक्ति अपनी व्यक्तिगत और सामाजिक शंकाओं व समस्याओं को दूर कर सकता है। इसी कारण आध्यात्मिक विकास ही नैतिक जीवन को व्यवहारिक बनाता है।परिवार मानव की प्रथम पाठशाला है। बालक परिवार से ही संस्कार अर्जित करता है।माता पिता के पश्चात् बालक विद्यालय में गुरुवरों के श्री चरणों में बैठकर सदाचार की शिक्षा प्राप्त करता है। अतः शिक्षालयों में पाठ्यक्रम और आचरण के माध्यम से शिक्षकों को मानवीय मूल्यों की शिक्षा देनी चाहिये।विद्यालयी शिक्षा के विभिन्न विषयों के माध्यम से बालकों में नैतिक गुणों का आविर्भाव सम्भव होता है।नैतिक मूल्यों की शिक्षा द्वारा अनुशासन, शारीरिक श्रम, सहकारिता तथा भाईचारे की भावना को प्रोत्साहित किया जाये। संस्कार शिविरों तथा समूह भाव को उद्वेलित करने वाले आयोजन अधिकाधिक हों, ताकि आज का बालक संस्कारवान् नागरिक बन सके और मानवीय मूल्यों की स्थापना से राष्ट्रीय चरित्र का सतत् उत्थान हो सके।

◆◆◆◆

# धर्म, दर्शन में वर्णित मानवीय मूल्यों की प्रासंगिकता – 'वेदान्त दर्शन के परिप्रेक्ष्य में'

**संगीता राठौर**
*शोध छात्रा, वीरांगना रानी अवन्ती बाई लोधी रा०म० महाविद्यालय, बरेली (उ०प्र०)*

## सारांश

धर्म और दर्शन मानव जीवन के दो पूरक स्तम्भ है भारतीय दर्शनों ने मानव मूल्यों की अलग से पहचान कराई है। उसमे भी वेदान्त दर्शन का सामाजिक, धार्मिक एवं आचार की दृष्टि से बहुत अधिक महत्व है। क्योंकि वेदान्त दर्शन मानव जीवन के हर क्षेत्र में अहम भूमिका निभाता है। चाहे वह आध्यात्मिक हो या व्यावहारिक क्षेत्र से सम्बन्धित हो। वेदान्त दर्शन युगों–युगों से मानव जीवन के लिए जीवन की नश्वरता की शिक्षा देकर परमार्थ के लिए प्रेरित करता है।

वेदान्त दर्शन मानव मूल्यों का अक्षुण सिन्धु है। परम–ब्रह्म परमत्मा ने ईश्वर और माया की मोहासक्ति से इस नश्वर व भौतिक संसार का निर्माण किया है। ईश्वर ने इस भौतिक संसार के प्राणी जगत में मानव सबसे सुन्दर रचना है। मानव जाति की उत्पत्ति स्वयं व दूसरे के हित के लिये हुई है। भोग हेतु नहीं। मानव को सभ्य व संस्कारी बनाने के लिये प्राचीन भारतीय ऋषियों–मुनियों ने मानवीय मूल्यों का निर्माण किया है। इनका प्रेरणा स्त्रोत भारतीय, संस्कृत वांग्ड्मय ही है। मानवीय मूल्य है– धर्म, सत्य, अहिंसा, ब्रह्मचर्य, मनोनिग्रह निष्काम भावना श्रद्वा दान त्याग ज्ञान, आदि गुण है जो मानव के चरित्र का निर्माण कर उसे एक आदर्श नागरिक बनाते हैं। इतना ही नहीं अपने देश के चरित्र का भी निर्माण करते हैं– प्राचीन भारतीय समाज इन्ही मानवीय मूल्यों को धारण करता हुए ''जगद्गुरू'' के रूप में स्थापित हुआ। इतना ही नहीं सम्पूर्ण विश्व को मानवीय मूल्यों की शिक्षा भी देने का श्रेय भी भारत को ही जाता है। भारत प्रधानतः आध्यात्मिक देश रहा है इसलिए भारत आध्यात्मिक और व्यावहारिक ज्ञान का संगम स्थान है। आज समाज में चारों ओर मानवीय मूल्यों का निरन्तर पतन हो रहा है। जिसका कारण है काम, क्रोध, अहंकार, लोभ, मोह, ईष्या, हिंसा, असत्य और अधर्म आदि दुर्गण जो समाज के अज्ञानी मानव को निरन्तर अंधकार की ओर ढकेल रहे है।

◆◆◆

# भारतीय संस्कृति का आधार रामायण में प्राप्त मानवीय मूल्य

**अजय कुमार**
*शोध छात्र, बरेली कालेज, बरेली (उ०प्र०)*

## सारांश

संस्कृति और मानवीय मूल्य परस्पर एक ही वृक्ष पर लगने वाले फल हैं। संस्कृति का शाब्दिक अर्थ सुधरी हुई स्थिति से है अर्थात् समाज में व्यक्ति का चारित्रिक, मानसिक, व्यक्तिगत स्वभाव से है। यही स्वभाव मानवीय मूल्यों की नींव है। कोई भी समाज तभी सुदृढ़ होगा जब उसमें दया, धर्म, परोपकार, सत्यभाषिता, करूणा, विश्व कल्याण, अहिंसा, धर्म–अर्थ–काम–मोक्ष का विधिवत समायोजन आदि गुणों का विकास होगा। जब ये समस्त गुण किसी मनुष्य में निवास करने लगते हैं तो वे मानवीय मूल्य कहलाते हैं यही हमें अन्य जीवों से अलग रखते हैं।

भारतीय संस्कृति के आधारभूत नायक श्री राम पर तो सम्पूर्ण मानवीय मूल्यों से ओत–प्रोत थे। बाल्यावस्था से लेकर गमनावस्था तक उन्होंने संसार के कल्याण के लिए अपने सभी सुखों का त्याग किया। उन्हीं पर आधारित श्री वाल्मीकि रामायण में तो सम्पूर्ण भारतीय संस्कृति को परिभाशित किया गया है। इसका प्रारम्भ ही दया से ओत–प्रोत श्लोक से हुआ है–

"मा निषाद! प्रतिष्ठां त्वमगमः शाश्वतीः समाः।
यत्कौळच मियुनादेकमवधीः काममोहितम्।।"

इसमें जो करूणा का भाव प्रकट हुआ वही करूणा इस सम्पूर्ण रामायण में पग–पग पर दिखाई दे रही है। रामायण का प्रत्येक आख्यान मानवीय गुणों को प्रकट कर रहा है। बालकाण्ड में राजा दशरथ के राजदरबार का वर्णन एवं उनके मन्त्रियों में जो योग्यता, सत्यभागिता तथा परोपकार का होना ही उस समाज मानवीय गुणों का भण्डार होगा ऐसा कहा जा सकता है। वहीं कुशनाभ द्वारा अपनी कन्याओं में उपलब्ध क्षमादान की प्रस्तुति एवं क्षमा को श्रेष्ठ गुण बताते हैं। इसी प्रकार विभीषण का रावण को उपदेश तथा कुम्भकर्ण का विभीषण लज्जित करना आदि व्याख्यान भी मानवीय गुणों को प्रकट करते हैं।

यही कारण है कि समाज में आज भी रामायण का पाठ किया जाता है ताकि उसमें उपलब्ध गुणों का मनुष्य अनुकरण करे किन्तु वर्तमान समय में रामायण का पाठ तो सर्वत्र होता है, लेकिन उसका अनुकरण नहीं। इस प्रकार यह रामायण चिरकाल तक मानवीय गुणों का प्रसार करती रहेगी।

◆◆◆

# भारतीय समाज में नैतिक मूल्यों का ह्रास

**डॉ० भूपेन्द्र कौर[1] एवं अभिषेक यादव[2]**
*[1]सहायक प्राध्यापिका, [2]शोध छात्र, शिक्षा विभाग, आईएफटीएम विश्वविद्यालय, मुरादाबाद (उ०प्र०)*

## सारांश

आज के भारतीय जीवन मे जो नैतिक मूल्यो का ह्रास हो रहा है वह बहुत ही शोचनीय एवं दुखद धटना है। नैतिक मूल्यो की प्रतिष्ठा के बिना हम कदापि प्रगति की मंजिल पर अग्रसर नही हो सकते। संतोष तथा शांति सबसे बडा धन होता है। इनकी प्राप्ति नैतिकता की भावना के बिना असम्भव है। अत; हमे राष्ट्र तथा समाज की उन्नति के लिए नैतिक मूल्यो को सर्वोपरि स्थान देना होगा। तभी हम प्रगति की मंजिल पर अबोध गति से बढ सकेगे। समाज मे ऐसे समाजसेवी संगठनो का निर्माण करना होगा जो निस्वार्थ भाव से लोगो की सेवा करे।

**की–वडर्स:** समाज, शिक्षा, मूल्य, संस्कृति नैतिक मूल्य।

◆◆◆

# भारतीय संस्कृति का प्रतीक संगीत एवं मानवीय मूल्य

**डा0 मोनिका दीक्षित**
*विभागाध्यक्ष–संगीत विभाग, किशोरी रमण महिला स्नातकोत्तर महाविद्यालय, मथुरा (उ०प्र०)*

## सारांश

वर्तमान समय में ऊँची आकांक्षाओं का दबदबा है, जिससे भौतिक प्रगति के लिए तकनीकी ज्ञान पर सारा बल दिया जा रहा है। बदलते भौतिकवादी समाज में व्यक्ति के मूल्य लुप्त हो गए है। अर्थ पहले अन्य काम बाद में। धन ने मूल्यों पर अतिक्रमण कर लिया है ऐसे में विद्यालय विद्या के आश्रय न रहकर अर्थ के आलय बन गये है। आज आवश्यकता है मूल्य व मान्यताओं को विवेक की कसौटी पर कसने की। मूल्य हमारे वे सिद्धांत एवं जीवन निर्वाह के नियम है जो हमारे जीवन के उद्देश्य की पूर्ति हेतु दिशा निर्देश करते है। व्यक्तित्व को पूर्णता प्रदान करने वाली संश्लेषणात्मक शक्तियों को मूल्य कहा जाता है। वस्तुतः आज भी शिक्षा का उद्देश्य ज्ञान को उत्पन्न कर विस्तृत करना ही है।

डॉ. सत्यकेतु के शब्दों में– ''चिन्तन द्वारा अपने जीवन को सरस, सुन्दर और कल्याणमय बनाने के लिये मनुष्य जो प्रयत्न करता है उसका परिणाम संस्कृति के रूप में प्राप्त होता है।''

संस्कृति द्वारा मनुष्य के सोचने का ढंग, विचार, धार्मिकता, सामाजिकता आदि सभी अवस्थाओं का ज्ञान होता है। संस्कृति समाज का दर्पण है और कला संस्कृति का। संगीत एक कला है और उसमें संस्कृति की झलक, अनुरूपता, मान्यताओं और परम्पराओं आदि का वहन होना चाहिये। संगीत में भारतीय संस्कृति के इन आदर्शो मान्यताओं और परम्पराओं को एक महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त है।

किसी भी कला के प्रति अनुराग मनुष्य की विशेषता है। इस दिशा में संगीत कला का शिक्षा में अत्यन्त महत्वपूर्ण स्थान है। संगीत शिक्षा का उद्देश्य व्यक्ति का संपूर्ण विकास तथा सुप्त गुणों की अभिव्यक्ति है। महान संगीत जब महान विचार मे बदल जाता है तो वह हमें एक अद्भुत ताकत देता है। मन को विषाद– अवसाद से मुक्ति दिलाता है। जीवन को अर्थ पूर्ण बनाता है और अपनी रचनात्मकता को निखारने के अवसर देता है।

गाँधी जी का '' वैष्णव जन तो तेन्हे कहिये '' तथा '' रघुपति राघव राजा राम '' गीत जन समूह के हृदय में षान्ति का संचार कर मानवता को जन्म देने का काम करते है। विद्यार्थियों में चरित्र निर्माण, ज्ञानवर्धन, देश व समाज के प्रति प्रेम, अनुशासन आदि प्रवृत्तियों के संवर्धन में संगीत हमेषा से ही सहायक रहा है।

◆◆◆◆

# भारतीय संस्कृति एवं मानवीय मूल्य

**डॉ. कविता कन्नौजिया**
*एसोसिएट प्रोफेसर, समाजशास्त्र, विभाग, किशोरी रमण महिला, स्नातकोत्तर महाविद्यालय, मथुरा उ०प्र०)*

## सारांश

भारत की संस्कृति अति प्राचीन संस्कृति है। जीवन की शुद्धि के लिए किए गए आवश्यक कृत्य /संस्कार की योजना संस्कृति है। भारतीय संस्कृति में प्राचीनता, निरन्तरता, आध्यात्मिकता, विविधता में एकता, समन्वय वादिता, उदारता, ग्रहणशीलता, चिंतन की स्वतंत्रता जैसी महत्वपूर्ण गुण सम्मलित हैं। बेहतर शिक्षा सभी के लिए जीवन में आगे बढ़ने और सफलता प्राप्त करने के लिए अनिवार्य है। मनुष्य अपने प्राकृतिक अवस्था से निकल कर सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक एवं धार्मिक व्यवस्था में संगठित हुआ है। प्रारंभिक अवस्था में मानव जाती की पहली आवश्यकता भूख मिटाना तथा अपने जीवन की रक्षा करना और दूसरी आवश्यकता ब्रह्मांड या दुनिया के बारे में जानना, अर्थात जहाँ ज्ञान साध्य है वहीं शिक्षा ज्ञान प्राप्त करने का साधन है।

मूल्य वे अवधारणाएं या मानक हैं जो यह मूल्यांकन करते हैं कि हमारा कार्य, विचार, गुण तथा भावनायें वांछित हैं या नहीं। शिक्षा मनुष्य की इच्छाओं को नए अर्थ देती है जो कि सकारात्मक परिणाम की और ले जाती है। शिक्षा जहाँ मानसिक, शारीरिक समस्याओं को दूर करती है वहीं दूसरी तरफ आध्यात्मिक पूर्णता भी देती है। यह जीवन में संतोष और स्थिरता को जन्म देती है शिक्षा के आदर्श उद्देश्य, विषय सामग्री तथा छात्रों का दैनिक जीवन मूल्यपरक हो तो समाज के लिए कल्याणकारी होता है। भारतीय संस्कृति सार्वभौमिक आदर्शों से प्रेरित है जैसे "सत्यं शिवं सुन्दरं", सर्व कल्याणकारी है जैसे "वसुधैव कुटुम्बकम"। मानवीय मूल्य चिंतन का विषय है, आवश्यकता इस बात की है कि शिक्षक स्वयं भी मानवीय मूल्य से युक्त व्यक्तित्व को प्रदर्शित करे जिससे सत्य, धर्म, प्रेम, अहिंसा जैसे मूल्यों पर चलते हुए "सर्वे भवन्तु सुखिनः" के आदर्शों को प्राप्त करा सके। मूल्य का अंतिम उद्देश्य सबका कल्याण करना है, मानवता की भलाई करना है, मानवता की रक्षा करना है यही हमारी नजर में सबसे बड़ा मानव मूल्य है।

आधुनिक समाज स्वार्थपरता, अकर्मण्यता, कामुकता, दुराचार, भ्रष्टाचार से ग्रसित है। आज के छात्रों में माता पिता के प्रति भक्ति, गुरूजनों के प्रति आदरभाव स्वदेश के प्रति भक्ति अपने कर्तव्यों, आपसी प्रेम भाव, प्राणियों के प्रति दया भाव, प्रकृति की रक्षा, सत्य, ईमानदारी जैसे नैतिक मूल्यों को विकसित करने की आवश्यकता है।

◆◆◆◆

# भारतीय संस्कृति एवं मानवीय मूल्य

**डॉ० अश्विनी कुमार**
*इतिहास विभाग, बीसलपुर जिला पीलीभीत (उ०प्र०)*

## सारांश

भारत को विविधताओं वाला देश कहा जाता है। जहां भारत में अनेक प्रान्त हैं वहीं अनेक धर्म एवं भाषाएं भी देखी जाती हैं। कोई विदेशी जो भारत से अपरिचित हो वह भारत को देखकर इसे एक देश नहीं बल्कि कई देशों का समूह कहेगा। यहां प्राकृतिक विभिन्नताएं इतनी अधिक समृद्ध हैं कि इतनी किसी देश में नहीं। उत्तर में हिमालय की बर्फ से ढकी चोटियों से दक्षिण की ओर बढ़ने पर गंगा यमुना व ब्रह्मपुत्र के समतल मैदान मिलते हैं। इनसे आगे बढ़ते ही अरावली, सतपुड़ा, नीलगिरि की पहाड़ियों के बीच समतल, रंग–बिरंगे भाग दिखाई देते हैं। एक ओर हिमालय की बर्फीली जलवायु तो दूसरी ओर समतल मैदानों में लू और कन्या कुमारी का सुखद मौसम है। असम में जहां वर्ष भर में 300 इंच वर्षा होती है वहीं राजस्थान के जैसलमेर में वर्ष में दो चार इंच भी वर्षा नहीं होती। यहं हर प्रकार की वनस्पति, फल–फूल, खनिज सम्पदा और जानवर पाये जाते हैं।

जलवायु की विभिन्नता का प्रभाव यहां के निवासियों के रहन–सहन, खान–पान, वेश–भूशा, शरीर और मस्तिष्क पर भी देखा जा सकता है। हमारे देश को ऊपर से देखने पर भाषा, धर्म, तथा जाति के आधार पर विभिन्नता ही नजर आयेगी। परन्तु इसके नीचे फैली एकता और समता की भावना इन विभिन्नताओं को उसी प्रकार समेटे हुए हैं जैसे रेशमी धागे में बुद्धजीवी मोतियों की ऐसी माला जो अपनी सुन्दरता से दूसरों को आकर्षित करती है और दूसरों की सुन्दरता से स्वयं ही सुशोभित होती है। यह एक ऐतिहासिक सत्य है यहां भिन्न–भिन्न जाति एवं सम्प्रदाय के लोग अलग–अलग नामों से भारत के महा समुद्र में रह रहे हैं।

◆◆◆

# भारतीय संस्कृति मानवीय मूल्यों का जनक

**डॉ० पल्लवी सिह**
*सह–आचार्य संस्कृत विभाग, के. आर. गर्ल्स पीजी कॉलेज, मथुरा (उ०प्र०)*

## सारांश

"संस्कार जन्मा संस्कृतिः"जिसमें संस्कारों का योगदान हो उसे संस्कृति कह सकते हैं। संस्कार जातीय एवं परम्परागत होते हैं जो पीढ़ी दर पीढ़ी मानव जाति को मिलता हैं। भारतीय संस्कृति या वैदिक किंक हिन्दू संस्कृति ऋग्वेदादि सहितायें, ब्राह्मण ग्रंथ आरण्यक, उपनिषद् तथा दर्शन ग्रंथ पर आधारित हैं। हमारे विचार हमारी आराधना प्रणालियों तथा हमारे संस्कार पुरुषार्थ चतुष्ट्य, वैवाहिक सोलह संस्कार थे वैदिक संस्कृति पर आधारित है। यह संस्कृति महान आदर्शों एवं उदारता की चरम पराकाष्ठा, जो सदा ही दीयताम (दो), दमताम (दया का) तथा दम्यताम (इंद्रियों निग्रह करो) का संदेश सुनाती रही हैं। व्यक्ति से समष्ठि तक हर व्यक्ति श्रयस प्राप्ति का साधन धर्म पथ को ,धर्म जो कर्तव्य परायणता हैं उसे जीवन का आधार मानता हैं। ऋत या नियमावत से ईश्वर भी बँधे हैं। भारतीय संस्कृति की समन्वयवादिता एकादमकता, समन्वय की इसी उदात्त भावना ने इसे गौरवमीय और वंदनीय बनाया हैं। आध्यात्मिकता से परिपूर्ण भारतीय संस्कृति विश्व बंधुता एवं वसुधैव कुटुम्बकम का पाठ पढाती हैं। कर्मवाद व्यवस्था व्यक्ति विशेष का मर्यादित जीवन जीने को अभिप्रेरित करता हैं पुरुषार्थ चतुष्ट्य के धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष हर व्यक्ति का जीवन मूल हो। स्थूल की अपेक्षा सूक्ष्म, भौतिक की अपेक्षा पारभौतिक को भारतीय संस्कृति में प्रधानता मिली हैं।व्यक्त की अपेक्षा अव्यक्त को महत्व दिया गया, यही दार्शनिकता की शुरुआत हैं। धर्म का पालन करते हुए मानव जीवन के आनंद के लिए अर्थ एवं काम की भी प्राप्ति होनी चाहिए। पर समस्त कार्यों की मर्यादित एवं धर्म के आधार पर करे ताकि पश्चात चरम एवं स्थाई आनंद मोक्ष प्राप्ति संभव हो।

वर्णाश्रम व्यवस्था समस्त सामाजिक नियमावली एवं मर्यादित व्यवहार का आधार रहा हैं। भारतीय सोलह संस्कार में गर्भधारण से लेकर अन्त्येष्टि संस्कार तक नियम निर्धारित हैं। यम,नियम और यज्ञ, सत्य, अहिंसा, अस्तैय, ब्रह्मचर्य तथा अपरिग्रह ये पाँच यम होते हैं। जिनका भारतीय संस्कृति में अपरिघर्य महत्व है और यही नैतिक के नींद भी हैं। पाँच नियम–शौच संतोष तप स्वाध्याय तथा ईश्वर प्रणिधान से मानव जीवन के उभयन में सहायक एवं नैतिक मार्ग हैं। त्याग, उदारता और संश्लिष्टता ये भारतीय रोम –रोम में व्याप्त है।

"तेन त्यक्तेन भुञ्जीथाः"–संसार की अनेक समस्याओं का त्याग और उदारता में निहित हैं। विश्वबन्धुत्व तथा विश्व कल्याण की भावना भारतीय संस्कृति की धरोहर "उदारं चरितानां तु वसुधैव कुटुम्बकम्" यह उदात्त मनुष्य को श्रेष्ठ एवं स्वार्थ छोड़कर परोपकार करने देता हैं।" आत्मवत् सर्वभूतेषू तथा मित्रस्योहं समीक्षामहे" के आदर्श हैं हमारे नैतिक मार्ग।

भारतीय संस्कृति में निहित, आशावाद सर्व अवसरानु मूलता, गतिशीलता, आत्मविश्वास की भावना, तप, संतोष सहिष्णुता, ज्ञान परायणता नैतिकता के मार्गदर्शनक भंडार भारतीय संस्कृ ति मानव को मंगलकारी एवं शुभ मार्ग की ओर प्रेरित करता और शाश्वत संदेश सुनाती रही हैं मानव मात्र के विकास एवं उत्थान करती रहेगी।

◆◆◆

# भारतीय हिन्दी साहित्य में मानवीय गुण

**श्रीमती हेमलता**
*असि.प्रो.–हिन्दी, वी.आर.ए.एल. राजकीय, महिला महाविद्यालय, बरेली (उ०प्र०)*

## सारांश

भारतीय हिन्दी साहित्य की पृष्ठभूमि, धर्म एवं संस्कृति रही है इस महान संस्कृति का आधार हे सत्यं, शिवम् एवं सुन्दरम इसी वजह से साहचर्य, प्राणिमात्र के प्रति दया, ज्ञान–विज्ञान से युक्त दृष्टि, आचार एवं चरित्र का समवेत रूप क्षमा, मृदुता, निर्भयता, सरलता, शत्रुता का अभाव और देवी सम्पति का भाव समाहित है। माधुर्य एवं प्रकाश का समन्वय चूंकि धर्म एवं संस्कृति का मुख्य तत्व हे यही भावना साहित्य में पूर्णतः सम्भव हे। इसलिए सम्पूर्ण हिन्दी साहित्य में माधुर्य एवं प्रकाश का समन्वय निरन्तर दृष्टि गोचर होता है।

हमारी संस्कृति एवं साहित्य सभी के प्रति समभाव रखती है। भगवदगीता में वर्णित है 'जो सब भूतो में द्वेषभाव से रहित है, किसी प्राणी से द्वेष नहीं करता। जो मित्रता से युक्त एवं करूणामय

है, जो ममता से रहित और अहंकार से रहित है जो सुख–दुःख में सम तथा अन्तः करण में राग–द्वेष से परे है। जो क्षमावान है, जो सदा हुए मन बुद्धि से मुझे अर्पित है, वही प्रिय है।

अद्वेष्टा सर्वभूतांनी मैत्रः करूण एवं च।
निर्ममों निरहंकारः समदुःखसुखः क्षमी।।
संतुष्टः सततं योगी यतात्मा दृढ़निश्चयः।
मय्यपिंतमनोबुद्धियों मद्भक्तः स मे प्रियः।।

(भ.गी. 12.13.14)

धर्म एवं संस्कृत की देन साहित्य है, इसलिए साहित्यकार ऐसा सामाजिक–सांस्कृतिक–चेतना सम्पन्न परिवेश तैयार करने का सदैव प्रयास करता है जिसमें लोक–कल्याण छिपा हो। इसलिए यदि हम हिन्दी–साहित्य की पृष्ठभूमि पर नजर डाले तो ज्ञात होता है आदिकाल से लेकर आधुनिक काल तक में साहित्यकार सामंती व राजाश्रय व्यवस्था को चुनौती देते हुए 'मुक्ति स्वप्न' अर्थात् खुशहाल समाज की कल्पना करता है।

भक्ति काव्य में मध्यकालीन सांमती परिवेश की सामाजिक–राजनीतिक–सांस्कृतिक चुनौतियों को स्वीकार करते हुए वैश्विक स्तर पर कालजयी स्वर दिया। भक्त कालीन कवियों ने देवचरित के आधार पर साहित्य की रचना की है। परन्तु उनका उद्देश्य अवतारवाद, लीलागान, प्रार्थना भाव व आत्मनिवेदन तक ही सीमित नहीं है अपितु वह वैयक्तिक आकांक्षाओं को महत्व न देकर सामाजिक आकांक्षाओं को सर्वप्रथम वरीयता देते है। इसलिए उनके सम्पूर्ण साहित्य में सामाजिक–कल्याण का भाव प्रगट अथवा अप्रगट रहता हैं।

अंत में कहा जा सकता है कि भारतीय संस्कृति में पाचन करने की शक्ति है और अनेक रूप रंग, आकार, भाषा वैविध्य के बाद भी समरसता की ओर सदैव बढ़ती है। यही पृष्ठभूमि को आधार मानते हुए सम्पूर्ण हिन्दी साहित्य में साहित्यकार मानवतावादी दृष्टिकोण अपनाता है और ऐसे संसार की रचना करता है जिसमें 'समता' की दृष्टि हो। कबीर ने कहा है–

मद्ध अकास आय जहँ बैठे, जोत शब्द उजियारा हो।
सेत सरूप राग जहँ फूलै साई करत बिहारा हौ।

इस प्रकार भक्त कवियों ने लोकवादी चेतना और मानवीय सरोकार को समेटते हुए खुशहाल एवं समृद्ध समाज का निर्माण करने का प्रयत्न किया।

◆◆◆◆

# हिन्दी साहित्य में मानवीय जीवन मूल्यों की अभिव्यक्ति

**डॉ० निधि शर्मा**
*असिस्टेंट प्रोफ़ेसर, हिन्दी विभाग, किशोरी रमण महिला, स्नातकोत्तर महाविद्यालय, मथुरा*

## सारांश

आरंभ से ही मानव सुविधापूर्वक जीवन यापन करने के लिए कुछ नियमों का निर्धारण करता है, जो सार्वभौमिक और सार्वकालिक होते हैं किन्तु इनमें समयानुसार थोड़ा–बहुत परिवर्तन होता रहता है। इनका विकास, विभिन्न परिवेश, परिस्थितियों में होता है, इसलिए प्रत्येक देश के धर्म, दर्शन, संस्कृति में भिन्नता दिखाई पड़ती है किन्तु सर्वत्र ही मूल्यों के निर्धारण में मानव के उत्थान–पतन और कल्याण की भावना मूल में रहती है, जैसा कि प्रसिद्ध समाजशास्त्री सुड्स ने लिखा है– "मूल्य" दैनिक जीवन में व्यवहार को नियंत्रित करने के सामान्य सिद्धान्त हैं। मूल्य न केवल मानव व्यवहार को दिशा प्रदान करते हैं, बल्कि वे अपने आप में आदर्श भी हैं।

सभी प्रकार के मूल्य मानव–जीवन से संबंधित होते हैं। इसलिए मूल्यों को मानव–जीवन से अलग रखकर नहीं देखा जा सकता है, क्योंकि समाज के साथ ही मूल्यों का प्रारंभ परिवार से होता है। परिवार के दायरे से बाहर निकलकर मनुष्य व्यापक समाज में आता है। ग्राम, प्रांत, देश सब उन व्यापक समाज के घटक हैं। अतः साहित्य समाज का दर्पण है। उपनिषदों के 'सत्यम' वद् धर्मचार' से लेकर कबीर तथा तुलसीदास से लेकर रहीम के नीति काव्य तक व्याप्त नीति साहित्य मानव मूल्यों की प्रतिष्ठा का प्रत्यक्ष प्रयास है। आधुनिक साहित्य में 'मूल्य' शब्द का प्रयोग वैयक्तिक, सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक तथा सांस्कृतिक स्तर का संपूर्ण मानव व्यवहार के मानदंड के रूप में किया जाता है। 'मूल्य' शब्द का आवश्यकता, प्रेरणा, आदर्श, अनुशासन, प्रतिमान आदि अनेक अर्थों में प्रयोग होता है। आज मनुष्य पुराने विचारों को काल बाह्य समझने लगा है, प्राचीन मूल्य अस्वीकृत हो रहे हैं और नए–नए मूल्य स्वीकार किए जा रहे हैं।

◆◆◆

# भारतीय संस्कृत साहित्य एवं मानवीय मूल्य " पुराणों के सन्दर्भ में"

**आंचल सक्सेना**
*शोधछात्रा, वी0रा0अ0लो0रा0म0 महाविद्यालय, बरेली (उ०प्र०)*

## सारांश

भारतीय साहित्य एवं संस्कृति में मानवीय मूल्यों का अद्वितीय स्थान है। अनेक क्षेत्रों में हुए विभिन्न परिवर्तनों के फलस्वरूप भी आज भी भारतीय संस्कृति उसी गौरव के साथ प्रतिष्ठित है जैसी प्राचीनकाल में हुआ करती थी। आधुनिकता के बढ़ते प्रभाव के होते हुए भी भारतीय

संस्कृति के विभिन्न तत्व मनुष्य जीवन में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

भारतीय संस्कृति की प्रधान विशेषता है मूल्य की प्रधानता। यहॉ मनुष्य के भीतर मूल्यों का निर्माण व विकास उसके जन्म से प्रारम्भ हो जाता है तथा मृत्यु पर्यन्त चलता रहता है। इन मानवीय मूल्यों से मनुष्य को अवगत कराने के कार्य में महत्वपूर्ण भूमिका साहित्य की रही है। साहित्य के माध्यम से ही हमें संस्कृति के विभिन्न तत्वों के विषय में ज्ञान प्राप्त होता है।

भारतीय संस्कृति की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि का सांगोपांग वर्णन जितना संस्कृत साहित्य में प्राप्त होता है, उतना अन्यत्र कहीं नहीं मिलता। संस्कृत साहित्य के अर्न्तगत पुराणों में मानवीय मूल्यों की विशद व सूक्ष्म रूप से व्याख्या की गयी है विभिन्न पुराणों के अर्न्तगत दया, दान, क्षमा, त्याग, धर्मपालन, सत्यनिष्ठा, धैर्य, विचाराभिव्यक्ति आदि विभिन्न मानवीय मूल्यो की यथास्थान चर्चा की गयी है।

यथा गरूड़पुराण में कुसंगति को लोक विनाशक की संज्ञा देते हुए इससे दूर रहने को निर्दिष्ट किया गया है–

सद्भिः सगं प्रकुर्वीत सिद्धीकामः सदा नर :।
नासद्भिरिहलोकाय परलोकाय वा हितम्।।

अर्थात् सिद्धि की कामना रखने वाले मनुष्य को सदैव सज्जनों की संगति करनी चाहिए। असज्जनों की संगति से न तो इस लोक में कल्याण होता है और न ही परलोक में।

इसी प्रकार दान को ऐसे मानवीय मूल्य के रूप में अभिहित किया जाता है जो मनुष्य के भीतर विद्यमान होकर उसे दूसरे से अलग या विशेष स्थिति प्रदान करता है।

मत्स्यपुराण में राजा बलि का आख्यान दान रूपी गुण का परिचायक है–

बलि राजा भवतत्रा
सर्वेभ्यो दानकर्मणा।
त्यागी भूत्वातु लोके
च कीर्तिमान भवत्रदा।।

इस दृष्टि से मानवीय मूल्यों के अन्तर्गत वे सभी मूल्य अथवा गुण आते है जो विद्यमान होने पर मनुष्य को अन्य सामान्य जनो से श्रेष्ठ प्रतिष्ठित करते है।

भारतीय संस्कृति में संस्कृत साहित्य के अन्तर्गत अनेक मानवीय मूल्यों को वर्णित किया गया है जो न सिर्फ मनुष्य को उत्तमता प्रदान करते हैं बल्कि शाश्वत मूल्य "सत्यम् शिवम् सुन्दरम् " की प्राप्ति में भी सहायक सिद्ध होते हैं। इन मूल्यों का समूल वर्णन सहस्त्र वर्ष पूर्व

पुराणकार वेदव्यास जी ने पुराणों के अन्तर्गत किया, जिनका अध्ययन कर हम उन्हे अपनी जीवनशैली का अभिन्न अंग बना सकते हैं।

ये सभी मानवीय मूल्य मनुष्य की पुरुषार्थ चतुष्टय धर्म, अर्थ, काम व मोक्ष की प्राप्ति में सहायक सिद्ध होते हैं।

◆◆◆

# भक्तिकालीन साहित्य में मानवीय मूल्य

**डॉ0 अरुण कुमार एवं डॉ0 निशात बानो**
*[1]असिस्टेण्ट प्रोफेसर हिन्दी विभाग, राजकीय रज़ा स्नातकोत्तर महाविद्यालय, रामपुर (उ०प्र०)*
*[1]एसोसिएट प्रोफेसर हिन्दी विभाग, राजकीय महिला स्नातकोत्तर महाविद्यालय, रामपुर (उ०प्र०)*

## सारांश

मानवीय मूल्य समस्त मानव की आचारसंहिता के आधार हैं। सामाजिक, नैतिक, आध्यात्मिक, भौतिक, सौन्दर्यात्मक, एवं मनोवैज्ञानिक मूल्यों का निर्माता मनुष्य ही है। यदि इन मूल्यों में अधिकार, कर्तव्य, न्याय, ईमानदारी, सत्य, प्रेम, अहिंसा, बन्धुत्व, दया, करुणा, ममता आदि का सौन्दर्य न हो तो वे मूल्य अपनी महत्ता, श्रेष्ठता, सार्थकता और आदर्श को तिरोहित कर देंगे। वे अक्षुण्ण कदापि न रहेंगे। वर्तमान परिवेश में मनुष्य जाति, वर्ग, धर्म, सम्प्रदाय, क्षेत्र, भाषा, अमीर, गरीब आदि न जाने कितने संकीर्ण बन्धनो से आबद्ध होकर एवं सहज मानवीय मूल्यों– को त्यागकर सत्य, अहिंसा, प्रेम, बन्धुत्व, दया, क्षमा, त्याग, शील, विनय, सेवा, समर्पण, संयम, सदाचार, सहयोग आदि सद्प्रवृत्तियों से विमुख होता जा रहा है। जिन सद्प्रवृत्तियों के आधार पर सृष्टि में समन्वय स्थापित होता है, सत्यम् शिवम् सुन्दरम की संकल्पना साकार होती है, वे प्रवृत्तियॉ कहीं तिरोहित होती जा रही हैं। वर्तमान विज्ञान और तकनीकी ने 'वसुधैव कुटुम्बकम्' की कहावत को यथार्थ स्वरूप प्रदान तो किया है किन्तु यह केवल सूचना एवं भौतिक तन्त्रों तक ही सीमित होकर रह गया है। व्यक्ति विश्व से जुड़कर भी अपने घर एवं मन में अकेला है। मनुष्य अधिभौतिकतावदी सुख के अन्धी दौड़ में अपने सहज मानवीय मूल्यों से दूर होता जा रहा है। धन–वैभव, लोभ–लालच, पद–प्रसिद्धि के व्योमोह में वह आध्यात्मिकता को विस्मृत करता जा रहा है।

भक्तिकालीन साहित्य शाश्वत मानवीय मूल्यों का उद्घाटन करता है। भक्ति की अजश्र पीयुष–धारा में प्रवाहित होकर ये मूल्य मानवता को अमर बनाने का मार्ग प्रशस्त करते हैं। कबीर, सूर, तुलसी, जायसी, मीरा, रसखान की वाणी लोगों के मन–मस्तिष्क को अभिसिंचित करती है,

हृदय में रस का संचार करती है, अधिभौतिकता से आध्यात्मिकता के समुन्नत शिखर पर प्रतिष्ठित करने का सद्प्रयास करती है और सबसे महत्त्वपूर्ण बात यह है कि मनुष्य में मानवीय गुणों को विकसित कर उसे सच्चा मनुष्य बनने के योग्य बनाती है। यदि मनुष्य इन सार्वभौमिक मुल्यों को ईमानदारी से धारित करे तो सृष्टि में सौन्दर्य की कमी नहीं रहेगी। सत्य, प्रेम, मित्रता, मधुर वचन, धैर्य, परोपकार, दया, दान, सेवाभाव, विनय, क्षमा, संतोष, श्रम आदि मानवीय मूल्यों से सृष्टि में सुख, समृद्धि, सौहार्द्र एवं प्रसन्नता की स्थापना की जा सकती है।

**मुख्य शब्द–** भक्तिकाल, साहित्य, मानवीय मूल्य, 'वसुधैव कुटुम्बकम्', अधिभौतिकता, आध्यात्मिकता, सौन्दर्यात्मक, सार्वभौमिक मूल्य।

◆◆◆◆

# मधुकर अष्ठाना के गीतों में मूल्यचेतना

**(कुछ तो कीजिए, नवगीत संग्रह के विशेश परिप्रेक्ष्य में)**

**डॉ0 मो0 असलम खाँ[1] एवं कुँवर डॉ0 महाराणा प्रताप सिंह चौहान 'विद्रोही'[2]**
*[1]प्राचार्य, [2]अध्यक्ष, शोध एवं स्नातकोत्तर हिन्दी विभाग, डॉ0 राम मनोहर लोहिया राजकीय महाविद्यालय, ऑवला, जिला बरेली(उ०प्र०)*

## सारांश

गीत आदि हैं, अनादि है, शाश्वत है, कालजयी है, अजर है, अमर है, इसीलिए मानव जाति के उत्स से लेकर अद्यावधि उसका सहचर बना हुआ है। हालॉकि भाव, शिल्प और बन्ध की दृष्टि से उसमें समयानुरूप परिवर्तन होता रहा है। यही उसकी जीवंतता एवं प्रामाणिकता का सबसे बड़ा सबूत है। ऐसे समय में जब गीत को खारिज करने की कोशिशें हो रही थीं, हिन्दी कविता राजनैतिक षड्यन्त्रों और दॉव–पेंचों की शिकार होकर कुछेक सहित्यिक शिविरों में कैद हो गई थी। आलोचकों के अलग–अलग खेमें बन गए थे। ऐसे में गीत को नूतन अन्तर्वस्तु एवं शिल्प के सहारे संजीवनी देकर जब पुनर्जीवन देने का यत्न और प्रयत्न हुआ, तो उसे नवगीत की संज्ञा से नवाजा गया। सातवें दशक में कुछ रचनाधर्मी गीत को लेकर किसी भी प्रकार की समझौतापरस्ती से अलग हटकर आगे आए। उनमें एक नाम मधुकर अष्ठाना का भी था।

अष्ठाना जी जो भी गीत लिखते हैं, ऐसा लगता है कि कागज पर उतारने से पहले उसकी एक सुविचारित योजना उनके अर्न्तमन में काफी पहले रूप ले चुकी होती है। इसीलिए अष्ठाना जी की रचनाएँ ''वाग्विलास' का सुख नही देती, अपितु उनमें आत्मा की पुकार मौजूद है। उनके अनुसार ''गीत रागात्मक अन्तश्चेतना के मूल में ही समाहित अनुभूतियों की संवेदना से व्यंजित एक ऐसा शब्द यज्ञ है, जिसके लघुतम छान्दसिक स्वरूप में सामान्यजन की पक्षधरता

के साथ समसामयिक भावतत्व व विचारतत्व का समन्वय होता है। जो उक्त संवेदना की चिंगारी का विस्तारकर, उसे विशाल अग्नि भण्डार के रूप में परिवर्तित कर अपूर्व ऊर्जा से परिपूर्ण कर देता है, जिसमें समस्त विसंगति, विषमता, विडम्बना, विरूपता, विघटन आदि के ध्वस्त करने की क्षमता होती है।'' इन पंक्तियों में पर उपदेश कुषल बहुतेरों की अच्छी खबर ली गई है। ''दे रहे उपदेश, खाली पेट का विश्वास लेकर, लोग जयजयकार में डूबे हुए हैं, ह्रास देकर।'' आज पारस्परिक विश्वास का इतना अभाव हो गया है कि समाज में हमारा चरित्र निरन्तर एकांगी और छोटा होता जा रहा है। समूहगत भावना के लोप से व्यक्ति स्वयं में ही संकुचित होकर अपनी प्रगति को अवरूद्ध कर रहा है। कुएँ का मेंढ़क बनकर गरिमापूर्ण प्रतिष्ठा, विद्वता और सुयश की कामना का कोई मूल्य नही होता है।'' फिर भी हर किसी में आवेश उत्तेजना एवं मूल्यों के प्रति अनास्था का भाव दिन–प्रतिदिन गाढ़ा होता जा रहा है। इतना ही नहीं कुकुरमत्तों की तरह मनोनुकूल मूल्यों को गढ़ने की होड़ सी लग गई है। कुछ–कुछ यूँ–

''मरा ऑख में, किन्तु खून में, उतर गया पानी, कथा श्रवण की,
युवा हृदय को, लगती नादानी, काँपने लगी, दीप की बाती, पुलक लगी ढ़ँपने।''

समग्र रूप में देखें, तो अष्ठाना जी प्रगतिवादी पक्षधरता के कवि हैं, कहीं वे धूमिल के साथ खड़े दिखाई देते हैं, तो कहीं कबीर के साथ, तो कहीं दबे कुचले लोगों के घांव पर निराला की भांति भावना का मरहम लगाने में संलग्न दिखते हैं। तो कहीं उनमें त्रिलोचना की छवि दिखाई देती है। अन्त में, उनकी इस पंक्ति के साथ इस आलेख को विराम देता हूँ–

''रोजी रोटी दे न सके, जो केवल भाषण को, आग लगे ऐसे सिंहासन को।''

◆◆◆◆

# हिन्दी साहित्य की सन्त काव्यधारा में अभिव्यक्त मानवीय मूल्यों का तात्त्विक विश्लेषण

**डॉ0 ज़ेबी नाज़**
*असिस्टेन्ट प्रोफेसर–हिन्दी विभाग, राजकीय रज़ा स्नातकोत्तर महाविद्यालय, रामपुर (उ0प्र0÷*

## सारांश

महान और कालजयी साहित्य वही होता है जो मनुष्य उसके अस्तित्व व अस्मिता के समक्ष संकट उत्पन्न करने वाले और मानवीय मूल्यों को विस्मृत करने वाले तत्वों के समक्ष प्रश्नचिन्ह लगाता है तथा मानवीय मूल्यों को अंगीकार कर लोकमगंल की अवधारणा को साकार करता है। निस्संदेह मध्ययुगीन भक्तिकाल की सन्त कव्यधारा साहित्य के उक्त मानवीय

मूल्यपरक दृष्टिकोण को पूर्णतः आत्मसात करती तथा साहित्य के मार्ग से लोककल्याण की विचारधारा का बखूबी निर्वहन करती है।

प्रस्तुत शोधपत्र में हिन्दी साहित्य की संत काव्यधारा की वैचारिक एवं सैद्धान्तिक पृष्ठभूमि का विष्लेशण करते हुए प्रमुख सन्त कवियों का परिचय प्रस्तुत किया गया है। उक्त शोधपत्र के अन्तर्गत यह तथ्य निरूपित करने का प्रयास किया गया है कि संतों की काव्यरचना का मूलाधार मानव एवं मानवता कल्याण था। तत्कालीन राजनैतिक अशान्ति, सामाजिक अव्यवस्था, धार्मिक ऊहापोह, आर्थिक विषमता, साहित्यिक अवमूल्यन तथा सांस्कृतिक पतन के युग में सत्याचरण के विश्वासी कर्मण्य एवं निर्भीक संत काव्यधारा के कवियों ने अपनी सहजानुभुति को स्पष्ट वाणी के रूप में अभिव्यक्त कर शाश्वत मानवीय मूल्यों को अपने साहित्य में प्रतिष्ठापित किया।

उक्त शोधपत्र में सन्त काव्यधारा में विद्यमान अहिंसा, समदर्षिता, करूणा व प्रेम का संदेश, सत्यवादिता, परोपकार, संयम, आत्मोथान, दया, क्षमाशीलता, मिथ्याचार, बाह्याडम्बर व मूर्तिपूजा का विरोध, जनसेवा, उत्कृष्ट वाणी, गुरू सम्मान, निष्काम सेवा व आनन्द आदि मानवीय मूल्यों को गम्भीर, तार्किक व सूक्ष्म संवेदनात्मक दृष्टि से विश्लेषित करने का प्रयास किया गया है।

हिन्दी साहित्य की सन्त काव्यधारा में अभिव्यक्त मानवीय मूल्यों का तात्विक विष्लेशण एवं बेबाक पड़ताल करना तथा वर्तमान मानवीय मूल्यों के उत्तरोत्तर हास के युग में इन मध्ययुगीन सन्तों द्वारा स्थापित शाश्वत जीवन मूल्यों की प्रासंगिकता एवं सार्थकता रेखांकित करना उक्त शोधपत्र का उद्देश्य है।

**मुख्य शब्द** : सन्त, मानवीय मूल्य, अहिंसा, मानव कल्याण, विश्वबंधुत्व, समदृष्टि, बाह्याडम्बर एवं वाणी।

◆◆◆◆

# साहित्य एंव मानवीय मूल्य

**अभिषेक कुमार**
*असिस्टेंट प्रोफेसर बी0 एड0 विभाग आर0 एस0 एम0 (पी0जी0) कॉलेज धामपुर, जिला बिजनौर (उ०प्र०)*

## सारांश

मूल्य जीवन के साथ जुड़ा शब्द है। मूल्य केवल व्यवहार की दिशा ही निर्धारित नहीं करते अपितु अपने आप में आदर्श भी होते हैं। हमारा साहित्य किसी भी भाषा में हो उसमें मानवीय मूल्यों के दर्शन अवश्य होते हैं साहित्य और मूल्यों का अटूट रिश्ता है। साहित्य समाज से अलग

नही किया जा सकने वाला एक हिस्सा है। मानव समाज किसी न किसी रूप में साहित्य से जुड़ा रहा है। साहित्य का अर्थ ही है कि हित के साथ या हित सहित चलने वाला माध्यम या वह कार्य जो माता पिता, गुरूजन सदियों से अपनों के लिए करते आये है। वही साहित्य उससे भी बड़े स्तर पर मानव समुदाय के लिए करता आया है। दुनिया में सामान्यतः वही साहित्य प्रचलित हो पाता है जो किसी न किसी रूप में मानवीय मूल्यों से जुड़ा हो। साहित्य में प्राचीन काल से ही हम मानवीय मूल्यों का विवरण देखते हैं प्राचीन काल के साहित्य में हमें आदर्शोन्मुखी भगवान श्री राम के गुण दिखाई देते है। प्राचीन काल से ही शास्त्र विद्या और साहित्य दोनों समान्तर रूप से समाज में चले आ रहे है। जहां शास्त्र परंपरागत रूप से मानवीय मूल्यों का निरूपण करते हैं, वही साहित्य कविता कहानी या अन्य रूपों में इसे गूंथकर निरूपित करता है। हर युग में साहित्य अध्ययन समाज की बदलती दशा और दिशाओं का परिचय कराता है, जिसमें मानवीय मूल्य भी शामिल है।

साहित्य और जीवन मूल्य का शाश्वत संबंध है। साहित्य की पहचान का वास्तविक आधार आज भी मानवीय मूल्य ही है। साहित्य मानवीय संस्कृति, सभ्यता एवं व्यक्तित्व की अभिव्यक्ति है। डा0 जगदीशचंद्र गुप्त का मत है, ''कला और साहित्य दोनों एक प्रकार से जीवन का ही परिविस्तार करते है। मानव मूल्यों की स्थापना साहित्यकार से इस बात की अपेक्षा रखती है कि वह साहित्यिक मूल्यों को भी उतना ही आदर प्रदान करे जितना मानव मूल्यों को, क्योंकि तत्वतः दोनों एक ही हैं'' साहित्य और मूल्य एक सिक्के के दो पहलू है। साहित्य का संबंध व्यक्तिगत रूचि न होकर सामाजिक, आर्थिक, राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय व्यवस्था से होता है वहीं जीवन का साहित्य कहलाता है।

♦♦♦♦

# साहित्य एवं मानवीय मूल्य

**मधु रानी**
*शोधार्थी–हिन्दी, एम0जे0पी0 रूहेलखण्ड वि0वि0 बरेली (उ0प्र0)*

## सारांश

भारतीय साहित्य में मानवीय मूल्यों का चिंतन एवं अभिव्यक्ति प्राचीन काल से होती रही है। व्यक्ति के चरित्र एवं आचरण का मूल्यांकन मानवीय मूल्यों के आधार पर ही होता है। साहित्य न केवल मानवीय मूल्यों को प्रतिबिम्बित करता है, बल्कि उन्हें परिमार्जित कर सुदृढ़ आधार पर स्थापित भी करता है। "साहित्यकार व्यक्ति से अधिक समाज, समाज से अधिक राष्ट्र को महत्व देता है। अपनी लेखनी के माध्यम से मानव मे दया, प्रेम, त्याग, सद्भाव, उदारता तथा

परोपकार जैसे मानव मूल्यों की प्रतिष्ठा के लिए प्रेरित करता है।"

हिन्दी साहित्य के आदिकाल में बौद्ध साहित्य करूणा, मैत्री, भ्रातत्व और जैन साहित्य अहिंसा, संयमपूर्ण जीवन निर्वाह, सदाचार और विश्वकल्याण की भावना जैसे मूल्यों से ओत–प्रोत है। अपने राज्य के लिए मर मिटने वाले शौर्य, वीरता व त्याग का विशद् वर्णन भी इस काल के साहित्य की अनमोल धरोहर है। भक्तिकालीन साहित्य मानवीय मूल्यों की टकसाल है। कबीर व सभी सन्त कवियों, तुलसी, सूर, जायसी के काव्य की मूल संवेदना ही मानवीय मूल्य है। पारसनाथ तिवारी लिखते हैं– "सच्ची बात है कि हिन्दी साहित्य में कबीर से बड़ा मानवतावादी कोई नही हुआ।" तुलसीकृत 'रामचरितमानस' मानवीय मूल्यों का शिखर ग्रन्थ है। हिन्दी साहित्य की अमर निधि 'रामचरितमानस' मानवीय मूल्यों का भण्डार है। रहीम कृत नीति विषयक दोहे भी मानवीय मूल्यों की दृष्टि से हिन्दी साहित्य में मील का पत्थर है।

रीतिकालीन साहित्य में बिहारी लाल में प्रेम व भक्ति, भूषण में राष्ट्रीय प्रेम, गिरिधर, बैताल व सम्मन में मृदु वाणी, सत्संग महत्व, परोपकार, अहंकार परित्याग आदि मूल्यों की अभिव्यक्ति हुई है। "समाज के कल्याण तथा सांसारिक व्यवहारिकता की ज्ञानप्राप्ति के दृष्टिकोण से नीति विषयक काव्य परमोत्तम सिद्ध हुआ है।"

आधुनिक कालीन साहित्य में भरतीय संस्कृति के बैशिष्ट्य अहिंसा, समता, सहिष्णुता, सत्यनिष्ठा, सहानुभूति, करूणा, परोपकार, राष्ट्र प्रेम व मानवतावाद आदि मानवीय मूल्यों की अभिव्यक्ति भारतेन्दु, माखनलाल चतुर्वेदी, दिनकर, जयशंकर प्रसाद, पंत, निराला, मैथिलीशरण गुप्त व महादेवी वर्मा के साहित्य में हुई है। साहित्य द्वारा स्थापित मानवीय मूल्य व्यक्ति के चरित्र निर्माण में सहायक होते हैं जिससे समाज में स्वस्थ प्रवृत्तियों का विकास होता है। निःसन्देह भारतीय साहित्य मानवीय मूल्यो की दृष्टि से समृद्व है।

◆◆◆◆

# ब्राह्मण ग्रन्थों में नैतिकता एवं मानवीय मूल्य

**ज़फर अली**
*शोध छात्र, वी.आर.ए.एल. राजकीय महिला महाविद्यालय, बरेली (उ०प्र०)*

## सारांश

वर्तमान परिपेक्ष्य में यदि हम मानवीय मूल्यों की बात करें तो इनमें अत्यधिक गिरावट आयी है आज मनुष्य में परमार्थ के स्थान पर स्वार्थ की भावना घर कर गयी है। अपने स्वार्थ के

वशीभूत होने के कारण मानव–मानव के कष्टों का निवारण नहीं कर रहा है, बल्कि उसकी मजबूरी का लाभ प्राप्त करना चाहता है। मानवीय मूल्य विघटन का क्षेत्र दिन–प्रतिदिन समाज को खोखला बना रहा है। अतः मनुष्य को अपने प्राचीन ग्रन्थों को अध्ययन करने की परम आवश्यकता है। इन प्राचीन ग्रन्थों में ब्राह्मण ग्रन्थों का स्थान सर्वोपरि है। ब्राह्मण ग्रन्थों में मनुष्य के व्यवहार करने की प्रक्रिया वर्णित है। अतः ब्राह्मण ग्रन्थों के अनुशीलन से मानव जाति को सही दिशा प्राप्त हो सकती है और उसके व्यवहार में परिवर्तन आ सकता है। साथ ही वह स्वार्थ से परार्थ की भारतीय साहित्य विश्व के समस्त साहित्यों में सर्वाधिक प्राचीन है। इनमें भी प्राचीन संस्कृत साहित्य है। संस्कृत साहित्य में मानवीय मूल्यों का उत्कृष्ट वर्णन हुआ है। वैदिक साहित्य से लेकर लौकिक साहित्य तक मानवता तथा नैतिकता का व्यापक वर्णन किया गया है। मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है अतः समाज में उसे ऐसा आचरण करना चाहिए जिससे कि किसी को कोई दुःख ना हो। प्राचीन काल का वैदिक मानव 'वसुधैव कुटुम्बकम्' की भावना से अनुप्राणित था। वह समस्त क्रियायें एक दूसरे के सहयोग से करता था। सत्य बोलता था, नैतिक व्यवहार करता था, चरित्रवान था, किन्तु आज का मानव इन समस्त भावनाओं से दूर होता जा रहा है। परोपकार की भावना आज के मनुष्य के हृदय से लुप्त हो चुकी है। हम देखते है कि वेद, आरण्यक, उपनिषद् व ब्राह्मण ग्रन्थों में मानवीय मूल्यों पर सम्यक् प्रकाश डाला गया है। इसके अतिरिक्त लौकिक साहित्य में भी विभिन्न ग्रन्थों के माध्यम से मानवीय मूल्यों का व्यापक वर्णन किया गया है। ब्राह्मण ग्रन्थों में ऐतरेय, शांखायन, तैत्तिरीय, शतपथ, गोपथ आदि प्रमुख हैं जिनमें मानवीय मूल्यों पर व्यापक प्रकाश डाला गया है। शतपथ ब्राह्मण में तो सत्य को सर्वश्रेष्ठ मूल्य सिद्ध किया गया है और कहा गया है कि सदैव सत्य भाषण ही करना चाहिए कभी भी असत्य भाषण नहीं करना चाहिए।

शांखायन ब्राह्मण में भी मानवीय व्यवहार के नियामक तत्व प्रचुरता में उपलब्ध हैं। वाणी संयमन की उपादेयता का व्याख्यान षांखायन मे।दृष्टिगोचर होता है। तैत्तिरीय ब्राह्मण में मैत्रीभाव पर विशेष बल दिया गया है इसमें बताया गया है कि जिनके साथ सात पगों की भी यात्रा हो चुकी है वे सब मित्र कहलाते हैं। उनके प्रति सखाभाव को कभी हानि नहीं पहुँचनी चाहिए। माता, पिता, पुत्र आदि के प्रति सदैव आदर रखना चाहिए। गोपथ ब्राह्मण में भी सर्षिट हेतु श्रम तथा तप पर बल दिया गया है। इस प्रकार हम देखते हैं कि ब्राह्मण ग्रन्थों में मानवीय मूल्य अवधारणा पर विशेष बल दिया गया है। इनमें सत्य, दम, षम, दान, त्याग, धर्म, सन्तान आदि पर सम्यक प्रकाश डाला गया है। अतः ब्राह्मण ग्रन्थ मानवीय मूल्यों की आधारशिला हैं।

◆◆◆◆

# पर्यावरण संरक्षण की आवश्यकता एवं उपाय

**सैय्यद अब्दुल वाहिद शाह[1] एवं सुशील सहगल[2]**
*[1]असिस्टेंट प्रोफेसर, शिक्षक शिक्षा विभाग, [2]छात्र बी.एड. (द्वितीय वर्ष), राजकीय रज़ा स्नातकोत्तर महाविद्यालय, रामपुर (उ0प्र0)*

**सारांश**

प्रस्तुत शोध के माध्यम से पर्यावरण संरक्षण की आवश्यकता तथा पर्यावरण संरक्षण प्रभावी उपायो पर प्रकाश डाला गया है। आज ऐसा कोई देश नहीं है जो पर्यावरण समस्या का सामना न कर रहा हो। प्रस्तुत शोध के माध्यम से पर्यावरण प्रदूषण कया है? पर्यावरण प्रदूषण के स्त्रोत क्या है? मानव जनित पर्यावरण प्रदूषण के मुख्य कारण क्या है? पर्यावरण प्रदूषण दुष्पणिाम तथा पर्यावरण संरक्षण के उपायो पर प्रकाश डाला गया है। ग्लोबल एनवायरनमेंट आउटलुक रिपोर्ट – GEO के माध्यम से पर्यावरण प्रदूषण के घातक परिणाम और विभिन्न आंकड़ों को पेश किया गया है जो हमें पर्यावरण संरक्षण की आवश्यकता एवं महत्व से अवगत कराती है।

◆◆◆

# पर्यावरण संरक्षण में मानवीय मूल्यों की भूमिका : भारतीय परिवेश में

**डॉ० अरविन्द कुमार एवं मौ० आज़म**
*[1]असि० प्रो०, बी०एड० विभाग [2]छात्र, बी०एड० (प्रथम वर्ष), रा० रजा पी०जी० कॉलेज रामपुर*

**सारांश**

मनुष्य तथा पर्यावरण दोनों ही एक–दूसरे से सम्बंधित हैं। यह आधारभूत सत्य है कि पर्यावरण के मिटने से मानव जाति का अस्तित्व ही मिट जाएगा। पर्यावरण को बचाने के लिए जागरूकता, सजगता तथा अपने दायित्व अर्थात मानवीय मूल्यों का पूर्ण ईमानदारी से प्रत्येक मनुष्य को निर्वहन करना चाहिए। समाज को जागरूक करने के लिए ही 1972 सेसंयुक्त राष्ट्र संघ ने 5 जून को प्रत्येक वर्ष विश्व पर्यावरण दिवस मनाना आरंभ किया। परंतु आज हम पर्यावरण के बारे में केवल गांधी जयंती,पर्यावरण दिवस,भाषण प्रतियोगिताओं तथा संगोष्ठियोंमें ही बात करते नजर आते हैं। हमारी संस्कृति में जगत के सभी प्राणियों के सुखी तथा निरोगी होने कीकामना की गई है जो वृहदारण्यक उपनिषदमें "सर्वेभवंतुसुखिनः, सर्वेसन्तुनिरामया।" में भी विधमान है।

गांधीजी ने विभिन्न देशों के औद्योगिक विकास एवं आधुनिक समाज के द्वारा पर्यावरण

पर पड़ने वाले प्रभावों को देखते हुए कहा था कि–"प्रकृति हमारी जरूरतों को पूरा कर सकती है किंतु हमारे लालचों को नहीं।"

वर्तमान समय में ग्लोबलवार्मिंग, ग्लेशियरों का पिघलना,सुनामी,बाढ़ों का आना, वर्षा की कमी तथा भूमि अपरदन आदिबहुत सारी ऐसी समस्याएं हैं जो विश्व के विभिन्न भागोंअथवा संपूर्ण विश्व को प्रभावित कर रही हैं।जबकि मानव पर्यावरण की रक्षा करने वाला मैनेजर है।अतः हमें मानवीय मूल्यों का पालन करते हुए अपने पर्यावरण को संरक्षित करना चाहिए।हम अपनी नैतिक जिम्मेदारी का वहन करते हुए पर्यावरण संरक्षणमें अहमभूमिका सुनिश्चित करें।

◆◆◆

# डिजिटल इंडिया

**डॉ0 शैलेन्द्र कुमार**
*प्राचार्य, सैयद डिग्री कालेज, सैदपुर (बदायूँ)*

**सारांश**

डिजिटल इंडिया भारत सरकार द्वारा चलाए जाने वाले एक बहुत ही अच्छा कार्यक्रम है। यह सरकार के द्वारा 1 जुलाई 2015 डिजिटल सप्ताह के रूप में (1 जुलाई से 7 जुलाई तक) भारतीय सरकार द्वारा डिजिटल इंडिया प्रोजेक्ट की शुरुआत हुई यह प्रोजेक्ट अनिल अंबानी, अजीम प्रेमजी, साइरस मिस्त्री जैसे बड़े हस्तियों की उपस्थिति में लांच किया गया है जिसमें यह संकल्प लिया गया है कि भारत को आई टी, शिक्षा, कृषि आदि में नए विचारों द्वारा डिजिटल शक्ति देकर भारत को और आगे बढ़ाना है दूर संचार और सूचना तकनीक तकनीकी मंत्रालय द्वारा इसकी योजना और अध्यक्षता की गई है।

डिजिटल इण्डिया वह कार्यक्रम होगा जो देश को डिजिटल रूप से सशक्त सोसाइटी में बदल देगी और भारत को एक नया रूप दे देगी। डिजिटल इंडिया कार्यक्रम से देश की हर जानकारी और रिकॉर्ड को स्वच्छता से इलेक्ट्रॉनिक मोड़ में रखा जा रहा है जो कि आगे काम में सरलता के साथ–साथ तेज गति को लाएगा। देश के लोगों के बेहतर विकास और वृद्धि के लिए रूपांतरित भारत के लिए यह एक बहुत ही प्रभावशाली योजना है। सुशासन और अधिक नौकरियों के लिए भारत को डिजिटल विस्तार देना इसका लक्ष्य है। डिजिटल इंडिया का मुख्य लक्ष्य सभी सरकारी सुविधाओं को इलेक्ट्रॉनिक रूप से उपलब्ध और इंटरनेट से जोड़ने का काम शुरू किया गया है। डिजिटल इंडिया की सफलता के लिए देश की बड़े–बड़े कंपनियों ने काफी खर्च किया है अब तक इसमें तो 4.5 लाख करोड़ खर्च कर चुके हैं इससे 18 लाख लोगों को

नौकरी मिलेगी यह भारत सरकार की बहुत ही अच्छी योजना है इसे भारत की एक अलग पहचान होगी। डिजिटल इंडिया गांव से लेकर शहर तक हर क्षेत्र में जुड़ेगा और हमारे देश का नाम रोशन करेगा .हमारा देश दूसरे देशों से मदद लेता था और अब मदद देने वाला देश बनेगा. इसे भारत की एक अलग ही पहचान होगी।

डिजिटल इंडिया से डेटा का डिजिटलाइजेशन आसानी से होगा जो भविष्य में चीजों को तेज और दक्ष बनाने में मदद करेगा। इसमें कागजी कार्य और समय और मानव की मेहनत की भी बचत होगी। सरकार और निजी क्षेत्र में गठबंधन स्थापित करें कई बड़े गांव में डिजिटल लेस इलाकों में भी बदलाव लाएगा और वह भी डिजिटलाइजेशन होगा। भारत के सभी गांव और शहर और नगर तकनीकी होंगे। राष्ट्रीय अंतर्राष्ट्रीय मुख्य कंपनियां 2019 तक इस प्रोजेक्ट को पूरा करने की योजना है इसमें अंबानी द्वारा 2.5 लाख करोड़ का निवेश किया गया है इस योजना द्वारा इंटरनेट सेवा के साथ दूरदराज के ग्रामीण इलाकों तक पहुंचेगा इंटरनेट से नागरिक को सुधार कर सकता है इस योजना से हर एक को काफी फायदा होगा।

◆◆◆

# डिजीटल शिक्षा एवं विद्यार्थियों में मूल्यों का विकास

**डॉ0 धर्मेन्द्र कुमार[1] एवं डॉ0 शशि सिंह[2]**
*[1]एसोशिएट प्रोफसर, अध्यापक शिक्षा विभाग, वर्धमान कॉलेज, बिजनौर (उ०प्र०)*
*[2]एसोशिएट प्रोफसर, शिक्षा विभाग, गोकुलदास हिन्दू गर्ल्स कॉलेज, मुरादाबाद (उ०प्र०)*

## सारांश

प्रायः यह विश्वास किया जाता है कि शिक्षा केवल विद्यालयों तथा महाविद्यालयों के माध्यम से ही प्रदान की जाती है। परन्तु वास्तविकता यह है कि विद्यालयों एवं महाविद्यालयों के अतिरिक्त अनेक साधनों के माध्यम से भी शिक्षा प्रदान की जाती है। परिवार, समुदाय, धर्म, राज्य, पुस्तकालय, पुस्तक, रेडियो, सिनेमा, टेलीविजन, आडियो कैसेट, वीडियो कैसेट, सी0डी0, टेलीकान्फ्रेसिंग एवम् इन्टरनेट आदि ऐसे साधन हैं जो शिक्षा को प्रत्यक्ष रूप से प्रभावित करते हैं। जहाँ एक ओर शिक्षार्थियों की मांगे भिन्न–भिन्न हैं तथा उनकी कुशलता व उच्च शिक्षा की आवश्यकता अलग–अलग है वहीं औपचारिक शिक्षा प्रणाली की अपनी सीमाएं भी हैं। इन्हीं सीमाओं को लचीलापन प्रदान करने के लिए डिजीटल शिक्षा प्रणाली का अविर्भाव एक पूरक के रूप में हुआ है।'' किसी व्यक्ति/विद्यार्थी के चरित्र व आदर्श का परिचय देने में मूल्य महत्वपूर्ण होते हैं। राष्ट्रीय शिक्षा नीति (1986) के अनुसार ''हमारे बहुवर्गीय समाज में शिक्षा को सर्वव्यापी

और शाश्वत मूल्यों को प्रोत्साहित करना चाहिए तथा भारतीय जन में राष्ट्रीय एकता की भावना बढ़े और संकीर्ण सम्प्रदायवाद, धार्मिक अतिवाद, हिंसा, अन्धविश्वास व भाग्यवाद को समाप्त किया जा सके। हमें ध्यान रखना चाहिए कि मनुष्य अकेला शून्य में निवास करने वाला प्राणी नहीं है। मूल्यपरक शिक्षा उसके विशिष्ट सामाजिक तथा सांस्कृतिक संदर्भ से जुड़ी होनी चाहिए और विश्व जनित व शाश्वत मूल्यों से उनका सम्बन्ध होना चाहिए। वैज्ञानिक दृष्टिकोण, समानता, पर्यावरण संरक्षण, प्रजातंत्र, स्वतन्त्रता, बन्धुत्व, समाजवाद व धर्म निरपेक्षता आदि मूल्यों का महत्व होना चाहिए। प्रारम्भिक स्तर पर मूल्यपरक शिक्षा ठोस गतिविधियों तथा जीवन की परिस्थितियों के अनुरूप होनी चाहिए। माध्यमिक तथा अन्य उच्च स्तरों पर विद्यार्थी स्वयं मूल्यों की तार्किकता को समझकर उन्हें विचार व कार्य रूप में ढाल सकेंगे।'' जीवन में मूल्य परक शिक्षा की प्रासंगिकता पर विचार करते हुए शर्मा (2003) कहते हैं –''आदर्श रूप में संविधान में निर्देशित मूल्य एवं सामाजिक उत्तरदायित्व को मूल्यपरक शिक्षा का केन्द्र होना चाहिए। साथ ही मूल्यपरक शिक्षा के कार्यक्रम की सफलता घर विद्यालय के आदर्श वातावरण तथा शिक्षक के आधार पर होनी चाहिए।'' भारत में वर्तमान मूल्य व्यवस्था के संदर्भ में विधि शास्त्री पालकीवाला कहते हैं –''चार दषकों की स्वतंत्रता के बाद जो तस्वीर आज भारत में उभर कर सामने आती है वह एक ऐसे शक्तिशाली राष्ट्र की तस्वीर है। जो 'नैतिक पतन' की अवस्था में है, हम आत्मा के घोर विघटन और मूल्यों के अनियंत्रित पतन से त्रस्त हैं, यह कई प्रकार से प्रकट है। भ्रष्टाचार, हिंसा और अनुशासनहीनता, लोकतन्त्र के नाम पर भीड़तन्त्र, सम्मान की भावना तथा सार्वजनिक औचित्य का सर्वत्र अभाव है। आज हमारा सामाजिक जीवन अनसुलझे तनावों, संघर्शों एवं हिंसा से खोखला हो गया है। झूठे मूल्यों और झूठे नायकों की पूजा ने आज इतना अधिक महत्व प्राप्त कर लिया है कि नई पीढ़ी के विद्यार्थी विरोधाभासों और मतिभ्रमता के ढेर में खो गये हैं। आज हम भ्रष्ट राजनीतिज्ञों, गैर–जिम्मेदार व्यापारियों, बेईमान भाषणकर्ताओं, मतलबी लोगों, षराबियों और अनैतिक लोगों को पूर्णता के प्रतिरूप मानते हुए पूजे जाते हुए देखने के साक्षी हैं।'' मूल्यपरक शिक्षा के महत्व व आवश्यकता को देखते हुए भारत में आज शिक्षा मंत्रालय, एवं अनेकों सरकारी संगठनों के साथ–साथ स्वतन्त्र रूप से कार्य करने वाले एन0जी0ओ0 आदि मूल्यपरक शिक्षा विद्यार्थियों तक ले जाने का कार्य कर रहे हैं। भारत में मूल्य आधारित शिक्षा पर विचार व्यक्त करते हुए एस0 वी0 चव्हाण समिति (1999)' कहती है ''सत्य, धर्म, शांति और अहिंसा वह मुख्य सार्वभौमिक मूल्य हैं जिनको मूल्य आधारित शिक्षा कार्यक्रम की आधारशिला के रूप में अपनाया जा सकता है। यह पांच सार्वभौमिक मूल्य मानव व्यक्तित्व के पांच पक्षों–बौद्धिक, भौतिक, भावात्मक, मनोवैज्ञानिक व आध्यात्मिक को प्रतिबिम्बित करते हैं। इन मूल्यों को शिक्षा के पांच प्रमुख उद्देश्यों यथा–ज्ञान, कौशल, स्थिति, दृष्टि व बोध के साथ भी सहसम्बन्धित किया जा सकता है।'' समिति के यह विचार शिक्षा में मूल्यों की आवश्यकता व महत्व को स्पष्ट रूप से

स्थापित करते हैं। व्यक्ति के निर्माण में मूल्य आधारित शिक्षा एवं आदर्शों का बड़ा हाथ होता है। चरित्र एवं मूल्यों की परस्पर निर्भरता पर महान शिक्षा शास्त्री क्रो एवं क्रो'' कहते हैं कि ''चरित्र नैतिक या नीति शास्त्रीय मूल्यों से निश्चित रूप में साहचर्य रखता है।''

◆◆◆◆

# नए युग के लिए अभ्यास में नैतिक नेतृत्व और नेतृत्व शैलियाँ

**डॉ० विनय कुमार शर्मा, डॉ० जुबैर अनीस, डॉ अमित अग्रवाल, डॉ० महेंद्र पाल सिंह यादव**
*वाणिज्य संकाय, राजकीय रज़ा स्नातकोत्तर महाविद्यालय रामपुर (उ०प्र०)*

## सारांश

''नैतिक'' शब्द की व्याख्या में ''व्यवहार में सही और गलत के सिद्धांतों से संबंधित'' या (मरियम वेबस्टर, 2009) शामिल हैं। सीखने की संस्थाएं एक सफल राष्ट्र की नींव का प्रतिनिधित्व करती हैं, इस नैतिक नेतृत्व को शिक्षा में दृढ़ता से निहित किया जाना चाहिए। सही और गलत कार्यवाही के बीच अंतर करने की यह क्षमता कानून के पालन से परे अच्छी तरह से फैली हुई है– नैतिक व्यवहार किसी भी स्थिति के लिए सबसे उपयुक्त होता है, क्योंकि नैतिकता के उनके प्रदर्शन का उनके छात्रों के व्यवहार पर सीधा प्रभाव पड़ेगा जो पूरे वयस्क जीवन में कई कठिन निर्णयों का सामना करेंगे। समाज में सही मायने में फर्क करने के लिए आज जिस चीज की जरूरत है, वह है मजबूत नैतिक नेतृत्व। सहयोगियों और अधीनस्थों के साथ निर्देशन और बातचीत में निर्णायक प्रबंधन शैलियों के लिए प्रभावी नेतृत्व। इसके लिए नेतृत्व के विभिन्न रूपों का ज्ञान और अधिक महत्वपूर्ण बात यह जानना आवश्यक है कि किस पद्धति का उपयोग कब किया जाए। शैलियों की एक सारणी मौजूद है, जिसमें सबसे आम है निरंकुश, डेमोक्रेटिक, लाइसेज फायर और करिश्माई। एक नेता अपने आप को या खुद को और अधीनस्थों के संबंध को कैसे देखता है, अक्सर यह निर्धारित करेगा कि वे किस शैली को जानबूझकर या अनजाने में उपयोग करते हैं। समय एवं स्थान के अनुसार नेतृत्व से लिया परिवर्तनशील होती हैं और नैतिक नेतृत्व हर स्थान पर काम आता है। प्रस्तुत शोध पत्र में नए युग के लिए नैतिक नेतृत्व की आवश्यकता और नेतृत्व शैलियों के द्वारा नैतिकता के विकास एवं विभिन्न आयामों को दर्शाया गया है।

**मुख्य बिन्दुः** आचार विचार, मूल्यों, मजबूत नैतिक नेतृत्व, नेतृत्व के विभिन्न रूपों का ज्ञान।

◆◆◆

# ग्रामीण क्षेत्रों में उच्च शिक्षा की स्थिति और सामाजिक विकास में मीडिया की भूमिका (लखनऊ जिले के विशेष संदर्भ में)

**बृजेन्द्र कुमार वर्मा[1] एवं डॉ0 महेन्द्र कुमार पाढ़ी[2]**
*1शोधार्थी, 2सीनियर असिस्टेंट प्रोफेसर, जनसंचार एवं पत्रकारिता विभाग, बाबासाहेब भीमराव अंबेडकर विश्वविद्यालय, लखनऊ (उ०प्र०)*

## सारांश

भारत में ग्रामीण क्षेत्र रहवासियों के परिप्रेक्ष्य में सबसे बड़ा क्षेत्र है। भारत की बड़ी आबादी ग्रामीण क्षेत्रों में निवास करने के बावजूद संसाधनों की प्रचूर मात्रा शहरों में ही दिखाई देती है। ग्रामीण क्षेत्र का अपना परिचय और अस्तित्व है। ऐसे में यहां उपलब्ध साधनों में ही जीवन यापन किया जा रहा है। भारत के स्वतंत्रता प्राप्ति से आज तक लगातार ग्रामीण विकास के लिए प्रयास जारी है। बहुत कुछ लक्ष्य को पा लिया गया है फिर भी अभी और लक्ष्य हैं, जिन्हें पाना बाकी है। अभी भी विश्वविद्यालयों की उलब्धता शहरों में अधिक है। ग्रामीण विकास के लिए शिक्षा के क्षेत्र में भी प्रयास हो रहा है, लेकिन अपेक्षित सफलता नहीं मिल सकी है। शोधार्थी ने अपने शोध पत्र में यह अध्ययन करने का प्रयास किया कि ग्रामीण क्षेत्रों में उच्च शिक्षा की स्थिति क्या है, इसके अलावा सामाजिक विकास में उच्च शिक्षा किस प्रकार से योगदान दे पा रहा है। अध्ययन के लिए शोधार्थी ने उत्तर प्रदेश की राजधानी लखनऊ का चयन किया। यहां से शोधार्थी ने ग्रामीण क्षेत्रों में संचालित उच्चतर शिक्षा संस्थानों का अवलोकन किया और छात्र–छात्राओं से आंकड़ों का संकलन किया। अध्ययन में शोधार्थी ने पाया कि ग्रामीण क्षेत्रों में संचालित शैक्षिक संस्थानों की स्थिति उतनी अच्छी नहीं है, जितनी शहरों में संचालित संस्थानों में की है। शहरों में छात्रों की नामांकन औसत अधिक है। ग्रामीण क्षेत्रों में पढ़ रहे बच्चों में ज्ञान को लेकर अधिक उत्सुकता है।

◆◆◆◆

# मानवीय मूल्यों के संवहन का सशक्त माध्यम : संगीत कला

**डॉ0 दीपक त्रिपाठी**
*असिस्टेण्ट प्रोफसर, संगीत विभाग,, साहू जैन कॉलेज, नजीबाबाद (उ०प्र०)*

## सारांश

आज मानव समाज की सबसे बडी समस्या है असुरक्षित भविष्य, तनावपूर्ण दिनचर्या, मानसिक अवसाद आदि, जिस कारण मनुष्य की दशा एवं दिशा बिगड़ी हुई है। मानव की

मानवता इस जगत में सभ्यता की परिभाषा है, और मानवता मानवीय मूल्यों के प्रयोग से प्रतिस्थापित होती है। मानवीय मूल्यो के निर्धारण के लिए समाजशास्त्री समय–समय पर विभिन्न विधियों को अपनाते है। जिसमें एक पक्ष संगीत भी है, संगीत मानव मूल्य को निर्धारित करने का सबसे प्रभावी तरीका है। मनुष्य अपनी भावनाओं की अभिव्यक्ति तभी कर सकता है जब वह मानसिक रूप से स्वस्थ हो, और मानव मस्तिष्क को स्वस्थ्ता प्रदान करता है संगीत, क्योकि संगीत एक नाद विज्ञान है। जब नाद की गूँज हमारे आन्तरिक शरीर में फैलती है तो वह निष्क्रिय पड़े सभी शारीरिक अंगों को कंपित करती है जिससे सभी क्षुब्धित नसे सक्रिय हो जाती है उनमें रक्त का संचरण होने लगता है। यही कारण है कि मनुष्य संगीत की साधना से अपनी आन्तरिक शक्तियों को जाग्रत कर परमानंद की प्राप्ति कर लेता है। भगवान राम भी जब गुरूकुल में शिक्षा ग्रहण करते थे तब ऋषि वशिष्ठ की आज्ञा से माता अरूंधती सायंकाल में विद्यार्थियो को संगीत की शिक्षा देती थी।

◆◆◆◆

# भारतीय संस्कृति एवं मानवीय मूल्य

**दीपक कुमार शर्मा[1] एवं डॉ0 आशुतोष कुमार शुक्ल[2]**
*[1]सहा0 आचार्य, राज. रज़ा पी.जी. कॉलेज, रामपुर, [2]प्राचार्य, बाँके बिहारी इंस्ट्टीयूट ऑफ एजुकेशन, सरधना, मेरठ (उ०प्र०)*

## सारांश

वर्तमान समय मे षिक्षा दिन प्रतिदिन भौतिकवादी होती जा रही है। प्राचीन मूल्य एवं संस्ति समाप्त होते जा रहे है। भारतीय परम्परा के महान मूल्यों नैतिक, धार्मिक, आध्यात्मिक मूल्यों को भुलाया जा रहा है। हमें यह देखने को मिलता है। कि व्यक्ति के सामाजिक, आर्थिक, सांस्तिक, नैतिक व धार्मिक क्षेत्रो में मूल्यो में गिरावट के कारण उसके चारित्रिक पतन का संकट भी सामने आता ळें भारत अपनी कला, संस्कृति तथा दर्शन आदि की गौरवशाली परम्पराओं पर सदैव गर्व करता रहा है, परन्तु आज अनास्था तथा पारस्परिक अविश्वास के वातावरण में हमारी प्राचीन परम्परा एवं मूल्य धूमिल से हो गये हैं। आधुनिकता की भ्रामक अवधारणा अस्तित्ववादी जीवन, अनात्मपरक–नास्तिकता, पाश्चात्य सभ्यता का अन्धानुकरण तथा कुतर्क प्रधान चिन्तन आदि के कारण अतीत में अविश्वास एवं 'स्व' में अनास्था आदि कारणों से हमारे पुराने मूल्य प्रदूषित हो गये हैं। मूल्य सहित जीवन ही अर्थपूर्ण है, मूल रहित जीवन कुछ भी नही। जो मनुश्य मूल्यों को महत्व देता है। ऐसा व्यक्ति समाज मे महत्वपूर्ण स्थान रखता है। ऐसा व्यक्ति समय को महत्व देता है। अतः प्रत्येक जिस चीज का महत्व होता है, उसे हम मूल्य कहते है।

◆◆◆◆

# शिक्षा तथा मानवीय मूल्य

**हबीब इकराम**
*एसोसिऐट प्रोफेसर (से0नि0), डी0ए0वी0 ट्रेनिंग कालेज, कानपुर (उ0प्र0)*

## सारांश

शब्द शिक्षा बड़ा ही वृहद एवं विस्तृत शब्द है। शिक्षा के अनेक रूप हैं, कार्य हैं, अर्थ हैं, परिभाषा हैं और हैं, अनेक स्तर।वास्तव में देखा जाये तो शिक्षा मनुष्य को मानव बनाती है, आदमी को इंसान के रूप में परिवर्तित करती है। हम चाहे जिस प्रकार अथवा जिस स्तर की शिक्षा ग्रहण करें हमारा उद्देश्य/लक्ष्य एवं परिणाम सुन्दरता से मण्डित होना चाहिये और यह सब कुछ मिलेगा भारत के जीवन को श्रेष्ठ बनाने वाले मानवीय मूल्यों को अपनाने से।

मानवीय मूल्य जीवन के आचरण एवं व्यवहारों को बनाने वाले सूत्र एवं यंत्र माने गये है। भारतीय शिक्षाविदों एवं दार्शनिकों ने मूल रूप से मूल्यों को दो रूप में पहचाना है। प्रथम–भौतिक मूल्य तथा द्वितीय–आध्यात्मिक मूल्य। भारतीय मूल्यों के पुष्पित एवं पल्लिवत होने का श्रेय केवल वेद, उपनिषद, स्मृतियों आदि को नहीं जाता है वरन् उन मनीषियों, ऋषियों–मुनियों, साधू–संतो, पीरो–फकीरों एवं सूफियों को जाता है जिन्होने धर्म एवं संस्कृति के आधार पर समस्त को एक सूत्र में पिरोने का सफलतम प्रयास किया है। वृहदारण्यक उपनिषद कथन है–'अस्तो मा सद् गमय (हे प्रभु मुझे असत्य से सत्य की ओर ले चलो)। ज्ञान को सत्य की सिद्धि मानकर यहां कल्याण की कामना की जाती है। सत्य पर चलने से मनुष्य सदाचार के पथ पर चलने वाला बन जाता है। इसी श्रृँखला में 'सत्यमेव जयते' भी एक जगमगाता मील का पत्थर है जिसके विषय में जितना कहा जाये वह कम है।

अगला रूप आता है 'सत्यम शिवम सुन्दरम' का अर्थात् जहाँ सत्य है वहाँ शिव है और जहाँ शिव है वहाँ सुन्दरता है। सत्य कार्य करने से कल्याण की उत्पत्ति होती है इसके विपरीत जहां झूठ होगा वहां अकल्याणकारी बाते होंगी और परिणाम अमंगलकारी होंगे। अगला भारतीय मूल्य है–'वसुधैव कुटुम्बकम'। सारी वसुधा के, सारे संसार के समस्त लोग, व्यक्ति अथवा इंसान एक समान हैं।

इस्लाम की पवित्र धर्म पुस्तक कुरान में स्थान–स्थान पर प्रेम और सत्य की सीख देते हुये सारे विश्व की भलाई अर्थात वसुधैव कुटुम्ब की कामना की गयी है। एक स्थान पर परमपरमेष्वर अल्लाह ने अपने नबी हजरत मोहम्मद साहब जिनका चारों वेदों (ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद, अथर्ववेद) में इकत्तीस वर्णन मिलता है और सभी धार्मिक पुस्तकों यथा–पुराणों, बौद्ध ग्रन्थों, तौरात एवं इंजील आदि में जिनका वर्णन अलग–अलग नामों से आया है।

# Let Us Inculcate Values in Next Generation Learners

**Dr. Jyoti Pandey**
*Faculty of Education and Allied Sciences, M.J.P. Rohilkhand University Campus, Bareilly*

## ABSTRACT

Values are conscious and unconscious preferences, beliefs and attitudes, which are accepted by the majority of members of society and are socially regulated. Value is something which an individual holds to be important and preferable. Values are standards to evaluate and judge. Values have strong motivational components which lead to desirable behaviour. Values are regarded desirable, important and held in high esteem by a particular society in which a person lives. Values reflect one's personal attitude and judgments, decisions and choices, behaviour and relationships, dreams and vision. They guide us to do right thing. Values are a handful of constructs that bridges the social sciences. They have been defined narrowly in terms of object attractiveness broadly as abstract principles guiding social life, & between these extremes, as stable preferences that individual holds in relation to specific conditions of living. Materialistic life, Media exposures, lack of qualitative programmes, throat cut competition, low socio-economic status, poverty, struggle in life for existence, unemployment, less time allotted with kids & lack of role model are found causes for value deterorientation. along with it, factors like corruption, unfair means practised by politicians, officials, saints and other responsible personalities of society, too much freedom/pampering of kids by parents and examination oriented teaching have exercised negative impact on concepts of values. Now a days, children are found in a paradoxical situation, as they have value conflicts. Theoretically, adolescent have obtained the right to enjoy their own world and approved and protected by adults but in practice they cannot adopt themselves smoothly to the world mainly ruled by the logic of grown-ups. They have developed different perceptions about parents' behaviour, social aspects, knowledge of true-aspects, knowing about what is good and what is bad due to some negative personal experiences of life and behavioral approach of teacher, peers, parents and society. With the help of various teaching subjects especially literature, language, religion, sociology, science, arts and philosophy, positive environment of school, psychological behavior of teacher, appropriate curriculum and motivational social interaction, value inculcation can be possible easily and in proper manner. It is needed to develop religious, democratic, aesthetic, economic, theoretical, health and power values and social values. More preference on helpfulness, self-control, honesty, logical thinking, ambitiousness, self control and responsibility values will be beneficial for young generation students as well as for family wellbeing, freedom, self-respect, self development, personality development and behaviour management. The present paper will throw light on the present scenario of values deterorientation and how teachers can help in value development.

**Keyword:** Value Education, adolescent Education

# Role of Teachers in Imparting Value Education

**Mrs. Rajkumari Gola[1]And Prof. M. P. Pandey[2]**
*[1]Research Scholar, [2]Professor, Department of Education, IFTM University, Moradabad (U.P.)*

**ABSTRACT**

A teacher has a higher responsibility as compared to other professionals as students look upon the teacher as an embodiment of perfection. Education has become a business today. This has changed the outlook of the students as well as the parents and it has further resulted in deterioration of respect for teachers and all those who are a part and parcel of education system. Dalai Lama explains that "when educating the minds of our youth, we must not forget to educate their hearts." The present paper is an attempt to state the role of teachers in value education in the present education system so that the future generations may nourish high ideals and values to contribute in the development of the society and the role of a teacher in imparting values.

**Key words:** Value education, Gurukula system, Curriculum**.**

◆◆◆◆

# Value Education In Indian Mythology

**Dr. Anil Kumar Yadav**
*Head, B. Ed. Deptt. R.S.M. (P.G.) College Dhampr, Bijnor (U.P.)*
*anilyadav160@gmail.com*

**ABSTRACT**

Education in general and value education in particular occupies a prestigious place in our society. The main constituents of values for building a good life, man and character on the positive side are truthfulness, selflessness, sincerity, honesty, purity, consideration for fellow beings and on the negative side, the elements to be detested are falsehood, anger, jealousy, hatred, vanity, covetousness and deceitfulness.

*The Upanishads, the Gita, the*, Epics have declared the positive values to be the sin-qua-non of all social relations. Values reflect different philosophical positions. The concept of values is closely associated with the concept of the complete man. Here, we mention some which are laid down in our Holy Books:

**(a)** "Truth alone wins and not untruth" ***(Mundaka Upanishad)***

(b) "Speak the truth, practice righteousness. There should be no inadvertence. about truth, there should be no deviation from righteous activity ……" **(*Taittiriya Upanishad)***

**(c)** " absence of malice, straight-forwardness, purity, contentment, sweetness of speech, self-control, truthfulness and steadiness-these the wicked never possess". ***(Mahhabharata)***

**(d)** " One should be faithful to one's duty at all times regardless of the situation. Faithfulness to duty brings the greatest of rewards. Truth cannot dwell where passion lives. a word spoken in wrath is the sharpest sword; covetousness is the deadliest poison, passion the fiercest fire; ignorance, the darkest night. " (Buddha)

**(e)** "Righteousness is the root of happiness". **(Chanakya**)

**(f)** "To become great one must be humble. The tree laden with fruit always bends low, so if you wish to be great, be lowly." **(Ramkrishna)**

**(g)** "The national ideals of India are renunciation and service." (Swami **Vivekanand)**

So the values are described as the socially-defined desires and goals that are internalized through the process of conditioning, learning and socialization.

◆◆◆◆

# A Study of Efforts Made by NCTE for the Development of Human Values in India

**Dr. Sangeeta Srivastava**
*Associate Professor, Teacher Education Department, D.A.V.(PG) College, Muzaffarnagar (U.P.)*

## ABSTRACT

The development of knowledge and skills is considered as the core objective of education system, but in fact the most important objective of education is the development of values and awareness for better use of knowledge and skills. The post-Independence period in history of Indian Education is the most important and fully responsible for present scenario of our society. Right from the beginning till now various efforts have been made by the Indian government not only to enhance the development of nation but also to inculcate humanvalues among citizens for sustainable development of our country. It is evident that during last seventy years the development in all spheres of life in our country has been diluted due to deterioration of values among citizens. The researcher is inspired for this study due to a rapid increase of deterioration of values in India. It may be the result of various other changes invading the social scenario of our country but the root of all cause is education especially teacher education which seems to be ineffectivein training such teachers who would have been able to combat impact of other causes and save our society from their adverse effects. The proposed study is a descriptive research in nature so a secondary data based descriptive analytical research methodology is being applied by the researcher.

The researcher has focussed only on prime national organisations which are exactly leading our teacher education to analyse the efforts made by this national resource of value education i.e. National Council for Teacher Education (NCTE). The study concludes that attention should be paid for making training programme more effective with reference to value orientation of our trained teachers, then only India will get its glorious past live through our schools and suggest that any reform in school education regarding the methodology of value education should be made after training pre and in service teachers in this regard.Values development is absolutely practical aspect of life so efforts should be made to enhance practical aspects of school life rather than paying attention towards theoretical.

**Key Words:** Indian Education System, Human Value Development, Value Inculcation, Value Deterioration, NCTE.

◆◆◆◆

# Education and Human Values

**Dr. Apara Goyal**
*HOD B.Ed. (Self-finance), M.B.G.P.G. College, Haldwani, Nainiital (U.K.)*

## ABSTRACT

Human life is the most evolved creation in the universe. The excellence or superiority of human life as compared to other living beings can be easily identified. The dignity and value of the individual person is threatened by the force and insensate behavior of the faceless. There is such a widespread spectrum of sensuality and deceit, dissension and conflict.

Values refer to objects that we people cherish and desire and consider them desirable and worthy of acquisition. These may include material objects like food, clothing and shelter etc.and abstract qualities and ideas like truth, beauty, goodness, happiness, peace, punctuality, justice.

Values, in the words of Shaver are – "Standards and principles for judge things (People,object, ideas, actions and situations) to be good worthwhile despicable of course somewhere in between these extremes.

Classification of values is also made on the basis of theory of reality. Materialistic constitutes only of matter. Matter there are only two kinds of values "K aM a" and " aRTH a" in English terminology intrinsic and instrumental values respectively. There is an ontological explanation of man'sbeing. Man is constituted of five koshas. They are anamaya, Ramanayake's, Manonmayakosa, Vijnanamayakosa and anandamayakosa" respectively to the physical, physiological, psychological, intellectual, and spiritual aspects.

The lower values being aretha and Kama and the Higher ones Dharma and Moksha.

aretha and Dharma are recognized as instrumental values.

The Mordent classification of Values are-Organic, Hedonic, Recreation, aesthetic, Economic, Personal and Social. Human beings of the present era are enthralled with the advancement of science as well as encountering the several complexities which are the ultimate by-products of any scientific progression. The value system plays an important role in decision making process. In fact, every human action is the reflection of personal social values. The present situation of India calls for a system of Education which apart from strengthening national unity must strength social solidarity and constructive value education.

◆◆◆◆

## Education in Human Values

**Dr. Monika Khanna**
*Assistant Professor, Department: - Economics, - Govt Raza PG College, Rampur (U.P.)*

**ABSTRACT**

Quest for modernization in the absence of moral, spiritual and social values in education is creating many serious problems and ethical as well as psychological conflicts in the modern youth. Simple acquisition of Techno-Informative knowledge and skills on the part of the students in not sufficient for our national development.

We may become masters of our environment scientifically and technologically, but if we are slaves of our prejudices and passions, we are not batter than brutes and animals. Education as a process of development must initiate a life long process of development exploration. Education in human values will make the students happy and contented and enable them to make others happy too. When one feel good about one self, he begins to feel good about others and the world. Teachers have a special role to play in the process of education in human values. They have to inspire their students with love of virtue and become ideals to be followed.

◆◆◆◆

## Value EducationAnd Teacher

**Dr. Neeta Gupta[2]and Kirti Singh[2]**
*[1]Associate Professor & Head, [2]Research Scholar IFTM University, Moradabad (U.P.)*

**ABSTRACT**

Teachers must be able to challenge their students' beliefs and points of view by offering different perspectives and allowing students to consider the option and make informed decision (Sims, 2004). For teachers, this demands advanced critical thinking skills and

strategies that allow them to move students forward in their thinking with compassion, patience and open-mindedness. Teachers must have an awareness of their own moral and value based positions and spends time for challenging, changing and solidifying their own beliefs. Value education and quality teaching create a double helix relationship, explained as the two factors coalescing to produce desired learning outcomes. Teaching that focuses on developing values and is undertaken with respect, warmth and acceptance is claimed to result in positive educational outcomes for students. It is accepted that teachers who have higher levels of moral development and awareness generate better academic outcomes for students. For teachers to demonstrate the values of respect, inclusion, sensitivity to difference, open mindedness and cooperation they need to have reflected on and realized the value of upholding these values. It is essential that teachers should be aware of their open moral and value bases and be willing to embrace moral issues as they arise in the classroom.

◆◆◆◆

## Education and Human Value

**Rachna Tripathi**
*M.Ed. Student, Department of Education, J.V. Jain College, Saharanpur (U.P.)*

**ABSTRACT**

Human Values are things that have an intrinsic worth in usefulness or importance to the possessor, or principles, standards, or qualities considered worthwhile or desirable. Human Values constitute an important aspect of self-concept and serve as guiding principles for an individual.

Human values are the virtues that guide us to take into account the human element when one interacts with other human beings. These are the many positive dispositions that create bonds of humanity between people and thus have value for all of us as human beings. They are our strong positive feelings for the human essence of the other. It's both what we expect others to do to us and what we aim to give to other human beings. These human values have the effect of bonding, comforting, reassuring and procuring serenity.

Human values are the foundation for any viable life with in society, they build space for a drive, a movement towards one another, which leads to peace. Human values thus defined are universal, they are shared by all human beings, whatever their religion, their nationality, their culture, their personal history. By nature, they induce consideration for others.

**Key words :** Education, Human Value.

◆◆◆◆

# Education and Human Values

**Madhu Bala**
*Asstt. Professor, J.V. Jain College, Saharanpur (U.P.)*

**ABSTRACT**

Human values make life worthwhile,noble and excellent. Values are those qualities that lies within the human personality,waiting to be drawn out and translated into action. Drawing out these human values develops good character.

a good and comprehensive education system is expected to create the necessary human capital and knowledge worker who will bring the country to greater height. In this regard, a holistic education is needed which can equip students with both the hard and soft skills required as well as human values. Many behavioural problems in society are vividly mirrored in schools, through bullying, drug abuse, theft and vandalism and scars of criminal act with so many external influences,demands and constrainst, it can be easy to lose hold of the values that make up a civilized society.

Thus,the education and human values seeks to help teachers, parents and children to refocus on the basic positive values that underline all aspects of a moral society in school, children are affiliates of a small society that exerts a great influence on their moral development. Teachers serve as role model to students in school, peers at school diffuse confidence about cheating, lying, stealing and consideration for others. Though there are rules and regulations, the educational institutions pervade the values education to the children in an informal way. They play a key role in developing ethical behaviour in children.

Human values are bridge between individual and social individual holds values but others influence the formation of those values. Values are those standards or code for conduct conditioned by ones cultural doctrines and guided by conscience, according to which human being is supposed to conduct himself and shape his life patterns by interrogating his beliefs,ideas and aims of life value education is always essential to shape one's life and to give one an opportunity of performing on the global stage.

◆◆◆◆

# Vedic Education and Value now in Modern Era

**Dr. Sushma Srivastava[1]and Kiran Rai[2]**
*[1]H.O.D., (Education)Assi. Prof, G.D. Kalyan P.G. College Kurud (Bhilai)*
*[2]Rungta College of ScienceAnd Technology, Bhilai Nagar, Durg*

**ABSTRACT**

The development of education is a continues process, which gathers its past history into a living stream, flowing through the present into the future. It is essential to see the

historical background of education development to understand the present and visualize the future. It is essential to look briefly at educational developments from the ancient i.e. 2nd millennium to BC to the modern period.

In Vedic education values had a very prominent place in the society. It was considered as pious and important for society, in the eyes of aryans, education was the only means to acquire prosperity in the field of physical mental spiritual and social development. Education opens the hidden qualities and helps to attain salvation. It can be regard as- third eye of human beings.

The present day education system is in the process of migrating to experimental learning methods. This may seem to a breakthrough in the field of modern education but if we carefully observe the ancient vedic education model in corporate these principles. In the words of john Dewey- "the aim of education should be to teach us rather how to think, than what to think and improve our minds so as to enable us to think for ourselves, than to load the memory with the thoughts of other men".

On the basis of above study it is right to say that the education system in vedic period was the means to acquire prosperity in the field of physical, mental spiritual and social development. On the other hand in modern era education system more emphasize on sophisticated courses and degrees but failing to develop a resourcing character.

◆◆◆◆

## Impact of Human Values in Education for TeachingApproach

**Qaisur Rahman[1]And Baby Tabassum[2]**
*[1]Department of Zoology, VinobaBhave University, Hazaribag-825301 Jharkhand*
*[2]Department of Zoology, Govt. Raza, Post Graduate College, Rampur- 244901 (U.P.)*

**ABSTRACT**

The present Paper is an attempt to explore the importance of human values in the Educational institutions. Human society may not significantly sustain without human values. Hence, it is necessary to talk on the subject and bringabout awareness of human values into the present educational institutions. There is no denying the fact that the present society is facing a lot of crises. Human values crises are a known fact of the modern society.Human Values are things that have an intrinsic worth in usefulness considered worthwhile or desirable. Human Values constitute an important aspect of self-concept and serve as guiding principles for an individual.Human values are the virtues that guide us to take into account thehuman element when one interacts with other human beings. They are our strong positive feelings for the human essence of the other. It's both what we expect others to do to us and what we aim to give to other human beings. These human values have the effect of bonding, comforting, reassuring and procuring serenity. Human values are the foundation for any

viable life within society; they build space for a drive, a movement towards one another, which leads to peace. Human values thus defined are universal, theyare shared by all human beings, whatever their religion, theirnationality, their culture, their personal history. By nature, theyinduce consideration for others. Human values play a very leading role in present educational institutions. Human values take precedence over social values. Human values are now withering very fast for which we humans aremost responsible. Human value is generally known to be a moral standard of human behaviour. Therefore, human values should be preserved and protected. Today, many researches and publications should be done on several aspects of the society which help to perpetuate the human values ofthe community in the modern era. Human values may be treated as keys to the solution of the global problems. already some universities prescribed human values and moral values syllabus for improve the humanity of the students. It's a great achievement to present and next society and educational institutions. Social standards and customs defined by a family provide the emotional and physical basis for a child. Values developed by a family are the foundation for how children learn, grow and function in the world. These beliefs, transmits the way of life a child lives and changes into an individual in a society. These values and morals guide the individual every time in his actions.

**Keywords:** Education, Human values,Teaching approach,

◆◆◆◆

# Education and Human Values

**Dr. Divya Singh**
*Assistant Teacher, G.I.C. Saharanpur (U.P.)*

## ABSTRACT

Education undoubtedly is one of the most powerful agencies in moulding the character and in determining the future of the individuals and nations. The whole realm of education is centred on the development of the moral aspect of man. Values are standards, rules, criteria, attitudes, desirable ideas/beliefs and important things which play a crucial role in shaping the life of individuals. Human values are not static; they are dynamic, and they do change according to the changes in the society for the welfare of the humanity. Education and values are inseparable. Value oriented education has come into force to promote a sense of morality, aesthetics, and intellectual knowledge among the students. It is the role of the teacher to foster human values in his students through his teaching, actions, and character. Every teacher is first a moral education teacher and then only a teacher in a subject of his specialization. The chills is essentially a behaving organism, and that the teacher ultimate concern is to develop him in such a manner that he can distinguish right from wrong, good from evil, beauty from ugliness, truth from falsehood, and godliness from ungodliness.

◆◆◆◆

# Education and Human Values

**Dr. Simmi Agarwal**
*Assistant Teacher, P.S. K.N.N.C. Dhampur, District Bijnor (U.P.)*

**ABSTRACT**

Humans have the unique ability to define their identity, choose their values and establish their beliefs. all three of these directly influence a person`s behavior. People have gone to great lengths to demonstrate the validity of their beliefs, including war and sacrificing their own life! Conversely, people are not motivated to support or validate the beliefs of another, when those beliefs are contrary to their own. People will act congruent with their personal values or what they deem to be important. Personal values are defined as: —Emotional beliefs in principles regarded as particularly favorable or important for the individual. Our values associate emotions to our experiences and guide our choices, decisions and actions.

Service- learning programs involve students in organized community service that addresses local needs, while developing their academic skills, sense of civic responsibility, and commitment to the community. Under which students learn and develop through active participation in thoughtfully organized service experiences that meet actual community needs and that are coordinated in collaboration with school and community; That are integrated into the students' academic curriculum or provide structured time for a student to think, talk, or write about what the student did and saw during the actual service activity; That provides students with opportunities to use newly-acquired skills and knowledge in real-life situations in their own communities; and That enhance what is taught by extending student learning beyond the classroom and into the community and helps to foster the development of a sense of caring for others.

Aappreciate colleagues and subordinates on their positive actions. Criticize constructively and encourage them. They are bound to improve their performance, by learning properly and by putting more efforts.

◆◆◆◆

# Role of Educational Institutions in Inculcating Human Values

**Dr. Kanank Sharma**
*Assistant Professor, Department of Educational Studies, Mahatma Gandhi Central University, Bihar*

**ABSTRACT**

Value education is always essential to shape one's life and to give one an opportunity of performing on the global stage. The need for value education among the parents, children,

teachers etc, is constantly increasing as we continue to witness increasing violent activities, behavioural disorders and lack of unity in the society etc. Value education enables us to understand our needs and visualize our goals correctly and also indicate the direction for their fulfillment. It also helps remove our confusions and contradictions and enables us to rightly utilize the technological innovations.

There are different views that call urgent need to inculcate human values in Indian society. Numerous traditional values which have been inherited from past remain valid and true to be adapted by future citizens but many fresh values to match confronting problems in emerging Indian culture. Presently, negative human values are in upper side. It may be because of neglect of value education which created vagueness and indiscipline in the mind of people (Satya Pal Ruhela, 1996).

This paper mainly focuses on what is the need of human values in current scenario?, how we can successfully inculcate values among our students? and what is the Role of Educational Institutions in inculcating human values?

◆◆◆◆

## Education and Human Value

**Dr. Bhupender Singh**
*Associate Professor, Department of Commerce, Bareilly College Bareilly (U.P.)*

**ABSTRACT**

The growing concern over the erosion of value in public life has brought to focus the need to critically examine the various aspects of value education at the school stage. value oriented education is essential balanced personality and harmonious society. It helps a person in unfolding his personality by bringing it forth and revealing the potentials and qualities in him. Children's minds are innocent and pure. Each child is a white marble for the teacher and the parents to mould into an image of God.

The role of a teacher is very vital for he/she has the greatest share in moulding the future of a country. Off all profession, he is the noblest, the most different and the most important.

a school should not be considered to be just a common place arrangement designed for teaching and learning. it is a place where consciousness is aroused and illumined, purified and strengthened, the place where the seeds of discipline, duty and devotion are planted and fostered into fruition.

The substance of education should lead to the creation of a complete man in the sense of having a person capable of positive interaction with the environment.

Each child should have the opportunity, under competent guidance to develop fully and richly as an individual and as a cooperating member of an inter-dependent society, full of manifold social religious, economic, community and governmental agencies.

If children of today are fortunate enough to have ideal teacher along with ideal parents, their progress towards development is smoothened.

◆◆◆◆

# Role of Education in Human Values

**Mithlesh Gangwar[1] and Himanshu Gangwar[2]**
*[1]Assit. Prof. Dept. of Education, Jyoti College of Management ScienceAnd Technology, Bareilly (U.P.)*
*[2]Reserch Scholar, Jiwaji University, Gwalior (M.P.)*

**ABSTRACT**

The very purpose and main function of education is the development of an all round and a balanced personality of the students and also to develop all dimensions of the human intellect. So that our children can help to make our nation more democratic, cohesive, socially responsible, culturally rich and intellectually competitive nation. Consequently other aspect of their personality like physical, emotional, social and spiritual are not properly developed in providing for the growth of attitude, habits, values, skills, and interests among the pupils. However, the main emphasis in education today lies in acquiring large amounts of information to pass the examination and securing qualifications for future employment the paper highlights the implementation of a programme called the education in human values.

India is known for its rich cultural and spiritual heritage, and the need for a value – system through education has been felt and recognized through centuries .Value system play an important role in any decision making process. In fact, every human action is the reflection of personal and social values. This programme seeks to improve the teaching – learning environment that will foster character building through the incorporation of basic universal value, thus, contributing towards academic excellence. The stress of an ever – increasing workload, and a working environment dominated by social problems will continue to make a teacher's profession more difficult and less satisfying .The many behavioral problems in society are vividly mirrored in schools ,through bullying, drug abuse, theft and vandalism and scores of criminal acts.

This is done through what is called a "Triple partnership for education" between teachers, parents and students, meaning that all three groups play key roles in reversing current trends and in reaching towards the goal of truly successful value based education.

◆◆◆◆

# Education and Human Values

**Dr. Manju Johari**
*B.Ed. Dept., DAK College Moradabad (U.P.)*

**ABSTRACT**

Human value education should concentrate on producing socially aware, culturally sensitive and intellectually cosmopolitan students. Human values such as trust, respect, honesty, dignity, and courtesy are the building blocks of any free and advanced society.

Many countries around the world have realised the importance of Values Education. For instance, Thailand has incorporated Values in the national curriculum. australia has published a National Framework for Values Education in australian Schools (2005) and New Zealand has been promoting values education in the curriculum. South africa has embarked on an initiative on Values, Education and Democracy. all these initiatives have developed sets of values for education derived out of their specific socio-cultural situations.

although various approaches have been identified in the attempt to 'teach values', it is important to understand the underlying principle by which it takes place and how to channel to achieve its purpose. The approaches could be likened to various electrical appliances. For instance, an iron, a kettle, light bulb, toaster, etc., all of these have different uses (purposes), however, the underlying principle for their functioning is dependent on the flow of electricity through them. Similarly, Human values are like the electricity or potential energy; invisible, but inherent in every situation.

◆◆◆◆

# EducationAnd Ethics : A Great Need of Ethics in Education

**Shikha Mishra**
*Assistant Professor (Dept. of Education), Jyoti College of management scienceAnd technology, Bareilly (U.P.)*

**ABSTRACT**

Education is the process of facilitating learning or the acquisition of knowledge, skills, values, beliefs and habits. Education or learning new things and skills is always a two way process. On the one end there is a learner and on the other end the teacher/ facilitator/ skilled person or any other source of knowledge. But if we talk about ethics in education it is very important for both sides of education process to be honest and accountable for their duties. Before we start talking about ethics, we should know that there is a difference between ethics and values. By the term 'ethics' we mean a sense of rightness or wrongness of actions. On the other hand values are emotional state of mind, principles and ideals of an individual, helps him in making judgment of what is more important for him. So the ethics are

consistent whereas values are different for different persons. Values tell us what is more important and ethics helps us to decide what is morally correct.

When we talk about our education system and ethics, at the present scenario neither teacher nor students are that much honest and accountable for their work especially in higher education the situation is worst. Nowadays most of the students are not showing their interest in research, innovations and in earning behavioral knowledge, but interested in collecting degrees only. Their main aim is to get a job only by getting a degree. That is why despite being the largest youth power in the world; our country is not achieving that progress. However many more aspects such as institutions, management, government policies, curriculum, learning environment etc. are also liable for this. So there is a great need to increase ethics in the field of education. In present scenario every aspect of education system must follow some universal ethics including - being honest, trustworthy, loyal, hardworking, accountable and doing well for self and society to upgrade our education system and to progress of our country.

◆◆◆◆

## Status of Values and Ethics: Need to be Positive

**Dr. Pratibha Rastogi**
*Assit. Prof. Dept. of Education, Jyoti College of Management ScienceAnd Technology Bareilly (U.P.)*

**ABSTRACT**

as it known to all that India is a great country having a glorious heritage, a symbolic culture and a very rich history that is the icon of high values and moral ethics. as we know values and ethics play a very important role in every aspect of life. The ethics help us to determine what is right and values help us to determine what is important and ideal.

In the present world everyone is busy in his own life and have no time to feel relax, life is full of unrest, dissatisfaction and worries on the other hand each one hopes to live a happy and healthy life that is full of love and harmony. Such a condition of reality and hope a question arise what is the place of values and ethics in this life.

Most of the time we encounter with various conditions which test our patience and we have to take some tough decisions. at that moment we need our values and ethics; they guide us and console us, increase our confidence, give us satisfaction and finally build our character and gives us a recognition.

Though it is the most burning issue in every gathering that values ethics are decrementing day by day. The new generation is not ready to follow them. But as my studies and experiences I want to say that though the level of values is declined even then

today's generation is too good and have various positive values in their life which not only comfort them but also the other weaker section of the society too. Only due to new thoughts of modern values the disabled are not supposed as the sin of previous birth, people give equal love to the girl child, the women become self-depended etc.

at last but not least I want to say that the Modern Values needs our protection and positive attitude not just criticism only.

◆◆◆◆

## Role of Value Education in Teacher Education

**Mrs. Luxmi Mishra[1]and Dr. Mohan LalArya[2]**
*[1]Research Scholar, [2]Associate Professor, Department of Education, IFTM University, Moradabad (U.P.)*

**ABSTRACT**

Education is a liberating force as also an evolutionary force, which enables the individual to rise from more materiality to superior plans of intellectual and spiritual consciousness. affective education is a significant dimension of teaching, which is concerned with the values, feelings beliefs, attitudes and emotional well-being of students. It is very difficult to examine that what value pupil teachers taking teacher education programmes hold and how these values changes throughout their course of study, since there. Pupil teachers will nurture our next generation. Values give meaning and strength to an individual's character by occupying a central place in one's life. Values reflect one's personal attitude and judgments, decisions and choices behaviour and relationships, dreams and vision. These values influence our thoughts, feelings and actions and guide us to do right things. Teachers are one of the main pillars of sound and progressive society. They bear the weight and responsibilities of teaching and apart from parents are the main source of knowledge and value for children.

Value education is education for becoming. It is concerned with the development of the total personality of individual intellectual, social, emotional, aesthetic, moral and spiritual. It involves developing sensitivity to the good, the right and the beautiful, ability to choose the right values in accordance with the highest ideals of life and internalizing and relishing them in thought and action. The goal of value education is not to promote passive conformity and blind obedience to whatever values are passed on, but to encourage critical and reflective thinking, rational choice and responsible behaviour, respecting the autonomy of the learners. When we are value educating, we are putting the learners in situations that enable them to think, to reason, to question, to reflect, to care, to feel concern and to act. The role of value education is very important to shape the nature and behavior of the students. Values are integral to the process of education. They are not add-ons. all education is, in sense, value education. Value less or value neutral education is a contradiction in terms, given the meaning

of value and education.

**Key Words: -** Teacher Education, Value Education, Moral, Intellectual.

◆◆◆◆

# The Global Need of Education:Moral Values

**Mr. Sanjay Kumar**
*Assit.Prof, S.S.V. College, Hapur (.P.)*

## ABSTRACT

a person whose life is governed by 'values' is considered well by other and is also held in high esteem in the social group he belongs to. Every good person values the importance of time. Human values in life are meaningful whereas life in the absence of 'values' is of no use and is not good at all. The present day situation is that we are living in a world of paradox. On the one hand Science and Technology is advancing very fast while on the other hand most societies are facing problems of alcohol, druse, mental illness, stress, crime etc. Terrorism is another big challenger in front of modern Indian society. These challenges demand for value Education. In modern society, nobody wants to loose the race.Moral or Value education helps for moral betterment of human. Moral values can be implemented through curricular and co-curricular activities among students. as I think, central and stste expenditure must be increased on moral value education so that modern education which is infested with indisciline, corruption, violence, terrorism, drug-abuse and other bad habits may be removed with the help of moral education.

The erosion of values is causing havoc in our society. Cases of embezzlement of public funds, adulteration of food stuff and other commodities, kidnapping, forgery, murders adultery, rape of minor children, gang rape of girls/women, eve-teasing, youngsters humiliating their elders, private medical pracititioners cheating their patients, killing of brides for inadequate dowry are on the increase. Justice Ranganath Misra mentioned that all of us are experiencing to our horror degrading human behavior in society every day. The deterioration is gradually becoming sharper and unless this fall is immediately arrested and a remedial measure found out and enforced, the situation would not improve''. are these happenings taking place now or were they taking place earier too? The obvious answer to this question would be that some of these happenings were taking place earlier too, but their incidence was very low and some others did not exist at all. Things are now deteriorating renlentlassly to the level that one fails to perceive as to where these would stop. One of the significant factors contributing to the present situation in our society is that 'contentment', one of our long cherished values is losing ground. We are in the rat-race of accumulating wealth and gaining power. This strong urge has polluted climate in the country and has resulted in widespread corruption in all walks of life in Modern Indian Society.

◆◆◆◆

# Values and their Importance in Modern Life

**Manik Rastogi**
*Asst. Prof., B.Ed., Govt. Raza P.G. College, Rampur(U.P.)*

**ABSTRACT**

The term values was borrowed from economics by philosophers notably **Herman Lotze.** The term Values later on introduced in psychology around 1930 by renowned psychologists **Gordon W.AllportAnd L.L.Thurston**. The allport and Vernon (1931) conception of values combined two psychological meanings: (1) values as interests with motivational power to initiate and maintain behaviors, and (2) values as evaluative attitudes that influence perceptions and evaluations of people and things. **Milton Rokeach** (1973) defined values as "enduring beliefs that a specific mode of conduct or end state of existence is personally or socially preferable to an opposite or converse mode of conduct or end state of existence." **Prof. R. K. Mukerjee** defined that Values are socially approved desires and goals that are internalised through the process of conditioning, learning or socialisation and aspirations."

After going through a number of definition and theoretical framework of values, a number of characteristics of values can be deduced.

1.Values are **enduring belief.** 2.Values are **traits** that are socially desirable and accepted by the society to be internalized by its citizens. 3.Democratic values such as liberty, fraternity, justice are cherished by democratic society. Hence, values in this context can be termed as **culture specific concept. 4.**Values are the **basis of our judgement**. **5.** Values are **motivational power** to guide human behaviour. **6.** Values internalization takes place through the interplay of **learning and socialiasation**.**7.** Values serves as **standard to evaluation** of behaviour of oneself and of others.

Milton Rockeach proposed two types of values-

1. Terminal Values- refer to desirable end-states of existence. 2.Instrumental Values refer to preferable modes of behavior.

Importance of Values in Modern Life:

1. Assimilation of modernity and traditional Values- .
2. Creating a Global Human Society-
3. Interfaith and Inter cultural Understanding-
4. Creating an Inclusive Society
5. Sustainable Development

6. Ethical use of Science and Technology

To conclude, the welfare of human civilisation depends on the adherence of moral values. Values provide the pathways and vision to the society and individuals to move forward for the advancement in such a manner as to ensure the holistic and inclusive progress of humanity.

◆◆◆◆

# Need and Importance of Value-Education at Present Education System in India

**Dilip Kumar[1] and Dr. Anjana[2]**
*[1]Research Scholar, Department of Teacher Education D.S. College,Aligarh (U.P.)*
*Associate Professor, Department of Teacher Education D.S. College, Aligarh (U.P.)*

## ABSTRACT

In India Value Education is the real need of the hour. as we see how the Society is diminishing in case of values at the present time. It is necessary to develop the programs for inculcating values within the society. Today's Indian youths are bit confused because of the bombarding of the new technological devices, information explosion and violent news by the press also as media. To inculcate the worth system in their confused minds and make them value-oriented-powerful leaders, educational institutions should take the initiative to impart Value Education, Spiritual knowledge to the present new generation. Imbibing the qualities of good conduct, self-confidence and high values would help students get a significant place in society. Education without values is sort of a flower without fragrance. Students should realize that character building is equally important as career building. a good character in life is ultimate thing that stretches person's self-realization. Present paper is formed during this paper to debate the role of the value- education in society, it elaborately discusses about the implications to develop the worth education. Rena, R. rightly points out that "There could even be a popular misconception that values are "better caught than taught". In reality however, values are both caught and taught." Today's generation isn't getting to catch the values without teaching. We have to point out the values to this generation before they're caught by the bombarding of the new technological devices, information explosion and also by the media. Value education can not be taught without spiritual knowledge or spiritual consciousness. In conclusion, mere desire or aspiration to progress in life isn't enough; success should be supported values. and for that value education must be imparted in today's institutions in our country.

**Keywords:** Value Education, Values, Educational Institutions, Society, Education, Vedanta.

◆◆◆◆

# Role of Education in Moral Values

**Manisha Rani**
*Asst. Prof., Department of Education, NECST Ghaziabad (U.P.)*

**ABSTRACT**

Education is not aimed at obtaining only a degree, it includes necessary value based teachings which result in character building and social improvement too. The values are concept, not feeling. Value embody and express feelings, but they are more than feelings. Values exists in the mind independently of self-awareness or public affirmation. a value does not have to explicitly announced or put into practice to qualify as a value. Value Often from a part of frame of judgement without man's conscious knowledge or deliberate choosing. Values are also criteria for judging degree of good and bad, right and wrong, or praise or blame. Values are simple, the presence or absence of these characteristic. Values are unique verbal concept relate to the worth given to specific kinds of objects, acts and conditions by individuals and groups.

Moral education means an ethical education that helps choose the right path in life. It comprises some basic principles such as truthfulness, honesty, charity, hospitality, tolerance, love, kindness and sympathy. Moral education makes one perfect.

The only problem with teaching morals and values in education is making sure that the instructor is not being biased. also, one must be careful as one does not always know the moral and values of the students parents. Therefore, basis morals and values, such as using manners and learning to get along with others is always a good start. as they progress to higher grades than more complex morals and values could be taught as they are a bit more mature to understand the concepts being taught.

Swami Vivekananda said of Education: "**Education is the manifestation of perfection already in man…"**

◆◆◆◆

# Value Based Education: Strategies and Methods

**Dr. Bharti Dogra[1]and Dr.Anita Singh[2]**
*Associate Professor,Associate Professor,*
*Department of Teacher Education, Bareilly College, Bareilly (U.P)*

**ABSTRACT**

It should be an important objective of value education to make children aware of the fact that the whole world is now a community of interdependent nations that the survival and well-being of the people of the world depends on mutual cooperation. Children should

be enabled to develop a world-view and appreciate the contributions made to the world's progress by different cultures and made to realize that in the case of various countries coming in conflict with one another, the world would be a very unsafe place to live in. The present paper highlights the need of value based education and its imparting strategies and methods in school curriculum.

**Key words:** Value based education, learning resources, imparting strategies, dimensions of value education

◆◆◆◆

## Formal Education- Important Measures to Inculcate Human Values in Students

**Ritu Sharma[1]and Brij Bhushan[2]**
*[1]Asst. Prof. (M.Ed), New Era College of ScienceAnd Technology, Ghaziabad,*
*[2]Assistant Teacher, HLM Girls College, Ghazibad (U.P.)*

**ABSTRACT**

as living in harsh developing competition world, the cost of the development in many developed countries today is the deterioration of social values among the members of society especially younger generation. Developed nations such as Japan,US, (UK), South Korea and Singapore have reported high rates in social problems among the younger generations whom are expected to lead these developments. There are many reasons that can be stated and debated over this phenomena but one cannot deny the fact that, the system of education plays an integral part in creating human capital in the right character and conduct. The present article is an attempt to discuss the importance of human values and an effort to propose few measure to inculcate human value in people through the formal Education.

◆◆◆◆

## Educational Impact on Happiness

**Apurva Singh**
*Research scholar, Department of Education, University ofAllahabad, Prayagraj (U.P.)*

**ABSTRACT**

Reply to the questions 'Does education influence happiness of a person and if so, how and how much?' depend on how one defines and operationalizes 'educational elements those influence happiness'. a great variety of research scenarios may be constructed from our three essential variables. What public policies one ought to adopt and implement regarding the influence of education on happiness depends minimally on which of the great variety of

research scenarios one adopts and maximally on lots of other things as well. My personal preference is for a robust definition of the three terms. Because human beings are complex organisms, an adequate construction of the idea of human wellbeing must also be complex. Throughout human history, great thinkers have pondered the idea of happiness and what makes for happy people. In more recent history, increasing focus is being placed on happiness as one of the most sought after human qualities, both on a national level, on an organizational level, and on an individual level. For instance, beginning in 1972, the nation of Bhutan replaced Gross National Product with Gross National Happiness as their main measure of progress. Former Harvard President Derek Bok, in his recent book, The Politics of Happiness, discusses several factors that researchers have identified as producing lasting and significant happiness (other than inherited temperament): marriage, social relationships, employment, health, religion, volunteerism, and quality of government. Since education plays a central role in the socialization of people, it seems appropriate therefore those universities should also play a critical role in the effort to increase happiness. So, what specifically can and should educational institutions do to create the necessary conditions whereby happiness is cultivated? This presentation reviews the salient findings of the "happiness research" relative to higher education. Based on these findings, the presentation makes the argument that colleges and universities should strive to create conditions for happiness. In addition to their traditional roles of knowledge producer (e.g., teaching and research aim) and developing students into productive members of society (e.g., vocationalaim), they also play a crucial role in helping students develop personally meaningful lives and sustainable happiness.

**Key words:** Education, Happiness, Wellbeing, Impact.

◆◆◆◆

## Role of Education in Inculcating The Value

**Shalini Singh**
*Assistant Professor(B.Ed.), S.M.P.G.G.P.G.C., Meerut (U.P.)*

**ABSTRACT**

Fate of a nation is built by character so the chief function of education should be character building and the basis of good character is value. Education play an important role in inculcating the role of value. It is an education where learners learn value from educators and implement them in future to lead a better life. The aim of education is to effect all-round development of a person, that is, to effect development of all aspects of his life: physical, mental, emotional, social, moral, spiritual, occupational etc. Values education is the responsibility of us all and not just of schools. There is a great need for imparting value based education in each stage of education. although education is an agent of change and the expected process of inculcating values to equip the learners for their successful life with the cherished values and contribute to ideal and healthy society.

◆◆◆◆

# Education and Human Values

**Varsha Pant**
*Assistant Professor (Education Department)*
*Saraswati Institute Of ManagementAnd Technology, Gadarpur, Rudrapur (U.K.)*

**ABSTRACT**

With the begning of modern education in the country, there has been a gradual erosion of values in our society. This is because character traning and value education have been ignored altogether in our education system. This stress on habit formation, attitude development and value incalculation as goal of education were totally discounted. This led to erosion of values clouding have in our society. The rapid degradation of values in the Indian context has posed a great challenge before our education system, because education without values is not beneficial to anyone. Education devoid of values may be deterimental to society in the long run. The Global task of promoting and protecting all human values and Fundamental freedoms so as to secure full and universal enjoyment of these rights cannot be fullfilled without mass awarness and sensitivity to human values. Right to education has also been incorporated. The childreen as well as the other people are indispensable to full realization of the responsibility under this constitutional directive. Education is a methodical effort towards learning basic facts about huminity and the core idea behind value education is to cultivate essential values in the students so that the civilization that teaches us to manage complexities can be sustained and further developed. Once, everyone has understood their values in life they can examine and control the various choices they make in their life. Values based education bring quality and meaning to life and give a person his identity and character. Children imbibe values all the time from their parents, teachers and peers. But it is also necessary that we deliberately teach them the right values right from their childhood. What they learn at this tender age stays with them all through their life. Hence, it has become imperative for our education system to impart vaue-based education in order to preserve and feel proud of our thousand years old value-based cultures. The present paper attempts to deal with the degredation of human values and how education is to cultivate essential values in human's life.

◆◆◆◆

# A study of the Values, Adjustment and AcademicAchievement of Students Studying in Senior Secondary Schools of Meerut

**Mr. Yogesh Kumar,**
*Research Scholar, Department of Education, D.J.College, Baraut (Baghpat) (U.P.)*

**ABSTRACT**

The concept of values can not be defined specifically. Every individual has some experiences which increase with the lapse of time, individuals form a few principles of their

own conduct, based on the experiences which convert the whole life into a model of Philosophy which originates a specific art of living and provides guidelines for action. Every individual form his beginning days in first grade until secondary grade and later makes a long series of adjustment between the whole unique personality he is and the program of schools, atmosphere at home with peer group etc. Creativity has been defined variously, but all tell the same story. It consist uniqueness, novelty in ideas. It moves away from the beaten path, from responses already known, defined and expected . academic achievement means education is a regulate curriculum in the field / place and to which the named ' academy' achievement is defined as performance.

◆◆◆◆

## Education and human values

**Neeti Sharma**
*Student, Uttrakhand Open University, Haldwani (U.K.)*

**ABSTRACT**

Human values make life worthwhile, noble, and excellent, and are those qualities that lie within the human personality, waiting to be drawn out and translated into action. Sathya Sai Education is based on five human values: Truth, Right Conduct, Peace, Love, and Non-violence. a good and comprehensive education system is expected to create the necessary human capital and knowledge workers who will bring the country to greater heights. In this regards, a holistic education programme is needed which can equip students with both the hard and soft skills required as well as human values. However, the main emphasis in education today lies in acquiring large amounts of information, passing examinations and securing qualifications for futureemployment. This programme seeks to improve the teaching-learning environment that will foster character building through the incorporation of basic universal values, thus, contributing towards academic excellence. The stress of an ever-increasing workload, and a working environment dominated by social problems will continue to make a teacher's profession more difficult and less satisfying. The many behavioral problems in society are vividly mirrored in schools, through bullying, drug abuse, theft and vandalism and scores of criminal acts. With so many external influences, demands andconstraints, it can be easy to lose hold of the values that make up a civilized society. This education in human values programme seeks to help teachers, parents and children to re-focus on the basic positive values that that underlie all aspects of a moral society. Our values inform our thoughts, words and actions.Our values are important because they help us to grow and develop. They help us to create the future we want to experience. The decisions we make are a reflection of our values and beliefs, and they are always directed towards a specific purpose. Human values are necessity in today's society and business world. In simple term, human values are described as universal and are shared by

all human beings, whatever their religion, their nationality, their culture, and their personal history. By nature, they persuade consideration for others.

◆◆◆◆

# Education and Human Values

**Ramesh Kumar Awasthi**
*Research Scholar, Dept. of B.Ed/M.Ed, MJP Rohilkhand University, Barielly (U.P.)*

## ABSTRACT

Values are principles, fundamental convictions, and ideals, standards of life which act as general guide to behavior or as a reference point in decision making. Values are beliefs about what is right and what is wrong and what is important in life. Value literally means something that has a price, precious, dear and worthwhile; one is ready to sacrifice for. It is a set of principles which guide the standard of behavior. Values are desirable and held in esteem. They give strength to a person's character by occupying a central place in his life. It reflects ones attitudes, choices, decisions, judgments, relationships, dreams and vision.

according to T. Roosevelt, "To educate a man in mind and not in morals is to educate a menace to society." The supreme end of education is expert discernment in all things – the power to tell the good from the bad, the genuine from the counterfeit, and to prefer the good and the genuine to the bad and the counterfeit.

The following objectives of VE are identified: 1. Full development of child's personality in its physical, mental, emotional and spiritual aspects. 2. Inculcation of good manners and responsibility and cooperative citizenship. 3. Developing respect for individual and society. 4. Inculcating a spirit of patriotism and national integration. 5. Developing a democratic way of thinking and living. 6. Developing tolerance towards and understanding of different religious faith. 7. Developing a sense of human brotherhood at social, national and international levels. 8. Helping children to have faith in themselves and in some supernatural power and order that is supposed to control this universe and human life. 9. Enabling children to make moral decision on the basis of sound moral principles. ancient India Value Education in India from the ancient times has held a prime place of importance. From the Gurukul stage the child not only learnt skills of reading and archery but more the philosophy of life in relation with its impermanence.

◆◆◆◆

# Role of Human Values In Present Educational Instituties

**Harish Kumar and Alka Ranga**
*Department of Education MICE Rewari, (Haryana)*

**ABSTRACT**

Human values are fundamental part of all subjects and all activities in the educational institutes and in the society. Human values cannot be educated; they have to be emphasizing from within the learner. It has been an illusion in the past, where teachers have been teaching morality, ethics, and values etc. as subjects Human value constitute an important aspect of self-concept and serve as guiding principles for an individual. Human society may not significantly sustain without human values. There are different views that call urgent need to inculcate human values in Indian society. Presently, negative human values are in upper side. But now a day, in modern society, human value crises are a known fact. It may be because of neglect of value based education system which created vagueness and indiscipline in the mind of people. Today, we are creating a generation who is in state of confusion and dilemma.. Greater emphasis on career oriented and degree oriented education has resulted in deterioration of values among society. The present paper is an attempt to explore the role of human values in present Educational institutes and how to impart human values in institutes for betterment of students and good citizenship in society and establishes a valid connection between human values and education along with studying human values in education.

**Key words:** values, Value Education, Human values, Educational institutes.

◆◆◆◆

# Role of Teachers in Imparting Values in Schools

**Asmi Siddiqui**
*Jamia Millia Islamia, New Delhi*

**ABSTRACT**

Value education is a crucial aspect of learning in today's context. Educational values are also required for success of human being and that comes from basic foundation of education from schools or colleges. Education is associated with learning and teachers play their active role in this process. Teachers work for imparting value education to children. Educational values are learned by practical demonstration by teachers then it is learned by children in schools. It emphasizes about the role of teachers in imparting value education it highlights it's inter relationship with teachers and children. It also includes parents and teachers efforts to make maximum impact on the personality of school children. It also

focuses about the tools required to give value education. Value education highlights the virtues like honesty, self control, respect, responsibility and loyalty for personality/ character development of the child. Values are not ideal concepts but work as empowering tools.

◆◆◆◆

## Understanding Value - Education

**Dr. Anil Bhatt**
*Assistant Professor, Dept of Sociology, Govt PG College, Doiwala, Dehradun (U.K.)*

**ABSTRACT**

Value education is a way of conceptualizing education that places the search for meaning and purpose at the heart of the educational process. Value education is mainly educating emotional aspect of human personality which can also be termed as training of the heart. It is focuses on the development of appropriate behaviour and inculcation of certain virtues and habits. The ability of making judgements on the basis of *morality, rationale and sound reasoning* is the primary aim of value education. It recognizes that the recognition, worth and integrity of all involved in the life and work of the school are central to the creation of a values-based learning community that fosters positive relationship and quality in education. Swami Vivekanand said that education is not the amount of information that is put into your brain and runs riots there undigested all your life, we must have life building, man-making and character making assimilation of ideas. The need of value education can be understood by dividing the human life into four parts viz personal need, fundamental need, social need and family need. Value education enables us to understand our needs and visualize our goals correctly and also indicate the direction for their fulfilment. It also helps to remove our confusion and contradictions and enables ue to rightly utilize the technical innovations. The process of value education is essential to deliver the values to the students. There are four methods that can be adopted for value education viz *individual learning, group learning, Project learning, Open learning*. In order to understand the value education one has to inculcate some important values in life such *as love, understanding, respect, discipline and honesty.* a well thought of combination of academics, culture and value education will be an ideal approach to value education which needs to be integrated within the school curriculum.In this regard the role of government,educationists, policy makers, intellectuals, psychologists, sociologists, etc can contribute positively for better results in establishing a strong educational system based on value-orientation.

◆◆◆

# Human Values and Education of Children with Developmental Disabilities

**Dr. Ram Shanker Saxena[1], Naveen Singh[2] and Dr. S.S. Yadav[3]**
*[1]Assistant Professor, Amity Institute of Rehabilitation Sciences, Amity University Uttar Pradesh, Noida, U.P, [2]Scholar, [3]Associate Professor, Govt. Raza P.G. College, Rampur (U.P.)*

## ABSTRACT

Values are part and parcel of philosophy. Hence, aims of education are naturally concerned with values. Each educational goal, whether originating in a person, a family, a community, a school or an educational system, is believed to be good.Value is that which renders anything useful, worthy or estimable. In other words, Values may be defined as something which are desirable and worthy of esteem for their own sake.Swami Vivekananda considered human as complete from birth and emphasized on letting him realize this totality with help of education.Human values are defined as those values which help man to live in harmony with the world. Education in human values takes a holistic approach to educating the child and recognizes five values as an integral part of the human being. These values are recognized by all major religions, adopt a multi faith approach, allow and encourage each child to follow his or her faith, and are simply conducive to application in diverse cultural conditions. These five fundamental human values are Truth, Right Conduct, Peace, Love and Nonviolence. an educational system based on human values helps students to develop a holistic understanding of body, mind and soul.

Developmental disability is a diverse group of chronic conditions that are due to mental or physical impairments that arise before adulthood. Developmental disabilities cause individuals living with them many difficulties in certain areas of life, especially in "language, mobility, learning, self-help, and independent living". The most common developmental disabilities are Intellectual Disability, Specific Learning Disability and autism Spectrum Disorder.Value education and training is needed for healthy development of body, mind and soul of Children with Intellectual Disability especially those with mild and moderated cognitive impairments. Due to the hidden nature of Specific Learning Disability and more focus on academic areas, value development is often not given priority in training and teaching activities of Children with Specific Learning Disability in the classroom. Children with autism Spectrum Disorder, due to problems in core triad areas often wear social consequences of discriminatory public attitude leading to isolation which impairs their value learning capacities.By value based teaching and learning, we can make children with developmental disabilities ready to learn and understand importance of human values such as love, brotherhood, respect for others including plants and animals, honesty, sincerity, truthfulness, nonviolence, gratitude, tolerance, a sense of responsibility, peace, cooperation, self-reliance, secularism and

internationalism etc., and could make them useful human resource for nation.

**Key Words:** Human Values, Education, Children with Developmental Disabilities

◆◆◆◆

## Relevance of Value Based Education at Higher Level in Context of India

**Dr Pardeep Kumar**
*Assitant Professor, Dept of Education, Govt. Raza PG College Rampur UP.*

**ABSTRACT**

It is also said that in the twenty first century, "a nation's ability to convert knowledge into wealth and social good through the process of innovation is going to determine its future, 'accordingly twenty first century is also termed as "century of Knowledge" **(NKC-2005).** 'Education is a principal instrument in awakening the child to cultural values, in preparing him/her for later professional life, and adjustment in their social life'. Education is a process that inculcates the social and cultural values in the child. Education is a goal oriented and continuous process that develop the adjustment ability in the child. There are so many modules designed with the help of agencies like NCERT and other for effectively imparting the value education to the school students. In a vast nation like India with so many sections in the society, so many religions, so many regions, and so many languages the child has to be taught the lessons in "unity in diversity".

◆◆◆

## Education and Professional Ethics

**Dr. Jitendra Mohan Agarwal**
*Chemistry Lecturer in GIC College, Dineshpur, Uttarakhand*

**ABSTRACT**

Ethics is an activity and area of inquiry. It is the activity of understanding moral values, resolving moral issues and the area of study resulting from that activity. When we speak of ethical problems, issues and controversies, we mean to distinguish them from non-moral problems. Ethics is used to refer to the particular set of beliefs, attitudes and habits that a person or group displays concerning moralities. Ethics and its grammatical variants can be used as synonyms for morally correct.

Personal ethics or personal morality is the set of moral beliefs that a person holds. Our personal moral beliefs mostly and closely run parallel to the principles of common morality. But our personal moral beliefs may differ from common morality in some areas,

especially where common morality appears to be unclear or in a state of change. Professional ethics is the set of standards adopted by professionals. Every profession has its professional ethics: medicine, law, pharmacy etc. Management ethics is the set of ethical standards that applies to the management profession. Some of the important characteristics of professional ethics are : The word ethics has different meanings but they are correspondingly related to each other. In connection with that, Management ethics has also various senses which are related to one another. Comparison of the senses of Ethics and Management Ethics:

Ethics is an activity which concerns with making investigations and knowing about moral values, finding solutions to moral issues and justifying moral issues and justifying moral judgments. Like the ethics, management ethics also aims at Knowing moral values related to management, finding accurate solutions to the moral problems in management and justifying moral judgments of management. It is understood that an engineer has to play many roles while exercising his professional obligations.

◆◆◆◆

## Higher Education and Professional Ethics

**Dr. Shweta Keshri**
*Assistant Professor, Music Department, K.R.G.P.G. College, Mathura (U.P.)*

**ABSTRACT**

Education provided by college or university, comes under higher education. It is said that a university is a place where knowledge of universe is taught. and the second topic raised is professional ethics. What is professional ethics? One can understand this term as personal or corporate rules that govern behavior in the context of particular profession. So the whole paper will be centered on the ethical behavior of a teacher in higher education.

This becomes important because a school or college is a place where students learn how to behave and what their responsibilities are. So a teacher has a very important role in building a responsible society. also, a teacher is a role model for a student whom they try to follow. Therefore a teacher should have essential qualities which are really needed to make a student good human being. It all comes under ethics. There are many more practices which have been described essential for a teacher. These are known as professional ethics of teaching in college, directly or indirectly these are concerned with students, parents, colleagues, institute or college and management or a superior authority.

In present time Education is a huge problem for India. India is country where GER (Gross enrollment ratio) of higher education is around 18. It means that only 18 students out of 100 are going for higher education. There are many reasons for this. One of the problem is unemployment. But the question to be concerned of is how many out of those 18 get job. after education employability becomes very important. First and the foremost responsibility

of a teacher is to make the student capable of earning. Here assessment of the students is also important. assessment of a student implies knowing his/her field of competence and train or guide them accordingly. a teacher is a torch bearer so it is teacher's responsibility to show the student the right path. This would be the best service to the nation. It is important because if a teacher is not playing his or her role honestly then not only students but the whole society suffers, a student is a basic unit of society. So if we want a better society then we have to educate each one of them and that is a role of teacher. He/She not only has to teach the syllabus but also teach them all for their overall development, enhance his or her competence and train them accordingly. Secondly, relationship with the other colleagues of college is also important somehow. because the whole environment of a college is made up by teachers and students. So a teacher should have respect for each and every colleagues. Then only a college can grow. Healthy atmosphere and healthy relationship are key to prosperity. Not only respect for colleagues but for institution also, from where we get all our essentials. it is a moral duty to have respect for college and do 100% justice to the work assigned. Besides teaching, a teacher play many role in a college, doing all with respect and honesty. These all are described as ethics.

◆◆◆◆

## Human ValuesAnd Professional Ethics

**Rekha Kumari**
*Assistant Professor, Govt. Raza P.G. College, Rampur (U.P.)*

**ABSTRACT**

Ethics is an activity which concerns with making investigations and knowing about moral values, finding solutions to moral issues and justifying moral issues and justifying moral judgments. Management has an ethical and social responsibility to themselves, their clients and society. Practically (although there is much debate about this), engineering ethics is about balancing cost, schedule, and risk. Management ethics is a means to increase the ability of concerned engineers, managers, citizens and others to responsibly confront moral issues raised by technological activities. The awareness of moral issues and decisions confronting individuals and organizations are involved in Management & Technology. Word ethics is defined as a set of attitudes concerned with the value of word, which forms the motivational orientation. It is a set of values based on hard work and diligence. It is also a belief in the moral benefit of work and its ability to enhance character. a work ethic may include being reliable, having initiative, or pursuing new skills. The work of ethics is aimed at ensuring the economy (get job, create wealth, earn salary), productivity (wealth, profit), safety (in workplace), health and hygiene (working conditions), privacy (raise family), security (permanence against contractual, pension, and retirement benefits), cultural and social development (leisure, hobby, and happiness), welfare (social work), environment (anti-

pollution activities), and offer opportunities for all, according to their abilities, but without discrimination. Workers exhibiting a good work ethic in theory should be selected for better positions, more responsibility and ultimately promotion. Workers who fail to exhibit a good work ethic may be regarded as failing to provide fair value for the wage the employer is paying them and should not be promoted or placed in positions of greater responsibility. Work ethic is not just hard work but also a set of accompanying virtues, whose crucial role in the development and sustaining of free markets.

◆◆◆◆

# Study on Professional Ethics ComponentsAmong Members in Education

**Qaisur Rahman[1]and Baby Tabassum[2]**
*[1]Department of Zoology, VinobaBhave University, Hazaribag-825301 Jharkhand*
*[2]Department of Zoology, Govt. Raza, Post Graduate College, Rampur- 244901 (U.P.)*

## ABSTRACT

as faculty members influence their surroundings as well students, so it is necessary that they are equipped by ethical education and moral virtues and familiarized with ethical principles. What worthy here is professional ethics which depends on faculty member's attitude and knowledge aboutit. Professional ethics is clearly defined as a set of moral codes and rules of the professional practice. action framework and moral or immoral judgment is intended to professionals. Professional ethics is a broader concept than business ethics. Professional in one's life involves professional and organizational ethics in whole.Everyone works with three ethics areas which arein common: personal ethics, business ethics, and organizational ethics. Identifying ethical components among academic sectors especially the faculty memberswhich this study is aimed at it could predispose to codify ethical codes of education. It helps teachers and students improve their teaching and learning because considering to the professional ethics and ethical growth in education will cause to foster an ethical environment in the classroom.Reviewed studies shows that the majority of concerns focus on research ethics especially in medicine while it seems that not only professional ethics in education is not less than research but also it is necessary toproceed professional ethics in education in the special term of our country. as education has a decisive impact on the development of the society, so faculty members in educational branch are required to take ethical components into consideration in relation to their students**.** The aim of the present study is to recognize the rate of professional ethics components used by these faculty members in education. Ethics is a necessity need in every profession; it should be taken into account in employing people and in work environments. Due to the high impact of educational environments and especially universities on the future of students and because of their critical duties in rendering education and making communities more developed, the

importance of recognizing and observing professional ethics in these environments has increased.Based on the results of the present study, the following are the most important components of professional ethics: Respect for the students, safety and health of students, privacy of students, having a spirit of tolerance and openness in dealing with students.

**Key words:** Ethical components, Professional ethics, Students, Educational members.

◆◆◆◆

## Education and Professional Ethics

**Dr. Neeta Kaushik**
*Associate Professor, Dept. of education, J.V.Jain College Saharanpur (U.P.)*

**ABSTRACT**

We all know that education is concerned withall round development of personality. a quality education is entitled to make students self reliant and socially efficient. Hence professional ethics in education are not confined to teaching only, it indicate the aspirations of the eucators and provide the criteriato facilitate the code of ethics and morality required at different levels of eduction. Professional ethics refer to personal and corporate rules that govern behaviour within the context of a particular profession. Professional ethics in education include ethical responsibility to the profession, promoting ethics within and beyond school community, commitment to high quality of education,responsibility towards students by increasing students' access to curricular activities and resources, opportunities and protecting students from any harmful practice.

Thus two crucial roles of ethics in education are concerned with (a) the moral behaviour of teachers,(b)the morality children learn in schools.In 2001Education International (EI) Declaration on Professional Ethics (DPE) was adopted. EI's 3rd World Congress which was further updated in 4th World congress in 2004, represented the core values of teaching profession itself.So professional ethics determine teachers' responsibilities towards students. It equips teachers with responsibility, commitment and accountability not only towards their students but also towards their colleagues, parents and community. Education must inculcate appreciation for moral deliberation, empathy, knowledge, reasoning, courage and interpersonal skills. So teachers are entrusted with the role of providing a quality education to all students in the classroom.

◆◆◆◆

# Importance of Professional Ethics in Higher Education

**Preety Agarwal**
*Asso. Prof.deptt.of Teacher Education, D.A.V. P. G. College, Muzaffarnagar (U.P.)*

**ABSTRACT**

It is universally felt that the status of teaching profession requires to be raised to ensure its dignity and integrity. accordingly, it is considered necessary that there should be a code of ethics which may be evolved by the teaching community itself for its guidance. Professional ethics is like a guide, which facilitates the teacher to provide quality education and inculcate good values among the learners. The professional ethics will enlighten the teachers that they have a major role in bringing desirable changes in the behavior of the students. It also helps the teachers to understand their profession as a teacher. Their role is not just to become supreme and authoritarian in front of their students and colleagues. But then they have a wider and meaningful role to play. The professional educator strives to create a learning environment that nurtures to fulfillment the potential of all students. Teachers can be regarded as a guiding light as they play an important role in shaping the life of many individuals. They are strong role models and need to have a rational behavior towards the students. Following above ethics will help them in being impartial in their field and do the job honestly with professionalism.

◆◆◆◆

# Professional Ethics in Education

**Dr. Deeshikha Saxena[1]and Dr. Sachin Kumar[2]**
*[1]Assistant Professor, IER, Mangalayatan University,Aligarh (U.P.)*
*[2]Assistant Professor, Department of Education, MIMT, Greater Noida (U.P.)*

**ABSTRACT**

The basic purpose of education is to create skill and knowledge along with awareness of our glorious national heritage and the achievements of human civilisation, possessing a basic scientific outlook and commitment to the ideals of patriotism, democracy, secularism, socialism and peace, and the principles enunciated in the Preamble to our constitution. Higher education has to produce leaders of society and economy in all areas of manifold activities with a commitment to the aforesaid ideals. Higher education should strive for academic excellence, and progress of arts and science. Education, research and extension should be conducted in conformity with our national needs and priorities and ensure that our best talents make befitting contributions to international endeavour on societal needs.

The principal goal of teachers' work is to help removing the hurdles that teachers face everyday in order to do their jobs. Teachers help students to learn the academic basics,

but they also teach valuable life lessons by setting a positive example. as role models, teachers must follow a professional code of ethics. The word ethics is connected to specific expectations that society has for professionals in professional settings such as code of ethics. It basically points to certain code of conduct. Ethics are often considered synonymous to morals. It is to state that the word moral is reserved for prescriptive standards of behaviour imposed by some powerful entity which involves a sense of right and wrong. But ethics designate mode of conduct.

◆◆◆◆

## Education and Professional Ethics

**Sapna Rani**
*M.Ed (Student), Education Department, J.V. Jain College, Saharanpur (U.P.)*

**ABSTRACT**

Today, ethics has an important place in all areas of life. a professional code of ethics outlines teacher's main responsibilities to their students and defines their role in student's lives. It presents various approaches to teacher's professional ethics, virtue, value and person. Finally, it argues for an integrated, Personal approach to the subject, providing a solid ground in the cultural Context of fluid modernity. a code of professional ethics is generally based on two principles: professional integrity and ideals of service to the society. If teachers are to become ethically aware then the pre-service teacher education program is the most important place for the inclusion of ethical content and commitments required in the teaching profession. Toward the end it expounds all the experts morals must be exhibited in showing proficient, which may enable him to end up plainly a part to demonstrate for everybody in the general public.

**Key words:** Professional ethics, teachers, teacher education, commitment.

◆◆◆◆

## Teacher and Professional Ethics: Historical Perspective And Present Status

**Deepak Kumar Sharma**
*Asst. Professor, Govt. Raza P. G. College, Rampur (U.P.)*

**ABSTRACT**

Every profession is expected to evolve a set of ethical principles to guide the conduct and behaviour of its members. The ethical principles provide the basis to differentiate between desirable and undesirable professional conduct or behaviour. Ethics deals with moral principles, which are usually accepted voluntarily by an individual or a group. The code of professional

ethics may be defined as a set of self-imposed professional ideals and principles necessary for the attainment of professional excellence and self-satisfaction. a code of professional ethics is generally based on two principles- professional integrity and ideals of service to the society. In ancient India, the teacher enjoyed a very high status and position in the society. The following hymn shows that the teacher was identified with the trinity of gods for his intellectual and spiritual qualities. Teacher of medieval India, both in *Madrasas* and *Pathshalas* continued to enjoy high social status and commanded respect from his pupils by virtue of vast knowledge of the religious texts and noble character. Later on, during the British period, the position of the teacher gradually declined due to indifferent attitude and defective educational policy of the East India Company and the British Crown towards education of Indians.

In pursuance of the recommendations of the National Policy on Education (1986,1992) a Code of Professional Ethics for Teachers was jointly developed by the NCERT and all India Federation of Primary and Secondary School Teachers' Organisations. The preamble to the code reiterates the resolve of the country's teachers to uphold their professional integrity, strive to enhance the dignity of the profession and to take suitable measures to curb professional misconduct. University Grants Commission (UGC) in collaboration with aIFUCTO ( aLl India Federation of University and College Teacher Organisation) formed task force which has prepared a code of professional ethics for university and college teachers (UGC, 1989).

**Key Words**: Teacher, Professional Ethics, NCERT, aIFUCTO, Profession, Madrasas, Pathshalas and National Policy on Education

◆◆◆◆

# Teacher and Professional Ethics

**Sunil Kumar**
*Lecturer, S.M.C.E.T. Hapur (U.P.)*

## ABSTRACT

In this world of globalization and competitive world, we are witnessing diverse changes in our educational system. Since, change is inevitable the aims and objectives of education is changing according to the need, interests and requirements of the learners, society an nation as a whole. Now, the concept of teacher and teaching also is changing day by day. a teacher in this contemporary era has many duties and responsibilities to play. apart from having good academic and professional qualifications, they should also posses the knowledge of Professional ethics. Professional ethics is like a guide, which facilitates the teacher to provide quality education and inculcate good values among the learners. The professional ethics will enlighten the teachers that they have a major role in bringing desirable

changes in the behaviour of the students. It also helps the teachers to understand their profession as a teacher. Their role is not just to become supreme and authoritarian in front of their students and colleagues. But then they have a wider and meaningful role to play. Teacher having the sense of professional ethics will treat their learners with love, care, affection and commitment. In addition to that, they would always ensure to make specific contribution from their angle. Therefore, this paper specially highlights the significance of professional ethics in teachers.

◆◆◆◆

## Teachers Professional Ethics

**Dr. Meenakshi Sharma**
*Associate Professor, Deptt. of Education, Meerut College Meerut (U.P.)*

**ABSTRACT**

The paper starts with the discussion of the relationship between teacher's professional ethics and general or fundamental ethics, contingent on the issue of teacher's professionalism. Further, it presents various approaches to teacher's professional ethics, resulting from different classical philosophical perspectives, centered on duty, consequence, virtue, value, and the person. Finally, it argues for an integrated, personalist approach to the subject, providing a solid ground in the cultural context of fluid modernity.

**Key words:** professional ethics, teacher, personalism, deontology, consequentialism, axiology, aretology

◆◆◆◆

## Professional Ethics in Teaching

**Dr. Suvita Kumari**
*Associate Professor, Teacher Education Department, DAV (PG) College,, Muzaffarnagar (UP)*

**ABSTRACT**

This article aims to provide a discussion on professional ethics for teachers. In this competitive and changing world, these is vast change in educational system.The education system is changing according to need and requirement of present society as well as learners. In the same way, the concept of teacher and teaching is also getting changed. The teacher has to play many duties and responsibilities. Other than good professional and academic qualifications, a teacher must also possesses professional ethics. There must be increased awareness of ethics values and responsibilities among teachers in order to enhance professionalism and hence to improve practice. Professional ethics must be able to contribute

positively and deeply in teaching. Teachers need to develop skills and strategies for identifying ethical issues and making ethical judgments. In this way, professional ethics can help in inculcating good moral values as well as to provide quality education to learners. It helps a teacher in understanding the profession and plays key role in bringing desirable changes in students.The teachers with good professional ethics will always treat their learners with care and commitment. They will possess high level of skillfulness in guiding and advising the learners. There are some important components of professional ethics like respect and trust of students, respect for students, health and safety of students and so on.This article helps in highlighting the importance or significance of professional ethics in teaching.

◆◆◆◆

## Ethics in Teaching Professional

**Dr Shubhra Chaturvedi**
*Associate Professor, Department of Teacher Education, J V Jain College, Saharanpur (U.P.)*

**ABSTRACT**

Professionalism is a subject of interest to academics, the general public andwould-be professional groups. Traditional ideas of professions and professional conduct have been challenged by recent social, political andtechnological changes.

Every profession is expected to evolve a set of ethical principles to guide the conduct andbehaviour of its professional members. The ethical principle provides the base to differentiate between desirable and undesirable conduct of behaviour.The code of professional ethics may be defined as a set of self-imposed professional ideas and principles necessary for the attainment of self-satisfaction and professional excellence. Professional ethics refers to the principles, guidelines or norms of morality which a teacher has to follow in teaching professional which dealing with students, parents, community and higher authorities.These codes of conduct raise a number ofquestions about the status of a 'profession' and the consequent moral implications for behaviour.

This paper discusses about need of professional ethics in present era. In this self-correction, Self-satisfaction, Improvement of human relation, Development of society, Professional excellence etc. are main issues to be considered as important for teaching profession.

The education institute having faculty, who follow ethical practices will have better disciplined engineers. The magnitude of work involved in teaching profession is increasing day by day. The desire for respect from Colleagues, Students and society, makes teacher'srole more crucial. Ethics in professional education is concerned with one's conduct, behaviour, practices while providing any kind of services. The educator should believe in the worth of

dignity, importance of truth, devotion to excellence and nurture democratic principles. It is essential to protect freedom to learn as well as to teach and to provide opportunity of education to the entire population. Educators have to accept the responsibility to adhere to the highest ethical standards.

◆◆◆◆

# Teacher and Professional Ethics

**Savita Saxena[1] and Dr. R. K. Singh[2]**
*[1]Research Scholar, MJPRU, Bareilly, [2]Principal, KCMT, Bareilly*

## ABSTRACT

In this world of globalization and competitive, we are witnessing diverse changes in our educational system. The aims and objective of education are changing according to the need, interests and requirements of the learners, society and nation. Now the concept of teacher and teaching also is changing day by day. From ancient India to the present day India, there is a difference in the status and position of the teacher. In ancient India, the teacher enjoyed a very high status and position in the society .He was regarded as a the builder, guide and leader of the society. The following hymn shows that the teacher was identified with the trinity of Gods for has intellectual and spiritual qualities.

***"Gurur Brahma gurur Vishnu gurur deva Maheshwarah,***
***Gurur Sakshath param Brahma tasmay shri gurve namah"***

But a teacher in this contemporary era has many duties and responsibilities to play. apart from having good academic and professional qualifications, they should also posses the knowledge of professional ethics. Professional ethics is a combination of two words "Professional+Ethics". Here professional means an expert, specialized, qualified Proficient, skilled, trained, practised, certified, mature etc and ethics means principles, beliefs, moral value and moral code etc. Professional ethics means- " all issues involving ethics and values in the roles of the professions and conduct of the profession in society". So the professional ethics will enlighten the teachers that they have a major role in bringing desirable changes in the behavior of the students. It also helps the teachers to understand their profession as a teacher. Their role is not just to become supreme and authoritarian in front of their students and colleagues. But they have a wider and meaningful role to play. Teachers having the sense of professional ethics will treat their learners with love, care affection and commitment. In addition to that, they would always ensure to make specific contribution from their angle. Therefore, this paper specially highlights the significance of professional ethics in teachers.

**Key words :** Globalization, contemporary era, Professional ethics, values, behavior.

◆◆◆◆

# Teacher and Professional Ethics

**Dr. Munesh Kumar Sharma**
*Head of Department B.Ed., Shri Madhav College of Education & Technology, Hapur (U.P.)*

**ABSTRACT**

In this world of globalization and competition world, we are witnessing diverse changes in our educational system. Since change in inevitable the aims and objectives of education is changing according to the need, interests and requirements of the learners society an nation as whole. Now, the concept of teacher and teaching also is changing day by day. a teacher in the contemporary era has many duties and responsibilities to play. apart from having good academic and professional qualification, they should also posses the knowledge of professional ethics. Professional ethics is like guide, which facilities the teacher to provide quality education and inculcate good values among the learners. The professional ethics will enlighten the teachers that they have a major role in bringing desirable changes in the behavior of the students. It also helps the teachers to understand their profession as a teacher. Their role is not just to become supreme and authoritarian in front of their students and colleagues. But then they have a winder and meaningful role to play. Teacher having the sense of ensure to make specific contribution from their angle. Therefore, this paper specially highlights the significance of professional ethics in teachers .The rule of organization to improve the quality of teacher training program

1 Developing guideline for teacher education program

2 Promoting innovations and research studies

3 Enforcing accountability of teacher development program me in the county

4 Maintaining the qualityand standard of Teacher education program

Keeping in view the above mentioned quality indicators, the present paper is humble effort to give some suggestions regarding new programs in teacher education.

◆◆◆◆

# Teachers and Professional Ethics

**Sapna**
*Assistant Professor, Disha Bharti College, Saharanpur (U.P.)*

**ABSTRACT**

Professional ethics may be understood as professionally acknowledged measures of individual and business conduct, values and guiding principles. The underlying philosophy

of having professional ethics is to make the persons performing in such jobs to follow the sound, uniform ethical conduct. a professional code of ethics sets a standard for which each member of the profession can be expected to meet. it is a promise to act in a manner that protects the public's well-being. it in forms the public what to expect of one's doctor, lawyer, Banka or teacher. among all the other professions teaching is most important to the society because of teachers are called Nation builders that's why their dedication to what they professional ethics should be more effective. Professional values for teacher major all the characteristics of teaching profession like responsibilities, attitudes, honesty, fairness, integrity, diligence, loyality Corporation, justice, empathy, knowledge, courage and interpersonal skills and communication. professional ethics is like a guide which facilitates the teacher to provide quality education in in kate good values among the learners. it also helps the teachers to understand their profession as a teacher. Teacher helps students learn the academic basics, but they also teach valuable Life lesson by setting a positive example. as role models for my teachers must follow a professional code of ethics. This ensures that students receive a fair, honest and uncompromising education. a professional code of ethics outlines teachers main responsibilities to their students lives. above all, teachers must demonstrate integrity, impartiality and ethical behaviour in the classroom and in their conduct with parents and co-workers. Some of the important key points of ethical teaching are students matter most, commitment to the job, keep learning, healthy relationship with their students and colleagues, disciplinary competency, teach effectively through an effective pedagogy, provide balance content and free enquiry, respect students, Foster academic integrity, use objectives and fair assessment and protect their student's confidentiality.

◆◆◆◆

## Significance of Professional Ethics for Teachers

**Seema Rani[1]And Markandey Dixit[2]**
*[1]Research Scholar, Manav Rachna University. Faridabad (Haryana), [2]Principal, Department of Education, NECST Ghaziabad (U.P.)*

**ABSTRACT**

Speaking about the profession of teacher it is necessary to consider contemporary global ethical issues in education system. Just like our parents, teachers are also important in our life. Teachers are the greatest assets of any educational system. They teach us the wisdom in doing everything. They give moral support and encourage us to live equally in this society and treat everyone equally. In this world of globalization and competitive world, we are witnessing diverse changes in our educational system. Since, change is inevitable the aims and objectives of education is changing according to the need, interests and requirements of the learners, society and nation as a whole. Now, the concept of teacher and teaching also is changing day by day. a teacher in this contemporary era has many duties and

responsibilities to play. apart from having good academic and professional qualifications, they should also posses the knowledge of professional ethics. Professional ethics is like a guide, which facilitates the teacher to provide quality education and inculcate good values among the learners. It also helps the teachers to understand their profession as a teacher. The Professional ethics will enlighten the teachers that they have major role in bringing desirable changes in the behavior of the students. Teachers having the sense of professional ethics will treat their learner with love, affection, care and commitment. Therefore, this paper specially highlights the significance of professional ethics in teaching.

◆◆◆◆

# Teacher and Professional Ethics : A Critical Review

**Somender Singh[1]and Rohit Singh Tomar[2]**
*[1]Assistant Professor, Department of Education, [2]Student, B.Ed. (1year),*
*Govt. Raza (P.G) College, Rampur (U.P.)*

## ABSTRACT

Teacher who is light bearer for our society symbolizes the path of enlightment, on whose the responsibility of the society depends. It is a teacher who prepares the future of the country by inculcating the quality of honesty, self-discipline, tolerance, compassion, truthfulness, empathy in their students. Hence, we can say that the role of teacher in the society is very important and significant in context of development of our society on which the responsibility of transferring the heritage, custom, tradition, and culture of any society depends.

Hence, teaching is very dynamic service. So, it becomes important for us to adhere a strict path of recruitment so that only the dynamic, laborious, compassionate and innovative mind come in this profession. In present era, it is seen that due to quantitive increase in the number of private college, the quality of teaching moved downward. These colleges ostensibly address the problem of shortage of number of government colleges, but instead they merely work as a shop owner by selling degrees to their customer. There is also some loopholes in recruitment, training, transfer, unwillingness to serve in rural areas, lack of knowledge of vernacular language by teachers are some obstacles which hamper and degrade the quality of education.

So, it becomes imperative for our education system to bring urgent modification in present method of imparting education. also, there should be need for development of professional ethics in domain of teacher so that he smoothly and without hindrance deliverhis service. Professional ethics is important for teacher as teaching require hard work, dedication, innovative method of teaching, motivate student, understand and cope up the difference in their student cognitive level, so development of professional ethics in teacher becomes a pre-requisite of our current scenario. Hence, by imparting and developing professional ethics

in our teacher, we should not only raise the standard of our teacher, but also we should raise the standard of our society.

◆◆◆◆

## Professional Ethics and Commitment in Teacher Education

**Vaibhav Sharma**
*Assistant Professor, ShaheedBhagat Singh Evening College, New Delhi*

**ABSTRACT**

In this era of rapid globalisation and modernization, people have become the victims of materialistic desires and attitudes leading to a loss of basic values. The same shift is being observed in the teaching community also. Recently there has been a sudden increase in the teacher education institution in various states of India that has no doubt lead to wealth of educational options in remote areas for all; however it has also resulted in dilution of quality, infrastructure, human resource etc, along with an absence of professional ethics. as teacher educators are preparing teachers of tomorrow there is a need for them to demonstrate professional ethics to inculcate values in the society at large. This code of professional ethics may be defined as a set of self imposed professional ideals and principles necessary for the attainment of professional excellence and self-satisfaction. a code of professional ethics is generally based on two principles; professional integrity and ideals of service to the society. Teachers, as professionals, are engaged in one of the most ethically demanding jobs, the education of young people; thus it is important that teachers should constantly reflect on the ethics of their activities to ensure that they exhibit the best ethical example possible in their work to those they are morally educating. If teachers are to become ethically aware then the pre-service teacher education program is the most important place for the inclusion of ethical content and commitments required in the teaching profession.

**Keywords:** Professional ethics, teachers, values, teacher education, commitment

◆◆◆◆

## Role of Values in the Job PerformanceAnd Professional Commitment of the Teachers

**Rahul Yadav**
*Research Scholar, Campus, MJPRU, Bareilly (U.P.)*

**ABSTRACT**

Teaching is a noble profession and in this noble profession teacher play vital role because they are the one who inspired students right from the childhood. apart from imparting academic knowledge teacher also mentoring their students and teach valuable life lesson.

To set positive examples teachers must follow an ethical code of conduct to show professionalism. as we know every profession has its own professional ethics so teaching profession also has its own ethics. Professional code of ethics for teacher includes student teacher relationship, job commitment, job performance cooperation with colleagues, interaction with parents and society. among all these factors the commitment play very vital role .Teacher with high commitment towards their profession contributes high job performance, good student teacher relationship, more job satisfaction etc. So the commitment of the teacher that is collaborated with the values will enrich his job performance. These values are the essential part of any personality that help in the development of the person, society and the country as well. at last if we want effective job performance and committed teachers towards students and society, the values must be given proper space at every step of life of each and every person.

◆◆◆◆

## Teacher and Professional Ethics

**Prof. Rashmi Mehrotra[1] and Reshma Parveen Khan[2]**
*[1]Principal, [2]Research Scholar, College of Education, TMU, Moradabad (U.P.)*

**ABSTRACT**

In today's scenario a apart from having good academic and professional qualifications, teachers should also posses the knowledge of professional ethics. Professional ethics is like a guide, which facilitates the teacher to provide quality education and inculcate good values among learners. all teachers must demonstrate integrity, impartiality and ethical behaviour in the classroom and in their conduct with parents and co workers. a good teacher may provide a better tomorrow to his students and a bad teacher may a bitter tomorrow. Teacher may be called- The priest of knowledge, leader of progress and custodian of the highest values. Therefore, this paper will highlight the importance of professional ethics for teacher.

◆◆◆◆

## Teacher and Professional Ethics: In Present Perspective

**Dr. Santosh Arora[1] and Anit Kumar Srivastava[2]**
*[1]Professor, [2]Research Scholar, Department of B.Ed. \M.Ed. (IASE)MJP Rohilkhand University, Bareilly (U.P.)*

**ABSTRACT**

Teaching profession is an honourable and social-good conduct and known as society makers. It is the only one profession which is known as a strongest medium to express

unique socio-culture identity. It is very respected and well known profession in India. India is a spiritual, ethical, value based country from ancient era. Through this article draw a pay attention towards Teaching Profession, its critical issues, factor affect which is decline the moral value. and increase corruption, unfair practices, student-teacher relation for improvement in Ethical Decline problem make a solution to provide a value based education in Traning System, which grow a general person as a trained teacher, who have qualities that are socially approved and desirable change as the need of society.

**Key words:** Teacher-Training, Professional Ethics, Ethics, Ethical Principles

◆◆◆◆

## Teacher and Professional Ethics

**Lohans Kumar KalyaniAnd Neeraj Yadav**
*Assistant Professor, Department of B.Ed, Sri Lal Bahadur Shastri Degree College, Gonda (U.P.)*

### ABSTRACT

Teaching has been accepted as the noblest profession among all the professions because teachers create world by creating the citizens of future who inherit the world from their fathers. Teacher is the one who can shape it and change it and what they do makes an impact on the world. In this noble profession not only the students learn but the teachers also learn the lessons of life. Teaching not only shows the right path that the students should follow but also inculcate the ethical principles, knowledge, decision making that helps them in contributing resource for the further development of the nation. Teaching has a great power to shape and to prepare the young generations to be experts in related spheres. all professionals have adopted the same method to bring the change in them. a teacher must not only be a master of the material but also an effective communicator, quick problem solver, constant innovator and social organizer.Present paper highlights professional ethics for teacher educators. We should mould ourselves as per changes in society. We must consider the right and wrong aspects for every event.

**Key words:** Ethics, Professional, Obligation, Knowledge, Communicator

◆◆◆◆

## The Teachers and Professional Ethics

**Shikha Singh**
*Research Scholar, Department of Education, Mahatma Gandhi Kashi Vidyapith, Varanasi (U.P.)*

### ABSTRACT

The purpose of this study is to analyze the importance of 'Professional Ethics' because in the present time we live in the globalization and competitive word and we see the

lots of change in our educational system. Since, amendment is inevitable the aims and objectives of education is dynamic consistent with necessity, interests and necessity of learner. a teacher in this era has many responsibilities and duties to play. Excluding having good academics and professional qualities, they must have also posses the knowledge of Professional Ethics. Professional Ethics is like a guide, which facilitates the teacher to provide quality education and inculcate good values among the learners. Teachers having the senses of professional ethics will treat their learners amorously, care, affection and commitment. Therefore, this paper specially highlights the need and importance of Professional Ethics for the teachers.

**Keywords-** Profession, professionalism, Ethics and values, and Professional Ethics.

◆◆◆◆

# Teacher and Professional Ethics

**Dr. Anju Rani**
*Assistant professor, Ganpati Institute of Science and Technology, Mohan Nagar, Ghaziabad (U.P)*

## ABSTRACT

In this era of modernisation and globalisation, it seems like India has lost its value based society and has been transformed into a materialistic society. It is the result of thinking and behaviour of the human being. Now the crisis is , why this change took place and how we can set it back in place. Education is the major agency that can be used to make any changes, hence if only the teacher or management changes their mindset from commercialized ideas to value based thoughts, can we set things right.

Teachers play a huge role in student's lives, and build a major influencing factor for them right from the childhood. They, with the help of chalk and board, can help students develop thoughts that will help them to paint their own world. Regarded as the noblest profession of all, these educators can lay the foundation of student's life. apart from imparting academic knowledge, these mentors are also responsible for inculcating moral values in their students.

As role model, teachers must follow a professional code of ethics. This ensures that students receive a fair, honest and inflexible education. a professional code of ethics outlines teacher's main responsibilities to their students and defines their role in student's lives. Professional ethics determines their responsibilities towards the students. accordingly, it is considered necessary that there should be a code of ethics which may be evolved by the teaching community itself for its guidance. This article presents a glimpse of the value system that existed in India during the Gurukul age, the British reign and also analyzes the present situation. It highlights from various reviews that the education system in India has the potential to nurture the desired value system

◆◆◆◆

# Teacher and Professional Ethics

**Shally Verma**
*Assistant Professor, Saraswati Institute of Management And Technology*

**ABSTRACT**

Teaching is the noblest profession among all the professions, since all professions underwent education with a teacher. Its also a process to prepare the next generation of skilled professionals and workers like politician, engineers, doctors, policemen, educators, legislators and good citizens. In this world of globalization and competitive world, we are witnessing diverse changes in our educational system. Now the concept of teacher and teaching also is changing day by day. a teacher in this contemporary era has many duties and responsibilities to play. apart from having good academic and professional qualifications, they should also posses the knowledge of professional ethics. Professional ethics is like a guide ,which facilitates the teacher to provide quality education and in calculate good values among the learners. The professional ethics will enlighten the teachers, that they have a major role in bringing desirable changes in behaviour of the students, it also help the teachers to understand their profession as a teacher. Their role is not just to become supreme and authoritarian in front of their students and colleagues. But then they have a wider and meaningful role to play. teacher having the sense of professional ethics will treat their learners with love care affection and commitment.

◆◆◆◆

# Crucification of Indian Constitution: Emergence of Crisis towards Clashes of Civilization

**Md. Matin Arif [1]and Dr. SantoshArora[2]**
*[1]Research Scholar, [2]Professor, Department of B.Ed. / M.Ed. (IASE) M.J.P. Rohilkhand University Bareilly*

**ABSTRACT**

The preamble of Indian constitution preserves the soul of democracy. But the current political governing bodies scatter the spectrum of diversity which our ancestors preserve and protect from centuries. When we celebrate the seventh decades of our freedom and republic identity as a democratic country, our political parties create a environment of threats among their citizen for their narrow profit but there greedy ambition bring the nation into uncivilized culture and nourish the false patriotism and perception of growth but they are unable to protect the fundamental rights of citizen. Therefore it is time to stand and raise voice to protect our culture which was flourished by the diversity of religion and caste. In the following paper we focus to reestablish the human value which have establish by our

constitution. and stand against the inequality and injustice in the present scenario of policies frame by political parties. and nurture and nourish the noble human virtues which are the ray of progress and prosperity of humanity.

**Key words:** Preamble of Indian constitution, Fundamental rights, Human virtues

◆◆◆◆

## Professional Ethics and Accountability in Education for Teachers

**Dr. Shazli Hasan Khan**
*Assistant Professor, MANUU College of Teacher Education, Sambhal (U.P.)*

**ABSTRACT**

In a world of science and technology, it is education that determines the level of prosperity, welfare and security of the people. This is not a mere statement of faith in education as expressed by the Education Commission (1964-66) but a very well proven truth as well. While education of acceptable quality depends on many factors including curriculum, infrastructure, teaching-learning material and methods, educational technology, etc. yet the most important among these factors is the teacher. It is he who is directly responsible to operationalize the process of education, establish intimate contact with learners and motivate and train them in various aspects of their personality in a manner that they are successfully initiated into the society as its young, promising, productive and responsible members who are capable to face the challenges of life effectively. Like many other professionals, a teacher also needs initial education and training of reasonable length and quality which has to be followed by regular life-long professional development equipment sharp and useful in the ever changing contexts.

◆◆◆◆

## Human Values and the ConstitutionAnd Politics of India

**Dr. Mudabbir Qamar**
*Asst. Prof Political Science, Govt. Degree College, Kuchalai, Sitapur (U.P.)*

**ABSTRACT**

Gandhiji said that 'Politics without ethics and religion is incomplete.' The above statement of the Gandhiji is not only applied on the politics but also on the all walk of the life that is economics, social, cultural and in the personal life also. Without ethical values any things or actions could not be determine right or wrong, good or bad. Moral and ethical values that include, honesty, integrity, gratitude, forgiveness, kindness, tolerance, fraternity,

and non-violence, lead in human values. Human values are universal in nature that is why they are founding their existence in all religions and cultural traditions. Ethics or human virtues can survive without religion, but religion could not remain without ethics. This shows the importance of human virtues in religion.

Human values had played key role of limitation or checker of political power of the king. These were foundation of common good and welfare of the people. King was bind to follow the ethical tradition of the society.

Present day politics of our country is filled with corruption, bribery, nepotism, and power of wealth. In addition, the politicians' political campaign, and politics synchronized with intolerance and communal hatred. That is why; the politics of the present time is isolated with ethics and human values. The era of the globalization politics became a tool of accumulation of wealth and power in the shortest period of the time.

The paper is ascribed on the importance of human values in politics. It also gives a detailed explanation about the human values and their role in the society and polices.

◆◆◆◆

# A study of Emotional Intelligence of Senior Secondary School Students in relation to their AcademicAchievement

**Prem Kishor Sharma**
*Vice Principal, Govt. S.B.V. Nand Nagri, E –Block Delhi*

**ABSTRACT**

**The Present study titled "A study of Emotional Intelligence of Senior Secondary School Students in relation to their AcademicAchievement"** has been designed to investigate the relationship between EI and academic achievement. Emotional Intelligence at the most general level refers to the ability to recognize and regulate emotions in one self and others (Goleman, 2001). It has been defined as "The ability to reason validly with emotions and with emotional related information, and to use emotions to enhance thought" ( Mayer et al. 2016)

Emotional Intelligence is made up of a set of skills, which can improve through nurturance and education. Home and school are the prime locations for promotion of emotional intelligence because most of the time child would either be at home or school. at school; teacher can make an effort in this direction. Hence, school is the best place where emotional and social competence may be nurtured in its natural way. This study was also attempted to determine whether students from different genders are different in Emotional Intelligent.

The specific objectives of this study were: a) To study the emotional Intelligence of

class XI male and female students. b) To study the emotional intelligence of students belonging to rural and urban areas. c) To study the relationship between emotional intelligence and academic achievement of students studying in class XI.

A sample of 600 students (300 male and 300 female) of Delhi & NCR region was selected keeping in view their gender and locality. They were administered a scale of emotional intelligence developed by Mishra (2007). For measuring the academic achievement of students the marks obtained by the sample subjects in secondary CBSE Board examination were considered as their academic achievement. The collected data was analysed as per objectives of study by using statistical techniques.

The results of this study revealed that (a) there was no significant difference between emotional intelligence of male and female students. (b) Rural students were securing higher mean scores for emotional intelligence than their urban counter parts and (c)There was significant positive correlation between emotional intelligence and academic achievement of school students studying at senior secondary level.

◆◆◆◆

## Psychology and Human Values

**Dr. Reeti Chauhan**
*Asst. Prof. NECST Ghaziabad (U.P.)*

**ABSTRACT**

What values are, how they can orient your life, and possibly impart meaning and a sense of purpose- The term "values" is short hand for hinting at complex levels of imagination. It ranges from one's dreams and their roots in unconscious night processes to more preconscious daydreams and conscious aspirations. In psychology Value refers to the relative importance that an individual places on an item, idea, person, etc. that is part of their life. These feelings are unique to the individual. Our values inform our thoughts, words and actions. Values are internalized cognitive structures that guide choices by evoking a sense of basic principles of right and wrong, a sense of priorities, and a willingness to make meaning and see patterns. Values are potential capital fueled by hope and the motivation to expand and go forward. Values are words commonly used to mean beliefs but values are typically unconscious and implicit motivators. They fuel emotions, feelings, thoughts and behaviors. Their appeal to one's self-interests is profound, if not excitingly pleasurable. Making progress in life is a massive endeavor. Values connote practices because one's values strongly influence how one behaves. What are values for? In people's own understanding, values regulate society and interpersonal relations, and they guide moral behavior, the distinction between right and wrong. In this sense, values are not just motives but socially shared concepts that serve a communal function. Examples of individually-

inspired, healthy values include a long list: safety and survival, self-development, balanced life, confidence, self-discipline, creativity, family, relationships, emotional security, fulfillment, patience, forgiveness to self and others, gratitude, health, peace of mind, happiness, self-care/hygiene, grooming, integrity, being accountable, financial security, freedom, self-reliance, interdependence, service, non-violence, occupation, helpfulness, sharing, perspective taking, flexible co-operativity, empathy, compassion, non-kin loving-kindness, success, personal truth, wisdom, spiritual refinement.

◆◆◆◆

# A study of Parent, Child Relationship in Relation to Adjustment and Values

**Dr. Sanjay Kumar[1]and Mr.Sarthak Singh Tomar[2]**
*[1]Assistant Professor, Departt. Of Education,Affiliated college, CCS University, Meerut*
*[2]ATMS College of Education, Hapur,Affiliated college,CCS University, Meerut (U. P.)*

## ABSTRACT

This paper is related relation of parent and child. all scholars and educationists agreed the personality of a child develops with constant interaction between biological inheritance and environmental force. The parents play most important role in shaping the personality pattern of the child in early infancy. Home provides the first environment interaction for the child to move around here and there, the child comes in contact with his parents. Therefore the study of personality and psychology of the child is the most important factor. The relationship between parent and child is very important because these relations are the foundation of the personality of the child. For the better survival in the society family is the only agency which bends the child accordingly. The factors are very important in the family for children are sense of communication, emotional bond of love and affection. This emotional bond can term as 'Parent child relationship'. Child psychologist of human development branch studied that in the starting of life few years of the life of the children made the variation in the behavior of the growing child. Emotional intelligence is considered now a day's vital for success then why don't we start teaching its components to our students and at schools. It affects student's achievement and then it is imperative for schools to integrate it in their curriculum, hence raising the level of student's success.

**Key words:A**djustment, relationship, values.

◆◆◆◆

# Role of Welfare Schemes for Human Development in India

**Dr. M.P.S. Yadav**
*Assistant Professor, Commerce Deptt., Govt. Raza P.G.college, Rampur (U.P.)*

**ABSTRACT**

Human development is a well being concept with a field of international development. It involves studies of the human conditions with its core being the capability approach. at global level there are different countries which are divided into the developed countries, developing countries and least developed countries. a developed country, industrialized country, more developed country, or more economically developed country (MEDC), is a sovereign state that has a developed economy and advanced technological infrastructure relative to other less industrialized nations. Human Development Index is a composite index to measure the development of human resources in each country and four indicators of life expectancy, income per capita, the average number of years studying and hope to the number of years of education will be formed. Countries, according to the Department of Human Development Index rates countries with high human development, countries with high human development, and human development countries with medium and low human development countries are divided. Development Goal is creating conditions where people can live long and healthy life and knowledge benefit. Human Resource Development Index as one of the important indicators of economic development for each country and is considered an effective role in economic development. Importance of human development index led put review Indian economy. In this article we will consider role of various welfare schemes of three indicators of human resources in India. In addition, we will evaluate relationship and mutual effects of each of the three indicators of human resource development in the Indian economy using the latest (2010) formula provided by the United Nations. It is an alternative approach to a single focus an economic growth and focused more on social justice, as a way of understanding progress. Present paper is a study of economic development and human development through various welfare schemes.

◆◆◆◆

# Dynamic Relations of Conflict and CongruityAmong Human Values

**Dr. Poonam Sharma**
*Associate Professor & Head, Department of Teacher Education, J. V. Jain College, Saharanpur (U.P.)*

**ABSTRACT**

When we think of our values, we think of what is important to us in our lives (e.g., security, independence, wisdom, success, kindness, pleasure). Each of us holds numerous

values with varying degrees of importance. a particular value may be very important to one person, but unimportant to another. We can summarize the main features of the conception of basic values as "Values transcend specific actions and situations. They are abstract goals. The abstract nature of values distinguishes them from concepts like norms and attitudes, which usually refer to specific actions, objects, or situations." The theorists view values as the criteria people use to evaluate actions, people, and events.The paper presents ten motivationally distinct value orientations that people in all cultures recognize, and it specifies the dynamics of conflict and congruence among these values. Ten motivationally distinct values are derived from three universal requirements of the human condition: needs of individuals as biological organisms, requisites of coordinated social interaction, and survival and welfare needs of groups. Schwartz describes the ten basic values as Self-Direction,Stimulation,Hedonism, achievement, Power, Security, Conformity, Tradition, Benevolence and Universalism.

Schwartz explicates a structural aspect of values, namely, the dynamic relations among them. actions in pursuit of any value have psychological, practical, and social consequences that may conflict or may be congruent with the pursuit of other values. The conflicts and congruities among all ten basic human values yield an integrated structure of values.

This integrated structure of values provides a framework for relating the system of ten values to behaviour that enriches analysis, prediction, and explanation of value-behaviour relations.

◆◆◆◆

## The Reality of Corporate Social Responsibility as part of Business Ethics in India

**Dr. Zubair Anees**
*Assistant Professor, Department of Commerce, Government Raza P.G. College, Rampur (U.P.)*

**ABSTRACT**

Philanthropy is a part of Indian culture and tradition since long. But, at the same time, there are cases ofgrave irresponsibilities and inhuman behaviour of the corporates.In India, the concept of CSR developed mainly post globalisation and liberalisation.Now CSR is no more remained as philanthropy, but now it is looked upon as the welfare policy of the Government.

Government introduce CSR because they wants corporation to become more responsible for the society or for its stakeholders itself.Two major initiatives taken by Government in this regard. The first was to extend the reservation policy of the government

to the private sector, and the second was to make it mandatory for all the companies to invest a part of their profits in CSR activities. The Companies act 2013 has made provisions related to CSR viz. Section 135, Companies (Corporate Social Responsibility) Rules, 2014 and Schedule VII which ensures that corporates must contribute at least 2% of their net profits towards CSR which made Indian companies to consciously work towards CSR. Though it required a prescribed class of companies to spend a portion of their profits on CSR activities.

However, the corporates were continuously bypassing the soul of CSR and it remained only a voluntary affair. There are only few companies that are practising CSR and even less have a written CSR policy. CSR activities of the corporates in India are mainly in the nature of providing some public amenities; a few infrastructure development activities, like constructing schools rooms and community halls etc.; creating awareness about various issues like family planning, health and sanitation; organising health check-up camps; and providing some vocational training to the rural youth etc. Their activities are targeted more towards the promotion of their businesses, than to the issues they project themselves to be working on.

This paper tries to look at the policy evolution of CSR, analysis of CSR at the ground level and how CSR is becoming a tool of marketing for corporates promoting sales of their own products.

◆◆◆◆

## Economic Welfare and Social Values

**Ritu Pahwa**
*Department – Econimics, MJP Rohilkhand University, Bareilly (U.P.)*

**ABSTRACT**

Welfare economics is the study of how theallocation of resources and goods affects social welfare. This relates directly to the study of economic efficiency and income distribution, as wellas how theyaffect the overall well-being of people in the economy. In practical application, welfare economists seek to provide tools to guide public policy to achieve beneficial socialand economic outcomes for all of society. However, welfare economics is a subjective study that depends heavily on chosen assumptions regarding how welfare can be defined, measured,and compared for individualsand societyasa whole.

But moral thinking, in practically every known culture, enjoins us not to place undue emphasis on our material concerns. We are also increasingly aware that economic development—industrialization in particular, and more recently globalization—often brings undesirable side effects, like damage to the environment or the homogenization of what used to be distinctive cultures, and we have come to regard these matters, too, in moral

terms. On both counts, we therefore think of economic growth in terms of material considerations versus moral ones: Do we have the right to burden future generations, or even other species, for our own material advantage? Will the emphasis we place on growth, or theactions we take toachieve it, compromise our moral integrity? We weigh material positives against moral negatives. I believe this thinking is seriously, in some circumstances dangerously, incomplete. The value of a rising standard of living lies not just in the concrete improvements it brings to how individuals live but in how it shapes the social, political and, ultimately, the moral character ofa people. Economic growth—meaning a rising standard of living for the clear majority of citizens—more often than not fosters greater opportunity, tolerance of diversity, social mobility, commitment to fairness, and dedication to democracy. Ever since the Enlightenment, Western thinking has regarded each of these tendencies positively, and in explicitly moral terms. Even societies that havealready made greatadvances in these very dimensions, for example, most of today's Western democracies, are more likely to make still further progress when their living standards rise. But when living standards stagnate or decline, most societies make little if any progress towardany of these goals,and inall too many instances they plainly retrogress. Many countries with highly developed economies, including the United States, have experienced alternating eras. How the citizens ofany country think about economic growth, and whatactions they take in consequence,are thereforea matter of far broader importance than we conventionallyassumes in flux. Although interconnection between social values and economic development is not completely uninvestigated, there is no clear understanding how socialand economic spheresare connected

◆◆◆◆

## Welfare Economics and Human Values

**Rajni Sharma**
*Assistant Professor, Department of Education, New Era College of ScienceAnd Technology, Ghaziabad (U.P.)*

**ABSTRACT**

The aim of this paper is to classification of the key concepts necessary for the understanding welfare economics, as well as the way, the role of human values in welfare economics. Welfare economics is a branch of economics that uses microeconomic techniques to evaluate well-being at the economy level. The principles of welfare economics give rise to the field of public economics. Welfare economics seeks to evaluate the costs and benefits of the changes to the economy and guide public policy towards increasing the total good of society, using tools such as cost benefits analysis and social welfare function, and a subjective study that depends heavily on chosen assumption regarding how welfare can be defined, measured and compared for individuals and society as a whole. we explore the potential of general human values for explaining welfare economics. Human values are the principles, convections and internal beliefs that people adopt and follow in their daily activities. Ethics

or moral philosophy is a branch of philosophy that involves systematizing, defending, and recommending concepts of right and wrong conduct.

The role of human values or culture as an underlying determinant of market efficiency and overall economic performance has been emphasized and explored by among others. The economic performance of a country or economic area will be measured by its trend rate of economic growth and its ability to preserve price stability.

◆◆◆◆

## Business Ethics and Human Values: An Overview in Indian Context

**Umra Khan[1], Syad Abdul Wahid Shah[2] and Dr. Pravesh Kumar[3]**
*[1]B.Ed. II Year, [2&3]Dept. of Edu., Govt. Raza P.G. College, Rampur (U.P.)*

**ABSTRACT**

In a country where morals and values were considered most important and a rich culture believed to be created by God full of values and virtues, a country where everything was based on human values, but nowadays all these are depleting due to casual approach by entrepreneurs, professionals, and government agencies. "Business Ethics and Human Values" has become the hot topic in business world today. Their importance of mutual trust and ethical practices increases in this era of globalisation and multinational competition. There are various issues related to business and human values in this corporate world today. a.B. Vajpayee calls for "zero tolerance" for corruption and unethical legal practices. The recent scams have already weakened this foundation. Emphasizing on mutual relationship between the business and the society, business exists in a society so it should consider the society. The purpose of this article is to make aware all the people concerned directly or indirectly about the business ethics and human values and tohighlight the business success in an era of societal globalization and suggest how thebusiness should conduct its multidimensional activities to pursue its social obligationsin a transparent manner.

**Key Words:** ethics, values, virtues, multidimensional.

◆◆◆◆

## Sports and Human Values

**Dr. Bharti Sharma**
*Assistant Professor (Physical Education), Shaheed Mangal Pandey Govt. Girls P.G. College Meerut (U.P.)*

**ABSTRACT**

*"Sportsmanship cannot be thought; it can be inculcated in ones persona through only one thing, called **SPORTS**." **Sandeep Sahajpal.*** Values and sports go

hand in hand. Human values are the virtues that guide us to take into account the human element when we interact with other human beings. Without values there could be no sports and without games and sports there could be no human values. Sports provide wider social learning, opportunity to face different situations of love laughter anger jealous adjustments togetherness and much more. Sports provide inclusive lifelong learning opportunities and innovative thought provoking conditions for the children and the grownups. according to UNESCO Sport can teach values such as **fairness**, teambuilding, **equality**, discipline, **inclusion**, perseverance and **respect**. Sport has the power to provide a universal framework for learning values, thus contributing to the development of soft skills needed for responsible citizenship. UNESCO has also started a program called Value Education through Sports (VETS). Participation in sports provides a deeper understanding of ethical and moral issues and also develops a better social cohesion. The athletes develop readiness to take any responsibility and to be accountable for their actions and choices. They better evaluate the situations, their solutions and understand the diversity of the conditions or people. This paper exhibits the role of sports in developing human values. Reviews of the various research programs explains the sports and physical activity provides platform to grow in terms of physical mental and social development of the human beings with the highly raised values which makes them stand different from others and generous for the living beings.

**Keywords:** human values, sports, UNESCO

◆◆◆◆

## Influence of Kapalbhati Pranayama on Brain Function, Blood PressureAnd Lung Capacity

**Anil Kothari[1*], Bhanu Prakash Joshi[2] and Priyanka Joshi**
*[1]Research Scholar Department of Yoga, Uttarakhand Open University, Haldwani (U.K.)*
*[2]Head, Department of Yoga, Uttarakhand Open University, Haldwani (U.K.)*

**ABSTRACT**

Kapalbhati Pranayama is a breathing exercise that brings a state of lightness on the frontal lobe of the brain and calming the mind. Influence the respiratory system positively in a manner to ward off impurities from the body. It has also found its position in many ancient texts of yoga. Kapalbhati Pranayama has a significant role in Brain, Cardiac and Respiratory system physiology. Collectively this study suggests a number of areas where Kapalbhati pranayama may be beneficial and also helpful for modern day needs.

**Key Words:** Kapalbhati Pranayama, Brain Function, Lung Capacity, Blood Pressure.

◆◆◆◆

# Role of Yoga in Physical EducationAnd Human Values

**Dr. Deepshikha**
*Assistant Professor, Dept. of Chemistry, M.M. College,*

**ABSTRACT**

Ageing changes are of physical, psycho-physiological and biochemical nature. In ageing all aerobic organisms are exposed to oxidative stress and gradually the functioning abilities of almost all organs are reduced. This in fact leads to reduce one's immunity power and as a result overall health related fitness declines. In old age since body does not permit for vigorous activities, one can think of yoga-a healthy lifestyle. The claims of traditional Yoga texts and supportive research evidences indicate that Yoga is a powerful way of life not only to improve one's health related fitness but also to show path to live healthy in delaying old age.

The Indian concept of education is more inclined towards spiritual development, receiving knowledge and disciplining the mind as well. Swami Vivekananda viewed education as "manifestation of divine perfection already existing in man." He said, we want that education by which character is formed, strength of mind is increased, and the intellect expounded and by which one can stand on one's own feet.

◆◆◆◆

# The Role of Yoga in Education And Human values

**Dr.Vandana Rathore**
*Assistant Professore, Department of, Zoology, Government Degree College, Bilaspur, Distt. Rampur (U.P.)*

**ABSTRACT**

Yoga education is required to uphold the dignity of human beings and it recommends different values which safeguard of the whole humanity. It takes the responsibility to device a system, method and aims to attain peace. Yoga education aimed the development of proper attitudes, emotions and character in society. Yoga education is primarily concerned with the questions of value, with issues of ethics and social philosophy. Yoga is one of the Indian philosophical systems that emphasize the importance of the work with the body to develop healthy behaviors and thoughts. Among all its techniques the physical postures, called asanas in Sanskrit, are the ones that got. It is necessary to remember that sports and gymnastics belong to the scope of physical education. Both Yoga and Physical Education in their origin use the body as a tool for developing attitudes and abilities that are important to achieve physical and mental health.

**Key words:** Yoga, exercise, science, physical education in school, muscle.

◆◆◆◆

# Yoga physical educationAnd human values

**Monika**
*Lecturer, S.M.C.E.T. Hapur (U.P.)*

**ABSTRACT**

Human beings are made up of three components—body, mind and soul corresponding these there are three needs—health, knowledge and inner peace. Health is physical need, knowledge is our psychological needs and inner peace is spiritual need when all three are present then there is harmony.

Yoga gives us relief from countless ailments at the physical level. The practice of the postures (asans) strengthenes the body and creates a feeling of well being. From the psychological view point, yoga sharpens the intellect and aid in concentration; it steadies the emotions and encourages a caring for others.

◆◆◆◆

# Inculcation of Human Values: YogaA Perfect Means

**Mohammad Sharique**
*Assistant Professor, Department of Physical Education, Khwaja Moinuddin Chishti Urdu,Arabi-Farsi University, Lucknow (U.P.)*

**ABSTRACT**

No doubt, technological excellence in the new millennium has made our life more comfortable and luxurious. But, it is equally true that we have lost the moral and spiritual realms. Values are the concepts that describe human behavior. They have always been considered desirable ideals and goals, which are intrinsic, and when achieved, in fact, evoke a deep sense of fulfillment.

These days in continuously changing conditions, values are left far behind and there is gross erosion of values of individual to keep pace with the society in order to fulfill one's desire to be at the top. The erosion of human values of truth, co–operation, non–violence, peace, love, respect of parents, elders, authority and hard work is leading to the decay of moral and social fabric of society at a speed never witnessed in the history of civilization.

The ancient Science and art of Yoga is the real, time–tested, comprehensive, long–term solution to all human problems. The greatest advantage of Yoga lies in the fact that it addresses human problems at individual and collective levels. It helps create harmony within the person and the society in which he lives. It integrates body, mind, intellect, emotions and spirit. Integration brings harmony and harmony brings happiness.

Yoga plays a big role in inculcating ethical, moral and spiritual values in children.

Yoga is not just about Pranayama and asana; in fact, it reaches far and influences the moral and ethical values of life. The spiritual dimension of yoga is about the development of values. The yogic activities try to evoke feeling of self–actualization in one for realizing one's true potential.

**Keywords:** Human values, harmony, problems, yoga.

◆◆◆◆

## Yoga in Health and Human Value Education

**Dr. Kumudlata Singh[1] and Vivekanand Singh[2]**
*[1]Assistant Professor, Department of Physical Education, D.G.P.G College, Kanpur (U.P.), [2]Assistant Professor, Department of Sociology, N.R.E.C College, Khurja (U.P.)*

**ABSTRACT**

although Education is a key as wells a catalyst of social transformation and expected to bring about quality change in man perception. attitudes, priority and aims, the real sense of value in now-days somewhere missing. The present system of education is information oriented not character based. It is consumerist in nature and makes one selfish, self centred. Irreverent and cycling. Is no emphasis on such basis value as truth, love, honesty, humanity, compassion, forbearance and justice, it makes one conscious about one right not duties, the net result is that a strongly individualistic and materialistic culture has taken birth, which promote self-aggrandizement, nurtures opportunism and chicanery, and generates tension in society.

Thus, to impart real education for retaining the human health and values in the way of peaceful life, various claims of tradition yoga –which is an essence of Indian culture-need systematic verification, this piece of research, therefore, may be of imminent significance for reforming real education in the society.

**Key words:** Yoga, Value, Education.

◆◆◆◆

## Yoga and Athlete

**Dr. Jitendra Kumar Baliyan**
*Asst. Prof. Physical Education, SMP Govt. Girls P.G. College, Meerut (U.P.)*

**ABSTRACT**

athlete of all sports and games needs mental toughness along with physical strength. Mental practices prepare one to achieve higher limits. Healthy heart and healthy mind can

make us winner in every sphere of life. Yoga nowadays is an essential component in their training and conditioning programs. It not only prepares us to perform better but also reduce the risk for injury. Yoga equals to practice while sports equals to training the athletes. But the one thing that connects these two together is the attainment of whatever aim one wants to achieve. as a matter of fact, yoga can be very helpful training for athletes. More and more athletes nowadays are turning to yoga to help improve their performance. It has a gentle exercise system consisting of numerous stretching movements that is extremely helpful in healing. It uses body, breath and senses to deal with various mental and physical problems. The benefits of yoga are unlimited. The obvious is the increased flexibility throughout the muscular system, but there is not much more. The athlete can be benefitted by increasing mobility in the joints, thus increasing range of motion for overall enhanced performance. The athlete will be able to reach farther, fall harder while preventing and minimizing injuries because their muscles have a memory (like a rubber band) from the deep stretching obtained through practicing yoga on a regular basis. Yoga postures are the physical positions that coordinate breath with movement and with holding the position to stretch and strengthen different parts of the body. asana practice is the ideal complement to other forms of exercise. Especially running, cycling and strength training, as the postures systematically work all the major muscle group, including the back neck and shoulders, deep abdominal, hip and buttocks muscles and even ankles, feet, wrists and hands.

**Keywords:** Yoga, athletes, mental practices

◆◆◆◆

## Indian CultureAnd Human Values

**Smt.Aruna Sharma**
*Associate. Prof. B. Ed. Department, D.A. K. Degree College, Moradabad (U.P.)*

**ABSTRACT**

Since ancient times, India had the concept of Vasudhaiva Kutumbakam. Globalization has become an expression of common usage in the modern era. While to specific, it signifies a valiant different domain with no obstacles, for others, it curses disaster and devastation. The perspectives are different in view of their practical experiences.

The humanity is hurrying hastily into superior merger that is motivated by pecuniary influences and conducted by a philosophy of fair success and pecuniary competence.

Educational morals of a civilization comprise the fundamental of its structure of representations. Constantly imposing upon it are the morals structures of the country, the society, the talents and the disciplines, and the many other cultural sub systems of a society. But there is no sign in any progress in " Godly prophecy, " with the consequence that routine life is pretty further doubtful. Ethics and righteousness are ailing. This can be attributed

mostly to the trend for obtaining contemporary technical devices. Similarly, education has turned out to be costly and far elsewhere the wants of people in emerging countries. Further, there is a bent to demonstrate, to look to be better off. This kind of demonstration is sufficient for fall in morals.

Societies in all regions of the globe require uniting in this deliberation to affect purity in their welfares and interests. The route of re-conceiving universal domination must be wider and individual growth can deliver agenda for this search.

◆◆◆◆

# Indian Culture and Human Values: Importance in Educational System

**Mrs. Sushma**
*Assistant Professor, B.Ed Department, DayanandArya Kanya Degree College, Moradabad (U.P.)*

**ABSTRACT**

*"Karmanye Vadhikaraste, Ma phaleshou kada chana,*
*Ma Karma Phala Hetur Bhurmatey SangostvaAkarmani*

*कर्मण्येवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन।*
*मा कर्मफलहेतुर्भूर्मा ते सङ्गोऽस्त्वकर्मणि।।*

*You haveA right to perform your prescribed duties, but youAre not entitled to the fruits of yourActions. Never consider yourself to be cause of results of yourActivities, nor beAttached to inaction."*

Indian society has developed its culture through assimilation of various religions and culture received by way of trade, invaders, settlement, religious movements, etc. Indian society being a highly religious society primarily focuses on one's duties rather than individual rights. Such ideals as enshrined in the religious texts like Bhagwat Geeta, Vedas, Upnishad, Mahabharata, Ramayana, Purana etc have inspired the generation to follow Dharma in righteous way.

India's religious traditions, both indigenous and foreign, have been established over the years. Indian society being a religious society naturally gives utmost importance to the humanity. The tenets of every religion and culture inculcates into the child values of speaking truth, practice of non violence, contentiment. The Indian Parliamentary Committee on Value Education in February 1999 identified five core universal values as: (a) Truth (b) Righteous conduct (c) Peace (d) Love and (e) Non-violence. These values are derived from various sources of Indian tradition and culture. Important values that are ever relevant and

unchanging are found in the form of scriptural texts of India 1. Vedas 2. Bhagavad Gita 3. Manusmriti 4. Ramayana 5. Kama sutra 6. Jataka-tales 7. Dhammapadda.

India is a land of unity in diversity where people of different sects, caste and religion live together. India is also called the land of unity in diversity as different groups of people co-operate with each other to live in a single society. Unity in diversity has also become strength of India. Except Britishers, all other persons coming to India have settled here and adopted the Indian way of living and culture. The mixing of the people from other civilization with Indian civilization in life and culture enshrines that the whole world is a family ": 'Vasudhaiva Kutumbakam'

**Key Word:** Indian Culture, Human Value, Vasudhaiva Kutumbakam, Education, Ramayana, Veda

◆◆◆◆

# Education System in Modern Era: An Analytical View of Indian Culture and Human Ethics

**Dinesh Joshi**
*Assistant Professor, Department of Commerce, Government Degree College, Kanda, Bageshwar-263631(U.K.)*

## ABSTRACT

The western education takes a boy and puts knowledge into his head, but Gurukula education theory is knowledge should not be got from outside it is already there inside, it comes from within. Today a student is given textbook to put into memory and then put back into a booklet during examination, which is very alarming situation for Indian upcoming generation because due to this system every kid going to learn like a puppet, not understanding the concept of educational values. In India, lack of education in a huge number of individuals has turned the dreams of 'Education for all' into empty dreams. Mainly, population explosion has put an weight on its available infrastructure and resources. as indicated by 2011 evaluation, literacy rate has gone just up to 74% from 65%. For male, it has increased to 82% from 75%, for females to 65% from 54%. In absolute terms, the figure is jittery. No country can stand to have an expansive number of its population to stay uneducated, insensible and incompetent. It is the reason that questions and debates have been taking place on the type of education systems that the country had and the one that it currently has. We have abandoned our ancient Gurukula Style of Education system, which is a 5000-year old Hindu tradition of transmitting higher knowledge and enlightenment to the students by yogic powers by the Guru with an aim to develop the latent yogic powers of the child and build him up into a Moral & Spiritual daring with attention to character building to build students into a real Purusha, and not just a walking computer. The present paper shows the benefits of Indian

values education in ancient times and also shows some critics of modern educational system.

**Key words**: Character, Latent, Spiritual, Enlightenment

◆◆◆◆

## Human Values in Indian Culture

**Dr. Priyanka Verma**
*Assistant Proffesor, Dept. of Education, Jyoti College of Management Science & Technology, Bareilly (U.P.)*

**ABSTRACT**

Values are those ideals, objects and preference that are universally 'Good' and desirable and are committed to what is Right and True. Values may belong to different spheres of activities and human existence, such as physical, social economic, intellectual, cultural, emotional, aesthetic, moral and spiritual. The tree of Indian value system is deeply rooted in the soil of our ancient culture and tradition. Our ancient culture and tradition depend on the human valued. Dharma, artha, Kama, Moksa are the main basic values in the Indian culture. The major aim of Vedic education was to promote understanding of the moral values of life. Gita highlights the human values in totality. In Manusmrti Dharma is essential for the individual's happiness and for the family and the society. Ramayana contains the universal human values. Rigveda has beautifully spell out the right to equality. Human values are mainly emphasis on Vedanta Shastra. Upnishad contains immortal truth realized by a pure & sense-free mind. Vidhura Niti having relevance even today. Buddhism is also give messages of non-violence, equality, brotherhood and friendship. Buddha said that self-power, self-reliance & unity were the key-points for the development of human society as well as nation. In present children have the potential to acquire values through education. according to Indian philosophy life without values is a meaningless and a baseless concept. So the value education is essential.

◆◆◆◆

## Indian Culture and Human Values

**Hemlata**
*Lecturer, S.M.C.E.T. Hapur (U.P.)*

**ABSTRACT**

Ethics is a study of moral issues in the fields of individual and collective interaction. The term is also sometimes used more generally to describe issues in arts and sciences, religious beliefs and cultural priorities. The professional fields that deals with ethical issues and include medicine, trading, business, law etc. Ethics and values denote something's degree

of importance with the aim of determining what action is the best to live or to do or at least attempt to describe the value of different actions. The fundamentals of living are being learnt on none other than through the acquisition of language, and the widely developed literature universally. The introspection of the self and the retrospection only always create room for further development in any dimension in general and in ethical point of view in particular. The development of the universal culture solely depends up on the development of the language. This paper focuses on the how each and every stage of the evolution process is governed by the ethical values with a special reference to origination and sustenance of the Indian culture. For Indian life style, philosophy and for the nurturing of ethical values, the epics like Ramayana, Bharatha and Bhagavatam and various forms of literature like Upanishads, aaranyakas have laid the corner stone, and given the continuous renaissance through their language with a splendid stature and enriched with affluent literature. This paper throws light on the systematic and conceptual analysis on the ethics and values through introspection and retrospection in the Indian literature and Indian culture with an underlying observation on the chronological impact on the value enrichment.

◆◆◆◆

## Indian Cultural and Human Value

**Khemendra Kumar Sharma**
*Student, Uttarakhand Open University Haldwani (U.K.)*

**ABSTRACT**

Indian culture is more than five thousand years old and is one of the few ancient cultures that still survive today. Language, arts, spirituality, music, dance, literature all form a part of this culture. Indian culture has responded differently to influences of different cultures, especially those of invaders and it has preserved, absorbed and assimilated the different elements and this is the secret of the success of Indian culture and civilization. In spite of its diversity, there is a 'fundamental unity' which makes it unique. Indian culture has many different parts and each is closely related with the other and has intricately woven values. Families are essential in preserving and transmitting culture. It is in the family that the child first experiences and absorbs the values of sharing, caring, unselfishness, tolerance. Unity, loyalty, integrity are key features of an Indian family with emphasis on interdependence and concern for others. In India, food is valued not only because it is nutritious but also for it is a gift from god. Clothes are associated with tradition, diversity of culture. The national symbols in India symbolize unity, truth and patriotism. National symbols are distinctive to the country. Teachers are to be aware of integrating values into the curriculum in all i subjects. Often we carry within us many prejudices or wrong beliefs and do not 1 think whether these are right or wrong.

◆◆◆◆

# Recent Trends of Social Equity in Higher Educational System

**Baby Tabassum[1] and Qaisur Rahman[2]**
*[1]DepartmentofZoology, VinobaBhave University, Hazaribagh-825301, Jharkhand*
*[2]Department of Zoology, Govt. Raza, Post GraduateCollege, Rampur244901 (U.P.)*

## ABSTRACT

The higher education system in India is the third largest in the world after China and the United States of america. The access to higher education is generally measured by the Gross Enrolment Ratio (GER) in higher education. Despite the growth in number of higher education institutions, higher education in India is seriously challenged in terms of access. The benefits of higher education in India still remain outside the reach of a vast majority of the people. Growth with equity is considered as one of the objectives of planning in many developing countries. Equity without growth is a stagnant cesspool, wherein only misery, ignorance, and superstition can be equally distributed. Thus, a concern for equity in education is not only a moral commitment but also important for nation building. Equity is quite often used inter changeably with the term equality. Though all human beings are not equal in every respect but they should be treated equal in relevant aspects of life. In fact, they should be treated differently in those respects where they are, unequal.These institutions have been successful in providing access to higher education and prepare skilled personnel that meet the demands of the global marketplace. Therefore, there is a need to evolve a sound public policy for private higher education. This would be necessary for making the higher education to fulfill the public and social mission of providing education, help to build a civil society,promote sustainable development, fight poverty, serve the job market, and expand access to qualitative and innovative higher education. Despite the growth in number of higher education institutions, higher education in India is seriously challenged in terms of access. The higher education sector in India currently faces challenges of expansion, excellence and inclusion. There exist rural and urban disparities, gender, inter religious group, interstate variations, disparities among social groups within religion, inter caste and disparities among income groups as well as occupation groups. The pattern of public spending on education has been a major reason for limiting the scope of educational participation for the weaker sections. Since in (1990) there has been a steady decline in the budgetary allocations made by the government to fund higher education in India. The UGC Twelfth Five Year Plan (2012-17) document has stressed the need for adopting newer models that would adhere to the equity and affordability policy of the government. It suggested that it could be adopted through four models viz. the basic infrastructure model, outsourcing model, equity or hybrid model, and reverse outsourcing model.This paper explores the recent trends in the social equity in higher educational system.

**Keywords:** Equity, Higher Education, Society

◆◆◆◆

# Literature and Human Values

**Dr. Manisha Mittal**
*Devta Mahavidyalaya, Morna, District Bijnor (U.P.)*

**ABSTRACT**

Technology triggers changes, affecting the environment in which it is inserted and the people who live in this environment— even the ones who do not use it. Ubiquitous Computing, Wearable Computing, Social Software, ambient assisted Living, Intelligent Building, Smart Cities, and the Internet of Things are some examples of how interactive computing technology has permeated all aspects of personal and collective life.

These aforementioned examples represent research and development are as that both challenge and have the potential to extend, significantly enrich, and even shift the relationship between people and the world around them, including technology itself. Therefore, the task of designing interactive systems has assumed new dimensions in terms of complexity and has required a wider and deeper understanding of the ethical and social responsibilities of those who create them. In recent years, impact of computer systems on economic, ethical, political and social life have become more evident, drawing attention to the need for moving from a human-computer interaction (HCI)-oriented discussion to a perspective of life mediated by interactive computingtechnologies.

The association for Computing Machinery (ACM) defines HCI as"*a discipline concerned with the design, evaluation and implementation of interactive computing systems for human use and with thes tudy of major phenomena surrounding them*".

according to this definition, HCI is the area of Computer Science that must deal with issues that cross other areas ( algorithms and Data Structure, Graphics and Visualization, Networks and Communication, Software Engineering),andthat must consider specific aspects of the environment in which its application occurs (e.g., economic, geographic, social, cultural).

◆◆◆◆

# Literature and Human Values

**Dr. Parul Jain**
*Assistant Professor ( English), Rajendra Prasad P.G. College, Meerganj, Bareilly (U.P.)*

**ABSTRACT**

Throughout our journey of life, we try to pilot our way through the freeways and blind alloys of existence. We are looking for yardsticks by which we measure the meaning usefulness or validity of ideas, activities or phenomena that come our way. We are hankering for the basis or principles that could guide our actions that could tell us which way we should

go or what our move should be when faced with inexorable challenges of life. In other words, we are continuously searching for values. In general, it is the individual's key choice that shapes the type of life he builds for himself and the kind of individual he shapes into all these reflects his basic values. Literature is the heart of songs, rhythmic and harmoniums pieces that give message and inspiration to people. Films are visual representation of literature; they give life and action to the words written on a page.Magazines, newspapers, the television and the radio contain literature. The power of literature and the values contained in it affects all of us. It is complex, intergenerational and long lasting.

**Key words:** Human values, Literature, Emotions, Life, Literature, Power, Value.

◆◆◆◆

## Effects of Literature on Human Life

**Dr. Renu**
*Assistant Professor, Department of English, Govt. Raza P.G College Rampur (U.P)*

***A*BSTRACT**

as an educative source Literature plays a significant part in human life. Literature influences us and makes us to understand the every walk of life. Narratives, in particular, inspire empathy and give people a new perspective on their lives and the lives of others. It performs different functions at different levels. Literature and life of a society reflect upon each – other. The literature can put in different terms those of symbolic or meaningful relations who analyzed the various possibilities clearly from society to society. Before literature human life was practical but now it has expanded into countless libraries and curiosity of the human mind and the world around them. So, the main objective of the present study is to analyze the literature and its effects on human life.

◆◆◆◆

## Poets are the Unacknowledged legislators of Mankind

**Dr. Reshma Perveen**
*Assistant Proffesor, English Department, Govt. Raza P. G. College, Rampur. (U.P.)*

**ABSTRACT**

Since the beginning of civilization, literature has been the mentor of mankind. Even before the origin of language, literature was in existence in the form of oral stories and folk songs that were passed from one generation to another reflecting social, cultural and political aspects. It always exhorted morality and checked the evils in the form of The Gita, The Quran and The Bible. Literary artists try their best to bring poetic justice in their work to reform society. Literature not only feeds our emotions but also provides deep insight,

knowledge and wisdom. The present paper emphasizes the role and value of poets and explains Shelley's 'Defence of Poetry' in which he says that poets can institute laws and create new material for knowledge. In the essay Shelley has criticized a society that underestimates the importance of the poets and their role in the progression of society. Poets are called unacknowledged because society does not openly recognize their role and importance. This treatise challenges the critic Thomas Love Peacock who in the Four ages of Poetry believed that the progression of society caused the deterioration of poetry.

**Key Words:** Poet, Society, Mankind.

◆◆◆◆

## Ecotourism -A Means to Achieve Sustainable Resource Management

**Parveen Kumar[1], Ashutosh Kumar Choudhary[2] and Pardeep Kumar[3*]**
*[1]School of Basic and Applied Sciences, G. D. Goenka University, Gurugram, (Haryana)–122103*
*[2]Himalayan School of Engineering and Technology, Swami Rama Himalayan University, Dehradun, (U.K.)–248140*
*[3]Department of Education (B.Ed.), Govt. Raza P.G. College, Rampur, (U.P.)–244901*

**ABSTRACT**

Travel and tourism is one of the world's biggest economic sector creating new jobs, driving exports, and generating prosperity throughout the world. This paper presents an overview of the environmental impacts of travel and tourism sector and ecotourism as a sustainable instrument for environmental management. The travel and tourism sector has provided significant economic benefits to many communities regionally and globally. But, the unchecked and rapidly expanding tourism is causing serious environmental and socio-cultural impacts throughout the world. Tourism activities can lead to huge pressure on already fragile natural ecosystems through severe impacts like loss of fertile soil, pollution, wildlife habitat loss, increased susceptibility to forest fires, and natural disasters. Simultaneously, the travel and tourism sector is facing threats at many tourist destinations due to global environmental problems like global warming induced climate change which is leading to increase in the intensity and frequency of extreme weather (e.g. storms, extreme rains, and floods etc.). The climate change can have serious impacts on the travel and tourism sector. The promotion of ecotourism is the way forward for effective mitigation of adverse environmental, socio-cultural impacts, and achieving sustainable resource management.

**Key words:** Ecotourism, environmental management, sustainability, case study

◆◆◆◆

# Environment Conservation Through Human Values Based On Indian Culture

**Dr. Deepti Bajpai**
*Associate Professor, Dept. of Sanskrit, Km. Mayawati Govt. Girls P.G. College, Badalpur, G.B. Nagar, India*

## ABSTRACT

There is an enduring connection between humans and the environment. Human life cannot be imagined in the absence of environment. Environmental life has a direct effect on human life. as long as the environment is pure, balanced and in its natural form, human is healthy and prosperous in physical, mental, social and spiritual form. The imbalance and erosion of the environment is the annihilation of the person. Today, due to rapid industrialization, the existence of biological and physical world has endangered itself. as a result, the adverse effect of the unbalanced environment is visible at every stage of human life. This is the reason why there is an intense need to recover from the alarming problem of the environmental crisis of today is being experienced globally. Because of world-wide anxiety towards the ever-increasing environmental degradation, it is necessary that the current and future citizens of the world be alerted. In Indian culture, there is an interdependent relationship between nature and human beings. Co-adaptation and coexistence between nature and human beings is the basis of environmental balance. To maintain this balance, environmental education has been linked to religious and moral values in Indian culture. Therefore, various festivals and instructions of daily activities in Indian culture are full of nature preservation and conservation. In fact, it is condemnable to harm any element of nature as it is considered Divine in Indian culture. This fact gives persistence to environmental balance.

**Key Words:** Environment, Education, Culture, Festivals, Human

◆◆◆◆

# Environment Conservation and Human Values

**Ms. Kahkasha[1] and Dr. Santosh Kumar Tripathi[2]**

*[1]Asst. Professor and HOD/Principal, [2]Department of Education, Saraswati Institute of Management & Technology, Rudrapur (U.K.)*

## ABSTRACT

along with industrialization environmental crises increase and threaten the whole system of nature. although industrialization is an important need to survive in competitive world but this doesn't mean destroy the nature for own benefits. Somewhere moral values, principles and attitude towards environment also responsible for this damage. Education

plays an important role in every aspects of life either that related to moral values or environment. Specially environment subject has been included in curriculum to attach human beings with environment but the study says that this subject is limited in an academic boundary. Now these days education is materialistic because everybody wants job, very few of them intellectually attached with education. Scenario needs to give educations which intellectually insist human being to feel about environment conservation. Whenever any programme organized on environment, practically very few come in front on ground level for work. Conservation is neither a matter of being right or wrong nor of human destiny or superiority the point is whether we are willing to survive as a species. Therefore in order to change the human values, education method should be seriously implemented in the classrooms. The theory of social learning and environment conservation can be the solution of environmental crises.

◆◆◆◆

## Impact of Human Values on Environmental Conservation

**Md. Sakib Raza**
*Research Scholar, Dr. B.R. Ambedkar Uniiversity, Agra (U.P.)*

**ABSTRACT**

The obvious causes of our current environmental symptoms should not conceal the nature of the basic illness. No single analysis of the problem of the human environment has exposed the root of the difficulties facing the world today: that the social structures of the world and the systems of values on which they were built cannot meet the new human needs.Man has developed a new relationship to both his natural environment and his fellow. The radical transformation of his physical environment by science and technology during the last century has given him the power to control and modify natural forces. It has eliminated physical barriers to world unity, but it has created at the same time complex and divisive social relationships. We are consequently allowed the alternatives of either regressing to a primitive level of technology, or fulfilling the potential of a united world. aware of the interdependence of the major elements of the world ecosystem - an interdependence evident also at the social, economic and political levels - we are beginning to see that integration of life on the planet requires unified action on a scale we have not yet achieved. Partial solutions seem only to prolong the difficulties; yet we hesitate to adopt a new and workable system of values for the world. For until there is unity at the most fundamental level - that of human values - social problems, simple or complex, will remain unresolved.

**Keyword:**Human Values, Environmental Conservation

◆◆◆◆

# Environment Conservation and Human Values

**Dr. Vineeta Singh**
*Associate Professor, Govt, Raza PG College, Rampur (U.P.)*

**ABSTRACT**

Environment Conservation is the talk of the decade and it will only going to gain more and more attention day by day asit is a necessity of humankind. This is theonly one discussion where everyone is on one side. We have to protect our environment, we know. as a community we have started working towards it. But have we started working on it as an individual? Becausethis would be so unfair if all the burden falls on handful of environmentalists.

We are born with some quality that make us what we are. We are born with ability to give and receive love, ability to trust others, ability to show gratitude towards others, ability to be kind and our own integrity which always help us decide between wrong and right. We show our love and compassion towards things that have lives, but we fail to demonstrate these values to the things that are not alive but are equally important for us to survive. But it is time to take our first step and shower our surrounding with love and compassion.

We all can contribute, and every single contribution will help. But the question is- are we willing to contribute? This contribution will bring little discomfort in our lives. are we ready for it? Nature has enough to satisfy our needs but not our greed. So are we ready to make up our mind to give up some of our luxuries? It is a tough question! and the truth is that we have not done much towards the protection of environment. For us, protection of environment is limited to planting trees and switching off lights when not in use. But there is a lot more to it. There is a list of things that we control which impact the environment. So let's dig a little deeper and find out what more things we should be doing to protect our planet from the damage that is beyond repair.

◆◆◆◆

# Environment Conservation ad Human Values

**Rajesh Kumar Rathi**
*Assistant Professor, Department of Zoology, Janta Vedic College Baraut (Baghpat)*

**ABSTRACT**

In ancient times interaction between environment and human beings was quite healthy and beneficial. But with the advent of industrial revolution in 19th century, a race for economic development changed the human's perspective towards environment, resulting in environmental degradation in the form of air pollution, water pollution, soil erosion, loss of

biodiversity, deforestation, habitat destruction etc. a race to become economic power house with utter ignorance towards environmental constituents has reached to a stage where our very survival is at a stake. We as a human being are not paying much heed towards various environmental constituents, this negligence at individual, society, national & international level is taking its toll on health, food security and energy prospects. Though in the recent times with increased awareness and education, people's approach towards environment is changing. Concept of sustainable development is taking centre stage with a shift from non renewable source of energy to renewable source of energy, from deforestation to reforestation, addressing the problem of air and water pollution and publication of red data book to make people aware about biodiversity loss. These efforts towards environment conservation can help in making the future for coming generation far better.

◆◆◆◆

# Need of Conservation of Biodiversity for Protection of the Environment

**Dr. Neelam Baliyan**
*Asst. Professor, Department of Chemistry, Sahu Jain P.G. College, Najibabad, Distt-Bijnor (U.P.)*

## ABSTRACT

Biodiversity is variety of different plants. animals and microorganisms, their genes and eco system of which they are a part. Biodiversity is important for our survival and economic development. Food security and the discovery of new medicine are put at risk by the loss of biodiversity. Biodiversity include the generic variability and diversity of life from such as plant animals' microbes etc living in a wide range of ecosystem. There are three type of biodiversity; **(1) genetic diversity, (2) species diversity (3) community or ecosystem diversity**. Genetic diversity describes the variation in the number and types of genes as well as chromosome present in different species. The magnitude of variety in jeans of a species increase with the increase in size and environmental parameter of the habitat. Biodiversity helps in speciation and evolution of new species. It is also useful in adaptation of changes in environment condition and it is important for agricultural productivity and development. Species diversity describes the variety in the number and richness of the species within a region.

The species richness may be defined as the number of species per unit area. Ecosystem diversity describes the assemblage and interaction of species living together and the physical environment in a given area. Biodiversity not only maintain a functional environment, it is a resource for food, shelter, clothing and other material. Since human beings are enjoying all the benefits from biodiversity, they should take a proper care for the preservation of biodiversity in all its form and good health for the future generation.

**Key Words:-** Genetic diversity, Species diversity, Ecosystem diversity

◆◆◆◆

# Role of Environmental Education and Attitudes towards Action Strategies

**Baby Tabassum[1] and Qaisur Rahman[2]**
*[2]Department of Zoology, Govt. Raza, Post Graduate College, Rampur- 244901 (U.P.)*
*[1]Department of Zoology, VinobaBhave University, Hazaribag-825301 Jharkhand*

## ABSTRACT

The world scenario has undergone great upheaval during the last century due to technological advancement, ever increasing industrialization and the tendency of masses to settle down in urban area. The process of deteriorating environment conditions has been casting negative impact on the ecological conditions on the globe. Due to the activities pertaining to over exploitation of biotic and abiotic components, ecological balance is being disturbed day-by day. In the present age of technological revolution, the needs of human being are destroying the nature badly. Environmental problems have reached up to a level wherealmost everyone is conscious of them. The raising consciousness has also given rise to a wide spread responsiveness to the idea for the need to do something about it environment problems are not the problems of developing countries like India but it is concerned with the whole globe. It is the need of hour to make the whole society conscious about the ecosystem and ecological balance. Education is a powerful medium for changing our behavior. Recommendations of the Stockholm conference in (1972) declared that there was close link between the society and the environment and that the relationship between them was at a critical stage, saying that a point has been reached in history when we must shape our action throughout the world with a more prudent care for their environmental consequences. Thus, this is a crucial time to realize that environmental sensitivity and environmental friendly behavior should be cultivated among masses particularly among youths. For the awareness of the society, it is essential to work at grass root level. For this purpose it is essential to educate and train the children regarding the significance of healthy environment. When students learn about the functioning of eco-system and about environmental action strategies that contribute to their maintenance they develop more environmentally responsible behavior. as we move into the 21st century the impact of human behavior on the natural environment is becoming readily apparent. Resources are becoming less abundant, space is becoming more limited and pollution of air, water and land are beginning to have a direct impact on the inhabitants of the planet we hear about global issues from the social and economic to the political and environmental, on a daily basis. Now more thought it is essential that teacher should have knowledge of environmental issues, proper attitudes towards the environment and appropriate action strategies for solving various problems related to the environment.

**Key words:** Environmental Education, attitudes, action Strategies.

◆◆◆◆

## *Insecticide resistance in Sitophilus Oryzae*, A Storage Pest of Grain, Rice and Maize

**Narendra Kumar**
*Assistant Professor, Department of Zoologoy ,Shaheed Mangal Pandey ,Govt.Girls P.G.College, Madhavpuram, Meerut (U.P.)*

**ABSTRACT**

*Sitophilus oyzae* belongs to genus of weevils of stored Maize ,Rice and wheat .The adult female weevil bores inserts an egg in a grain and seals it by a secretion .The larva metamorphoses to pupa inside the grain and eats inner part of it. adult emerges leaving the grain completely hollow .Female Rice weevils lay about 300 to 400 eggs requiring about 32 days to devlopment for adult. adult lives about 3-6 months. adults are good fliers, which help them to disperse from one grain storage site to another. It becomes very hard to control their population because they reproduce,grow and establish rapidly. The popular way to control weevil is by using insecticides .But further in using insecticides, weevil develops resistance. Most commonly used insecticides are Malathion,Celphos ( aluminium Phosphide ), Primphos –Methyl etc.Primarily to tackle decreased effectiveness of insecticide its frequency as well as dose amount is increased. But problem comes when complete resistance is developed against insecticide. and that particular insecticide becomes ineffective to that insect. The same is happening in the case of Sitophilus genus. as the resistance is developed in Sitophilus it also becomes genetic for further generations, that increases the level of problem in storing the rice or any other grain.

◆◆◆◆

## The study of Human Values and Environmental Conservation in Understanding and Managing Social-ecological Systems

**Kumkum**
*Assistant Professor, Dept. of Zoology, SMPGGPGCollege, Meerut (U.P.)*

**ABSTRACT**

The study of cognition can provide key insights into the social dimension of coupled social-ecological systems. Values are a fundamental aspect of cognition, which have largely been neglected within the social-ecological systems literature. Values represent the deeply held, emotional aspects of people's cognition and can complement the use of other cognitive constructs, such as knowledge and mental models, which have so far been better represented

in this area of study. We provide a review of the different conceptualizations of values that are relevant to the study of human-environment interactions: held, assigned, and relational values. We discuss the important contribution values research can make toward understanding how social-ecological systems function and to improving the management of these systems in a practical sense. In recognizing that values are often poorly defined within the social-ecological systems literature, as in other fields, we aim to guide researchers and practitioners in ensuring clarity when using the term in their research. This can support constructive dialogue and collaboration among researchers who engage in values research to build knowledge of the role and function of values, and hence cognition more broadly, within a social-ecological systems context.

**Key words:** cognition; human-nature relationships; values

◆◆◆◆

# Hazardous of Heavy Metal in Soil Extraction by Natural Resources

**Sumedha Chauhan[1] and S.S. Yadav[2]**
*[1]Deparetment of chemistry, R.S.M. degree college, Dhampur (U.P.)*
*[2]Department of chemistry, Raza P.G. college, Rampur(U.P.)*

## ABSTRACT

addressing heavy metal pollution is one of the hot areas of environmental research. Despite natural existence, various anthropomorphic sources have contributed to an unusually high concentration of toxic metal in the environment. They are characterized by their longpersistence in natural environment leading to serious health consequences in humans, animals, and plants even at very low concentrations (1 or 2 ìg in some cases). The presence of heavy metals in food is a threat to human health. Exposure to heavy metals like Cu, Ni and Zn as a result of consumption of contaminated vegetables, as well as their toxicity, is a serious problem. Failure of strict regulations by government authorities is also to be blamed for heavy metal pollution. Several individual treatments, namely, physical, chemical, and biological are being implied to remove heavy metals (Cu, Ni and Zn ) from the environment.

But, they all face challenges in terms of expensiveness and *in-situ* treatment failure. Hence, integrated processes are gaining popularity as it is reported to achieve the goal effectively in various environmental matrices and will overcome a major drawback of large scale implementation. Integrated processes are the combination of two different methods to achieve a synergistic and an effective effort to remove heavy metals by plant. Most of the review articles published so far mainly focus on individual methods on specific heavy metal removal, that too from a particular environmental matrix only. To the best of our knowledge, this is the first review of this kind that summarizes on various integrated processes for

heavy metal removal from all environmental matrices. In addition, we too have discussed on the advantages and disadvantages of each integrated process, with a special mention of the few methods that needs more research attention. The presence of heavy metals in food is a threat to human health. Exposure to heavy metals as a result of consumption of contaminated vegetables, as well as their toxicity, is a serious problem. To conclude, integrated processes are proved as a right remedial option which has been detail discussed in the present review.

However, we believe, this review on integrated processes will surely evoke a research thrust that could give rise to novel remediation projects for research community in the future.

◆◆◆◆

# Environment Conservation and Sustainable Development through Indian Culture

**Akbare Azam**
*Assistant Professor, Department of Chemistry, Govt. Women P. G. College, Ghazipur (U. P.)*

**ABSTRACT**

The Indian conception of life is embodied in a coherent world-view in which all its aspects exist in a state of inter-related harmony, being governed by a universal order that is reflected in all realms of human experience. Human being is part of a well-ordered system in which all aspects of life and nature have their place, and are not in opposition, but in harmony with each other. We can better manage our Natural Resources by continuing the practices of Environment conservation ofancient India. Development does not only mean modernizationand hence westernization rather it is PEACE, HARMONY and WELLBEING ofall living creatures present on the Earth. Thereare many ways in the Indian cultureand Lifestyle towards the Sustainable Development. This paper will focus on some traditional Indian Practices towards Environment Conservationand their relevanceand practicability in today's Era of Environmental Degradation. In India, the protectionand conservation of the environment has always integrated social, economicand ecological factors. This unified approach to protection of the environment is perhaps inherent in India's culturaland religious ethos which emphasizes the interconnectedness between the natural environmentand the human community. Human beingsare not considered as separate from the environment but as a part of it.

**Keywords:** Natural Resources, Environment conservation, Indian Practices, Human Community.

◆◆◆◆

# Role of a Teacher in Generating the Environment Conservation Awareness

**Dr Sanjeev Tomar[1] Mrs Sujata Malik[2]**
*[1]Assistant Professor, Department of Teacher Education, ShriVarshney College, Aligarh (U.P.)*
*[2]Assistant Professor, Department of Chemistry, DN College, Meerut (U.P.)*

In olden days, human needs were very limited, he could satisfy his wants using very little amount of natural resources. But today, everywhere there is a huge demand of natural resources especially energy like in transportation, agriculture, business, telecommunication, domestic requirement etc. as we know that most of energy come from fossil fuels like oil, coal and natural gas etc. they increase the $CO_2$ concentrations and other greenhouse gases in the existing atmosphere upto a large extent. Eventually, there will be a big role of these gases in environment pollution, global warming and environmental crisis.

as reported by several researchers that the natural crisis is not only the result of natural calamities but also is the consequence of lack of good govt planning, increase in industries and human waste and above all lack of public awareness towards environmental conservation.

This endeavour highlights upon the role of a teacher in generating the environment conservation awareness among the public through students.

◆◆◆

# Environment Conservation and Ethics: Need and Importance

**Robeena Sarah, Nida Idrees, Priya Bajaj[A]nd Baby Tabassum**
*Toxicology Laboratory, Department of Zoology, Govt. Raza P.G. College, Rampur*

**ABSTRACT**

This chapter examines the role of ethics and values in environmental issues and environmental sustainability (the ability to meet humanity's current needs without compromising the ability of future generations to meet their needs). Environmental ethics is a branch of applied philosophy that studies the conceptual foundations of environmental values as well as more concrete issues surrounding societal attitudes, actions, and policies to protect and sustain biodiversity and ecological systems. The urgency and interdependency of environmental and societal issues lead many to believe that immediate actions are necessary to stem the tide of biodiversity loss, climate destabilization, resource overuse, and other concerns. Campaigns to raise awareness and improve education have highlighted to the general public that human environment is on an indefensible path that could lead to ecological, economic and human disaster. Yet, humans continue to degrade the biosphere and deplete natural resources at an unprecedented rate. On the other hand, Margaret Mead (1901–

1978), the noted american anthropologist, once said, "Never doubt that a small group of thoughtful, committed people can change the world; indeed, it's the only thing that ever has!" This is a time when the best of human qualities—vision, courage, imagination, and concern—will play a critical role in establishing the nature of tomorrow's world.

◆◆◆◆

## Human ValuesAnd Professional Ethics in Research

**Sashi Bhushan**
assistant, Professor, English, *Pt. Deen Dayal Upadhyay Rajkeey Mahavidyalaya, Tilhar, Shahjahanpur (U.P.)*

**ABSTRACT**

Every advance in the research in natural sciences, social sciences, language and humanities seems to present us with new-fangled ethical challenges. These challenges in research are also opportunities to shape a better academic atmosphere in universities and colleges. For making the most of these opportunities require the energy and expertise of morally concerned researchers across the globe. The researchers and professionals across the educational arena must be involved in the task of reflecting on human values, social interaction, and cultural ethos, as well as taking into consideration the research possibilities made possible by new pedagogies and technologies. With every decision we make as researchers and professionals, we contribute in shifting the cultural, social, economic and political landscape across regions. This paper aims at focusing and analyzing the required manners and principles that particularly foster and promote human values in the research that is necessary to meet the challenges of the 21st century ethically. It focuses on the foundational ethical questions and issues that motivate and unify much of the research as pursued in our institutions.

◆◆◆◆

## Role & Significance of ICT in Higher Education System in Present Era

**Nitin Kumar Tyagi[1] and Shilki Singh[2]**
*[1]Research Scholar, C. C. S. University, Meerut (U.P.), [2]Lecturer (Education), A. K. P. Inter College, Hapur (U. P.)*

**ABSTRACT**

One of the distinctive features of human beings is their ability to acquire knowledge, and what makes this knowledge an ever-thriving entity is man's ability to 'impact' this knowledge to others. Transfer of knowledge, which is one of the foundations of learning, is

among the most fundamental social achievements of human beings.

The concept of moving the traditional classroom of desks, notebooks, pencils, and blackboard to an online forum of computers, software, and the Internet intimidates many teachers who are accustomed to the face-to-face interaction of the traditional classroom. In the past 10 years, online instruction has become extremely popular as is evident in the rise of online universities, such as University of Phoenix Online and athabasca University (Canada), and on-campus universities offering online courses and degrees, such as Harvard University and University of Toronto. For many students who find it difficult to come to campus due to employment, family responsibilities, health issues, and other time constrains, online education is the only option and this problem also prevails in Indian Universities and Colleges.

advancements, standards, specifications and subsequent adoptions have led to major growth in the extensibility, interoperability and scalability of e-learning technologies. E-learning is fast becoming a major form of learning.

Computer multimedia offers ideal opportunities for creating and presenting visually enriched learning environments. The latest technologies associated with virtual reality will also play an important role in not too distance future. Computer-based systems have great potential for delivering teaching and learning material.

◆◆◆◆

## E (electronic) - waste pollution

**Ram Kumar**
*Govt. Raza P.G. College, Rampur- 244901*

Pollution is the introduction of contaminants into the natural environment that cause adverse change in the environment. E- waste pollution (EWP) is due to the discarded electrical device or electrical items such as CPUs, monitar, heavy electrical items, e- toys, household electronic tools, medical use electronic items etc. The European WEEE classify e waste in ten categories, on the other hand, the partnership on measuring ICT for development defines e waste in to six categories. In 2018 48.5 mmt. E waste generated all over the world according to the report of UN. India stand among the top five e waste producing countries. It produce about 2 mt e waste per year. In India Maharastra contribute the largest amount of the e-waste (19.8%).

E-waste directly or indirectly connected to the health risk. Direct contact of Cd. Cr. BFR remains of e-waste harmful for human health. accumulation of harmful chemical substances from e-waste in soil, water and food affect the health of ecosystem.

Law to manage e-waste have been placed in India since 2011. E-waste (management), 2016 was enacted on October1,2017. The rule has strengthen the extended

producer responsibility (EPR) which is global best practice to ensure the take back of the end of e-product. a new arrangement called producer responsibility organization (PRO) has been introduce to strengthen EPR further.

◆◆◆◆

## Changing Pattern of Human Values in Era of Social Media Platforms

**Shazia Jamal[1] and Dr. Ajita Singh Tiwari[2]**
*[1]Assistant Professor, Utkarsh College of Management and Technology, Bareilly (U.P.)*
*[2]Assistant Professor, M.Ed. Detartment, Bareilly College Bareilly*

**ABSTRACT**

Values are socially approved desires and goals that are internalised through the process of conditioning, learning or socialisation and aspirations. Social Media Platform is the collective term used for online communication channel dedicated to community-based input, interaction, content –sharing and collaboration. For eg : Facebook, YouTube, twitter and whatsapp etc. Social media provides the platform to share values and spread humanities, love, brotherhood and many more. Human values convey a positive and affective surge, which reinforces the rationale of moral values. These values permit us to live together in harmony and personally contribute peace. In the era of social media platforms what is the pattern of transition in values, whether it is towards positive direction or is it alienating towards down in our Indian society. all these are the concerns in mind while writing this paper.

**Key words:** Human Values; Social-Media; Transition of values

◆◆◆◆

## Mobile Banking: An Outlook For New Digital Payment System In India

**Dinesh Joshi**
*Asst. Professor, Department Of Commerce, Government Degree, Kanda, Bageshwar (U.K.)*

**ABSTRACT**

Mobile banking is very convenient in today's age with many banks offering impressive apps. Recently, the demands and requirements of banking consumers are altering quickly with the rise in the technological avenues made available in the banking world. Banking customers have started demanding flawless, multi-channel service experiences. and current generation is using mobile banking in a very effective way. Due to advancement of technical

world now mobile banking drastically changes the life of every individual. Government and banks are requesting the customers to use mobile banking instead of going to banks as well as for purchasing. Customers feel that banking transactions are safe through mobile banking. It can be observed that customers feel that it's not too difficult to use. as per the study Balance enquiry and account information are the most commonly used service in mobile banking. Majority of customer feel that service charges on mobile banking are reasonable. as the study suggest that most of the bank needs to improve on mobile banking. Mobile banking is most commonly adopted by professionals. Most of them are satisfied with mobile banking application. among the different service provided by the bank, aTM, e-banking and mobile banking are the most commonly used service compared to others. Even lots of people do not prefer mobile banking because of security reasons, and lack of technical know-how. But the advancement of mobile banking makes life easier mainly for financial matters, due to which the customer is now saving his time.

**Key words:** advancement, mobile banking, aTM.

◆◆◆◆

## Digital India and Human Values

**Arun Kumar**
*Lecturer, S.M.C.E.T. Hapur (U.P.)*

**ABSTRACT**

CCDS's 2019 Research Investigates The ICT access and Competency of Students From Low-Income and Socially-Marginalised Backgrounds, Revealing Wide Gaps In The ICT Readiness Of Children already Held Back By Poverty and Social Exclusion. The Digital Divide Is One More Barrier For Disadvantaged Children as They Struggle To Catch Up In Education, Livelihoods, and Social and Democratic Participation.

The Research also Explores The Difference That ICT Skills Education at School Can Make, and The Enablers and Barriers Faced By Schools In Providing Training In Icts.

◆◆◆◆

## Impact of Social Media on Human Values

**Sachin Kumar Verma**
*Asst. Professor, Deptt. Of Teacher Education, D.S.CollegeAligarh (U.P.)*

**ABSTRACT**

Social media is a wonderful tool of web 2.0 technology.It is a platform for public around the World to discuss their issues and opinions. It provides an interactive facility to the users for interaction between the groups or individuals in which they produce, share and

sometimes exchange ideas, images, videos and many more over the internet and in virtual communities. In the present era our new generation is growing up surrounded by several gadgets likesmart phone, computer and laptop etc using interactive social networking sites such as Twitter, Instagram,YouTube, Facebook, Orkut and Whats app and so on which are playing a vital role in reshaping the human values.

Human values are virtues that make our life meaningful since they are the values associated with human qualities of kindness, sympathy, moral inclination for truth and justice, respect, acceptance, consideration, appreciation, listening, openness, affection, empathy and love towards other human beings. Today Social media is affecting these values positively and negatively in either way.It has given birth to a virtual community that is working as a pressure group for the government as well as for the public servants. Many a times we find its misuse by the people in committing the cybercrimes. Therefore, there is dire need to keep a balance between the use of technology and behavioural life in maintaining social fabric through cultivating the good virtues in our youth. In this research paper, researcher will cover up the various aspects of social media including its positive and negative impact on human values, role of education in promoting the healthy use of social sites and some government guidelines for this social platform.

◆◆◆◆

## Digital India and Human Values

**Neetu Narula**
*Research scholar*

**ABSTRACT**

Prime Minister Shri Narendra Modi launched on1 July 2015, the much ambitious "Digital India" programme in the presence of top industrialists who shared their ideas of taking digital revolution to the masses. The Digital India programme is a flagship programme of the Government of India with a vision to India into a digitally empowered society and knowledge economy. This is a big step forward to transform the country into a digitally empowered knowledge economy. Launched various schemes worth over Rs.1 Lakh crore like Digital Locker, E-education, E-health, E-sign and national scholarship portal. Bharat Net, Make in India, Startup India and Next Generation Network (NGN), are also a part of Digital India campaign. The programme includes projects that aim to ensure that government services are available to citizens electronically and people get benefit of the latest information and communication technology. as of 31 December 2018, India had a population of 130 crore people (1.3 billion), 123 crore (1.23 billion) aadhaar digital biometric identity cards.

**Motto of Digital India** – "POWER TO EMPOWER ".

**Human ValuesAnd Digital Era** – To bolster the Government Services that reaches

the citizens electronically by improved online development by increasing Internet connectivity .The initiative includes plans to connect Rural areas with high-speed internet networks.

Human values are said to be the most inevitable, guiding axioms of our lives. It falls under a huge umbrella of Sociology, Psychology, Philosophy, anthropology, axiology and many other discipline.

"Values are nothing but fundamental principles of human values, so elementary yet so irreplaceable, which act as a dictionary for the events and our actions to analyze simpler concepts."

**Advantages-**

- Transparency.
- No corruption as IT official can track records easily.
- Improve the quality of service.

And many more…..

Hence, this statement proves that value could be great or small, but when attributed to man should have to be explained in his course of actions.

◆◆◆◆

## Digital India and Human Values

**Aayushi Saini**
*Lecturer, Department of Education, J.V. Jain Degree College, Saharanpur (U.P.)*

**ABSTRACT**

Human values are the qualities that guide us to consider human factors when interacting with other people, the basic human values like appreciation, acceptance, respect, honesty love, peace etc. Besides these the related indices such as HVI(Human value index), HDP (Human Development product), GDP (Gross development product) and CPI (Corruption perception index) have been developed to distinguish the nations in terms of economy, education, health, and living condition. But, a civilized and developed nation cannot be expected without technology. Technology is a gift of God. after the gift of life it is perhaps the greatest of God's gifts. It is the mother of civilizations, of arts and sciences. Technology has certainly changed the way we live. It has impacted different facts of life and redefined living. Undoubtedly, technology plays an important role in every sphere of life. Several manual tasks can be automated, thanks to technology. The Digitilization was propelled by force of 'Technology', which was the crucial part in 'Digital India Programme'. India has emerged as one of the country whereby government have initiated this development

programme to stimulate economic development as well as to provide employment to young generations. This help us correlating human values with the technology in this techno friendly era.

**Keywords:** Civilization, Digitilization, Technology, Education .

◆◆◆◆

## Unpacking of Digital India

**Dr. Mudit Singhal**
[a]*Assistant Professor, Department of Physics, Government Raza P. G. College, Rampur*

**ABSTRACT**

Digital India is a scheme launched by 01st of July 2015 by Prime Minister, Government of India to make India digitally empowered in technology. It is also ensure that government services are accessible and transparent by improving online infrastructure as well as internet connectivity. The vision of digital India is the development in the field of including electronics services, products, manufacturing and job oriented schemes etc. The technologies including mobile application and cloud computing is causes an important role in rapid development for economic growth.

**Key words:** Digital India, Component & Services of Digital India, advantages of Digital India.

◆◆◆◆

## Human Values in Digital India

**Mrs. Indu Solanki[1]and Mr. Ramgopal Singh[2]**
[1]*Assistant Professor B.Ed Dept. R.S.M(PG) College Dhampur (Bjinor)*
[2]*Assistant Professor B.Ed Dept. R.S.M(PG) College Dhampur (Bijnor)*

**ABSTRACT**

Digital India programme is a flagship programme of the Government of India with a vision to transform India into a digitally empowered society and knowledge economy. Digital India is a campaign launched by the government of India on July 1,2015 under the visionary leadership of honourable Prime minister, Shri Narendra Modi. The aim is to digitally empower the country and its people, improve infrastructure, introduce a better quality of life and raise India's stature in the global scenario. The three central areas of Digital India are- Digital Infrastructure, Digital Literacy and Digital Delivery of services. India is on the way of becoming a digitally advanced country through the launch of various projects and initiative such as MyGov.in, Digi Locker, ehospital, e-education, National scholarship portal (NSC), Bharat Net, Wi-fi Hotspot, e- aadhar card.

In the digital age, competencies and character qualities will become much more important. We will need qualities such as curiosity, empathy, adoptability and emotional agility. With these qualities, worker can add value to the use of smart automation. In the digital age, people will continue to want to create value in their work. Thus, these skills will need to contribute to value creation. In the digital age, technology will be ever present. Leaders will need to understand technology well enough to see how technology supports people, but they should also be able to get humans to be more human to get the best value out of technology. They should make sure people find way to 'switch off and be offline' so as to tap into lower brain frequencies and a level of imagination and creation instead. Leaders should be able to lead people towards responsible behaviour with technology, for themselves and their environment. Focusing on true human values will help reaching the highest potential in human in the digital age.

◆◆◆◆

## Human Values Accelerating Digital India

**Aanchal Jain**
*Research Scholar, Department of B.Ed. \ M.Ed.*
*M.J.P. Rohilkhand University Bareilly (U.P.)*

**ABSTRACT**

Firstly Computer was taken up as calculator, then we found how to turn codes into letters and thus we thought it was a typewriter. Then our curiosity made us discover graphics and we thought it was television. andwith web, we realized it as brochure. So, thus the advancement of technology took place making India, a Digital India which is accelerated by Human Values which put forward needs, problems and even possible solutions in this digital world thus accelerating Digital India.

**Keywords-** Human Values, Digital India

◆◆◆◆

## Emerging Technology in Human Values: NeedAnd Challenges

**Ashish Saini**
*Research Scholar, Department of Computer Science, Gurukula Kangri Vishwavidyalaya, Haridwar (U.K.)*

**ABSTRACT**

a civilized nation is formed by the people living in it and the human values of those people. Human values that means the qualities that guide us to consider human factors when interacting with other people, basic human values such as appreciation, acceptance, respect, etc. also develop related indices such as HVI, HDP, GDP, and CPI have been

done. But it is also true that it is not possible to build a nation without technology. Technology is beneficial in connecting people with each other and expressing respect for each other. To build a nation that can stand in the line of developed countries, it is necessary that the people of the country are aware and learn modern technologies. The paper also described the challenges people need to learn these techniques, as well as the ways in which they can become part of a civilized country and develop themselves as well.

◆◆◆◆

# A Study: SWYAM is an Indigenous Platform of Online Learning for Faculty and Students in Digital India

**Raju**
*Department of Physics, Govt. Raza PG College, Rampur (UP)*

**ABSTRACT**

SWAYAM (Study Webs of active-learning for Young aspiring Minds) program was initiated by Government of India. The objective of the program is to provide the best teaching, learning material for all without any costs.

SWAYAM platform is indigenously developed by the Ministry of Human Resource Development (MHRD) and all India Council for Technical Education (AICTE) with the help of Microsoft and would be ultimately capable of hosting 2516 courses and 203 Partnering

Institutes: covering school, under-graduate, post-graduate, engineering, law and other professional courses.University Grants Commission (UGC) has vided Gazette Notification dated 19 th July, 2016, notified Regulation, 2016 regarding 'Credit Framework for Online Learning Courses through SWAYAM'. SWAYAM has been developed under a four-quadrant approach**:** (1) video lecture, (2) specially prepared reading material that can be downloaded\printed (3) self-assessment tests through tests and quizzes and (4) an online discussion forum for clearing the doubts**.** SWAYAM is an indigenous (Made in India) IT Platform for hosting the Massive Open Online Courses (MOOCs).The sociological, geographical and political barriers in education can be overlooked by making MOOCs as parallel to regular school education. To encourage teacher and learner to MOOCs should be motivated by proper planning like a promotion for in-service teachers and jobs, admission to higher classes by learners.

**Key word:** SWY aM, MOOC, E-Learning, Online Learning.

◆◆◆◆

# The Impact of ICT on Academic Achievement of Physical Education Students: with a Special Reference to their Moral Development

**Mr. Pravesh Kumar[1] and Dr. Meenakshi Sharma[2]**
*[1]Research Scholar, [2]Associate Professor, Department of Education, Meerut College, Meerut (U.P.)*

## ABSTRACT

The aim of the present study was to compare the use of ICT by physical education students of Aligarh Muslim University and Chaudhary Charan Singh University in relation to academic achievement. Both sports and education are interwoven with each other. One promotes the other. Sports form a significant component of the education system. It is the education that provides the forum through which different aspects of sports manifest its practices and activities. It has been seen through ages that man has used sports to satisfy his aesthetic needs, to relax from daily routine work and thus assist in living a healthy living. The study was conducted on the male students of B.P.Ed. of academic year 2018-2000 of aligarh Muslim University and Chaudhary Charan Singh University. Self made quationnare as used for data collection. Data was analyzed with the help of Mean and Standard deviation and t-test to see the effect, the level of significant chosen to the test the hypothesis was at .05. It was observed that there was significant difference in relation to academic achievement of physical education students of aligarh Muslim University and Chaudhary Charan Singh University.

◆◆◆◆

# Human valuesAnd professional ethics in Pharmacy education

**Ayasha Saiffi*[1]And Dipesh[1]**
*[1]R.V. Northland Institute, Dadri, G.B.Nagar, 203207(U.P.)*

## ABSTRACT

**Background:** Pharmacy, like other health care professions, is both a knowledge-based and a value-based profession. However, the values that inform practice activities are rarely made explicit. Pharmacists are an essential part of the healthcare multidisciplinary team. They help to ensure that medicines are used in the safest and most effective manner.

However, the profession, particularly community pharmacy, sits at the intersection between health and retail, as the profits are gained from making sales of medications. This introduces a number of ethical complications and a strong need for guidelines to base decisions on that are centered on moral obligations and virtues.

Ethical responsibilities of pharmacist include:

- To commit to the development and enhancement of the profession by becoming involved in activities such as training staff, teaching, being a preceptor or mentor for students, interns or colleagues, participating in initiatives to develop the profession and demonstrate positive leadership.
- To keep up-to-date with knowledge of pharmacy practice with lifelong learning and self-development to maintain professional competence and personal health to continue practicing.
- To practice only when their professional independence, judgment and integrity remains upheld, and manage situations with a conflict of interest appropriately.
- To recognize the consumer's health and wellbeing as their first priority, and utilize knowledge and provide compassionate care in an appropriate and professional manner.
- To respect the consumer's autonomy and rights and assist them in making informed decisions about their health. This should include respecting the dignity, privacy, confidentiality, individuality and choice of the consumer

◆◆◆◆

## Need of Value System among Students: An ImportantAspect of NAAC

**Seema Teotia**
*Physics Department, Government Raza Post Graduate College, Rampur, (U.P.)*

**ABSTRACT**

Although skill development is crucial to the success of students in the job market, skills are of less value in the absence of appropriate value systems. The Higher Education Institutions have to shoulder the responsibility of inculcating desirable value systems among students. In a country like India, with cultural pluralities and diversities, it is essential that students imbibe the appropriate values commensurate with social, cultural, economic and environmental realities, at the local, national and universal levels. Whatever be the pluralities and diversities that exist in the country, there is a persisting concern for inculcating the core universal values like truth and righteousness apart from other values emphasized in the various policy documents of the country. The seeds of values such as cooperation and mutual understanding during the early stages of education have to be reiterated and re-emphasized at the higher education also through appropriate learning experiences and opportunities. The N a aC assessment therefore examines how these essential and desirable values are being inculcated in the students, by the Higher Education Institutions.

◆◆◆◆

# Egg-Shell Morphology of Selected Pthirapteran Species (Phthiraptera: Insecta)

**Ghazi Khan[1] and AftabAhmad[2]**
*[1]Department of Zoology, Govt. Raza P.G. College, Rampur (U.P)*
*[2]Estuarine Biology Regional Centre, ZSI, Gopalpur-On-Sea, 761002 Ganjam (Odisha)*

**ABSTRACT**

The egg-shell morphology of avian lice exhibits certain outgrowths, sculpturing or ornamentation. The markings present on the eggs are species specific and can be used to differentiate the species. The morphology of the egg shells of selected species belonging to the genus *Myrsidea*, *Lipeurus*, *Brueelia*, *Hohorstiella* and *Colpocephalum* has been noted with the help of SEM. The nature and location of marking/projections on the egg-shell, the number and nature of micropyles and polar threads on the operculum and the shape of stigma has been recorded. Study clearly indicates that the egg-shell morphology of avian lice may act as guide in louse taxonomy.

**Key Words:** Egg shell, Ootaxonomy, Phthiraptera, SEM

◆◆◆◆

# Vision 2022:A New Era in India

**Faiyazur Rehman**
*Research Scholar, Dr. Bhimrao Ambedkar University, Agra (U.P.)*

**ABSTRACT**

This paper discuss about the agenda of a dream"vision 2022" (New India) and concerns on which to overcome the country of poverty, terrorism, casteism, communalism and corruption, to understand the vision of Prime Minister Narendra Modi's new India by 2022, political proposals, party's national executive passed in the meeting also demanded to overcome the concerns of the economy and appreciate the measures like GST and politically.

There are many schemes for health and nutrition such as 1\3rd children under-5 stunted and underweight; 50 % young women anaemic, achieve Kuposhan Mukt Bharat by 2022. To build a new India by 2022, quality is essential for social and economic infrastructure. In recent years, the country has made a lot of progress on the infrastructure. and tells us about The third meeting of the National Council of Industries was recently held in the National Capital. For the purpose of changing India, the Ethics Commission has envisioned an ambitious agenda for the country by 2032.

**Key words:** Terrorism, Casteism, Communalism, Prime Minister Narendra Modi, Vision and Corruption

## Concept of Education – An Interpretation by the Judiciary

**Dr. Mukul Gupta**
*Assistant Professor, S.D. College of Law, Muzaffarnagar (U.P.)*

**ABSTRACT**

Education is always a turning point for us. Through education we can develop our mental ability in proper manner, books may be a good friend; if we treat them the right way, morality is a concept, which is defined and interpreted time to time. Moral education is the need of our time. Our education system is creating followers, not leaders and leaders is the basic need for us presently. Our judiciary has interpreted our education policy in this regard, and by the verdict, we have developed our education sector with constitutional approach.

◆◆◆◆

## The Importance of Values in Human Life

**Bobinder**
*Research Scholar, Sharda University, Greater Noida (U.P.)*

**ABSTRACT**

We are living in 21st century and he called it the "age of anxiety" (J.C. Coleman,1961). In modern era, everyone depends upon the computer in many ways. Now-a-days, computers have changed the way of life of human beings completely, because computer is a machine and machine is fully devoide of human values.while on the other hand, human values are more important in human life. Values have different meanings. The means to worth one gives you the different thoughts, words and actions. Values represent core aspects of human morality.

◆◆◆◆

## *In vitro* Biology of an Amblyceran Common Mynah Louse, *Myrsidea invadens* (Phthiraptera: Insecta)

**Ghazi Khan, Shalini Roy*, Surendra Kumar and A. K. Saxena**
*Department of Zoology, Govt. Raza P.G. College, Rampur (U.P)-244901*
**Department of Zoology, Hindu College, Moradabad (U.P)-244001*

**ABSTRACT**

*In vitro* culturing of amblyceran Phthiraptera is a challenging task. Scrutiny of literature reveals that only one amblyceran louse has been reared, so far and only partial success has been achieved. During present studies a non-haematophagous Common Mynah louse, *Myrsidea invadens* has been reared *in vitro* condition to derive information regarding their bionomics.

The incubation period of the eggs of *M. invadens* was recorded as 4.4 ± 0.6 (range 3-6 days; n=35). The duration of first, second and third instar nymphs was found to be 4.6 ± 0.63 days (range 4-6 days; n=18), 4.7 ± 0.79 days (range 3-6 days, n=20) and 5.0 ± 5.2 days (range 3-6 days; n=25) respectively. The lifespan of adult female was comparatively longer (7.4 ± 12.25 days; range 1-14 days; n=30) than males (4.8 ± 8.9 days; range 1-10 days; n=30). an adult female *M. invadens* laid 4.5 eggs during the lifetime at a rate 0.53 eggs/@&/day *in vitro* condition (35 ± 1°C, 75-82% RH) at feather diet.

**Key Words:A**mblycera, *In vitro*, *Myrsidea invadens*, Phthiraptera.

◆◆◆◆

## Need of Skill Development in Indian Education System

**Dr. Mudit Singhal**
*Assistant Professor, Department of Physics,*
*Government Raza P. G. College, Rampur ( U. P.)*

**ABSTRACT**

There is an area of concern around the world about the benefits that can be brought to education system through the appropriate use of evolving information and communication technologies. The range of possible benefits pervaded practically all areas of activity in which knowledge and communication play a vital role. It is involved from improved teaching and learning processes to better student outcome, increased student engagement and seamless communication with teachers and parents. Today there is a significant gap between knowledge and skills students learn in school and the knowledge and skills that workers need in workplaces and communities. Employers report that they need students who are professional, having good moral and work ethics, can collaboratively work in team, have critical thinking and problem solving ability, can lead a group of people and are skilled in verbal and written communication. This paper deals with the role of Education Technology in India.

◆◆◆◆

## Higher Education in India Challengesand Prospects

**Vivekanand Singh[1] and Dr. Kumudlata Singh[2]**
*[1]Assistant Professor, Department of Sociology, N.R.E.C College, Khurja (U.P.)*
*[2]Assistant Professor, Department of Physical Education, D.G.P.G College, Kanpur (U.P.)*

**ABSTRACT**

The research paper 'Higher Education in India Challenges and Prospects' The world has realized that the economic success of the states is directly determined by their education

systems India's higher education system is the world's third largest in terms of students, next to China and the United States. The main governing body at the tertiary level is the UGC (University Grants Commission) in India, which enforces its standards, advises the government, and helps coordinate between the centre and the state. Universities and its constituent colleges are the main institutes of higher education in India. There are around 30,484,746 students are taking higher education in India. There are several private institutes in India that offer various professional courses in India. Distance learning is also a feature of Indian higher education system. Some institutions of India, such as the Indian Institutes of Technology (IITs), have been globally acclaimed for their standard of education. The IITs enroll about 8000 students annually and the alumni have contributed to both the growth of the private sector and the public sectors of India.

**Key words:** Education, Higher Education,

◆◆◆◆

## Social Skills among Secondary School Students with Reference to their Personal Background Information

**Laxmi Joshi**
*Research Scholar, department of Education, S.S.J Campus ALMORA, Kumaun University,UK.*

**ABSTRACT**

The study was aimed to identify the status of social skills among senior secondary school students on the basis of their personal background (gender and caste). Normative survey method was applied. To select a representative sample, Group of 100 students 25 girls and 25 boys of class 11$^{th}$and 25 girls and 25 boys of class 12th students were selected. The scale developed by Dr. Vishal sood, Mrs. Arti anand and Suresh kumar and personal information schedule developed by Dr. Renu Rawat and Joshi was used to collect deta. On the basis of z- score value students were classified into High, Average and Low level of social skills. It was found that the level of social skill of most students was High in terms of skills of concern for others and problem solving skills which was first and fifth dimension of social skills. Further in the context of third dimension which was communication skill and fourth dimension which was self control skill, most students was Average and the level of social skills of most students was Low in terms of second dimension of social skill which was relationship skill. It was found that caste group and social skills were significantly different with each others.

◆◆◆◆

# An Exploration of the Structural Elements in Aravind Adiga's Novel: *The White Tiger*

**Samra Saeed**
*Research Scholar, Department of English, Glocal University, Mirzapur Pole, Saharanpur-247001 (U.P.)*

**ABSTRACT**

In the present perspective, the technical appraisal of narrative in Aravind Adiga's, *The White Tiger* examined and valued. Apparently, the narrative techniques are in-distinguish and indiscriminative components of the novel and havetheir roots in its structure. The allegorical comparison of the idea and its form matches the story and its novel. The resemblance reminds one about the pair of thread and needle, where the absence of one makes other dysfunctional. Hence, Narratology, the art, and the science of weaving structure of a taleare the study of *Form* and Functioning of *Narrative*. Whereas narrative, identify everything that tells a story. The narratological study is institutionalized and it needs minimum two activities to form a Narrative.

The writing of this novel is in epistolary form and in the Omniscient Point of View and have a writer instead of a narrator. There is a close attachment between the narrator and the reader but in these tales, there is a complete lack of these feelings. This novel is the assimilation of multiple structural elements in its storyline. The central component of the structure of this story is well dugs in its labyrinths, illuminated behind the darkness inside its tale and is the soul in this novel. The story of this novel reflects the disparity of wealth that generates and accelerates immorality in society.

The structure is center on four aspects of narrative technique; narrator, vision, voice and time. The other aspects Adiga use to progress his narration through illustration and symbols such as Poster, Chandelier, Rooster Coop, White Tiger, etc. This makes the novel even without twist and suspense in the plot, very endearing and Avant-garde. Furthermore, without a tight plot, the novel still is razor-sharp. Adiga wrote this narrative in the style of Memoir and loosely based it, in the classical Russian formalist format.

**Keywords:** Epistolary form**,** Russian Formalism, Narratology, Narrative Techniques, Semiotics, Structure elements, Omniscient point of view

◆◆◆◆

# Education Policy in India – Issues and Challenges

**Priti Lour**
*Research Scholar, Department of Law, D.A.V. College, Muzaffarnagar (U.P.)*

**ABSTRACT**

an education can create educated society which prepares the present generation for a bright future and enables the individual to galvanize the capacity of collective. according to ancient thinkers in India, Vidya or knowledge or learning or education is the 'third eye' of man, which gives him an insight into all affairs and teaches him how to act; it leads us to our salvation in the mundane spare it leads us to all round progress and prosperity.Education is a strong pillar of development and without education there is no development. ancient Indian thinkers and philosophers said that education makes a man complete human being conceptual essence and commutative continuum. It is the bedrock of all happiness fame and pleasure. It is education but not money which is respected and honoured in the royal assembly. Now the Right of Children to free and Compulsory Education act 2009 has been elected by the parliament. The act provides among other things for the right of every child who has attained the age of 6 year to be admitted in a neighborhood schools

◆◆◆◆

# Comprative Study of Values In Indian Ideology, Science And Human Psychology

**Priti Lour**
*Manuj Kumar Agarwal[1], Mani Bansal[2], Anuj Agarwal[3]*
*[1]Moradabad Iinstitute of Technology Moradabad, [2]Dayanand Degree College, Moradabad, [3]T. M. U., Moradabad*

**ABSTRACT**

Although monetary expectations for day-to-day and comforts have improved over time, the world's advancement has encountered numerous significant issues from different angles in conditional, social and human measurements. Are we living a happy life in all aspects, even with the advancement of technology, living standards? There are several questions with respect to human qualities and true human values, just as worries for biological equalization, atmosphere changes, and practice advancement. This has prompted conversations among us for the enhancement of improved standards for comprehensive advancement.

◆◆◆◆

# Education and Human Values

***Bhagya Bhatnagar***
*M.Ed 1st Year, Hindu Coleege Moradabad (U.P.)*

**ABSTRACT**

In India Human Value Based Education is the real need of the hour. As we see how the Society is diminishing in case of values day by day. It is necessary to develop the programs for inculcating values in the society. Today's Indian youths are little bit confused because of the bombarding of the new technological devices, information explosion and violent news by the press & media. To inculcate the value system in their confused minds and make them value-oriented-powerful leaders, educational institutions should take the initiative to impart Value Based Spiritual Knowledge to this new generation. "Imbibing the qualities of good conduct, self-confidence and high values would help students earn a significant place in society. Education without human values is like a flower without fragrance. Students should realize that character building is equally important as career building. A good character in life is ultimate thing that stretches person's self-realization". An attempt is made in this paper to discuss the role of the human value based education in society, it elaborately discusses about the implications to develop the value education. Rena, R. rightly points out that "There is a popular misconception that values are "better caught than taught". In reality however, values are both caught and taught." Today's generation is not going to catch the Human values without teaching. We have to teach the human values to this

generation before they are caught by the bombarding of the new technological devices, information explosion and also by the media. The paper lastly discusses about the human value education attempt taken by the author herself by creating the "SanskarSarjan Blog" for her college students. According to the author Human Value Based education cannot be taught without Spiritual Knowledge or Spiritual Consciousness. In conclusion, mere desire or aspiration to progress in life is not enough; success should be based on values. And for that human value-based education must be imparted in today's institutions. So that the students may emerge as good leaders in their chosen fields.

**Keywords:** Human Value-Based Education, Values, Society, Education.

◆◆◆◆

# Role of Professional Ethics in Scientific Research: A Study on Published Research Material Affecting the Educational Standards of Our Country

**Tanveer Ahmad Khan**
*Research Scholar (Ph.D.), Department of Commerce & Business Management*
*Integral University, Lucknow, Uttar Pradesh, India*

## ABSTRACT

The object of research is to extend scholar knowledge beyond what is already known. But a research scholar's knowledge enters the domain of science only after it is presented to others in such a fashion that they can independently judge its validity. Ethical issue means a problem or situation that requires a person to choose between alternatives that must be evaluated as right or wrong, be aware that even if you do nothing illegal, doing something unethical may end your research career.

Research has a decisive impact on the development of the society, so researchers are required to take ethical components into consideration in relation to their research and studies. The aim of the present study is to recognize the rate of professional ethics components used by researchers in education. Ethics is a necessity need in every profession; it should be taken into account in researching on people and the society. Due to the high impact of research on people and society the importance of recognizing and observing professional ethics in these areas has increased. Based on the results of the present published research study, the following are the most important components of professional ethics: Respect for all the participants, safety and health of participants, privacy, failure to provide material benefits in return for getting data and useful information from the available resources, trust and respect of all the people involved in research, having a spirit of tolerance and openness in dealing with participants, avoiding inappropriate humour and jokes, not using the university facilities for personal matters by scholars.

◆◆◆◆

# A Socio-Legal Study of Cruelty Against Indian Women

**Amit Kumar**
*Rsearch Scholar, Department of Law, D.A.V. College, Muzaffarnagar (U.P.)*

**ABSTRACT**

Cruelty against women is a social harmful activity to the society directly affecting not only women but whole families. Therefore, our family system has been disillusionised due to cruelty against women. In the era of globalization, we are facing many social difficulties and the result is that after many legislation and enactments which favours the rights and equality to women and provide protection to them generally we consider cruelty as an offence which defined under the title of divorce in matrimonial cases, but it is not only under the title of divorce it cover all social evils which are existed in our society. Cruelty has been mentioned under Article 23(1) trafficking in human being beggar and other similar form of forced labour or prohibited and any contravention of this provision shell be an offence punishable in accordance with law. According to the National Crime Records Bureau of India, reported incidents of crime against women increased 6.4% during 2012, and a crime against a woman is committed every three minutes. According to the National Crime Records Bureau, in 2011, there were greater than 228,650 reported incidents of crime against women, while in 2015, there were over 300,000 reported incidents, a 44% increase. National Crime Records Bureau emphasized that cases of cruelty are increasing day by day in India.

◆◆◆◆

## CONTENTS AND METHODS OF VALUE EDUCATION

**Dr. Rajni Bala and Dr. Monika Khanna**
*Assistant Professor, Economics*

**ABSTRACT**

"Values" refer to those ideals, duties, moral, obligations, desires etc. which impulse satisfaction in accordance with the whole array of hierarchical enduring goals of the personality, the requirement of both personality and socio-cultural system for order. Value does not exist in ultimate of final manner.

**Counter part of selfhood :** I want to discuss some contents and methods for value education. We have rich literature from our heritage and the constitution of India also imbibe the values of Democracy. Justice, secularism, sovereignty etc. which are the demands of present India society. Hence appropriate way and methods we can used to inculcate these values among the regenerate and achieve peace throughout the nation.

◆◆◆◆

# The Motion of Weak Plane Shock Wave in Highly Viscous Medium

**Arvind Kumar, and Kamlesh Kumar**
**Dept. of Physics, D.S.R.Degree College Gularia Budaun (U.P.)*
*Dept. of Physics, Agra College, Agra (U.P.)*

**ABSTRACT**

Neglecting the effect of overtaking disturbances, the propagation of weak plane shock waves in highly viscous medium has been investigated by Chester-Chisnell-Whitham method. The analytical relations for shock velocity, pressure and particle velocity has been obtained only plane shock wave.The profile of flow variable of perturbed medium are obtained and discussed with the help of tables and grapes. The result obtained and compared with those for non viscous medium. It is found that the viscosity of the medium governs the propagation of shock strength.

**Keywords:** Shock wave, uniform- medium.

◆◆◆◆

# Human Values in Indian Culture

**Dr. Priyanka Verma**
*Assist. Prof., Dept. of Education, Jyoti College of Management Science & Technology, Bareilly (U.P.)*

**ABSTRACT**

Values are these ideals, objects and preference that are universally 'Good' and desirable and are committed to what is Right and True. Values may belong to different spheres of activities and human existence, such as physical, social economic, intellectual, cultural, emotional, aesthetic, moral and spiritual. The tree of Indian value system is deeply rooted in the soil of our ancient culture and tradition. Our ancient culture and tradition depend on the human valued. Dharma, Artha, Kama, Moksa are the main basic value in the Indian culture. The major aim of Vedic education was to promote understanding of the moral values of life. Gita highlights the human values in totality. In manusmrti Dharma is essential for the individual's happiness and for the family and the society. Ramayana contains the universal human values. Rigveda has beautifully spell out the right to equality. Human values are mainly emphasis on Vedanta Sastra. Upnishad contains immortal truth realized by a pure & sense-free mind. Vidhura Niti having relevance even today. Buddhism is also give messages of non-violence, equality, brotherhood and friendship. The Buddha said that self-power, self-reliance & unity were the key-points for the development of human society as well as nation. In present children have the potential to acquire values through education.

According to Indian philosophy life without values is a meaningless and a baseless concept. So the value education is essential.

◆◆◆◆

## An Interpretation of Sexual Harassment in India

**Dr. Renu Garg**
*Principal, S.D.College of Law, Muzaffarnagar (U.P.)*

**ABSTRACT**

Cruelty against women is a burning point of our Society. Sexual Harassment is one form of the cruelty of our Society. Indian Parliament has enacted many provisions in this regard. Sexual Harassmentis a curse of our society.Sexual harassment infringes the fundamental right of a woman to gender equality under Article 14 and her right to life and live with dignity under Article 21 of the Indian Constitution

◆◆◆◆

## Role of education in developing environmental ethics in students

**Mohd. Waqar Raza**
*Assistant Professor ( B.Ed.), Km. Mayawati Govt. Girls P.G. College, Badalpur Gautambudhdha Nagar*

**ABSTRACT**

Education acts as a lighting lamp to show the right path to guide the human being in a rationalmanner as it plays a vital role in overall development of a child i.e., cognitive, affective andpsychomotor. Education makes a person competent enough to judge what is right or what is wrong, aswell. At present the problem of environmental degradation is very much in limelight. It is observedthat lack of proper knowledge and awareness among the citizen regarding conservation of environment is the prime reason for the environmental degradation. It will be very useful to educate its youth especially the adolescents students regarding conservation of environment. The students must be aware of environmental morality that should be taught to them in learning centres. The environmental ethics is the philosophical discipline that considers the moral and ethical relationship of human beings to the environment. In other words: what, if any, moral obligation does man has to the preservation and care of the non-human world? Thus, the present paper focuses on the role of education for developing environmental ethics among adolescents in India. It can be inferred that, education can serve as a potent tool in developing environmental ethics among Indian adolescents because; they are the future of the country and have huge potential to incorporate the ethics in environmental conservation to manage the degrading.

# Education and Human Values

**Sumaira Jameel Khan[1] and Dr. Pravesh Kumar[2]**
*[1]Dept. of Botany, Mohammad Ali Jauhar University, Rampur, [2]Dept. of Education, Govt. RazaP.G.College, Rampur (U.P.)*

## ABSTRACT

This article dwells on the value system present in the education system in India.Human values such as morals, integrity play an important role in the building of national character of the students. These values combined with the education system will ultimately help to nurture the all round development of the students . Moral values and ethics in educational system lead to academic excellence.The stress of ever increasing workload have lead to the deteriorating quality of the educational system.A good and comprehensive education system is expected to create the necessary human capital andknowledge workers who will bring the country to greater heights. In this regards, a holistic education programme is needed which can equip students with both the hard and soft skills required as well ashuman values. However, the main emphasis in education today lies in acquiring large amounts ofinformation, passing examinations and securing qualifications for future employment. Human society may not significantly sustain without human values. Hence, it is necessary to talk on the subject and bring about awareness of human values into the present educational institutions. There is no denying the fact that the present society is facing a lotof crises. Human values crises are a known fact of the modern society

**Keywords:** Human values, moral values, education in human values.

◆◆◆◆

# Eduction and Human Values

**Ms. Pooja**
*Assistant Professor, Education Department, S.I.M.T. Rudrapur (U.K.)*

## ABSTRACT

The present paper in an attempt to explore the importance, need and role of human values in the education. Human values are heart of the education. Love, peace, truth, wisdom, integrity, justice, co-existence, service, devotion and contentment are human values. Human values provide quality of life and sustained development in the society. Human values give direction and firmness to life, bring the behavioural changes towards positivism, promote the peace and harmony in the individuals and in the society. A good and comprehensive education system is expected to create the necessary human capital and knowledge workers who will bring the country to greater heights. The main emphasis in education today lies in acquiring large amounts of information, passing examination and securing qualifications for future

employment. The education in human values programme seeks to help teachers, parents and children to re-focus on the basic positive values that underlie all aspects of a moral society. Human society may not significantly sustain without human values. Hence, it is necessary to talk on the subject and bring about awareness of human values into the the present education. There is no denying the fact that present society is facing a lot of crises. Human values are known fact of the modern society.

**Key words :** Value,Education, Ethics,Human values.

◆◆◆◆

## Environment Conservation And Human Values

**Ms. Chhavi Jain**
*Assistant Professor, S.D. College of Law, Muzaffarnagar (U.P.)*

**ABSTRACT**

Protection of environment and public health is a constitutional obligation of state. It is our fundamental right under article 21 right to life with human dignity in healthy environment. It is duty of state also in directive principle of state policy which is of great importance. Its essence is Human welfare. Healthy environment is required for physical and mental health of people because healthy mind lives in healthy body. Industrialization, Urbanization and population explosion effected the Environment on large scale it is only controlled by sustainable development. Conservation of soil, air, water and natural resources is necessary for present and future generation.

There are many movements like "chipko movement" etc. for deforestation, united nation also works for environment Conservation There is disarmament for reducing the use and production of arms and nuclear weapons. Kyoto protocol and Nagoya protocol for climate change and Bio-diversity. The conclusion of Kyoto protocol fixed the target for reducing green house effect. This target covered emission of six main green house gases like carbon dioxide, methane, nitrous oxide, per fluoro - carbons, sulphur- hexa fluoride. Sustainable development is now the basis for the U.N. Environment philosophy and is already giving a sharper edge to global environmental action. The principle of "One Earth" is accepted in Stockholm Conference,1972 In this conference the former PM of India Smt. Indira Gandhi said that poverty and necessity is the main cause for environmental pollution. The national Environment tribunal Act was also set up for determining the liability and compensation for the victims of pollution and other environmental damages was passed in the year 1995. Green Courts have been established for hearing the matters relating to environment alone. Section 110 of the motor vehicles Act,1988 empowers the Central Government to prescribe emission standards for vehicles and to frame rules regulating the construction, equipment and maintenance of motor vehicle in relation to emission of smoke, sparks, ashes, girt or oil. In I.P.C., 1860 certain provisions under section 272 to 277, 426,

430, 431 and 268 to 294 A deals with offences which affect the public health and morals. Section 133 to 144 can be most effective and speedy remedy for preventing and controlling public nuisance which causes Air, Water and Noise pollution. Writ jurisdiction under article 32 and 226 of constitution and problems can also be brought before judiciary through PIL and SAL (SOCIAL ACTION LITIGATION).

◆◆◆◆

## Issues and Challenges

**Dr. Mukta Verma**
*Assistant Professor, Faculty of Law, University of Allahabad (U.P.)*

**ABSTRACT**

Education is an important tool to get acquainted with all the possibilities and opportunities of life. Illiteracy, poverty, physical disabilities or lack of intelligent quotient, conservative culture, lack of resources, lack of basic facilities, information and communication technology etc. are some of the major factors which are responsible for low literacy rate in India. In India illiteracy is a major challenge to provide education for all. Right to education is one of the basic fundamental rights which provide a legal or constitutional right to citizens. Article-41,45,47,51A(k) has important provisions to provide education to all. Under Article-21A, Right to education; it is the duty of a State to provide free compulsory education to every children till the age of fourteen years. There are various methods through which education has been imparting across the country to all for example- MOOCs, online classes, open or distance methods of education, inclusive education to disable or physically challenged people. Various Acts, central and state schemes are running to provide free compulsory education to weaker sections of society such as Mid Day Meals Schemes, Anatyodya Anna yojana, Pron shiksha Kendra, Anganwadi, early childhood and care education, Sarva Shiksha Abhiyaan, National Council of Teacher Education (NCTE) etc. It is the duty of a State and people to provide compulsory and complete education to all beyond of any disabilities.

◆◆◆◆

## Professional Ethics in Teaching Community: A Global Concern

**Dr. Surendra Pal**
*Associate Professor, Department of Teacher Education, D.A.V. (P.G.) College, Muzaffarnagar (U.P.)*

**ABSTRACT**

In modern times of recent globalization, though scientific and technological developments are unimaginatively progressing, the character and conduct of the Individual, Society, Teacher and Students are at the low ebb and are very unsatisfactory in major parts

of our country. We often see, hear and witness incidents of molestation of students, racial discrimination, bribery, and favouritism, a stagnant attitude of Teachers without an urge to grow professionally and be competent. Teachers should learn to control their emotional outbursts with their intellectual potentialities and this is possible only when there is a code of ethics which is imposed, enforced and practiced. Ethics basically is a science of discrimination between the right and the wrong. Conduct and character development should be an integral part of Teaching profession since Teachers are the makers of History and it is these Teachers who prepare the future responsible citizens of our country. The Teachers of India, as of any other country should resolve to adopt the professional ethics of day to day dealing with those entire concerned. To make the human relationship sacred, worthy, fruitful and productive, professional ethics is a must. The present paper dealt with the analysis of professional ethics that are necessary for the teaching community.

**Key Words:** Profession, Teaching, Ethics, Community, Globalization

◆◆◆◆

## Indian Culture and Human Values

**Dr. Rajesh Kumar Sharma[1] and Mr. Pradeep Kumar Sharma[2]**
*[1]Assistant Professor, [2]Assistant Professor, Institute of Professional Excellence & Management Ghaziabad*

**ABSTRACT**

In this paper I would analyze the Human values and its Ethics being need of the day. Human values are the base of the Human beings. Human value gives meaning and strength to an individual's character. This Paper presents that teachers and parents would aware of importance of value education in children in children &there role in it. So this paper advocates that values of teacher education needs a total quality transformation as educational theory, pedagogy, training method organization& administration. This paper also points out that the essence of human values is to able children to be aware,to think and reflect, to question& to criticize. Human values and morality are the integral components of all religion. Human values and morality so closely interrelated with each other. This paper also points out that it is found that rapid deterioration of ethical and moral human values in the Indian society. At this time we have gradual erosion of values, which is reflected in day to day life. Truth, peace, non-violence, is the core universal values which can be identified as foundation. In this paper we have discussed some important values as freedom ,pleasure, self respect, etc. A review of literature on value education and a critical analysis of recent trends are presented in this paper.

**Key Words**: Human value, value education, Ethics Universal values, character development

◆◆◆◆

# Contribution of Professional Ethics in Education

**Ms .Amandeep Kaur**
*Assistant Professor, Ganpati Institute of Science and Technology*

**ABSTRACT**

In this world of Globalization and Competitive world, we are noticing diverse changes in our educational system. The aims and objectives of education is also changing according to the needs, interests and requirement of learner, society and the nation as a whole. In educational field, the ethical consideration has lost its value and place, even in real life it is very difficult to find ethical person around us. So it's a need of hour to develop ethics in professional life of the person. In the field of education, Professional Ethics is like a guide which facilitates the teacher to provide quality education and inculcate good values among the learners. It also helps the teacher to understand their profession as a teacher. Teacher having sense of professional ethics will treat their learners with love, care, affection and commitment. In order to deal with the indiscipline, anger, frustration among the educator and the learner, this is very important to reintroduce value based education, spiritual education, ethical education and need based education in the curriculum which should deal with increase in human values and moral development in education system.

◆◆◆◆

# Role of Right to Education in Present Socio-Legal Scenario: Antidiabetic Potential of Edible Plants and Phytochemicals

**Mohd Kamil Hussain[1], Krishan Kumar Arya[2]**
*1Department of Chemistry, Raza (PG) College, Rampur-244901, U.P., India*
*[2]Department of Chemistry,Govt. Model Degree College Araniya Bulandshahar (U.P.)*

**ABSTRACT**

Diabetes mellitus (DM) is a group of metabolic diseases and mainly caused by the abnormality of carbohydrate metabolism either by low blood insulin level or insensitivity of target organs to insulin. DM is increasing in both developed and developing nations as unhealthy diets and lifestyles become more common. Common symptoms of DM are increased fatigue, polydipsia, polyuria, polyphagia, blurred vision, poor wound healing, quick exhaustion, drowsiness. Therapy of this disease relies mainly on several approaches intended to reduce the hyperglycemia itself. On the other hand, natural therapy is safe over synthetic drugs having less or no side effects as well as cost effective. From ancient times, various medicinal plants, herbs and foods are reported to be used in curing diabetes all over world including Ayurveda, Unani and Chinese systems of medicine. About 800 plants have been

reported possessing anti-diabetic potential. This chapter deals with the significances of edible plants in the treatment of diabetes mellitus.

◆◆◆◆

# Professional Ethics In Teaching : A Keystone Of Teachers Profession

**Namita Mandal**
*Government Inter College, Dineshpur, Udham Singh Nagar (Uttarakhand) -263160*

**ABSTRACT**

Nowadays, there is a growing expectation that teachers will act in a professional manner. Professionalism, in this regard, includes identification of a unique body of occupational knowledge, adherence to desirable standards of behaviour, processes to hold members to account and commitment to what the profession regards as morally right or good. In other words, as ethical conduct. Teaching ethically involves making reasoned decisions about what to do in order to achieve the most good for learners. Often, this involves a complex interplay between current context, past experience and personal beliefs and values. However, teacher education and accountability frameworks typically give priority to the practical rationality of planning, delivery and assessment of the official curriculum, not the value rationality involved in exploring the ethics of teaching in difficult practical circumstances. According to Rabindranath Tagore, a great indian thinker,teacher and philospher , " Teacher is like a candle that burns itself to light up the life of others". It means that they should develop appropriate ethics among themselves so that the same values can be developed among students. Some of the teachers carry with their heads high this noble tradition, innovate and teach beyond the classroom setting, while Other teachers have lost the passion to impart knowledge and information and are simply going through the motions of teaching, for the sake of doing job.The paper starts with the discussion of the role of professional ethics in developing the qualities of teacher,determining the relationship between teacher's professional ethics and general or fundamental ethics, contingent on the issue of teacher's professionalism. Further, it presents various approaches to teacher's professional ethics, resulting from different classical philosophical perspectives, centered on duty, consequence, virtue, value, and the person. Finally, it argues for an integrated, personalistic approach to the subject, providing a solid ground in the cultural context of fluid modernity. The present paper throws the light on the needs, principles, challenges and constraints in the implementation of Professional Ethics in teachers.This article provides a theoretical discussion of the process of developing a professional code of ethics for teachers.

**Key words**: professional ethics, teacher,innovate, code of ethical conduct, Accountability

◆◆◆◆

# Peace Education in India

**Dr. Neeraj Kumar Parashari**
*Assistant Professor, Department of English, Govt. Degree College, Raza Nagar Swar, Rampur(U.P.)*

**ABSTRACT**

Peace education is a broad field and can be difficult to define.In this millennium "peaceeducation" programs around the world have represented a spectrum of focal themes, including anti-nuclearism, international understanding, environmental responsibility, communication skills, non-violence, conflict resolution techniques,democracy,human rights awareness,tolerance of diversity, coexistence and gender equality among others.

Across the world,peace education are gaining popularity.However,with this growing recognition there are increasing contestations over both the broader objectives and the specificities of carrying out peace education programs.There is no doubt that peace through education can be generated.It is important that peace education is not an additional academic subject we add to the exixting system. Instead,it is general orientation that we introduce in the existing subjects,textbooks and teacher's discourse.For instance,the sociology textbook could underscore the fact that peaceful coexistence is an objective requirement for peaceful development and vice versa.In the physics textbooks,emphasis could be laid on the fight for a ban on nuclear weaponsof mass destruction(WMD) and international agreements in this field.Biology books could explain,among other things,the deadly effects of exposure to radioactivity on human beings.Needless to say ,one who wills the end wills the meansso content of teacher education curricula and teaching methodologies for moral,ethical,value,peace and harmony education for the development of human values need to be designed and strengthened.

◆◆◆◆

# Professional Ethics and Professional Code of Ethics for Teachers

**Pooja[1] and Ankush[2]**
*[1]Assistant Professor, [2]Assistant Professor, Shivalik College of Education, Mustafabad Jattan, Gurdaspur*

**ABSTRACT**

The present paper objects the light on the Professional Code of Ethics and its need for teachers. Our values, attitudes and actions influence the impact of our work. Speaking about the profession of teacher, it is necessary to consider contemporary global ethical issues in education and educational research. This code of professional ethics may be defined as a set of self-imposed professional ideals and principles necessary for the attainment of

professional excellence and self-satisfaction. Professional Ethics contributes to controlling the expected behavior of all parties towards the profession in order to create the best moral environment that provides better learning and educational outputs.

**Key words:** Professional ethics, teachers, code of ethics, towards students,parents, society.

◆◆◆◆

## Human Values in Educational Organizations

**Dr. Yogeshver Prasad Sharma**
*Associate Professor, Department of Education, ShriVenkateshwara University, Rajabpur, Amroha (UP)*

**ABSTRACT**

The present Paper is an attempt to explore the importance of human values in the Educational organizations. Human society may not signicantly sustain without human values. Hence, it is necessary to talk on the subject and bring about awareness of human values into the present educational organizations. There is no denying the fact that the present society is facing a lot of crises. Human values crises are a known fact of the modern society.

**Keywords:** Human Values, Educational Institute&Organizations

◆◆◆◆

## Education And Human Values

**Varsha Pant**
*Assistant Professor (Education Department, Saraswati Institute Of Management And Technology, Gadarpur, Rudrapur (U.K.)*

**ABSTRACT**

With the begning of modern education in the country, there has been a gradual erosion of values in our society. This is because character traning and value education have been ignored altogether in our education system. This stress on habit formation, attitude development and value incalculation as goal of education were totally discounted. This led to erosion of values clouding have in our society. The rapid degradation of values in the Indian context has posed a great challenge before our education system, because education without values is not beneficial to anyone. Education devoid of values may be deterimental to society in the long run. The Global task of promoting and protecting all human values and Fundamental freedoms so as to secure full and universal enjoyment of these rights cannot be fullfilled without mass awarness and sensitivity to human values. Right to education has also been incorporated. The childreen as well as the other people are indispensable to the full realization of the responsibility under this constitutional directive. Education is a methodical

effort towards learning basic facts about huminity and the core idea behind value education is to cultivate essential values in the students so that the civilization that teaches us to manage complexities can be sustained and further developed. Once, everyone has understood their values in life they can examine and control the various choices they make in their life. Values based education bring quality and meaning to life and give a person his identity and character. Children imbibe values all the time from their parents, teachers and peers. But it is also necessary that we deliberately teach them the right values right from their childhood. What they learn at this tender age stays with them all through their life. Hence, it has become imperative for our education system to impart vaue-based education in order to preserve and feel proud of our thousand years old value-based cultures. The present paper attempts to deal with the degredation of human values and how education is to cultivate essential values in human's life.

◆◆◆◆

# The Role of Human Activities in Solid Waste Management

**Dr. Pushpanjali Arya and Dr. Archana Kukreti**
*[1]Associate Professor Economics, [2]Assistant Professor Home Science, G.D.C Barkot, Uttarkashi (U.K.)*

## ABSTRACT

Whether it is process of utilization of input or production of output in both there is a waste and residue. In the initial stage of growth it was presumed that the nature would provide all the resources and no one cared about the waste that generated by the use of these resources. It was assumed that the nature would assimilate, absord and treat all these wastages by the natural process of decomposition. But the increasing pace of progress, urbanization, industrialization the exploitation of resources has been so rapid, that is has resulted in releasing enormous quantities of waste into the environment. The environmental conditions are constantly changing and this change is not for good. Human activities are the major reason for the incredible harm dealt to the environment in the last 100 years . It is now realized that if waste generation continues indiscriminately than very soon it would be beyond rectification when some of the changes are irreversible.This paper offers knowledge about the various types of solid waste and attempts to study the vital role played by the humans in solid waste management.

***"Solid waste in any material which is thrown away Because of no value"***

***S***olid waste is the material arising from human and animal activities such as garbages, refuge and sludge from effluent treatment plants.Solid waste are produced as byproduct of the normal and fundamental activities of livings.These wastes may be rudimentary as food scraps, ash from fires, an excreta from humans and animals. With the construction activity, landscaping,street sweeping and sewage treatment also produce good amount of solid waste.

# Teacher and professional Ethics

**Shally Verma**
*Assistant Professor, Saraswati Institute of Management And Technology*

**ABSTRACT**

Teaching is the noblest profession among all the professions, since all professions underwent education with a teacher. Its also a process to prepare the next generation of skilled professionals and workers like politician, engineers, doctors, policemen, educators, legislators and good citizens. In this world of globalization and competitive world, we are witnessing diverse changes in our educational system. Now the concept of teacher and teaching also is changing day by day. a teacher in this contemporary era has many duties and responsibilities to play. Apart from having good academic and professional qualifications, they should also posses the knowledge of professional ethics. Professional ethics is like a guide ,which facilitates the teacher to provide quality education and in calculate good values among the learners. The professional ethics will enlighten the teachers, that they have a major role in bringing desirable changes in behaviour of the students, it also help the teachers to understand their profession as a teacher. Their role is not just to become supreme and authoritarian in front of their students and colleagues. But then they have a wider and meaningful role to play. teacher having the sense of professional ethics will treat their learners with love care affection and commitment.

◆◆◆◆

# Teacher and Professional Ethics

**Dr. Ravi Kant Sharma**
*Asst. Professor, B.Ed. Department, S.M. (P.G.) College, Chandausi, Sambhal (U.P.)*

**ABSTRACT**

Today we are living in the modern world where Teacher plays an important role, Teachers help students learn the academic basics, but they also teach valuable life lessons by setting a positive example. As role models, teachers must follow a professional code of ethics. This ensures that students receive a fair, honest and uncompromising education. A professional code of ethics outlines teachers' main responsibilities to their students and defines their role in students' lives. Above all, teachers must demonstrate integrity, impartiality and ethical behavior in the classroom and in their conduct with parents and coworkers.

Teachers must model strong character traits, such as perseverance, honesty, respect, lawfulness, patience, fairness, responsibility and unity. As a teacher, you must treat every student with kindness, equality and respect, without showing favoritism, prejudice or partiality. You must maintain confidentiality unless a situation warrants involvement from parents,

school administration or law enforcement, and never use relationships with students for personal gain.

Teachers must wholly commit to the teaching profession. Your classroom should promote safety, security and acceptance, always avoiding any form of bullying, hostility, dishonesty, neglect or offensive conduct. You must accurately describe your qualifications, credentials and licenses to school boards or principals who seek to hire you. You must also fulfill all contracts; obey school policies; and account for all funds and resources at your disposal. It's your responsibility to design lesson plans to meet state standards and create a well-rounded education plan that appeals to a wide range of learners.

A professional code of conduct demands attentiveness to continuing education requirements and career development. You must research new teaching methods, attend classes to maintain your certifications, consult colleagues for professional advice, participate in curriculum improvements and stay up to date on technical advancements for the classroom. It's your duty to ensure that your teaching methods are fresh, relevant and comprehensive. Teachers must engage in educational research to continuously improve their teaching strategies.

In addition to fostering healthy relationships with students, teachers must build strong relationships with parents, school staff, colleagues in the community, guidance counselors and administrators. You must never discuss private information about colleagues unless disclosure is required by law. Always avoid gossip, including false or mean-spirited comments about coworkers. Part of the code of ethics requires you to cooperate with fellow teachers, parents and administrators to create an atmosphere that's conducive to learning. You might be called upon to train student teachers as they prepare to serve as educators, so a positive attitude and a team-centered mindset can make all the difference.

◆◆◆◆

## Environment Conservation And Human Value

**Priya Shrivastava**
*Asst. Professor, B.Ed. Department, S.M. (P.G.) College, Chandausi, Sambhal (U.P.)*

**ABSTRACT**

Human activity is changing the climate, depleting biodiversity, destroying habitats and poisoning the earth, the water and the air. It is increasingly understood and accepted that natural resources are limited and that their use should be sustainable. Campaigns to raise awareness and improve education have highlighted to the general public that human civilization is on an unsustainable path that could lead to ecological, economic and human disaster. Yet, humans continue to degrade the biosphere and deplete natural resources at an unprecedented rate.

There are many explanations for this apparent disconnect between knowing that our life style is unsustainable and doing nothing to change it. These include that the dominant economic model is based on continuous growth; that there is a lack of communication to stakeholders and policy makers; a lack of international coordination to address global problems; that people are reluctant to change their lifestyles; and that we do not experience the impact of global environmental problems on our daily lives. This disconnect also applies to other problems such as poverty, public health issues and hunger. Everybody dislikes the consequences, but nobody is willing to make the necessary sacrifices to address the issue.

It therefore seems legitimate to ask whether humankind as a whole is interested in preserving nature for future generations and civilizations. In other words, do we care about the future of our species? Given our current rate of exploitation of natural resources, a hypothetical alien observer might come to the conclusion that we do not.

Some commentators have suggested that perhaps humans are not yet sufficiently evolved to leave this self-destructive path and that, with time, biological and cultural evolution will remedy the problem [1]. From a biological perspective, however, there is no evidence that humans are evolving toward a more environmentally conscious state. Moreover, evolution is highly stochastic and contingent and, as a consequence, totally unpredictable. Such arguments rather seem to come from religious or moral beliefs that humans are predestined to live in harmony with nature.

◆◆◆◆

# An Appraisal Study of Our Education Policy with in Judicial Limitation

**Priti Lour**
*Research Scholar , Department of Law D.A.V. College Muzaffarnagar (U.P.)*

**ABSTRACT**

Provision for free & compulsory education for children. " the State shall endeavour to provide, within a period of ten years from the commencement of this Constitution, for free and compulsory education for all children until they complete the age of fourteen years."

An education can create educated society which prepares the present generation for a bright future and enables the individual to galvanize the capacity of collective. According to ancient thinkers in India, Vidya or knowledge or learning or education is the 'third eye' of man, which gives him an insight into all affairs and teaches him how to act; it leads us to our salvation in the mundane spare it leads us to all round progress and prosperity. Education is a strong pillar of development and without education there is no development.

◆◆◆◆

# Understanding indian value system through ancient holy Scriptures

**Dr. Mamta Aswal**
*Assistant Professor, Kumaun University, Faculty of Education, SSJ Campus,* Almora,

**ABSTRACT**

Education is an essential component for inculcating values among the society. Education and values go hand in hand and are inseparable. Though today, due to fast globalization and capitalization, a huge value crisis is observed. Therefore, to restore the value system, which was once core to the Indian philosophy needs urgent attention.

Since time immemorial Govt. of India has formed various commissions and committees for the upliftment of education system in the country. The recommendation mostly emphasized on character formation and developing moral values but no sincere action/ effort were implemented for sustaining the value system. If we look back into our ancient scriptures, we find it laden with innumerable value traits such as truth, honesty, dignity, sacrifice, humility and being compassionate towards all beings. In fact 'Bhagvad Gita' enumerates 26 qualities for a person to become a total personality. These were termed as gems of values. ( Sharma & Sharma,2011).

So, one must look into our holy scriptures for vision, knowledge and lessons to be learnt. This paper focuses on the significance of Indian value system as enshrined and presented through our ancient Holy Scriptures and suggestions to protect and overcome value degradation.

**Keywords:** Values, Education, Holy Scriptures

◆◆◆◆

# Gandhian Philosophy And Human Values

**Dr. Bhaskar Chaudhary**
*Assistant Professor, Kumaun University, Faculty of Education,*
*SSJ Campus, Almora, Uttarakhand*

**ABSTRACT**

Mahatma Gandhi is an epitome of principles and values. He is a symbol of truth and peace worldwide. He not only experimented with different aspects of his own life but also integrated and propagated the values essentially required for mankind to have a happy, satisfactory, prosperous and peaceful life.

Unfortunately, those values are vanished in 21 st century. Today on all fronts be it

political, educational, cultural and economic- corruption, bribery, unethical practices prevails widely reflecting the ethos of society we are a part of. This is not the India of Gandhi, because he talked about satya(truth) and ahimsa(non-violence), insisted on being satyagrahi.

According to Gandhi ji 'Ahmisa' ought to be cultivated not merely at personal level, but at social, national and international level too, if we wish to avoid personal, social, national and international conflicts ( Manjre & patil, 2018). His thoughts and philosophy is internationally accepted and widely acknowledged. He also insisted that values are important for the development of whole personality. This paper reflects the views expressed by Gandhi ji in respect to human values, his life experiences and its role in infusing a humanitarian approach around the globe.

**Keywords:** Gandhi ji, Ahimsa, Truth

◆◆◆◆

## Human Values and Digital India

**Dr. Stuti Vashishtha**
*H.O.D., B.Ed. Department, S.M. (P.G.) College, Chandausi, Sambhal (U.P.)*

**ABSTRACT**

Human values are said to be the most inevitable, guiding axiom of our lives. It falls under a huge umbrella of sociology, psychology, philosophy, anthropology, axiology and many other disciplines. According to scholar Barbara Smith, 'Values are nothing but fundamental principles of human lives, so elementary yet so irreplaceable, which acts as a dictionary for the events and our actions, to analyze simpler concepts.' Hence, this statement proves that value could be great or small, but when attributed to a man, should have to be explained in his course of actions. But as the human lives diversify, the values also tend to get mended, changed or at times even replaced. Anything that gives you peace of mind can also be a value. On those grounds, scholar Paul Roubickez, says that 'In a sphere of values, contradictions are the rule'. He also says that the value system is always to remain permanent and it is only the human who decides what to do with it. Being in the age of digital era is easy and difficult in many ways at the same time. Technology has almost transformed everything that we see, face and experience today. Human relationships have undergone a massive change in the digital age. Words have changed into emoticons, face to face communications transformed to Skype calls, giving/receiving gifts became dedicating videos and lastly physical actions malformed into sex chats. During this course of time, we must also realize the mammoth of change in the norms and morals we had previously considered to be sacred.

The introduction of digital media has undoubtedly brought in a colossal change in the value traditions of human lives. The present study shows that digital media makes the

people undergo a process of mythmaking that makes them think that virtual relationships, the virility or hit rate of a video is more imperative than that of the degree of closeness a family bonding shares or the values that we are governed by. The films show that the age of information paves way too many new types of violence, but at the same time the character arcs advocates that 'no such thing is useful or useless by itself. 'Hence the manhandling or getting addicted to the technology is where the problem escalates thus leading to a paradigm shift of human values. Further researches may be possible by conducting intensive interviews with participants of the digital age to dig deeper on the technology human conflicts.

◆◆◆◆

## Bringing Excellence in Economics, Commerce and Management Stream of Education

**Kajol**
*Assistant Professor, S.D College of Law, Muzaffarnagar (U.P.)*

**ABSTRACT**

Education is a critical mechanism for individual socio-economic advancement And an important driver of economic mobility .more ever a well educated workforce is vital to over nation's future economic growth. American companies and business require a highly skilled workforce to meet the demands of today's increasingly.

Competitive, global economy higher education is provided through a complex public Private market with many different types of individuals and institutions participating .EX-President OBAMA has supported higher education by increasing the pell grant establishing the American opportunity tax credit expanding income based repayment for student loans and freezing the interest rate on subsidized student loans. Infect commerce , economics and management education to prepare the Manpower requirement of the industrial world at large as a field of study education Is an effective vehicle for producing the required skills to maintain economic growth. The benefits of education range from human to economic ,social, and cultural at present most of the major industries of the world are controlled and owned by the Developed western countries to over come lack of entrepreneurship in india.

MHRD Releases AISHE 2016-17 Report; Enrolment In Higher Education Increased By 8.2 Million:-The Union Minister for Human Resource and Development (HRD), Prakash Javadekar released the AISHE or All India Survey on Higher Education for the year 2016-17 in New Delhi today.

"The value of college education is not the learning of many facts but the training of the mind to think."

◆◆◆◆

# Our Past and Human Values

**Dr. Shilpi Sharma**
*Asst. Professor (Home Science Dept.), S.M. (P.G.) College, Chandausi, Sambhal (U.P.)*

**ABSTRACT**

Values are so inextricably woven into our language, thought and behavior patterns that they have fascinated philosophers for millennia. Yet they have proved so "quick-silvery" and complex that, despite their decisive role in human motivation, we remain desperately ignorant of the laws that govern them.

Initially, most of the thinking on market value and consumer values was contributed by the philosophers and religious leaders of Europe. During the late 1700's, there began to emerge various branches of philosophy which we now call the "social sciences."

Since the days of the ancient Greeks, philosophers have been concerned with values on a rather tangential basis. References to values were unavoidable as Aristotle, Kant, and others discussed aesthetics, or as Plato, Hobbes, and Rousseau deliberated over the problems of government and citizen responsibility. But, as Wekmeister points out (1967), no general theory of values was developed or enunciated by any of these thinkers.

Values are beliefs that have an inherent worth in usefulness or importance to the holder," or "principles, standards, or qualities reflected worthwhile or desirable." Values institute an important characteristic of self-concept and serve as supervisory principles for person. In literature, it is documented that values are so indissolubly woven into human language, thought and behavior patterns that they have fascinated philosophers for millennia. Yet they have proved so "quick-silvery" and complex that, despite their decisive role in human motivation, we remain desperately ignorant of the laws that govern them. (Toffler, 1969). Scott and Kluckhohn described value as a conception: explicit or implicit of desirable which influences the selection from available modes, means and end of action (1951).

◆◆◆◆

# डिजिटल इंडिया और राष्ट्रीय सुरक्षा

**रितेश कुमार चौरसिया**
*असिस्टेन्ट प्रोफेसर, सैन्य अध्ययन विभाग*

## सारांश

आज के तकनीकी युग में डिजिटल उपकरणों का उपयोग राष्ट्रीय सुरक्षा के नाम पर एक प्रभावी हथियार के रूप में किया जा रहा है। वर्तमान परिदृश्य में देश की सुरक्षा के लिये केवल सीमाओं की पहरेदारी करना ही काफी नही बल्कि डिजिटल साधनों के कारण होने वाली चुनौतियों से निपटने के लिये, नवीन सुरक्षा का मॉडल अपनाने की आवश्यकता है जिससे राष्ट्र की आन्तरिक सुरक्षा एवं शांति बनायी जा सके। 20 अगस्त 2014 को प्रधानमंत्री की अध्यक्षता में केन्द्रीय मंत्रिमण्डल की बैठक में भारत को डिजिटल आधार पर सशक्त बनाने हेतु वृहद एवं महत्वाकांक्षी कार्यक्रम 'डिजिटल इंडिया' की स्वीकृति प्रदान की गई तथा 1 जुलाई 2015 से भारत में डिजिटल इंडिया कार्यक्रम लागू किया गया।

भारत रक्षा उत्पादन में डिजिटल उपयोग के साथ सुरक्षा एवं रक्षा के क्षेत्र में मजबूत भूमिका के साथ, विश्व के शक्तिशाली देशों की श्रेणी में आकर खड़ा हो गया है। आज रक्षा का अर्थ केवल त्रिमुखी (थल, जल एवं नभ) न होकर आगे बढ़ गया है जिसमें बाह्य अन्तरिक्ष से होने वाले खतरे भी शामिल है।

**डिजिटल इंडिया का प्रमुख सुरक्षात्मक दृष्टिकोण –**

मौजूदा/चल रहे ई–शासन पहलों का पुर्नोत्थान किया जाएगा एवं उन्हें डिजिटल इंडिया के सिद्धान्तों के साथ पंक्तिबद्ध किया जायेगा। स्कोप वृद्धि, प्रोसेस पुनर्रचना, एकीकृत अंतर्प्रयोगात्मक सिस्टम और क्लाउड और मोबाइल जैसी उभरती प्रौद्योगिकियों का उपयोग नागरिकों को सरकारी सेवाओं के वितरण को बढ़ाने के लिये किया जाएगा।

ई–शासन नागरिक सेवा अभिविन्यास सुनिश्चित करने के लिये आवश्यक हद तक एक केन्द्रीकृत पहल के माध्यम से प्रोत्साहित किया जाएगा।

यूनिक आई.डी के उपयोग का प्रोत्साहन पहचान, प्रमाणीकरण और लाभ प्रदान करने के लिये किया जाएगा।

एनआईसी का पुनर्गठन केन्द्र और राज्य स्तर पर सभी सरकारी विभागों को आईटी समर्थन मजबूत करने के लिये किया जाएगा।

कम से कम 10 प्रमुख मंत्रालयों में मुख्य सूचना अधिकारी (सीआईओ) का पद बनाया

जाएगा ताकि विभिन्न ई–गवर्नेंस परियोजनाओं को तेजी से निर्माण, विकास एवं लागू किया जा सके।

◆◆◆◆

# उच्च शिक्षा की गुणवत्ता में ह्रास – कारण तथा समाधान

**डॉ0 दिग्विजय पचौरी एवं डॉ0 बृजवाला शर्मा**
*[1]व्याख्याता – रूई की मंडी शाहगंज, आगरा, [2]प्रोफेसर – सर्वधर्म महाविद्यालय, ग्वालियर*

## सारांश

शिक्षा खासकर उच्चतर शिक्षा एक ऐसा उपाय है जो भारत को विकास के उच्चतर मार्ग पर अग्रसर कर सकता है। यह एक ऐसा दायित्व है जो असंख्य, मूर्त तथा अमूर्त रूपों में विकास के विविध क्षेत्रों में हमारी सभी प्रतिबद्धताओं को लाभ पहुँचाता है। शिक्षा व विकास के बीच सीधा व सरल सम्बन्ध है उच्चतर शिक्षा मानव पूँजी में वृद्धि करती है जो विकास की ऊँची दर सम्भव बनाती है तथा विकास के लाभ जन–जन तक पहुँचाती है।

प्रत्येक देश की शिक्षा व्यवस्था की विलक्षणताएं चुनौतियॉ एवं समस्याएं होती हैं। भारत में उच्चतर शिक्षा में जिस प्रकार से संख्यात्मक वृद्धि हुई उसी प्रकार से उसमें गुणात्मक ह्रास आता गया तथा यह गुणात्मक ह्रास ही उच्च स्तर की शिक्षा व्यवस्था के गिरते स्तर का कारण बना। हम इसको संख्यात्मक वृद्धि बनाम गुणवत्ता नहीं कहेंगे वरन् गुणवत्तापूर्ण सर्व–सुलभ एवं अभिगम्य शिक्षा व्यवस्था की रचना कहेंगे। स्वतन्त्रोत्तर भारत में उच्च शिक्षा के परिवर्तन के उद्देष्य से अनेक आयोग व समितियॉ गठित हुई। किन्तु कोई भी समस्या के समाधान के लिए प्रभावी नहीं हुई। उच्च शिक्षा व्यवस्था में आई विकृतियों के लिए शिक्षकों व विद्यार्थियों को विशेष दोष दिया जाता है तथा इसमें भी अध्यापकों द्वारा दायित्व निर्वहन न करने को मूल कारण कहा गया है। यू0 जी0 सी0 देश के सभी विश्वविद्यालयों एवं महाविद्यालयों के स्वरूप, विकास और सुधार के लिए गठित एक मात्र संस्था है तथा वही प्राध्यापकों की नियुक्तियों के लिए मानक तैयार करती है।

उच्च शिक्षा के गिरते स्तर की समस्याओं में प्रमुख यू0जी0सी0 द्वारा सही नितियॉ न बनाना तथा उनका क्रियान्वयन भी है।

विश्वविद्यालयों में षैक्षिक वातावरण की आधार भूमि विश्वविद्यालय अनुदान आयोग अलग–अलग प्रान्तों में की जा रही अवैधानिक मनमानी को रोकने में विफल रहा है। अयोग्य

शिक्षकों की नियुक्तियों पर रोक न लगने से समूचे देश की उच्च शिक्षा की स्थिति चिन्तनीय होती गयी है। भेदभाव, वर्गभेद और अनुशंसा के आधार पर पद प्राप्त कर रहे शिक्षक योग्य एवं परिश्रमी अध्येताओं का अवसर छीनने लगे हैं। देश में आदर्श, निष्ठावान शिक्षकों ने जो त्याग का पथ दिखाया, वह आज विलुप्त होता जा रहा है।

इस प्रकार वर्तमान में शिक्षा की मौलिकता अर्थ की मौलिकता में खो गयी है। पाठ्यक्रम निर्धारित करने में जब तक योग्य और अध्यवसायी प्राध्यापकों का वर्चस्व नहीं होगा तब तक उच्च शिक्षा में गुणात्मक सुधार नहीं किया जा सकता, चूँकि योग्य शिक्षकों द्वारा ही योग्य छात्रों का निर्माण होता है। अतः सारा दोष छात्रों पर देना अनुचित है। शिक्षा के स्तम्भ स्वरूप प्राध्यापकों की नियुक्तियों में जब तक भ्रष्टाचार और हेराफेरी का समावेश है तो इक्कीसवीं सदी की शिक्षा की नींव कैसे सुदृढ़ होगी? गुणवत्ता युक्त शिक्षा अधिक संसाधनों और अच्छी सुविधाओं मात्र से सम्भव नहीं है। यह शिक्षकों और छात्रों के दृष्टिकोण  पर भी उतनी ही आधारित है। अगर शिक्षक उद्देष्य तथा प्रतिबद्धता की भावना नहीं दर्षायेंगे, अगर वे षैक्षिक उत्कृष्टता के उॅचे मानदण्ड़ों का निर्धारण व मांग नहीं करेंगे तो विद्यार्थियों से इससे भिन्न उम्मीद कैसे कर सकते हैं। हम सभी को इस मुद्दे में शिक्षा से जुड़े सभी पक्षों का आत्म मंथन करने की आवश्यकता है योग्यता का आधार अनुशंसा ही होने पर देश की उच्च शिक्षा का षिखर पर पहुॅचना असम्भव है। इसलिए विश्व के श्रेष्ठ 20 विश्वविद्यालयों में एक भी विश्वविद्यालय भारत का नहीं है।

◆◆◆◆

# साहित्य एवं मानवीय मूल्य

**डॉ0 श्रीमति छाया रानी एवं रितेश कुमार चौरसिया**
*[1]असिस्टेंट प्रोफेसर, हिन्दी विभाग, दयानन्द आर्य कन्या डिग्री कॉलिज*
*मुरादाबाद, [2]असिस्टेन्ट प्रोफेसर, सैन्य अध्ययन विभाग, बरेली कॉलेज बरेली*

## सारांश

साहित्य समाज का दर्पण है। इसका अर्थ ही यह है कि दर्पण में हम सदैव अच्छा ही देखना चाहते हैं। इसी प्रकार साहित्य में भी यदि मानव मूल्यों का समावेश हो तो उसे अच्छा साहित्य ही कहा जायेगा।

भारतीय संदर्भ में यदि देखा जाये, तो अनेक साहित्यकारों ने अपनी लेखनी में मानवीय मूल्यों को सर्वोपरि रखा है, मैं यहां हिन्दी लेखकों के सम्बन्ध में ही बताना चाहूंगी कि किस प्रकार उनके लेखन में मानव मूल्यों की झलक देखने को मिलती है। सर्वप्रथम हिन्दी साहित्य के महान लेखक मुंशी प्रेमचन्द का उल्लेख करना चाहूंगी, जिन्होने अपनी अनेक कृतियों में मानवीय मूल्यों

को महत्वपूर्ण स्थान दिया है जैसे– पंच परमेश्वर नामक कहानी में उन्होनें सरपंच उस व्यक्ति को बनाया जिससे न्याय की अपेक्षा नहीं थी किन्तु यह मानव मूल्य ही थे जिन्होने न्याय करते समय उसे निष्पक्ष बना दिया।

परोपकार, अहिंसा, दया, क्षमा, निष्पक्षता, भ्रष्ट आचरण न करना आदि ऐसे मानव मूल्य हैं जिनका उपयोग अनेक साहित्यकारों ने अपने लेखन में किया है, साहित्यकार समाज में महती भूमिका निभाते हैं क्योंकि यदि वर्तमान युग से पहले जाये तो उस समय पुस्तकें ही शिक्षा का माध्यम थीं न कि आज की तरह सिनेमा, दूरदर्शन आदि। बल्कि अब तो इंटरनेट भी प्रचार एवं प्रसार का बड़ा माध्यम बन गया है।

भारतीय समाज में रामचरित मानस को मानव मूलयों का स्त्रोत ही माना गया है। इसके रचियता गोस्वामी तुलसीदास ने कितने सुन्दर ढंग से भाई, पुत्र, पत्नि, सेवक, राजा के कर्तव्यों को बताते हुए इसके पात्रों द्वारा समाज को सही मार्ग पर चलने के लिये प्रेरणा प्रदान की।

रामधारी सिंह दिनकर ने कुरूक्षेत्र के 'छठे सर्ग' में मनुष्य द्वारा विज्ञान की उपलब्धियों को बताने के साथ–साथ यह भी बताया कि आज मानव सम्पूर्ण भूमण्डल के साथ–साथ आकाश सहित अन्य ग्रहों पर भी पहुंच चुका है। सब कुछ उसकी मुट्ठी में है लेकिन वह मानव मूल्यों से विप्त हो रहा है, आवश्यकता है मनुष्य–मनुष्य से समानता का व्यवहार करे।

इसी के साथ, कबीरदास जी, गुरू जाम्भोजी, गुरू नानक आदि, साहित्यकारों ने भी अपने आहित्य में मानवमूल्यों को इस प्रकार स्थापित किया कि उनकी शिक्षाओं के आधार पर कबीर पंथी, विश्नोई व सिक्ख धर्म ही बन गये।

◆◆◆◆

# डिजिटल इंडिया एवं मानवीय मूल्य

**प्रीति दीक्षित**
*सनातन धर्म महाविद्यालय, मुजफ्फर नगर (उ०प्र०)*

## सारांश

डिजिटल इंडिया भारत सरकार द्वारा चलाये जाने वाला एक बेहतरीन कार्यक्रम है, जिसका उद्देश्य सशक्त समाज और ज्ञान अर्थव्यवस्था का एक डिजिटल रूप देना है अर्थात डिजिटल रूप देकर उसकी गति को ओर आगे बढाना है। 1 जुलाई में भारतीय सरकार द्वारा डिजिटल इंडिया प्रोजेक्ट की शुरूआत हुई यह प्रोजेक्ट अनिल अंबानी, अजीम प्रेमजी, साइरस मिस्त्री जैसे बडे हस्तियों की उपस्थिति में लांच किया गया है। जिसमें यह संकल्प लिया गया

है कि भारत को आई टी, शिक्षा, कृषि आदि में नये विचारों द्वारा डिजिटल शक्ति देकर भारत को और आगे बढ़ाना है। दूर संचार और सूचना तकनीक तकनीकी मंत्रालय द्वारा इसकी योजना और अध्यक्षता की गई है।

अच्छे मूल्यों वाले व्यक्ति को हमेशा दूसरें लोगों द्वारा देखा जाता है। हम अपने जीवन में जो निर्णय लेते है, वे काफी हद तक हमारे मूल्यों के आधार पर होते है। डिजिटल इंडिया के द्वारा उत्तम शिक्षा प्रदान कर मानव के चरित्र का निर्माण होगा क्योकि अच्छे मूल्य व्यक्ति को विनम्र और भरोसेमन्द बनाते है। इसके साथ ही सारे काम ऑनलाइन होने से कागज की भारी बचत होगी जिससे पर्यावरण को भी फायदा होगा।

मेरा इस विशय को लिखने का उद्देश्य यह है कि हमारे नवयुवकों को डिजिटल इंडिया के कार्यक्रमों का ज्ञान हो क्योंकि आज भी हमारे समाज में कुछ व्यक्तियों को डिजिटल इंडिया और मानवीय मूल्यों का ज्ञान नही है। इसलिए मैने अपने द्वारा सरल शब्दों का प्रयोग करके हमारी राष्ट्रीय भाषा हिन्दी में इसका विवरण प्रस्तुत किया है ।

◆◆◆◆

# मानवीय मूल्यों के सन्दर्भ में चित्रकला का दायित्व

**डॉ० मनीशा शर्मा**
*असिस्टेंट प्रोफेसर, मथुरा (उ०प्र०)*

## सारांश

साहित्य संगीतकलाविहीनः साक्षात्पशुः पुच्छविशाणहीनः।
तृणं न खादन्नपिजीवमानस्त द्वागधेयंपरमंपशुनाम्।

अर्थात् साहित्य, संगीत और कला से विहीन मनुष्य साक्षात नाखून और सींग रहित पशु के समान है।

वास्तव में कला समाज के लिए उतनी ही आवश्यक है जितनी हमारी प्राथमिक आवश्यकताऐं जैसे खाना, पानी, सोना आदि। कला समाज का दर्पण है। प्रत्येक काल की कला उस समय के समाज, वातावरण, पहनावा, रहन–सहन आदि का प्रतिनिधित्व करती है। कला आलोचनाओं तथा कला शास्त्रों में मानव कल्याण को कलाओं का सबसे बड़ा कार्य माना गया है। चित्र सूत्र में कहा गया है कि कला धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष इन चारों पुरुषार्थों को प्रदान करने वाली होती है।

नीति शासत्र में मूल्य का अर्थ किसी वस्तु या क्रिया के महत्व को दर्शाता है जिससे उसकी श्रेष्ठता का पता चलता है। प्लेटो के अनुसार कला को केवल आनन्ददायी ही नहीं बल्कि व्यक्ति, समाज और राष्ट्र के लिये उपयोगी भी होना चाहिये। प्रागैतिहासिक मनुष्य ने चट्टानों पर तत्कालीन जनजीवन को चित्रित किया।

प्राचीन सभ्यताओं के जो अवशेष मिले हैं उनसे यह स्पश्ट है कि विश्व के प्रायः सभी भागों में कलाओं ने लोगों की धार्मिक आवश्यकताओं को पूर्ण किया। धर्म के साथ–साथ राष्ट्र भक्ति भी कलाओं का दायित्व रही। प्रत्येक देश की संस्कृति और सभ्यता में कला का सीधा सम्बन्ध हम धर्म के साथ देखते हैं जैसे ईसाई कला, बौद्ध कला, इस्लामिक कला आदि। राज्यों के संरक्षण में कला का पालन पोषण हुआ और कला उन्हीं शासकों या षासन कालों के नाम से जानी गयी जैसे मौर्य कला, गुप्तकला, वाकाटक कला, पल्लवकला, मुगलकला आदि आदि।

कला मूलरूप से सत्यमं शिवं सुन्दरम् पर आधारित होती है। कला का प्रधान लक्ष्य सौन्दर्य की अनुभूति है, जो रूप के माध्यम से प्रस्तुत किया जाता है, इसकी प्रेरणा कलाकार अपने चारों ओर फैली हुई प्रकृति से लेता है। सत्यम शिवम सुन्दरम के शिवम का अर्थ है नैतिक या कल्याणकारी। कलाओं में इसका विचार दो प्रकार से किया जाता है– एक विशय की दृष्टि से, दूसरा प्रस्तुतीकरण की दृष्टि से।

कलाकार समाज के साधारण सदस्यों से भिन्न और कुछ ऊपर उठा हुआ होता है अर्थात विषिश्ट होता है।

प्रत्येक कलाकार अपने देश की राजनीतिक व्यवस्था का पृष्ठपोषक होता है। सभी कलाओं में चिकला का एक विषिश्ट स्थानहै। विश्णु धर्मोत्तर पुराण के चित्र सूत्र में चित्रकला का महत्व इस श्लोक में प्रस्तुत किया गया है–

–कलानां प्रवंरचित्रम् धर्मार्थ काम मोक्षाद्।
मांगल्य प्रथम् दोतद् गृह यत्र प्रतिष्ठितिभ।।

विश्व की सभी सभ्यताओं में प्रागैतिहासक चित्र मिले हैं जो उस समय के मानवीय मूल्यों–आध्यात्मिकता, नैतिकता, न्याय, प्रकृति, मानवीय प्रेम आदि को प्रदर्षित करते हैं।

भारतमें भी जोगीमारा और अजन्ता के चित्रों से भारतीय चित्रकला का इतिहास पता चलता है। जोगीमारा के चित्र लगभग 300 ईसा पूर्व के हैं सम्भवतः अशोक कालीन। अब वह बिल्कुल जर्जर अवस्था में है लेकिन जिस समय उनकी खोज हुई (1914) तब वह कुछ अच्छी अवस्था में थे और उन्हीं चित्रों के द्वारा हमें हजारों वर्ष पूर्व की जीवन शैलीका पता चलता है। इसी प्रकार अजन्ता में चित्रित जातक कथाओं से बुद्ध का जीवन, उनका गृह त्याग, एक क्षत्रिय

से बौद्ध संत बन जाना, उस समय के रीति रिवाज, दैनिक जीवन, राजनैतिक जीवन, लगभग सम्पूर्ण सामाजिक, राजनैतिक व लोकाचार आदि परिस्थितियों के दर्शन होते हैं।

चूंकि कलाकार एक सामाजिक प्राणी है और उसकी कला की प्रेरणा उसे समाज सेही मिलती है। अतः कलाकार और कला दोनों का दायित्व मानवीय मूल्योंको प्रस्तुतकरना और प्रेरणादायी बनाना है और होना चाहिए।

◆◆◆◆

# भारतीय संविधान एवं मानव मूल्य

**मोहम्मद नासिर**
*असिस्टेंट प्रोफेसर (राजनीति विज्ञान), राजकीय रज़ा स्नातकोत्तर महाविद्यालय रामपुर (उ०प्र०)*

## सारांश

संविधान किसी राष्ट्र की शासन व्यवस्था के संचालन हेतु नियमों और कानूनों का संग्रह होता है। बिना संविधान के शासन प्रणाली के न्याय संगत होने की कल्पना नही की जा सकती, संविधान नागरिकों के अधिकारों, उनकी स्वतंत्रता एंव सरकार की सत्ता के मध्य संतुलन स्थापित करता है। प्रत्येक संविधान का अपना एक दर्शन होता है जिसमें उस देश की शासन प्रणाली के लक्ष्यों, उद्देश्यों आदि का वर्णन होता है। संविधानिक शासन का अर्थ सीमित शासन से है जिसमें मानव मूल्यों, व्यक्ति की गरिमा एवं जनसम्प्रभुता को प्रमुख स्थान दिया जाता है।

भारतीय संविधान का भी अपना एक दर्शन है और यह दर्शन प्राचीन भारतीय संस्कृति एवं राष्ट्रीय आन्दोलन के मूल्यों से प्रेरित है। इसमें न केवल मानव स्वतंत्रता, भाईचारा, पर्यावरण संरक्षण, विविधता में एकता, जैसे मूल्यों का वर्णन है बल्कि "बसुधैव कुटुम्बकम" की महत्तवूर्ण अवधारणा भी है।

संविधान की प्रस्तावना, मौलिक अधिकार, मौलिक कर्तव्य, नीति निदेशक तत्व एवं अन्य प्रावधानों में व्यापक रूप से मानवीय मूल्यों का वर्णन है। मूल्यों के संरक्षण हेतु मौलिक अधिकारों की व्यवस्था है। संविधान के मूल्यों की रक्षा एवं उन्हे अक्षुण्य बनाए रखने हेतु शक्तिशाली न्यायपालिका को व्यापक अधिकार दिये गए हैं। यदि संसद का कोई कानून या कार्यपालिका का कोई आदेश मौलिक अधिकारों एवं संविधान की मूलभूत संरचना को चोट पहुँचाता है तो न्यायपालिका उस कानून या आदेश को रद्द कर सकता है। संविधान के लागू होने के बाद से उसमें 103 संशोधन किये जा चुके हैं जो बदलते समय की आवश्यक्तानुसार जरूरी थे। संविधान में प्राचीन भारतीय मूल्यों के साथ सार्वभौमिक वैश्विक मूल्यों जैसे न्याय, करूणा, सत्यनिष्ठा, कर्तव्यशीलता, ईमानदारी आदि को भी पर्याप्त महत्व दिया गया है। भारतीय संविधान में दिये गए

पर्याप्त मूल्यों एवं उनके संरक्षण के उपायो के कारण संविधान को सामाजिक न्याय का दस्तावेज भी कहा जाता है।

◆◆◆◆

# शिक्षा में मानव मूल्य और व्यावसायिक नैतिकता की भूमिका

**डॉ0 नीता गुप्ता एवं कीर्ति सिंह**

*[1]एसोसिएट प्रोफेसर एण्ड हेड, [2]शोधार्थिनी, शिक्षा शास्त्र विभाग, आईएफटीएम, मुरादाबाद*

**सारांश**

किसी भी मनुष्य के जीवन में मूल्यों का अहम योगदान रहता है क्योंकि इन्हीं के आध ाार पर अच्छा बुरा या सही गलत की परख की जाती है। मनुष्य के जीवन की सबसे पहली पाठशाला उसका अपना परिवार ही होता है और परिवार समाज का एक अंग है उसके बाद उसका विद्यालय जहाँ से उसे शिक्षा हासिल होती है। परिवार समाज और विद्यालय के अनुरूप ही एक व्यक्ति में सामाजिक गुणों और मानव मूल्यों का विकास होता है। प्राचीनकाल से भारत में पाठशालाओं में धार्मिक शिक्षा के साथ मूल्य आधारित शिक्षा भी जरूरी होती थी। शिक्षा लोगों के ज्ञान और कौशल को विकसित करने की एक प्रक्रिया है। यह ज्ञान और कौशल उसके जीवन में लागू होते है। इस बात पर भी ध्यान देना जरूरी है कि शिक्षा का एकमात्र उद्देश्य ज्ञान प्राप्ति और तकनीकी दक्षता नहीं हो हालांकि आज के समय में यह सब चीजे भी बहुत ही महत्वपूर्ण है, लेकिन असल में शिक्षा ऐसी होनी चाहिए जो छात्रों में ऐसी समझ और तार्किक शक्ति विकसित करें जो उन्हें एक जिम्मेदार नागरिक बना सकें एवं छात्रों में मानव मूल्य की समझ विकसित करें। एक अच्छा छात्र न केवल कक्षा में नैतिक मूल्यों का प्रतीक वरन् अन्य छात्रों को भी नैतिक मूल्यों का ज्ञान कराता है। शिक्षक भी छात्रों को नैतिक एवं शिष्टाचारी बनाने में अहम भूमिका निभाते है। शिक्षाविदों के पास रोचक ढंग से छात्रों तक अध्ययन सामग्री व प्रेरक संदेश पहुँचाने के ढेरो तौर तरीके होते है, पर मूल बात यही है कि क्या मौजूदा शिक्षा व्यवस्था में इन नैतिक मूल्यों को समुचित महत्व देने को तैयार है। तर्कसंगत बात तो यह है कि यदि नैतिक शिक्षा ठीक से दी जाए तो यह शिक्षा का सबसे महत्वपूर्ण पक्ष है पर आज धन अर्जन की क्षमता हासिल करने को सर्वाधिक महत्व दिया जा रहा है, इन नैतिक मूल्यों को शिक्षा में कितना महत्व मिल पाएगा यह सवाल हमारे सामने है। मानव मूल्यों के समावेश होने से छात्रों में शिक्षा का स्तर बढ़ता है वह छात्र आगे जाकर एक अच्छा शिक्षक एवं एक अच्छा व्यवसायिक बनता है।

**मुख्य शब्द** : शिक्षा, मानव मूल्य, व्यावसायिक नैतिकता।

◆◆◆◆

# वर्तमान शिक्षक प्रशिक्षण का मानवीय मूल्य संरक्षण में योगदान

**ऋचा राघव**
*शोधार्थी*

## सारांश

भारतीय समाज प्राचीनकाल से ही आदर्शवादी समाज रहा है । भारतीय समाज में प्रेम, भाईचारा, सहानुभूति आदि मूल्य प्रमुख रूप से पाए जाते हैं। इन मूल्य के संरक्षण में शिक्षक का विशेष योगदान है । शिक्षक भावी राष्ट्र के निर्माता हैं, जिन पर किसी भी राष्ट्र का भविश्य टिका रहता है । जब शिक्षकों के कन्धों पर इतनी बड़ी जिम्मेदारी है तो इन शिक्षकों को दी जाने वाली शिक्षा भी विशेष होनी चाहिए जिससे यह मानवीय मूल्यों के संरक्षण में अपना योगदान दे सकें । वर्तमान भारतीय समाज में शिक्षा का स्तर तो अवष्य उठा है किन्तु शिक्षा आज मानवीय मूल्यों से काफी दूर होती जा रही है, जिसके कारण आज समाज में संवेदना एवं प्रेम का अभाव है । इसका प्रमुख कारण है भावी शिक्षक को दी जाने वाली शिक्षा में गुणवत्ता का अभाव है । यदि शिक्षकों को दी जाने वाली शिक्षा में उन्हें मानवीय मूल्यों का परिचय कराया जाएगा तो वह इस ज्ञान को आत्मसात कर अपने व्यवहार में अवष्य उतारेगा । शिक्षक वह प्रतिबिम्ब होते है जिसमें विद्यार्थी अपने भावी भविश्य को साकार होते हुए देखते हैं । शिक्षक मानवीय मूल्यों को पोशित एवं विस्तारित करता है जिससे देश का भविश्य उज्जवल बनता है । शिक्षक शिक्षा इन मानवीय मूल्यों का आधार तैयार करती है ।

◆◆◆◆

# पर्यावरण संरक्षण एवं मानवीय मूल्य

**डा0 बबली रानी**
*असि0 प्रो0 गृह विज्ञान, झम्मन लाल पी0जी0 कॉलेज, हसनपुर, अमरोहा (उ०प्र०)*

## सारांश

मानवीय मूल्य एक अमूर्त गुण है जो किसी वस्तु में निहित होता है तथा उसके महत्व की ओर इंगित करता है। समाज एवं पर्यावरण में जो भी घटना घटित होती हैं समाज एवं पर्यावरण उनका उचित अथवा अनुचित के रूप में मूल्यांकन करता है और यह मूल्य ही वैल्यू कहलाते हैं। मूल्य निर्धारण में सामाजिक एवं पर्यावरणीय, सांस्कृतिक धरोहर का भी महत्वपूर्ण स्थान होता है। मूल्य पीढ़ी दर पीढ़ी हस्तांतरित होते हैं देशकाल एवं परिस्थिति के अनुसार

प्रत्येक समाज एवं राष्ट्र के पर्यावरण मूल्यों में कुछ अंतर होता है। व्यक्ति अपने सामाजिक मूल्यों के अनुरूप अपने अथवा इन्हें प्राप्त करने हेतु अग्रसर एवं प्रयत्नषील रहता है।

◆◆◆◆

# शिक्षा एवं मानवीय मूल्य

**डॉ0 विजय सिंह**
*शिक्षक (भारतीय इण्टर कालेज न्यौराई, एटा)*

## सारांश

शिक्षा में मानवीय मूल्यों का स्थान प्राचीन काल से चला आ रहा है। प्राचीन काल में मानवीय मूल्यों को सर्वोच्च स्थान दिया गया था। जिस कारण विद्यार्थी अच्छा आचरण करते थे। मध्यकाल व अंग्रेजी शासनकाल में शिक्षा में मानवीय मूल्यों का पतन होना शुरू हो गया जिस कारण भारतवर्ष में कई तरह के अपराध जैसे चोरी, डकैती, हत्या, बलात्कार, भ्रष्टाचार आदि को बढावा मिला। वर्तमान काल में भी ऐसी ही स्थिति उत्पन्न हो रही है जिस कारण कई समस्याओं का सामना करना पड़ रहा है। इसको दूर करने के लिये शिक्षा में विभिन्न मानवीय मूल्यों को शामिल करना होगा और विद्यार्थियों को विद्यालयों में पाठ्यक्रम व पाठ्य सहगामी क्रियाओं के माध्यम से मानवीय मूल्य सिखाने होगे। ये मानवीय मूल्य निम्न प्रकार हैं जैसे शिष्टाचार, देशभक्ति, न्याय, नेतृत्व, अहिंसा, धर्मनिरपेक्षता, सहनशीलता, समानता, मित्रता, वफादारी, स्वतंत्रता, समाज सेवा, आत्म विश्वास, वृद्धावस्था का सम्मान, संयम, करूणा, आज्ञा–पालन, सहयोग, नम्रता, क्षमा, स्वानुशासन, नियमितता, समय की पाबन्दी, आत्म निर्भरता आदि। विद्यार्थियों को विद्यालय में जो शिक्षा दी जाती है उनके पाठ्यक्रम में इन सभी मानवीय मूल्यों को शामिल करना होगा। ताकि अचारण अच्छा हो और वे देश के एक आदर्श नागरिक बन सकें। शिक्षक अपनी अच्छी विचारधारा व अच्छे संस्कारों के साथ विद्यार्थियों व अन्य नागरिको को मानवीय मूल्य सिखाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकते हैं।

मानवीय मूल्यों की शिक्षा में विद्यार्थियों को अनुभव से जोड़ना चाहिए। विद्यालयों में विभिन्न महापुरूषों की जयन्तियों, धार्मिक उत्सवों का आयोजन करना चाहिए। विद्यालय में समय–समय पर मानवीय मूल्यों से सम्बन्धित भाषण, संगोष्ठी, निर्देशन, ट्यूटोरियल आदि को अपनाया जाना चाहिए। शिक्षक अपनी शिक्षा द्वारा जिन मानवीय मूल्यों को विद्यार्थियों को देना चाहता है वे सभी मानवीय मूल्य उसमें भी समाहित होने चाहिए। वर्तमान समय में शिक्षा व्यवस्था में मानवीय मूल्यों का जो पतन हो रहा है उसका प्रमुख कारण नये–नये आविष्कार व नई सूचना क्रान्ति है। हमें ऐसी शिक्षा नीति बनानी होगी जिसमें विद्यार्थी आर्थिक उन्नति के साथ–साथ

नैतिक व चारित्रिक उन्नति कर सकें। हम कितने ही योग्य व जीनियस क्यों न हो यदि हमारे अन्दर अच्छे मानवीय मूल्य नहीं हैं तो हम अपना तो भला कर सकते है। लेकिन समाज व देश का भला नहीं कर सकते। इसलिये आदर्श नागरिक व अच्छे विद्यार्थियों का निर्माण करने के लिये भारतीय शिक्षा व्यवस्था में विभिन्न मानवीय मूल्यों को शामिल करना होगा। जिससे हमारी शिक्षा मानवीय मूल्यों से ओत–प्रोत होगी।

◆◆◆◆

# विपश्यना एवं प्रेक्षा की तनाव प्रबंधन में भूमिका–एक समीक्षात्मक अध्ययन

**अशोक कुमार यादव, सुनील कुमार श्रीवास**
*शोधार्थी, महात्मा गाँधी चित्रकूट ग्रामोदय विश्वविद्यालय, चित्रकूट, सतना (म०प्र०)*

## सारांश

वर्तमान समय की जीवन–षैली में बहुत परिवर्तन आए हैं। आधुनिकता की चकाचौध ने मनुष्य को अत्याधिक भौतिकवादी बना दिया है। परिणामतः उसके पास काम अधिक और समय कम रह गया है। मानसिक तनाव का स्तर दिन–प्रतिदिन बढ़ता जा रहा है। भारत भी इससे अछूता नहीं रहा है। पष्चिम के देशों की स्थिति तो और भी अधिक बिगड़ती जा रही है। आधुनिक सुख–सुविधाओ की प्राप्ति के कारण वहाँ के लोगों की नींद भी प्रभावित हो चुकी है। पष्चिम के कई देशों में लोगों को प्रतिदिन 'विश्रामकारी दवाएँ' लेकर सोना पड़ता है।

अब प्रष्न आता है कि क्या इस स्थिति से छुटकारा पाने का कोई तो उपाय होगा? जबाव है– हाँ। 'विपष्यना एवं प्रेक्षा तनाव प्रबंधन में भूमिका–एक समीक्षात्मक अध्ययन'नामक दार्षनिक–साहित्यक षोधका उद्देष्य जनमानस को भारत की इन दोनों प्राचीन ध्यान पद्धतियों की जानकारी से अवगत करना है, फलतः लोग इनकी विधियों को सीखकर लाभांवित हो सकें। संपूर्ण(षारीरिक, मानसिक, बौद्धिक, सामाजिक एवं आध्यात्मिक) स्वास्थ्य प्राप्त कर सकें। राग, द्वेश और मोह से विकृत हुए चित्त को निर्मल बना सकें। दैनिक जीवन के तनाव को दूर करके सुख एवं षांति प्राप्त कर सकें। अहंभाव के बंधनों से उन्मुक्त हो सकें, एक स्वस्थ–सुखी समाज का स्वस्थ–सुखी सदस्य बन सकें। आत्ममंगल और सर्वमंगल की भावनाओं से परिपूर्ण होकर अपना जीवन सुधार सकें।

◆◆◆◆

# माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धियों एवं मानवीय मूल्यों का तुलनात्मक अध्ययन

**डा0 रोहित कुमार**
*असिस्टेंट प्रोफेसर, भगवान आदिनाथ कॉलेज ऑफ शिक्षा,*

## सारांश

शोध सारांश–महात्मा गाँधी के अनुसार – "शिक्षा से मेरा अभिप्राय है बच्चे के अन्दर निहित षरीर, मन और आत्मा का सर्वा[3]~गीण व सर्वोत्तम विकास करना। किसी भी देश का विकास उसकी शिक्षा पर निर्भर करता है। शिक्षा अन्धकार से प्रकाष की ओर ले जाती है। शिक्षा से मनुष्य के अन्तः चक्षु खुल जाते है। शैक्षिक उपलब्धि और मानवीय मूल्यो का माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत छात्रो के अध्ययन के लिए ललितपुर जिले एवं उसके तीन विकास खण्डों ललितपुर,जखौरा,महरौनी के राजकीय एवं गैर सरकारी शिक्षण संस्थानो को 100–100 छात्रों को लिया गया हैं। माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् ग्रामीण एवं षहरी क्षेत्र छात्रों नैतिक मूल्यों का मध्यमान क्रमषः 11.51 व 10.50 तथा मानक विचलन क्रमषः 1.90 व 2.30 प्राप्त हुआ। "टी" का मान 3.352 आया। जो "टी" के सारणी मूल्य से अधिक है। अतः अन्तर सार्थक कहा जा सकता है एवं छात्राओं के षैक्षिक उपलब्धि का मध्यमान क्रमषः 20.88 व 29.19 तथा मानक विचलन क्रमषः 4.08 व 3.23 प्राप्त हुआ। "टी" का मान 15.85 आया। जो "टी" के सारणी मूल्य से अधिक है। अतः अन्तर सार्थक कहा जा सकता है।

**मुख्य शब्दः** माध्यमिक स्तर, ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थी, मानवीय मूल्य, षैक्षिक उपलब्धि।

◆◆◆◆

# वर्तमान शिक्षा व्यवस्था में मूल्यों पर अधारित शिक्षा की आवश्यकता

**आराधना सिंह**
*सहायक प्रोफेसर, शिक्षा विभाग, श्री वेंकटेश्वर विश्वविद्यालय, गजरौला, उत्तर प्रदेश*

## सारांश

मूल्य परक शिक्षा की अवधारणा प्राचीन है किन्तु वर्तमान में मूल्य शिक्षा के नाम पर जो क्रियायें प्रतिक्रियाएं देखने को मिल रही है उनसे लगता है की देश समाज और व्यक्ति असमंजस्य और डाबड़ोल की स्थिति में है। मूल्य विहीनता को समाप्त करने के लिए शिक्षार्थी को एक प्रयोगशाला के रूप में और शिक्षक को प्रयोगकर्ता के रूप में मानकर कार्य करना होगा।शिक्षा

की महत्वपूर्ण घटक विद्यार्थी को विभिन्न प्रयोगों द्वारा मूल्यों के निर्माण का केन्द्र मान लिया जाये। इस शोध के माध्यम से यह बताने का प्रयास किया है कि, शिक्षा अनुशासन देना ही नहीं, आत्म विवेक देना भी है।

शब्दकोश– आध्यात्मिक, पाठ्यचर्या, उत्तरदायित्व, नैतिक मूल्य

◆◆◆◆

# औपनिवेशिक भारत में स्त्री शिक्षा

**(उन्नीसवीं भाताब्दी के भारत के विशेष सन्दर्भ में)**

**डा0 शशि नौटियाल**
*एसो0 प्रो0 एवं विभागाध्यक्ष, इतिहास विभाग, जे0वी0 जैन पी0जी0 कालेज, सहारनपुर*

## सारांश

शिक्षा किसी भी काल में सामाजिक परिवर्तन एवं लक्ष्यों की प्राप्ति का माध्यम होती है विभिन्न युगों में शिक्षा के उददेश्य एवं पद्धतियां भिन्न रही है। पूर्व की विश्वास केन्द्रित शिक्षा के स्थान पर 19वीं शताब्दी के भारत में ब्रिटिश शिक्षा एक भिन्न दृष्टिकोण आधारित एक नवीन तर्क एवं नवीन भाषा पर आधारित शिक्षा प्रणाली थी। जिसकी पद्धति एवं उददेश्य भी पूर्व कालीन शिक्षा प्रणाली से भिन्न थे।

यह अलौकिक पाठ्यक्रमों के स्थान पर लौकिक पाठयक्रम पर आधारित, प्राच्य भाषाओं के स्थान पर आंग्ल भाषा आधारित, निशुल्क के स्थान पर भुगतान आधारित शिक्षा प्रणाली थी। ब्रिटिश सरकार का उददेश्य भारत में राजनैतिक उपनिवेशवाद के पश्चात सांस्कृतिक उपनिवेशवाद की स्थापना करना था। 'गोल्ड ग्लोरी एवं गॉड' के औपनिवेशिक हित उनकी शिक्षा प्रणाली में भी प्रतिबिंबित होते थे। ईस्ट इण्डिया कम्पनी द्वारा पाश्चात्य शिक्षा की विधिवत शुरूआत 1813 के एक्ट से हुई। किन्तु शुरूआत वारेन हेस्टिंग द्वारा कलकत्ता मदरसे तथा डंकन द्वारा बनारस संस्कृत कालेज की स्थापना से हो चुकी थी। औपनिवेशिक सरकार द्वारा स्त्री शिक्षा में मामले में तत्परता न दिखाए जाने का एक कारण यह था कि स्त्री शिक्षा भारतीयों को प्रशासन में मध्यस्थ के रूप में उपयोग करने के तात्कालिक उददेश्य की पूर्ति नहीं करती थी। मैकाले मिनट में स्त्री शिक्षा की घोर अवहेलना की गई। वुडस घोषणा पत्र एवं हंटर आयोग में इस तरफ आंशिक ध्यान दिया गया। सरकार के उदासीन रवैये के बावजूद मिशनरियों द्वारा इस स्त्री शिक्षा को अपने विभिन्न लक्ष्यों की पूर्ति हेतु एक अस्त्र के रूप में उपयोग किया गया। 19वीं शताब्दी के भारत में समाज सुधारकों द्वारा नारी शिक्षा पर विशेष ध्यान दिया गया। उनका उददेश्य

महिलाओं में व्याप्त कुरीतियों को समाप्त करना था। इस उददेश्य पूर्ति के लिये एवं स्त्रियों की दयनीय स्थिति में सुधार लाने के लिये, राजा राम मोहन राय, ईश्वरचन्द्र विद्यासागर, ज्योतिबा फूले, सावित्रीबाई फूले, रमाबाई रानाडे इत्यादि ने इस क्षेत्र में सराहनीय प्रयास किये। समाज सुधारकों के सराहनीय प्रयासों, मिश्नरियों के अप्रकट मंतव्य एवं ब्रिटिश शासन द्वारा आधे अधूरे मन से किये गये प्रयासों के बावजूद रूढिवादी समाज में, स्त्रियों की शिक्षा के प्रति अनिष्ठा एवं उनकी प्रशासनिक अनुपयोगिता 19वीं शताब्दी में नारी शिक्षा के एक वर्ग तक सीमित रहने का कारण बने। इसके बाद भी सीमित ही सही परन्तु इसने भविष्य के लिये एक महान एवं दृढ आधार भूमि को निर्मित करने में सहायता प्रदान की।

◆◆◆◆

# आधुनिक शिक्षा और मूल्यो पर मीडिया का प्रभाव

**डॉ० मानिक रस्तोगी[1] एवं संजय प्रसाद[2]**
*[1]असिस्टेंट प्रोफसेर, शिक्षक शिक्षा विभाग, [2]छात्र, बी.एड. (प्रथम वर्ष), राज० रज़ा स्नातकोत्तर महाविद्यालय, रामपुर (उ०प्र०)*

## सारांश

शिक्षा एक ऐसा साधन है जो मानव को प्राणी जगत के अन्य जीवों से पष्थक करती हैं। शिक्षा का मानव जीवन में काफी महत्व है। शिक्षा के बिना मानव पशु के समान है। शिक्षा मानव को एक सामाजिक प्राणी बनाकर सांस्कृतिक धरोहर को आगे आने वाली पीढ़ी को हस्तांतरिक करने के योग्य बनाती है।शिक्षा से ही मानव का संर्वागीण विकास होता हैं। शिक्षा शब्द संस्कृत भाषा के ''शिक्ष'' धातु से बना है। जिसका अर्थ होता हैं सीखना या सिखाना। पेस्टालॉजी के अनुसार ''शिक्षा बालक की जन्मजात शक्तियों का स्वाभाविक, समन्वित एवं प्रगतिशील विकास हैं।

व्यक्ति जिस समाज मे रहता हैं उसमे मूल्य वांछनीय, महत्वपूर्ण एवं आदरपूर्ण होते हैं। मूल्य व्यक्ति के अभिवृत्ति, निर्णय, चयन, व्यवहार तथा सम्बन्धों एवं यहां तक कि व्यक्ति के दृष्टिकोण एवं उसकी सोच को प्रतिबिम्बित करता है। मूल्यों से हमारे चिन्तन, भावनाओं एवं क्रियाओं का निर्धारण होता है। वस्तुतः मूल्य हमारे जीवन में सही कार्य करने के लिए पथ–प्रदर्शक होते हैं। मूल्य एक मानक शब्द है। अमूर्त सम्प्रत्यय हैं इसका संबध मनुष्य के भावनात्मक पक्ष से होता है जो उकसे व्यवहार को नियंत्रित एवं निर्देशित करता है।कलुकहान के अनुसार ''व्यक्ति एवं संस्कृति के ढाँचे के अन्दर मूल्य पहले के या बाल्यवस्था के समाजीकरण का परिणाम होता हैं।''

आधुनिक युग की सबसे बड़ी समस्या मानवीय मूल्यों के ह्रास के रूप में देखी जा रही है। इसलिए हमारी शिक्षा व्यवस्था में मूल्य शिक्षा का समावेश अत्यन्त आवश्यक है। मूल्य के विकास में विद्यालय का दृष्टिकोण, उसकी आतंरिक व्यवस्था, शिक्षकों का आदर्श आपसी सहयोग, बच्चो के प्रति भावनाओ आदि का महत्व है। मूल्यों की शिक्षा में विद्यालय में दी जाने वाली शिक्षा का महत्वपूर्ण योगदान है।

वर्तमान शिक्षा भावनात्मक उदारता और वैचारिक सहिष्णुता विकसित करने में प्रभावी भूमिका कम ही निभा पा रही है, इसका परिणाम संघर्ष और असंतुलन के रूप में सामने आ रहा है। अतः मूल्य आधारित शिक्षा ही व्यक्तित्व के सर्वतोन्मुखी विकास में सहायक हो सकती है।

संचार माध्यम (मीडिया) को लोकतंत्र का चौथा स्तम्भ कहा जाता है। किसी भी देश की उन्नति व प्रगति में मीडिया का बहुत बड़ा हाथ होता है। संचार माध्यम समाज का निर्माण एवं पुनः निर्माण करता है। आधुनिक युगमें संचार माध्यम का सामान्य अर्थ समाचार पत्र, पत्रिकाओं, टेलीविजन, रेडियो, इण्टरनेट आदि से लिया जाता है। आज भारत विश्व का सबसे बड़ा समाचार पत्र का बाजार है। प्रतिदिन 10 करोड़ प्रतियां बिकती हैं। मानवीय मूल्यो को विकसित करने में संचार माध्यम का बहुत बड़ा योगदान होता हैं।

◆◆◆◆

राष्ट्रीय सेमिनार आयोजकों
को

**हार्दिक शुभकामनाएं**

# श्याम पुस्तक भण्डार (रजि०)

मिस्टन गंज, रामपुर,
दूरभाष-0595-2324671

*पुस्तकालय हेतु हर प्रकार की पुस्तकें, कार्यालय सम्बन्धी समस्त स्टेशनरी एवं हर प्रकार के प्रिन्टेड रजिस्टर एवं परीक्षा सामग्री उचित मूल्यों पर प्राप्ति का मुख्य केन्द्र*

डी.आर. आहूजा 9897378300
आकाश आहूजा 9997955600

3 Star Category By Director of Industries U.P.
Oriental®
FURNITURE HOUSE
GOVT. APPROVED SUPPLIER
AN ISO 9001 : 2015 CERTIFIED
Neerav Agarwal
9837074875
New Exclusive Showroom
Domestic Furniture, Office Furniture, School Furniture, Decorative & Other Typical Furniture
मा. सूक्ष्म, लघु एवं मध्यम उद्यम तथा
निर्यात प्रोत्साहन मंत्री सत्यदेव पचौरी,
अपर मुख्य सचिव हथकरघा रमा रमण
एवं आयुक्त/निदेशक उद्योग
के. रविन्द्र नायक द्वारा लघु उद्यमी
प्रोत्साहन प्रादेशिक पुरस्कार वर्ष
2017–18 प्राप्त करते हुए सम्मानित
उद्यमी नीरव अग्रवाल
110, SIKLAPUR NEAR DINESH NURSING HOME, BAREILLY-243001 (U.P.)
Tel. : 0581-2550666 (Showroom) 9411245870 (Resi) Mob. : 9837074875
Branch At : U - 24, Durga City Centre , Haldwani, Nainital (Uttarakhand)
E-mail : orientalfurniturehouse01@gmail.com

# इंडियन बैंक
# Indian Bank

◆ Your Own Bank ◆

## Our Mission

- To be a Common Man's bank
- To provide all Financial Products and Services under one roof at a fair and transparent manner to all customers
- 100% CBS, 100% Digital

1. Deposit Products
   a. Saving Bank Accounts
   b. Current Account, Supreme Current A/c
   c. Special A/c for Salaried, Senoir Citizen, Women
2. Term Deposits
3. Loan -
   Salary Loan | Home Loan | NRI Home Loan | Plot Loan, NRI Plot Loan | Top-up Loan | Vehicle Loan | Salary Loan | Pension Loan | Ind Mortgage | Rent Encashment
4. Other Facility & Services
   Demand Draft | Internet Banking | Mobile App | Lockers | Credit Card | Health Insurance | Life Insurance | Mutual Funds | POS, Scan & Pay | UPI and Merchant App

**Technical Product**

1. Indpay 2. IB Smart Remote 3. Net Banking 4. ATM, Mobile APP 5. IB Collect, V-Collect 6. E. Purse 7. IB Small Merchant App.

*With Best Compliments From*


**Rizwan Ali**
Branch Manager
Mob. : 95805 05153

**Harsh Singh**
AHM

Rampur Branch, Ph. : 0595-2352233